ⵜⴰⴷⵍⴰ ⵜⴰⵅⴰⵜⴰⵔⵜ

تادلا تاخاتارت

ديوان شعراء أحواش

جمع وتدوين

ابراهيم لشكر - ابراهيم أوبلا

ⵉⵙⵎⵓⵏ ⵜ ⵉⵙⵏⵎⴰⵍⴰ ⵜ

ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⵍⵛⴽⵔ - ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⵓⴱⵍⵍⴰ

tadla taxatart

تادلا تاخاتارت

ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ

tadla taxatart

تادلا تاخاتارت

ⴰⵢⵍⵓⵏ : 1

ⵜⵉⵔⵔⴰ ⴷ ⵓⵙⵏⴽⵉⴷⴷⵉ

ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⵍⵛⴽⵔ - ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⵓⴱⵍⵍⴰ

جمع وتدوين

ابراهيم لشكر وإبراهيم أوبلا

2022

Publications de l'Institut Royal de la Culture Amazighe

Centre de Centre des Etudes Artistiques, des Expressions Littéraires et de la Production Audiovisuelle

Série: Collecte n° 30

Titre

tadla taxatart

تادلا تاخاتارت

Auteurs

ابراهيم لشكروإبراهيم أوبلا

Editeur

Institut Royal de la Culture Amazighe

Couverture

Said LBAAQILI (UE-CTDEC)

Tableau de la couverture

EL HACHI EL Hassan

Dépôt légal

2022MO2712

ISBN

978-9920-739-70-2

Imprimerie

Editions & Impressions Bouregreg - Rabat

Copyright

IRCAM

ⵖ ⵓⵙⵉⵣⵡⴰⵔ

ⵜⴰⴷⵍⴰ ⵜⴰⴳⴰⵜⴰⵔⵜ ⵜⴳⴰ ⵢⴰⵏ ⵓⴷⵍⵉⵙ ⵏ ⵜⵎⴷⵢⴰⵣⵉⵏ ⵍⵍⵉ ⴷ ⵉⴽⴽⵓⵜⵜⴰⵏ ⵖ ⵓⵏⵎⵓⵇⵇⴰⵔ ⵏ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⴰⵎⵣⵡⴰⵔⵓ ⵖ ⵓⴹⵓⵡⴰⵕ ⵏ ⵉⵖⵔⵎ ⴰⵙⵙⵅ ⵏ 21 ⵎⴰⵕⵚ 2017, ⴰⵙⵙⵅ ⴰⵏⵏ ⵍⵍⵉ ⵖ ⵉⵥⴹⴰⵕ ⵓⴳⴳⵯⴰⵔ ⵏ ⵜⵎⵉⴹⵉ ⵏ ⵓⵎⴷⵢⴰⵣ ⴰⴷ ⴳⵉⵏ ⴰⵅⵓⵙ ⵖ ⵓⵅⵓⵙ ⵅⴽⵏ ⴰⵏⵎⵎⴰⵍ ⵉ ⵡⴰⵎⵓⵏ ⵏ ⴰⵢⵜ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵉⵙ ⴷⴰⵔⵙⵏ ⵎⴰⴷ ⵜⵜⵉⵏⵉⵏ ⵖ ⵓⵙⵡⵉⵔ ⵏ ⵜⵙⴽⵍⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ.

ⵜⴰⵡⵏⴳⵉⵎⵜ ⵏ ⵜⴰⴷⵍⴰ ⴰⴷ ⵜⵓⵛⴽⴰ ⴷ ⴷⴰⵔ ⴳⵯⵎⴰⵜⵏⵖ ⵎⵃⵏⴷ ⵍⵎⵓⵙⴰⵡⵉ ⴰⵎⵥⵏ ⵜⵜ ⵅⵍⵍⴰⵙ ⴰⵢⵜⵎⴰⵙ ⵉⵎⴰⵔⵉⵔⵏ ⵍⵍⵉ ⵏⵏ ⵖⵉⵏⵏ ⵃⴰⴹⵕⵏⵉⵏ ⵙⴽⵔⵏ ⵖⵉⵏⵏ ⵜⴰⴹⴰ ⵢⴰⵜⵜⵓⵢⵏ ⵅ ⴰⴷ ⴷ ⴹⵉⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⴷⵍⵉⵙ ⵉⴳⴰⵜⵔⵏ ⵍⵍⵉ ⵔⴰⴷ ⵉⴳ ⴰⵎⵣⵡⴰⵔⵓ ⵖ ⵙⵓⵙ.

ⴰⴽⵓⴷ ⴰⵏⵏ ⵓⵔ ⵏⵙⴽⵔ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵅⴰⴷⴰ ⵉ ⵜⵎⴷⵢⴰⵣⵜ, ⴽⵓ ⴰⵎⴷⵢⴰⵣ ⵏⵓⵊⵊⴰ ⵜ ⵙ ⵜⴷⵔⵅⵉⵜ ⵏⵙ ⴰⴷ ⵉⵙⴰⵡⵍ ⵅ ⴰⵢⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰ ⴷ ⴰⵢⵏⵏⴰ ⵙ ⴰⵙ ⵉⵏⵏⴰ ⵓⴳⴰⵢⵢⵓ ⵏⵏⵙ, ⵖⵉⴽⴰⵏⵏ ⴰⵅ ⴷ ⵜⵓⵛⴽⴰ ⵜⴰⴷⵍⴰ ⵜⴳ ⵢⴰⵜ ⵜⵡⵛⴽⵉⵏⵜ ⵖ ⴷ ⵎⵓⵏⵏ ⵡⴰⵏⴰⵡⵏ ⵏ ⵉⵊⴷⴷⵉⴳⵏ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⴷ ⵓⴽⵍⴰⵍⵓ ⵏⵙ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⴷ ⵡⴰⴹⵓ ⵏⵙ.

ⵜⴰⴷⵍⴰ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵏⵏ ⵜⵇⵇⵏ ⵜⴰⴳⴳⵓⵔⵜ ⵅ ⵃⵜⵜⴰ ⵢⴰⵏ ⵖ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ, ⵣⵖ ⴰⴽⵓⴷ ⴰⵏⵏ ⴰⴷ ⵏⵓⵏⵢⴰⵍⴽⴰⵎ ⴷ ⴰⵢⵜ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵏⵙⵙⵓⵜⵔ ⴰⵙⵏ ⵜⴰⵎⴷⵢⴰⵣⵜ, ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵎⵉ ⵜⵏⵡⴰ ⵜⴰⵡⵏⴳⵉⵎⵜ ⵖ ⵓⴳⴰⵢⵢⵓ ⵏⵙⵏ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵢⴰⴷⵍⵍⵉ ⵓⵔ ⵇⴽⴽⵉⴽⵏ ⵓⵍⴰ ⵏⵏⴰⵏ ⵓⵀⵓ, ⵖⵉⴽⴰⵏⵏ ⴰⵅ ⴷ ⵜⵓⵛⴽⴰ ⵜⴰⴷⵍⴰ ⵜⵙⵎⵓⵏ ⵓⵔⴰⵔ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⴰⴳⴰⵜⴰⵔ ⵍⵍⵉ ⵉⵙⴰⵡⵍⵏ ⵅ ⴽⵔⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⴰⴳⵯⵎⵎⴰⴹ ⵏ ⵜⵓⴷⵔⵜ, ⵖⵉⴽⵍⵍⵉ ⵔⴰ ⵏⵏ ⴳⵉⵙ ⵏⴰⵅⵉ ⵜⵓⴳⵯⵜ ⵏ ⵜⵇⵟⵉⵍⵉⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ ⴷ ⵜⵓⴳⵯⵜ ⵏ ⵉⵡⵜⴰⵢⵏ ⵖ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ.

ⴰⵎⵣⵔⴰⵡ ⴷ ⵓⵎⵙⵉⴳⴳⵍ ⴷ ⵉⵎⵖⵔⵉ ⵔⴰ ⵏⵏ ⴰⵅⵉⵏ ⵎⴰⴷ ⵔⴰⵏ ⵖ ⵜⴰⴷⵍⴰ ⴰⴷ, ⵔⴰ ⴷ ⴳⵉⵙ ⴰⵅⵉⵏ ⵜⵓⵜⵍⴰⵢⵜ ⵓⵍⴰ ⵉⵙⵅⴰⵍⴽⴰⵢⵏ ⵓⵍⴰ ⴰⵏⵣⴳⵓⵎ ⵓⵍⴰ ⵉⵎⵙⵉⵙⵉ ⵏ ⵓⵙⵡⵉⵏⴳⵎ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ, ⵜⵉⴽⴽⵍⵜ ⵉⵣⵡⴰⵔⵏ ⵖ ⵜⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⵏⵖ ⵔⴰⴷ ⵜⵉⵍⵉ ⵢⴰⵜ ⵜⵣⴷⴰⵢⵜ ⵜⴰⵎⵇⵔⴰⵏⵜ ⵏⴳⵔ ⴰⵢⵜ ⵓⵅⵔⴰⵏ ⴷ ⴰⵢⵜ ⵓⵙⵏⵅⵍⵓⵍ ⵏ ⵓⵙⴰⵢⵙ, ⵜⴰⵣⴷⴰⵢⵜ ⴰⴷ ⵍⵍⵉ ⵎⵉ ⵏⵙⵙⵓⵜⵔ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵉⵖⵣⵣⵉⵅⵏ.

ⵉⵔⵔⵉⵎ ⴰⴷ ⵉⵖ ⵜ ⵉⵍⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵉⴳⴰ ⵖⴰⵙ ⴰⵎⵣⵡⴰⵔⵓ, ⵔⴰⴷ ⵜ ⵉⴷ ⴹⵀⴰⵕⵏ ⵉⵔⵔⵉⵎⵏ ⵢⴰⴹⵏⵉⵏ ⵖ ⵎⴰ ⵍ ⵓⵔ ⵢⴰⴳⴳⵓⴳⵏ, ⴰⵔ ⵏⵙⵙⵓⵜⵓⵔ ⵖ ⵉⵎⴰⵔⵉⵔⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ ⴰⴷ ⵙⵉⵜⵜⵉⵏ ⵉⵏⵓⵊⵢⵓⵜⵏ ⵏⴳⵔⴰⵙⵏ ⴳⵉⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵀⵓⵙ ⵀⴰⴷ ⴰⴷ ⵏⵀⵇ ⴰⵏⵎⵎⴰⴷ ⵎⴰ ⵙ ⴷ ⴰⵎⴰⵔⵉⵔ ⵏ ⵓⵊⵡⴰⵛ ⵉⵙ ⵉⴳⴰ ⴰⵙⴰⵀⵓ ⵏ ⵡⴰⵎⵓⵏ ⵉⵙⵉⵙⵀⵉⵡⵏ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⵉ ⵜⴰⵙⵓⵜⵉⵏ ⴰⴷ ⴷ ⵓⵛⵇⴰⵏⵉⵏ, ⴰⴷ ⵎⴽⵉⵏ ⵉⵎⴰⵔⵉⵔⵏ ⴰⵜⵉⴳ ⵏ ⵜⵎⴷⵢⴰⵣⵜ ⵏ ⵓⵙⴰⵢⵙ ⴷ ⵜⴳⵓⵔⵉ ⵏ ⵓⵏⵀⵉⴱⴰⵕ, ⵎⴽⵉⵏ ⵉ ⵜⴰⵙⵓⵜⵉⵏ ⴷ ⵓⵛⵇⴰⵏⵉⵏ ⴰⵢⴷⴰ ⴰⵥⴱⵓⵔ ⴽⴽⵉ ⴷ ⵀⴽⵏ ⵉⵎⵣⵡⵓⵔⴰ ⵉⴳ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵙⴰⵀⵓ ⵖ ⵓⴱⵔⵉⴷ ⵉⴽⴽⴰⵙⵏ.

ⴰⵔ ⵏⵙⵙⵓⵜⵓⵔ ⵖ ⵉⵎⴰⵔⵉⵔⵏ ⴽⴽⵉ ⵓⵔ ⴽⴽⵉⵏⵉⵏ ⵖ ⵜⴰⴷⴽⴰ ⴰⴷ ⴰ ⵍ ⴰⵀⵉⵏ ⵉⵙⵎ ⵏⵙⵏ ⵖ ⵜⴰⴽⴽⵉ ⴷ ⵢⵓⵛⵇⴰⵏ.

ⴱⵕⴰⵃⵉⵎ

ⵓⴱⴽⴽⴰ

ⵜⴰⴹⴰ

مقدّمة

هذه باقة أشعار تولدت عن ملتقى شعراء أحـواش، الذين اجتمعوا بـ«إغرم ن إداوكنسوس» في ظل الرابطة الوطنية لشاعرات وشعراء أسايس، خلال جمعها العام التأسيسي يوم 21 مارس 2017، الذي قرر فيه العديد من شعراء أحواش لمّ شتاتهم وتأسيس رابطة تجمع بينهم وتؤلف بين جهودهم. وفكرة إصدار ديوان يضمّ قصائد هؤلاء الشعراء كانت من اقتراح الشاعر امحند الموساوي، وقد نالت قبول بقية أعضاء الرابطة، ما حذا بنا إلى القيام بتفعيلها من خلال هذا الديوان المشترك الذي اطلقنا عليه «تادلا تاخاتارت».

وقد تركنا لجميع الشعراء المشاركين في هذه الباقة الشعرية حُرية أن يختاروا التيمات والقضايا والأوزان المناسبة لقصائدهم، ما جعل من هذا الديوان باقة من الزهور المختلفة الأشكال والألوان، والتي تمثل بلا شك قيمة مضافة لما تمّ تدوينه من شعر أسايس حتى الآن.

لم نقم بتهميش أو نسيان أي من شعراء أحواش المرموقين من أعضاء الرابطة، فقد وجهنا دعوتنا للجميع، والذين استجابوا من مختلف مناطق سوس، هم الذين يضمّ الديوان الحالي قصائدهم، التي تناولت مختلف الأغراض والقضايا التي تمثل هموم الإنسان في بلادنا أو في كل ربوع المعمور.

وسيجد القارئ في هذا الديوان ثروة لغوية وثروة من الصور والإيقاعات والأوزان والقيم الجمالية التي تضمّها القصائد، والتي تجعل منها مادة خصبة للبحث والتحليل الأدبي المنهجي الذي سيغني بلاشك الدراسات الأدبية الأمازيغية التي ما أحوج المدرسة المغربية إليها في السياق الحالي الذي يعرف التعميم التدريجي للأمازيغية في النظام التربوي. وقد آثرنا كتابة قصائد الديوان بالأبجديات الثلاث التي تتقاسم السوق الكتابية عندنا في المغرب، (تيفيناغ – تالاتينييت – تاعرابت)، وذلك تعميما للفائدة، وقد ساهم في الديوان 74 شاعرا ينتمون إلى مختلف قبائل سوس، كما ينتمون إلى مختلف الفنون الشعرية الحوارية المألوفة وإلى مختلف الأعمار، وقد جمعتهم القصيدة، ومنهم من كتب القصيدة لأول مرّة في حياته، بحكم أنهم في معظمهم تعودوا على نظم الشعر الحواري المرتجل، وقد لبّوا جميعا النّداء الذي نال قصب السبق فيه أخونا الشاعر محند المساوي، وهم مستعدّون للمساهمة في جزء آخر إن شاء الله.

إن شعر «أسايس» ما فتئ يُناضل من أجل الاستمرار في العطاء، وما فتئ شعراؤه أوفياء لضوابط الشعر العريقة التي تمتاز بها ميادين الإنشاد بكل جنبات الأطلسين الكبير والصغير، هذه الضوابط التي تبدو اليوم للبعض، في ظل مسلسل التحديث المؤسساتي والثقافي الذي يطال المجتمع بكامله، كما لو أنها رمز للماضي الذي ينبغي تجاوزه، بينما هي معايير جمالية ما زالت في قمة عنفوانها ونهضتها وفي أوج عطائها الفني، يدلّ على ذلك بما لا يدعُ مجالا للشك، إقبال الجمهور بإعجاب ومتعة على إنتاجات شعراء «أسايس»، كما يدلّ عليه غزارة الانتاج الشعري الذي ما زال يتولد عن أمسيات أحواش وعن لقاءات شعرائه الموهوبين.

أعتقد جازما أن مستقبل الشعر الأمازيغي رهين باستيعاب قيمه الأصيلة، وأن الجيل الجديد من شعراء الحداثة الأدبية سيكون له باع أكبر في الإبداع الشعري إذا هو استوعب هذه القيم الجمالية والفنية وكذا المضامين التخييلية التي يختزنها الشعر الشفوي التقليدي، والتي هي بمثابة طاقة ما زالت قادرة على العطاء، وما زال يمكن استلهامها واستثمار إمكاناتها الإبداعية لجعل الشعر الأمازيغي الحديث ذا جذور في التربة الأمازيغية الأصيلة، وإكسابه قوة التأثير المطلوبة. ولعل هذا هو الخيار البديل لذلك التصور القاسي الذي يبلوره بعض أبناء جلدتنا من المبدعين الشباب الذين لا يرون من تجديد شعري أو إبداع حديث إلا بدفن الشعر الشفوي وإبادته وإحلال الشعر الحديث أو «تامديازت تاترارت» محله، وهو خيار لا يخلو من غلوّ، إذ أن الخيار الذي تفرضه الحكمة ويمليه بُعد النظر هو رعاية آدابنا بجميع مكوناتها، والعناية بالمبدعين والشعراء جميعهم وخاصة منهم الذين عركوا السنين وتحدوا الزمن بإبداعاتهم الأصيلة، وبعبقرية القول الشعري في «أسايس».

إنّ هذا الديوان يعتبر إشارة ورسالة، وصرخة منبعثة من أعماق البادية، ومشعلا سوف نحمله في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس، كما أنه سيكون تحدّيا كبيرا، لأنه ولأول مرّة يخرج شاعر أسايس من بوتقته الشّفوية ليعانق القرّاء من الطلبة والباحثين، وليحتلّ مكانته في المكتبة الأمازيغية التي يُهيمن عليها الإبداع الحديث وتفتقر إلى النصوص الشعرية التقليدية المدونة، ولتحتل قصائد شعراء «أسايس» مكانتها في درس اللغة الأمازيغية بمختلف أسلاك التعليم.

إبراهيم أوبلا - طاطا

ⴰⴳⵔⴰⵡ ⵏ ⵉⵖⵔⵎ 2017

ⵢⴰⵜ ⵜⵙⴳⴰ ⵖ ⵓⴳⵔⴰⵡ ⵏ 21/03/2017

-1-

ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⵍⴰⵛⵅⵔ

ⴰⵢⵜ ⵄⵍⵉ

ابراهيم لشكر

ولد في قـرية أيت ويديرن ييزدار بقبيلة أيت على سنة 1953، ترعرع كفلاح ببلدته وبعد بلوغه 17 من عمره هاجر إلى وهران بالجزائر واشتغل هناك بالتجارة، وفي 1975 رجع إلى وطنه وبدأ حياة جديدة في مدينة الرباط ولم يلبث أن أسس لنفسه وضعية مريحة في التجارة، اهتمّ بالشعر وبفنون أحواش منذ صباه، وقد أدرك مجموعة من المتمتعين بالغيرة على هذا الفنّ ببلدته كـ «ئدّر ؤعلي أوبلا وعلي ؤموسى بازّي وبوبكر ن تعليو، ويعود إليه الفضل في تأسيس فرقة أحواش بديار الغربة بالرباط تضمّ أبناء قبائل ئلالن.

كما أسس فرقة المعمورة المشهورة مع ثلة من المغتربين الشغوفين بفنّ أهناقار، نال الشاعر إبراهيم لشكر سمعة مرموقة بين كبار الشعراء من جيله وأصبح أحد فطاحل الشعر الحواري بأسايس، ومن أهم من حاورهم: الحاج الحسن المديدي، الحاج عثمان أعبو، الحاج ئحيا ؤبوقدير، الأستاذ أحمد عصيد الذي أصدر معه ديوانا شعريا كما سجّل معه شريطا صوتيا رفقة فرقة المعمورة، الشاعر لا زال ينبض بالحياة ولا زال شغوفا بحواريات «درست» و«أهناقار» وهو الآن يشغل منصب رئيس الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⴰⵙⵓⵜⵔ

ⴰⵏⴹⴹⴰⵎ ⵉⵖⵔⴰ ⵏⵉⵜ ⵔⴰⴷ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⵟⵟⴰⵄⵜ
ⵓⴼⴰ ⴼⴰⴳⴱⴰⵕ ⵉⵖ ⵔⴰⴷ ⴰⴽⴽⴰⵏ ⴼⵓⵟⵉⵢⵜ
ⵀⴰ ⵢⴰⵖ ⴰ ⴼⴼⵙⴰⵙ ⵏ ⵜⵡⵉⵣⵉ ⵔⴰ ⴽⵯⵏ ⵙⵔⵙⵖ
ⵏⵖⵔ ⴷ ⵉ ⵢⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵢⴰⵏ ⵔⴰ ⵢⴰⵡⵙ
ⴰⴷ ⵏⴱⵏⵓ ⴼⴱⵕⵊ ⵉⵙⵙⵎⵖⵓⵔⵏ ⵏⵙⴰⵜⵜⵓⵢ ⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⴰⴷ ⴷ ⵢⴰⴳⴳⵯ ⴰ ⵢⴰⵅ(ⵉ) ⵜⵉⵅⴰⵡⵜ
ⴰ ⵙⵓⴼ ⵓⵔ ⵜⵉⴼⵉ ⵜⵎⵥⵥⵉⴽⵓⴽⵜ ⵎⵚⵓⵔⵇ
ⴼⵀⴰⵡⴰ ⵓⵔ ⴳⵉⵙⵏ ⴹⴹⵉⴷⴷ ⵓⴼ ⵉⵏⵇⵉⵙⵉⵎⵏ
ⴼⵎⵓⵄⵉⴱⵜ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵏⵥⵕⵕⴰ ⵓⴼⴰ ⵙⵙⵉⵃⵔ
ⴰ ⵀⴰ ⵍ ⴰⵊⵎⵓⵃ ⴰⵍ ⵏ ⵉⵖⵔⵎ ⵉⵙⵎⵓⵏ ⴰⵏⵇ
ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴰ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵉⵙⵎⴷ ⵉ ⵜⵜⴰⵔⵉⵇ ⵏⵇ
ⵡⴰⵍⴰ ⵢⴰⵚⵔⴰⵏ ⵉⵖ ⵢⴰⴷ ⵏⵎⵎⵓⵜ ⵔⴰ ⵇ ⵉⵙⵙⵏ
ⵉⴳ ⴰⵅⵓⵙ ⴳⵉⵏ ⵉⴹⵓⴹⴰⵍ ⵉⵙⵎⵓⵏ ⴰⵏⵇ
ⵡⴰⵍⴰ ⵔⴰ ⵏⵙⵉⵜⵜⵉ ⴼⵃⵉⴱ ⴰⵔ ⴰⵇ ⵜⵏ ⵎⵎⴰⴼⵏ
ⵖⴰⵍ ⴰⵅ ⵏⵜⵜⵎⴰⵖ ⴰ ⵏⴳⵉⴷⴷⵉ ⵜⵉⴼⵉ ⵍⵉⵢⵜ
ⵢⵉⴼⵉ ⵟⵟⵅⴰ ⵖ ⴼⵚⴼⴱ ⵏⵙⵙⵉⵏⵅ ⵉⴼⴰⴹⴹⵏ
ⵓⴽⴰⵏ ⵏⴳ ⵥⵓ(ⵏ) ⴷ ⴰⴳⵓⴷⵉ ⴼⴼⵉ ⵏ ⵡⴰⵚⵚⴰⵢⵏ
ⵡⴰⵍⴰ ⴽⴰ ⵓⵙⵉⵏ ⵉⴹⵓⴹⴰⵍ ⵉⵄⵎⴼ ⵜ ⵉⴼⵙ
ⵓⵔ ⵔⴰ ⵙⵓⴼ ⵢⵉⴼⵉ ⵎⴰ ⴳⵉⵇ ⵓⵔ ⵉⵎⵎⵉⵎⵏ
ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵉⵃⴷⴰⴼ ⵓⵊⵎⵓⵃ ⴰ ⵜⵏ ⵜⵜⵏⴰⵡⴰⴼⵏ
ⵉⵎⴰⵣⵣⴰⴼⵏ ⴰ ⵜ ⵓⵔ ⵔⴳⴳⵯⵉⵏ ⵉⵏⵡⵡⴰⵛⵏ
ⴰ ⵀⴰ ⵍ ⴼⴱⵏⵉ ⴽⵉⵖ ⵉⴷⵓⵙ ⴼⴼⵙⴰⵙ ⵏⵙ
ⵓⵔ ⵔⴰ ⵜⵏ ⵇⴼⵓⵏ ⵉⴳⴳⵉⴳⵏ ⵡⴰⴼⴰ ⵉⵙⴰⵅⵅⵏ
ⵖⴰⵍ ⴰⵅ ⵉⵃⴷⴼ ⵛⵛⵓⵕ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵏⵜⵜⵎⴼⵉⵅⵉ
ⵉⵖ ⵍ ⴽⴰ ⵙⴳⴰⴷⴷⴰⵇ ⴼⴱⵏⵢⴰ ⵅ ⵃⴰⵎⴰⵢⵏ
ⴰ ⵜ ⵓⵔ ⵏⴱⵏⵓ ⵙ ⵣⵣⵔⴱ ⵓⵔ ⴰⵇ ⴼⴰⵏ ⵓⴷⵎ
ⵉⵖ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵇⴼⴰ ⴳ ⵉ(ⵢⵉ) ⴼⵃⵉⴱ ⵉⵖ ⴰⵔ ⵙⴰⵡⴰⴼⵇ
ⵡⴰⵍ ⴰⵇ ⵉⵥⵕⴰⵏ ⵉⵕⵥⵎ ⴳⵉⵏⵇ ⵉ ⵜⵇⵎⵎⴰⵕⵜ
ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⵉ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ ⵏⵄⵕⵎ ⵜⴰⵔⵔⵉⵛⵜ.

أسوتـر

أنضّام يغـرا نيت راد يتّيني صّاحـت
ولا لاخبارٍ يغ راد أكّان لوصييت
ها ياغ أ لّساس ن تويزي را كُن سرسغ
نغر د ئـ ييمديازن يان را ياوس
أد نبنو لبرٍج يسّمغورن نساتّوي ت
أ وانّا يران أد د ياڭّ أ يافـ(ـي) تيفاوت
أ سول ور تيلي تمژّيكوكت مقورخ
لهاوا ور ڭيسن ضّيدّ ولا ينخيسيمن
لموحيبت أ ڭيس نژرّا ولا سّيعـر
أ ها نّ أجموع أنّ ن يغرم يسمون أنخ
نتّان أ راد د يسمد ئـ تّاريخ نخ
وانّا ياقران يغ ياد نمّوت را خ يسّن
يڭ أفوس ڭين يضوضان يسمون أنخ
وانّا را نسيتّي لعيب أر أخ تن مّالن
غانّ أف نتّماغ أ نڭيدّي تيلي نّييت
ييلي صّفا غ لقلب نسّينف يلاطّن
وكان نڭ زو(ن) د أڭودي لّي ن واقّاين
وانّا كا وسين يضوضان يحمل ت يلس
ور را سول ييلي ما ڭيخ ور يمّيمن
أر يتّيعدال وجموع أ تن تّناوالن
يمازّالن أ ت ور رڭّين ينواشن
أ ها نّ لبني كيغ يدوس لّساس نس
ور را تن خلون يڭّيڭن والا يسافّن
غانّ أف يعدل شّورٍ أد ور نتّمليفي
يغ نّ كا سڭّادّاخ لبنيا ف عامايَن
أ ت ور نبنو س زّرب ور أخ لان ودم
يغ أڭّ يخلا ڭ ئيـ(ـي) لعيب يغ أر ساوالخ
وانّ أخ يژران يرٍژم ڭينخ ئـ تخمّارٍت
أر يتّيني ئـ وبياض نحـرٍم تارّيشت.

-2-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⵍⵎⵃⵎⵎⴷⵢ
ⴰⵣⵔⴰ - ⵜⴰⵟⴰ

محمد المحمدي

ولد في أكَادير الهناء بطاطا سنة 1944 وقضى الجزء الأول من طفولته بجانب أبيه الفقيه سيدي أحمد بن محمد بمدرسة سيدي بودالا بقبيلة ئداوزدوت، ولما بلغ العاشرة من عمره التحق بالمدرسة العصرية بطاطا حيث حصل على شهادة البروفي، ثمّ عين كمعيد في إعدادية المختار السوسي ثم كأستاذ للتربية البدنية وأنهى مسيرته التربوية بالسلك الإداري قبل أن يعين كمندوب لوزارة الثقافة بطاطا، وكان جده لأمه الشاعر الكبير عمر الحنافي هو مثله الأعلى في قرض الشعر وطالما ألحّ عليه أن يهبه شيئا من موهبته كيبرقى إلى منزلته، وقد شبّ على هذا الطموح ولم يلبث وهو يصاحب خاله الشاعر عبد السلام الحنافي، أن ولج باب الإنشاد في أسايس، ولم تمض أعوام حتّى صار من أبرز شعراء طاطا وأكثرهم تمتعا بسرعة البديهة، وبذلك ترك بصمته في حـواريات "درست"، ورغم أنه منتظم في الوظيفة العمومية فإنه وفيّ لهذا الفنّ، وكان شاعرنا من بين الأوائل الذين أسسوا للعمل الجمعوي في طاطا منذ بداية السبعينات، وهو الآن عضو في مجلس رابطة شعراء وشاعرات أسايس، وقد أسس مؤخّـرا جمعية باسم "تيزار ن ؤمارك" من أجل إحياء وإنعاش فنّ أهناقار.

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⵏ ⵜⵥⵟⵉⵍⵜ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⵎⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⵖⵓⵢⵏ ⵜⵉⵙⵓⵔⴰ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⵎⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⴳⴰⵏ ⴰⵏⴼⵍⵓⵙ ⵏⵏⵓⵏ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⵉⵙ ⵙⵓⵍ ⴰ ⴳⵉⵡⵏ ⵉⵜⵜⵉⵍⵉ ⵡⴰⵡⴰⵍ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵢⵍⵍⵉ ⵖ ⵏⵙⵔⵓⵙ ⵍⵃⴰⵡⵍⵜ ⵏⴳ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵢⵍⵍⵉ ⵖ ⴰ ⵜⵜⵎⵓⵏⵏⵜ ⵜⴰⴽⴰⵜⵉⵏ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⴰ ⴽⵯⵏⵜ ⵉⵜⵜⴰⵙⵉⵏ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵖ ⴰⵔ ⵔⴳⴳⵍⵏ ⴰⵢⵜ ⵍⴰⵎⴰⵏⴰⵜ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⵔⴳⵍⵏ ⴳⵉⵙⵏ ⵜⴰⵅⴰⵏⵓⵜ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵖ ⵏⴳⴰ ⵣⵣⵉⵢⵜ ⵏⴳ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵙ ⵜⵜⵎⵖⵓⵔⵏ ⴰⵢⵜⵎⴰⵙ ⵏ ⵢⴰⵏ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵍⵟⵕⵊ ⵉⵃⵍⴰⵏ ⴰⵙ ⴰ ⵜⵜⵉⵍⵉⵏ

ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰ ⵉⵙⵏⵉⴹⵉⴼⵏ ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵛⵛⵉⵡⴰⵛ

ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵍⵃⴷⵓ ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵉⵔⵓⵔⴰⵏ

ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵍⵅⵕⵟ ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵙ ⵉⵜⵜⴰⴽⵯⵉ ⵢⴰⵏ

ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵍⴼⵕⵅ ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰⵖ ⵉⵜⵜⵉⵍⵉ ⵢⴰⵏ

ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵉⵥⵟⵉⵍⵉⵏ ⵉⵖ ⵓⵔ ⵜⵍⵍⵉ ⵜⵏⵎⵉⵍⴰⵜ

ⵜⵉⵙⵙⴰⵏⵜ ⵉⵣ ⴷ ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⴰ ⵙⵓⵍ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉⵏ.

أڭادير ن تقبيلت

أڭادير ما سول يغوين تيسورا غ وفوس
أڭادير ما سول يڭان أنفلوس نّون
أڭادير يس سول أ ڭيون يتّيلي واوال
أڭادير أيلّي غ نسروس لعاولت نخ
أڭادير أيلّي غ أ تّمونّت تاكاتين
أڭادير أ تامازيرت أ كُنت يتّاسين
أڭادير أغ أر رڭّلن أيت لامانات
أڭادير كو يان رڭلن ڭيسن تاحانوت
أڭادير أغ نڭا زّييْت نخ ولا تامّنت
أڭادير أس تّمغورن أيتماس ن يان
أڭادير ها نّ لبرٍج يعلان أس أ تّيلين
أڭادير أ يسنيضيفن يغ يلّا شّيواش
يغ يلّا لعدو أڭادير أ ت ينّ يروران
يغ يلّا لحرٍب أڭادير أس يتّاكِي يان
يغ يلّا لفرٍح أڭادير أغ يتّيلي يان
كولّو تيقبيلين يغ ور تلّي تنميلات
تيسّانت يز د أڭادير أ سول ور يلّين.

****

-3-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⵎⵙⵜⴰⵡⵉ

ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ

محمد مستاوي

ولد سنة 1943 وتتلمذ في طفولته بمسجد قريته مكزارت بإداوزدوت، ثم التحق بمعهد محمد الخامس بتارودانت، وهناك حصل على الشهادة الثانوية التي أهلته لكييصبح أستاذا في المدرسة العمومية، ومنذ أن كان شابّا كان مولوعا بحواريات الشعر واستهواه الشعراء الكبار بقبيلته وكان لدخوله ميدان الإنشاد قصة طريفة في أعكُمّي سنة 1965 حيث كان ذلك من أجل تغيير عقلية سائدة لدى ممارسي النظم فيأسايس، ومنذ ذلك الحينحاور أكابر الشعراء ببلدته، غير أنّ شاعرنا لم يقف عند هذا الحدّ فهو أول شاعر أمازيغي بسوس منتظم في الكتابة الشعرية فأصدر أول ديوان له في نهاية الستينات، بل إنه دخل إلى ميدان التأليف من بابه الواسع فبدأ في مشروع كبير من أجل تدوين الشعر والأدب الشفوي عموما، إلى أن عجت المكتبات بدواوينه ومؤلفاته، كان من مؤسسي الجمعية المغربية للبحث والتبادل الثقافي رفقة زميله إبراهيم أخياط، وقد ساهم في أول نشرة لهذه الجمعية باسم "أراتن"، وفي سنوات التسعينات أصدر مع زميله أحمد عصيد مجلة "توسّنا"، ومن دواوينه: ئسكراف، تاضصا د ئمطّاون، أسايس... ومن مؤلفاته الأخرى: ذّان ويلي زرينين، تيفاوين، حجو في البرلمان...

ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ ⵏ ⵓⵙⵍⵎ

ⴰ ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ ⵍⵍⵉ ⴷ ⵓⵙⵉⵏ ⵡⴰⵎⴰⵏ
ⵢⵓⵔⴰ ⴽⵎ ⵓⵙⵍⵎ ⵉⵖⵔ ⴽⵯⵏⵜ ⵡⵉⵙⵙ ⵙⵉⵏ
ⵓⵍⴰ ⵡⵉⵙⵙ ⴽⵕⴰⴹ ⵓⵔ ⴰⵎ ⵜ ⵏⵏⵉⵏ
ⵏⵏⴰⵏ ⴰⴼⴳⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴰⵙⵎⵓⵏ ⵏⵎ
ⵎⴷⵉⵏ ⵉⵖⵔⵔⵓⴱⴰ ⵡⵉⵏ ⵡⴰⵎⴰⵏ
ⴰⵔ ⵇⵇⴰⵢⵏ ⵉⴹ ⵓⵍ ⴰⵣⴰⵍ ⴰⵔ ⵛⵜⵜⴰⵏ
ⵜⴰⴽⴰⵜ ⵜⵉⵢⵓⵏ ⵖ ⵉⴳⵏⵏⴰ ⵓⵍ ⴰⴽⴰⵍ
ⵎⵎⴰⵖⵏ ⵏⴳⵔⴰⵙⵏ ⵙⵓⵥⵥⵊⴰⵏ ⴰⵏⵖ ⴰⵎⴰⵏ
ⵉⴷⴰⵎⵎⵏ ⵏⵙⵏ ⴰ ⵢⴰⴷ ⵏⵛⵛ ⴰⵔ ⵜⵏ ⵙⵙⴰⵅ
ⵏⵏⴰⵏ ⴰⴼⴳⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴰⵙⵎⵓⵏ ⵏⵎ
ⴰⴽⴰⵍ ⴷⴰ ⴼ ⵉⵜⵜⵉⴷⵓ ⵙⵙⴰⵏ ⵜⴰⴽⴰⵜ
ⵓⵔ ⴰⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵙⵎⵖⴰⵢ ⴰⵎⵔ ⴰⴼⴰⵔ.

تابرات ن وسلم

أ تابرات لّي د وسين وامان
يورا كم وسلم يغر كُنت ويسّ سين
ولا ويسّ كڕاض ور أم ت نّين
نّان أفڭان ور يڭي أسمون نم
مدين يغـرّوبا وين وامان
أر ڨّاين يض ول أزال أر شتّان
تاكات تيون غ يڭنّا ول أكال
مّاغن نڭراسن سوجّان[1] أنغ أمان
يدامّن نسن أ ياد نشّ أر تن سّاخ
نّان أفڭان ور يڭي أسمون نم
أكال دا ف يتّيدو سّان تاكات
ور أر سول يسمغاي أمر أفار.

****

1- ينطق بتفخيم الجيم.

-4-

ⵎⵓⵍⴰⵢ ⵄⵍⵉ ⴰⵅⴱⵓⵔ
ⵉⵔⵅⵉⵜⵏ
مولاي علي أخبور

ولد في قرية أسيف فرقة تاماروت – ئركّيتن بجبل «درن» في فاتح نونبر 1957، وفي ظلال أشجار الجوز واللوز تلقّى تعليمه الأولي بمسجد القرية، ولمّا شبّ استهواه العمل خارج الوطن فانتقل إلى إيطاليا، دخل إلى ميدان الإنشاد سنة 1978 بعد ان تأثر بعدد من شعراء المنطقة كمحمد باعشّو بإركّيتن، وإبراهيم أومولاي بإمنتاكّن، لكنه كان من المعجبين جدّا بشاعر سوس الحسن أجماع، يمتاز شاعرنا بقوّة صوته وتمكّنه من جميع النغمات إضافة إلى أنه يجيد العزف على الآلات الوترية، ويمتاز شعره بالجرأة وغزارة المعاني والصور، وكان لوضعيته في الغربة أكبر أثر على حبه لأسايس، إذا كان يتذكّر هناك دائما ميدان الإنشاد، وقد أسس في دار الغربة رفقة من المهتمّين بأحواش وصار ينظم معهم أمسيات حوارية، انخرط في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس منذ سنة 2017.

ⴰⵎⵉ ⵞⵞⵓⵕ

ⵎⴰ ⵜⵉⵜⵔⵉⵜ ⵏⴳⵔ ⴼⵉⵜⵔⴰⵏ ⵉⵣ ⴷ ⴰⴼⴼⵓⵔ ⴰⴷ ⴷⵉⵛ ⵉⵜⵜⵛⵓⵏⴰⵏ
ⵜⵉⵃⴰⵎⵜ ⵏⵛ ⴰⵙ ⴰⴽⴽⵯ ⵏⵙⵙⵃⴰⵎ ⵉⵖ ⵏⵉⵜ ⵉⵖⴰⵟ ⵓⴽⴰⵏ ⵎⴰⴼⴼⵓⵔ
ⵏⵡⵓⵢ ⵏⵉⵜ ⴰⴹⴰⵕ ⵉ ⵓⵣⴼⴼⵉⵔ ⵉⵔⵉⵅ ⴰⴷ ⴷⴰⵔⵓⵏⵜ ⵉⵡⵉⵅ
ⵉⵙⴰⵎⵡ ⴷ ⵙⵔⵉ ⴼⴰ(ⵏ) ⵓⵛⴰⵏⴰⵔ ⵉⵍⴰ ⵉⴼⵉ ⴷ ⵡⵢⵓⵕⵛⴰ ⵍⵓⵏ
ⴰⵎⵉ ⵞⵞⵓⵕ ⴰ ⴼⴰⵏ ⵉⵛⵡⴰⵃⴰⵏ ⴱⴰ ⵍ ⴰⵣⵛⵣ ⵓⵔ ⵔⴰ ⴽⵯⵏ ⵉⵇⵇⵉⵡ
ⵎⴰⵍⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⴰⵛⵓⴷⴷⵓ ⵏⵙ ⴰ ⵍ ⵉⵙⴽⵔ ⵡⵢⵙⴰⵟ ⵏⵙ ⵉ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵜⵉⵃⴰⵎⵜ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⵕⵓⵢ ⵉⵀⴰⵇⴷ ⴰ ⵍ ⵓⵔ ⵉⵖⴰⵛⴰ ⵖ ⵜⵉⵡⵡⴰⵙ
ⴰⴷ ⵜ ⵉⵍ ⵓⵔ ⵉⵖⵓⴼ ⴼⵉⴹ ⴰⵛⵛⴰⵙ ⵏ ⵡⵅⵡⴰ ⴳⴳⴰⵛⵛⵉⵏ ⵛⴰⵛⵏⴽ
ⵡⵛⴰⵀⵏⴰ ⴽⴰ ⵃ ⵏⵙⴰⵎⵡ ⵉⵛⵛⴰ ⵉⵖⴰⵔⴰⵙⵏ ⵖⵉⵡⴰ ⵔⵅⴰⵏ ⴰⴽⴽⵯ
ⵎⴰ ⵛⵉⵔⵙⵉⴷⵉⵙ ⴰⵙ ⴰ ⵜⵜⵛⵓⴷⴷⵓⵏ ⵖⵉⵡⴰ ⵛⵉⴷⴷⵏ ⵕⵕⴰⵢⵜ ⴰ ⴼⴰⵍ
ⵎⴰⵡⴰⴼⵏ ⴰ ⵞⵞⵉⵃⵓⵕ ⵉⵖ ⵜⵓⵙⵉⵜ ⵉⵏⵚⵢⴰⵟⵏ ⴷ ⵜⴰⵔⵎⴰ ⵍⵓⵏ
ⵡⵓⵚⵉⴼⵜ ⵉⵏⵓ ⴰⵔⴰ ⵜⵜ ⴰⴷ ⵓⵔ ⴼⵉⵡⵉ ⵣⵣⵔⵟ ⴰⵔ ⵉⵖ ⵜⵡⴽⵛⵜ
ⴱⴰ ⵍ ⵡⵢⴷⵉⴷ ⵉⴳⴰ ⵎⵉⵏ ⵜⴰⵙⵙⴰⵙⵜ ⵓⵔ ⵉⵔⵉ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⴹⴹⵚⵕ ⴼⴰⵏ
ⵉⵔⴰ ⵡⵀⴰⵇⵡ ⵟⴰⵟ ⵏⵙ ⴰⴷ ⵓⵔ ⴳⵍ ⴰⴷ ⵕⵥⵛⵏ ⵉ ⵜⵎⴰⵡⵡⵉⵏ
ⵉⵔⴰⵔ ⵡⴰⵀⵇⵡ ⴱⴰ ⵍ ⵉⴳⴳⵓⵜ ⵛⴰⴷ ⵓⵔ ⵉⴳⵉⵏ ⵉ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴼⴰⵏ ⵉⵙⵎⴰⵏ ⴰⴹⵉⵡ ⵉⴹⵓⵟⵡ ⴷ ⵖ ⵡⵃⵉⵔⴰⵊ ⵓⵡⴰ ⵉⵙⵉⵎⴰⵏ
ⵛⴼⴼⴰ ⵓ ⵅⵛⵙⵉⵏ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵙⵓⵡ ⵉⵢⴽⵛ ⵜⴰⵛⵓⵟⵉⵡ ⵏⵙ ⵜⵉⵎⵉⵜ
ⴱⴰ ⵍ ⵉⵙⴽⵔ ⵙⵙⴰⵟⴰⵟ ⵉⵅⵃ ⵏⵙ ⵉⵏⵖⴰ ⵜ ⵉⵍ ⵉⵖ ⵓⴽⵯⵉⵏ ⵙ ⴰⵙⵉⵃ
ⵏⴹⴰⵡⵟ ⵉ ⵕⵟⵟⵉ ⴼⴰ(ⵏ) ⵉⵙⴰⵃⵔⵏ ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⴷ ⵉⵇⵇⵉⵡ ⵖ ⵓⵙⵙⴰⵏ.

أوي شّورٍ

وا تيتريت نڭر ييتران يز د أيور أد ديم يتّمونان
تيفاوت نم أس أڭّ نسّفاو يغ نيت يغاب وكان وايور
نلوح نيت أضارٍ ئـ وزيرٍ يريخ أد دارونت يليخ
يساول د سري يا(ن) ومانار ينّا ئـيي د لحورٍما نّون
أوي شّورٍ أ يان ءملافان ها نّ أزمز ور را كُن يقّيل
وانّا يران أمودّو نس أ نّ يسكر لحساب نس ئـ وغاراس
تيفاوت أ ڭيس يرٍوح يعاقد أ نّ ور يغاما غ تيلّاس
أد ت ينّ ور يغوي ييض أمّاس ن لخلا ڭّامّين مامنك
لماعنا كا ف نساول ءمّا يغاراسن غيلا رخان أڭّ
وا ميرسيديس أس أ ءمّودّون غيلا ميدّن رّاحت أ يانّ
والاين أ شّيفورٍ يغ توسيت ينصحابن د تاروا نّون
لوصييت ينو أرا تّ أد ور ييلي زّرب أر يغ تلكمت
ها نّ لحديد يڭّا وين تاسّاست ور يري أ ڭيس يضّصرٍ يان
يرا لعاقل باب نس أد ور ڭنّ أد رٍژمن ئـ توالّين
يرار لاعقل ها نّ يڭّوت ماد ور يڭين ئـ وغاراس
يان يسوان أضيل يضوبل د غ لفيراج ولا يسيوان
ميا و خمسين ور أڭّ سول يحكم تاموبيل نس تيويت
ها نّ يسكر سّاباب يخف نس ينغا ت ينّ يغ وكُين س أسيف
نضالب ئـ رٍبّي يا(ن) يسافرن أد أسن د يقّيل غ وسّان.

-5-

ⵄⴰⴱⴷⵓⵍⵍⴰⵀ ⵍⴰⵎⵉⵏⵉ
ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ
عبد اللّه لميني

ولد في سنة 1950 والتحق بالمدرسة العصرية ولكن لم يدم فيها إلا أربع سنوات، قطنت أسرته في الدار البيضاء وكان يتردد على بلدته ئداوزدّوت في العطل المدرسية، وقد تأثر بأكابر شعراء قبيلته من أمثال محند باخشين وأولهاشم وغيرهم، وعايش عددا من المولعين بأحواش في بلدته وفيمدينة الدار البيضاء، فوجد أسايس مرتعا لعشاق الفنّ الذين لا تستهويهم المادة وإنما يخرجون إلى ميدان الإنشاد والأداء الرفيع بغيرتهم على تراثهم، وفي مرحلة لاحقة وهو يمارس مهنة التجارة عاشر معظم الشعراء وعلى رأسهم الحاج ئحيا بوقدير الذي أصدر معه شريطا حواريا، وقد ساجل معظم شعراء سوس، يمتاز شعره بالرصانة والصراحة، وهو أشد شغفا بفنون أحواش، ولولا إصابته في حادثة سنة 2004 لكان له شأن آخر في دعم هذا الفنّ، ولكنه أرغم منذ ذلك الحين على المكوث بجانب أولاده في الدار البيضاء، وهو الآن في إطار إعداد ديوان شعري.

ⴰⵍⵍ ⵉⴳⵃ ⵏⴽ

ⴰ ⵏⵓⵍⵍ ⵉⴳⵃ ⵉⵏⵓ ⵏⴰⴷⴷ ⴰⵙ ⴰ ⵓⵔ ⵏⵙⴰⵡⵍ
ⴰⵊⵊⴰⵜ ⴰⵏⵖ ⵓⴽⴰⵏ ⵜⴰⵊⵊⵉⵎ ⵉⵙⵎⵓⵎⵎⵓⵛⵏ
ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵓⵃⵔⴰⵏ ⵏ ⵓⵙⵏⴳⴰⵔ ⵉⵙ ⴽⴰ ⵏⵓⵢⵍ
ⴳⴰⵔ ⵉⵃⴰⵙⵙⵏ ⴰ ⵛⴰⵣⵔⴳ ⴰ ⴽ ⵉⵜⵜⵙⵓⵜⵓⵍⵏ
ⴰ ⵛⴰⵏ ⵉⵥⴹⴰⵏ ⵉⵃⵍ ⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵜⴰⵟⵟⵓⵔⵜ
ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⵃⵉⵍⵏ ⵉ ⵍⴰⵥ ⵉⵏⵓ ⵉⵔⵓⴽⵓⵜⵏ
ⴰⴷ ⴷ ⵉⵣⵣⵓⴳⵯⵣ ⵇⴱⴱⵉ ⵖ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ ⵜⵉⵃⴰⵡⵜ
ⵉⵎⵎⴰ ⵜⵉⵏ ⵡⴰⴽⴰⵍ ⴽⵉⴳⴰⵏ ⵉⵙ ⵏⵙⴰⵏⵜ
ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵜ ⵉⴷ ⵓⵔ ⵓⵜⵏ ⵉⵎⴰⵡⵏ
ⵏⴳⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵏⵓ ⴷ ⵡⴰⴳⵉⵡⵏ ⵖ ⵜⴰⵎⴰ ⵏⵙ
ⵉⵖ ⵉⴳⴳⵓⵣ ⵛⴰⵏ ⵉⵖⵍⵉ ⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵡⵉⵙⵙ ⵙⵉⵏ
ⴰⵎⴰⴷⵉⵔ ⵀⴰ ⵏⵏ ⴰⵖⵇⵓⴹ ⵏⵖ ⴰⵃ ⵉⵛ(ⵉ) ⵜⵜⵔⵙⵏ
ⵉⵖ ⵎⴳⵔⵖ ⵏⴰⵙⵉ ⵜ ⵏⴷⴷⵓ ⴰⵔ ⵙⵔⵡⴰⵜⵖ
ⵎⴰⴷ ⴰⵖ ⵉⴽⵯⵜⵉⵏ ⵓⵔ ⴷ ⵓⴳⴳⵯⵉⵏ ⵉⵜⵜⵓ ⴰⵏⵖ
ⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⴷⵎ ⵏⵖ ⵓⵔ ⵉⵛ(ⵉ) ⴳⵉⵏ ⴰ ⵜ ⵏⵙⵙⵏⵜⵍ
ⴰⵃⵓⵙ ⵏⵖ ⵓⵔ ⴰⵖ ⵉⴳⵉ ⵡⵉⵏ ⵜⵓⴽⴽⵉⵎⵜ
ⵉⵖ ⵉⵛ(ⵉ) ⵜⵜ ⵉⵙⵙⵖⵓⵛ ⴱⵣⵣⵉⵣⵣ ⵔⴰ ⵜⵏ ⵏⴰⵔⵎ
ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵏⴽⵚⵓⴹ ⵍⴳⵉⴷ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⵙⵙⴰⵙⵜ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰⴷ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵢⵔⴰ ⴷ ⵉⵍⵓⵍⵏ ⴰⵜⵜⵓⵛⵏ
ⴰ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⴷ ⵓⴳⵯⵎⵏ ⵍⵅⵉⵏ ⵓⵔⵜⴰ ⵜ ⵏⵙⵙⵏ
ⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵉⴳⵃ ⵉⵏⵓ ⴽⴰ (ⴰ)ⴷ ⴰⵖ ⵉⵙⵙⵇⴳⴰⵚⵏ
ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⴰ ⴷⴷⵍⵍ ⴽⴰ ⴳⵉⵙ ⵓⵔ ⵎⵛⴰⵔⵖ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⵎⵟⴰⵔ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵏⵇⵥⴰ ⵔⴰ ⵏⴰⵍⵍ ⵉⴳⵃ
ⵜⴰⵖⵓⵛⵛⵉⵜ ⵛⴰⵏ ⴰⵙ ⵉⴳⴰⵏ ⵉⵟⵟⵏ ⵉⵎⵉ ⵏⵙ
ⵎⵟⴰⵔ ⴰ ⵜⵏ ⵓⴽⴰⵏ ⵍⴷⴷⵉⵏ ⵓⵔ ⵉⵙⴰⵡⵍ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵏⵏ ⵏⵙⵎⵓⵟⵟⵓⵍ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵜⴰⵞⵞⵎⵅⵜ

ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵉⵙⴼⵉⵡ ⵉ (ⵓ)ⵎⵏⵉⴷ ⵏⵙ ⵉⵜⵜⵓ ⵡⵉⵏⵏⵡ

ⴰⵏⵓⴹ ⵉⵔⵖⴰ ⴷⴰⵅ ⴽⵉⴳⴰⵏ ⴰ ⵢⵙ ⵏⵃⵉⵢⵢⵍ

ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵙⴳⵯⵎⵎⵉⵏ ⵜⴰⴳⵯⵔⵙⴰ ⵏⵙ ⵉⵏⵏⵓⵍⵎ

ⴰⵔ ⵓⴽⴰⵏ ⵙⵓⵍ ⵏⵙⵙⵚⵓⴹ ⵉ ⵍⴽⵉⵔ ⵙ ⵉⴼⴰⵙⵙⵏ

ⵉⴱⴱⵉ ⴰⵏⵖ ⵓⵇⵛⵛⴰⴱ ⵏⵔⴰ (ⴰ) ⵜ ⵏⵙⵏⴼⵍ

ⵜⵙⵙⵏⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵎⴰⴷ ⴰⵏⵖ ⵉⴱⴱⵉⵏ ⵉⵅⴼ ⵉⵙⵔⵙ ⵜ

ⵡⵉⵍⵍⵉ ⴰⵏⵖ ⵉⵏⵏⴰⵏ ⴱⵉⴷⴷⴰⵜ ⴰⵅ ⴽⴰ ⵏⵍⴽⵎ

ⴰⵖⴰⵔ ⵉⵖⵍⵉ ⴷ ⵍⴱⵕⵊ ⵓⵔ ⴰⵖ ⵙⵓⵍ ⵉⵙⵙⵏ

ⵓⵍⴰ ⵙⵙⵏⵖ ⵎⴰⵏ ⵍⴱⴰⴱ ⴰ ⵔⴰ ⵏⵏ ⵙⵔⵙⵏ ⴽⴽⵖ

ⵉⴳⴳⵉ ⵏ ⵓⴽⵯⴼⴰⴼ ⴰⵖ ⴰⴷ ⵉⴽⴽⴰⵜ ⵙ ⵉⴼⴰⵙⵙⵏ

ⵖ ⴰⵙⵙ ⵍⵍⵉ ⵖ ⴳⵉⴽⵉ ⵍⵉⴷⴰⵎ ⵉⵣⵣⵖⵕ ⵙⵙⵏⵖ

ⵉⵔⴰ (ⴰ) ⵙⵓⵍ ⴷ ⵉⴳⴳⵓⵣ ⵏⴰⴳⵯⵉ ⵍⴰⵀⵛⵔⵜ ⵏⵙ.

ألّ يخف نك

أ نولّ يخف ينو نادّ أس أ ور نساول
أجّات أنغ وكان تاجّيم يسمومّوين
ور يلّي وفران ن وسنڭار يس كا نوحل
ڭار يفاسّن أ يازرڭ أ ك يتّسوتولن
أ يان يڑضان يفل د وكان تاقّورت
ور جّون فيلن ي لاڑ ينو يروكوتن
أد د يزّوكُّز ڔبّي غ يڭنوان تيفاوت
يمّا تين واكال كيڭان يس نسانت
أمازيغ ماني غ ت يد ور وتن يماون
نڭا زون د أنو د واڭيون غ تاما نس
يغ يڭّوز يان يغلي د وكان ويسّ سين
أمادير ها نّ أغڔوض نغ أف يي(ي) تّرسن
يغ مڭّرغ ناسي ت ندّو أر سرواتغ
ماد أغ يكُتين ور د وڭّين يتّو أنغ
أ ها نّ ودم نغ ور يي(ي) ڭين أ ت نسّنتل
أفوس نغ ور أغ يڭّي وين توكّيمت
يغ يي(ي) تّ يسّغوي بزّيزّ را تن نارم
ور أكّ نكصوض لڭيد ولا تاسّاست
غ أسّ أد ويلّي حرا د يلولن أتّوين
أ ماني غ د وڭُمن لعين ورتا ت نسّن
أ ها نّ يخف ينو كا (أ)د أغ يسّڔخاصن
تامازيغت أ دّلّ كا ڭيس ور ميارغ
ها نّ مقار كولّو نڔڑا را نالّ يخف
تاغوييت يان أس يڭان يقّن يمي نس

مقار أ تن وكان لدّين ور يساول
وانّا نّ نسموقّول زو(ن) د وكان تاشّمعت
أر يتّيسفيو ي (و)منيد نس يتّو وينّو
أنوض يرغا داخ كيڭان أ يس نحييل
أ يان يسكّمّين تاڭرسا نس ينّوم
أر وكان سول نسّصوض ي لكير س يفاسّن
يبّي أنغ وقشّاب نرا (أ) ت نسنفل
تسّنت أكّ ماد أنغ يبّين يخف يسرس ت
ويلّي أنغ ينّان بيدّات أخ كا نلكم
أغار يغلي د لبرج ور أغ سول يسّن
ولا سّنغ مان لباب أ را نّ سرسن كّغ
يڭّي ن وكفاف أغ أد يكّات س يفاسّن
غ أسّ لّي غ ڭيكي ليدام يژّغر سرنغ
يرا (أ) سول د يڭّوز ناڭّي لاعشرت نس.

****

-6-

ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⵓⴱⵍⵍⴰ

ⴰⵣⵔⴰ- ⵜⴰⵚⴰ

ابراهيم أوبلاّ

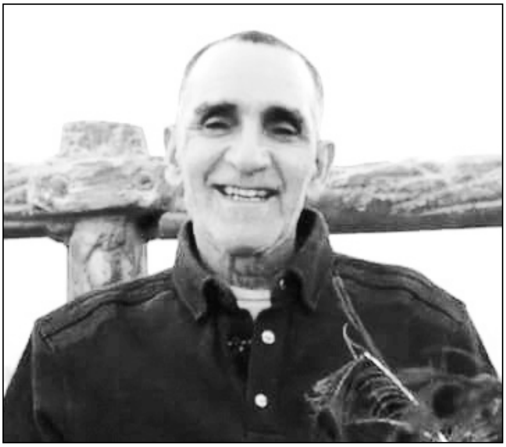

ولد في 01/06/1950 بقرية أكادير الهناء بقبيلة طاطا، في أسرة علمية متدينة، التحق بمسجد القرية ثم بالمدرسة المحلية، وفي سنة 1963 التحق بالمعهد الإسلامي بتاليوين ثم بمعهد محمد الخامس بتارودانت، حصل على الإجازة في الحقوق سنة 1971، وكان عازما على مواصلة دراساته العليا في القانون لكن الأقدار وقفت في وجهه سنة 1978 فعاد إلى بلدته مشتغلا في مهنة التعليم، تأثر منذ صباه بالجو الفنّي ببلدته وبكبار الشعراء من أمثل بن زيدا وبوسلام ؤ عمر، ولمّا اغلق أمامه أبواب الدراسات العليا اتجه نحو توثيق التراث الشفوي بمنطقة الأطلس الصغير، ولم يدخل ميدان الشعر الحواري إلا في سنة 1981.

وقد ساعده تواجده بالمعهد والجامعة على الانتظام في الحركة الثقافية الأمازيغية، وأسس جمعية أفرا للثقافة، وفرع الجمعية المغربية للبحث والتبادل الثقافي بطاطا، كما انتخب عضوا في جمعية الجامعة الصيفية بأكادير، أصدر ديوانه الأول سنة 1997 كما أصدر بعد ذلك كتاب «أمارك ن ؤسايس» حول فنون أحواش وكتاب «تيمنضوين» في عروض شعر أسايس، انتمى إلى مجلس جمعية «تماريرن» ثم بعد ذلك إلى الجمعية المغربية لشعراء وشاعرات أسايس التي تحولت إلى رابطة شعراء وشاعرات أسايس التييشغل فيها مهمة الكاتب.

ⵜⴰⵎⵀⵉⴼⴰⵜ

ⴰⵏⴰⵙ ⵏ ⵜⵏⴹⴹⴰⵎⵜ ⴰⵔ ⴰⵏⵅ ⵉⵙⵙⵖⵕⴰⵅ
ⵏⴼⵔⴰ ⵍ ⵉ ⵜⴰⵏⵉⵅⵜ ⵏⵙ ⴰⵔ ⴽⴰ ⵜⵚⵚⴰⴹ
ⴰ ⵥⵖ ⵅⵉⴽ ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵎⵀⴰⴼⴰⵏ ⵖ ⵓⵥⵎⵥ ⴰⴷ
ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⵜ ⵢⵉⵡⵉⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⵙ ⵉⴷⴷ(ⴰ)
ⵉⵥ ⴷ ⴰ ⵢⴰⴼⵅⴰⵏ ⵓⵔⵜⴰ ⵊⵊⵓ(ⵏ) ⵜⵅⵉⵜ ⴰⴱⴰⵖ
ⵥⵃⵎⴰ ⵉⵣⵕⵉ ⵍⴰ ⵏⴽ ⵓⵔ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵎⵏⵉⴷ
ⵎⵏⵛⴽ ⵏ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵍ ⵉⵣⵕⴰ ⴽⴽⴰⵏ ⵜⵉⵎⵅⵅⵕⴰⴹ
ⵎⵏⵛⴽ ⵏ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵢⵓⵎⵙ ⵓⴽⵓⴽⵎⵓ ⵢⴰⴹⵓ ⴷ
ⵉⵎⵔⵉⵔⵉ ⴰ ⵜⵉⴼⵀⵓⵜ ⴰⵔ ⵜ ⵏⵜⵜⵎⵏⵉⴷ
ⵓⵔ ⴰⵔ ⵉⴽⴽⵔⴼ ⴰⴼⵅⴰⵏ ⴰⵍ ⵖ ⵉⵀⵀⴰ ⵥⵥⵔⴱ
ⵏⵖⵔⴰ ⴽⵓⵀⵀⵓ ⵜⵉⵇⴱⵓⵔⵉⵏ ⵏⴰⵙⵉ ⵜⵏⵜ ⴷ
ⴰ ⵜⵏⵜ ⵏⵎⵎⴰⵀ ⵉ ⵓⵏⴰⴼⴰⵀ ⴷ ⵓⵏⴼⵔⵓⵖ
ⵉⵖ ⵏⵓⴼⴰ ⴰⴷ ⴰⵏⵖ ⵉⵙⵙⴼⵀⴷ ⵙ ⵓⵎⵣⵣⵓⵖ
ⴰⵢⵜ ⵓⵔⴰⵔ ⴰ ⵢⴰⵢⵜ ⵓⵎⴰⵔⵅ ⴰⵎⴰⵥⵉⵖ
ⵎⴰ ⵖ ⵜⵀⵀⴰⵎ ⴰⵜⵉ ⵉⵙⵓⵢⴰⵙ ⵏ ⵉⵎⵓⵔⵉⵅ
ⵜⵉⵥⵥⵀⴰ ⴰ ⵅⵉⵙⵏ ⵙⵎⵓⵇⵀⵅ ⵏⵉⵡⵔⵔⵉ ⴷ
ⵜⵉⴼⴷⵏⵜ ⵓⵀⴰ ⴷⴷⵓ ⵓⴹⴰⵕ ⵓⵀⴰ ⴰⵡⵔⵥ
ⵓⵔ ⵉ(ⵢⵉ) ⵣⵣⵉⴹⵕⵏ ⵉ ⵓⵥⵢⵢⵉⵔ ⴷ ⵓⴱⴰⵀⵀⴰⵖ
ⴷⵓⵢⵏ ⵉⵅⵓⵢⵢⴰ ⵖⴰⵀⵍ ⵉⵙ ⵉⵔⵅⴰ ⵓⴱⵔⵉⴷ
ⵖⴰⵀⵍ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⵏ ⵜⵅⵓⵔⵉ ⵉⵙ ⵉⵅ ⴰⵥⴰⵖⴰⵔ
ⵖⴰⵀⵍ ⵓⵔⵖ ⵏ ⵓⵔⴰⵔⵏ ⵉⵙ ⵉⵅ ⵉⴱⵓⴷⴷⴰⵥ
ⵡⴰⵍⴰ ⵢⵓⵙⵉⵏ ⵜⴰⵀⵖⴰⵜ ⴰⵔ ⵉⵙⵎⵔⴰⵅ
ⵎⴰ ⵉⵅⴰ ⵖⴰⵢⴰⴷ ⵉⴽⵛⵎⵏ ⴰⵔ ⴰⵙⴰⵔⴰⵅ ?
ⵎⴰ ⵉⵅⴰ ⵖⴰⵢⴰⴷ ⵉⵜⵜⵢⴰⵔⴰⵏ ⵖ ⵀⴽⴰⵖⵉⴹ ?
ⵢⵓⴼ ⴰ ⵏⵇⵇⵏ ⵉⵎⵉ ⵏⵖ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵏⵉⵏⵉ ⵢⴰⵟ
ⵢⵓⴼ ⴰ ⵏⵇⵇⵏ ⵜⵉⴹⵜ ⵏⵖ ⵓⵀⴰ ⴰⵎⵣⵣⵓⵖ
ⴰⴷ ⵓⵔ ⵜⵜⵎⵕⵃⴰⵢⵅ ⴰⵡⵉⵅ ⴰⵏⴽⴽⵉⴷ.

تامليفات

أناس ن تنضّامت أر أنخ يسّغراڭ
نفرا نّ ي تانيڭت نس أر كا تصّاض
أ زغ ڭيك أ يان يملافان غ وزمز أد
ور يسّن ماني ت ييوين ماني س يدّ(أ)
يز د أ يافڭان ورتا جّو(ن) تڭيت أباغ
زعما يژري نّا نك ور أر يتّمنيد
منشك ن يان أ نّ يژرا كّان تيمڭّراض
منشك ن يان أ يومس وكوكمو ياضو د
يمريري أ تيفلوت أر ت نتّمنيد
ور أر يكّرف أفڭان أنّ غ يلّا زّرب
نغرا كولّو تيقبورين ناسي تنت د
أ تنت نمّال ي ونافال د ونفروغ
يغ نوفا أد أنغ يسّفلد س ومژّوغ
أيت ورار أ يايت ومارڭ أمازيغ
ما غ تلّام أتي يسوياس ن يموريڭ
تيزّلا أ ڭيسن سموقلخ نيورّي د
تيفدنت ولا دّو وضار ولا أورز
ور ي(يي) ژّيضرن ي وزيير د وبالّاغ
دوين يڭّويا غالن يس يرخا وبريد
غالن أغاراس ن تڭوري يس يڭ أزاغار
غالن ورغ ن ورارن يس يڭ يبودّاز
وانّا يوسين تالغات أر يسمراڭ
ما يڭا غاياد يكشمن أر أساراڭ ؟
ما يڭا غاياد يتّياران غ لكاغيض ؟
يوف أ نقّن يمي نغ أد ور نيني ياه
يوف أ نقّن تيضت نغ ولا أمژّوغ
أد ور تمرعايخ أويخ أنكّيد.

****

-7-

ⵍⵀⴰⵛⵎ ⴰⵢⵜ ⵡⴰⵃⵎⴰⵏ

ⴰⵣⵣⴰ ⵏ ⵉⵅⵉⵔⵏ

الهاشم آيت واحمان

ولد في أقا يكَيرن بجماعة أقا يغان في سنة 1961، ومرّ على مسجد القرية قبل أن يلج المدرسة العصرية، إلى أن وصل إلى الدراسة الإعدادية، وقد وجد في قريته البيئة الملائمة لتتلمذ فنون أحواش إذ أدرك ثلة من عباقرة هذا الفنّ في منطقة الفايجة، واستهواه الشعر منذ صباه، حيث أخذ الحروف الأولى على يد شعراء أفذاذ بقريته والقرى المجاورة من أمثال باحسين ؤهمو ومولاي محمد أولحوسين والحاج إبراهيم وشعراء لقسبت ن وانكَارف كأحمد ؤلحبيب وسي أحمد ؤلحامش، دخل إلى أسايس في سنّ مبكرة، وكانت أمنيته هي أن ينفتح على ماوراء قريته وقد تأتى له ذلك حينما تعرف على شعراء في طاطا من أمثال إبراهيم أوبلا، وقد كانت كلمة الشعر طوع بنانه فساجل كل من يلتقي معه وهو المتميّز بشجاه وصوته الجذّاب، كان من بين أصدقائه الذين ساجلهم بكل الطرق الشاعر عبد الله الحافظي الذي أنتج معه عدة حواريات، الشاعر الهاشم أيت واحمان يعمل الآن كموظف جماعي بجماعة ابن يعقوب.

ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ

ⵔⵉⴳ ⴰ ⵏⵏ ⴼⵍⵍⴰⴽ ⵏⵙⵍⵍⵎ ⴰ ⵢⴰⵀⵡⴰⵡⵉ
ⵙ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵉⵏⵓ ⵢⴰⵖ ⴰⵏⴳ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵏⵏⵓⵏ
ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ ⵏ ⵓⴼⵓⵙ ⵉⵖ ⵔⴰ ⵢⴰⵎⵥ ⴰⵍⵍⵓⵏ
ⵓⵍⴰ ⵉⵖ ⵉⵙⴰⵡⵍ ⴳⴰⵏⴳⴰ ⵏ ⵓⵀⵡⴰⵡⵉ
ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ ⵏ ⵜⵡⵏⵣⴰ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⵖⵔⵉⵜ ⵏⵙ
ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ ⵏ ⵜⵍⴰⵍⴰⵢⵜ ⵉⵖ ⵉⵏⴷⵎ ⵢⴰⵏ
ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ ⵏⵏⵓⵏ ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⴷ ⵓⵔ ⴱⴰⵙⵍⵏ
ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵉⴱⵏⴰ ⵜⵉⵇⴱⵉⵍⵉⵏ
ⵜⴰⵙⵓⵜ ⵏ ⵜⴰⵙⵓⵜ ⵉⴳ ⵡⵉⵏⵓ ⴷ ⵡⵉⵏⵏⵓⵏ
ⵢⵓⵔⴰ ⴷ ⴼⵍⵍⴰⴽ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵡⵉⵙⵙ ⵙⴰ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ
ⴰⵡⴰⵍ ⵏ ⵉⵙⵓⵢⴰⵙ ⴰⴷ ⴳⵏ ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ ⵏⴽ
ⴰⴷ ⴰⵡⵏ ⵉⵙⵍⵍⴰ ⵢⴰⵏ ⵔⴰ ⵢⴰⴳⵯⵥ ⴰⵡⴰⵍ
ⴰ ⵢⴰⴼⴳⴰⵏ ⴰⵡⴰⵍ ⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⵓⴷⵎ ⵏⵏⵓⵏ
ⵢⴰⵏ ⵉⵃⵙⴰⵏ ⴰⵡⴰⵍ ⵏⵙ ⵉⴳ ⴰⵎⵖⴰⵔ ⵏⵙ
ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⵙ ⵉⵜⵜⵎⵖⵓⵔ ⵢⴰⵏ ⵉⴳⵣⵍ ⵙⵔⵙ
ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵓⵔ ⴳⵉⵏ ⵉ ⵜⴷⴰⵍⵍⵓⵜ
ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ ⴰⵙⴰⵢⵙ ⵉⴹⵕ ⵖ ⵡⴰⵟⵟⴰⵏ
ⵉⴳⴰⵏ ⵡⴰⵔ ⵉⵙⴰⴼⴰⵔⵏ ⴰⵎⴰⵔⴳ ⵉⵜⵜⵓⵜ
ⵉⵜⵜⵓⵜ ⵢⴰⴷ ⵏⵜⵜⵓⵜ ⵏⵙⵙⵏ ⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⴷ ⵏⵜⵜⵓⵜ
ⴰ ⴽⵯⵏⵜ ⴽⴰ ⵉⵜⵜⵓ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵜⵉⵕⵥⵉⵡⵉⵏ
ⵉⵊⵊⵉⵏ ⴼ ⵍⴱⴹⵍⴰⵏ ⵓⵔ ⵜⵏⵜ ⵉⵊⴱⵕ ⵢⴰⵏ.

لحـورما

ريخ أ نّ فلّاك نسلّم أ ياهواوي
س ومارڭ ينو ياغ أنخ ومارڭ نّون
لحوڕما ن وفوس يغ را يامژ ألّون
ولا يغ يساول ڭانڭا ن وهواوي
لحوڕما ن تونزا ولا تاغريت نس
لحوڕما ن تلالايت يغ يندم يان
لحوڕما نّون أمارڭ أد ور باسلن
أمارڭ أمازيغ يينا تيقبيلين
تاسوت ن تاسوت يڭ وينو د وينّون
يورا د فلّاك ڕبّي غ ويسّ سا يڭنوان
أوال ن يسوياس أد ڭن تابرات نك
أد أون يسلّا يان را ياڭُژ أوال
أ يافڭان أوال أ يڭان ودم نّون
يان يحسان أوال نس يڭ أمغار نس
أمارڭ أس يتّمغور يان يڭزل سرس
أمارڭ أمازيغ ور ڭين ي تدالّوت
يالّاه يالّاه أسايس يضڕ غ واطّان
يڭان وار يسافارن أمارڭ يتّوت
يتّوت ياد نتّوت نسّن يلّي غ د نتّوت
أ كُنت كا يتّو يان أ تيڕژيوين
يجّين ف لبضلان ور تنت يجبڕ يان.

-8-

ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⵄⵍⵍⴰ

ⵉⵏⴷⵓⵣⴰⵍ

ابراهيم علاّ

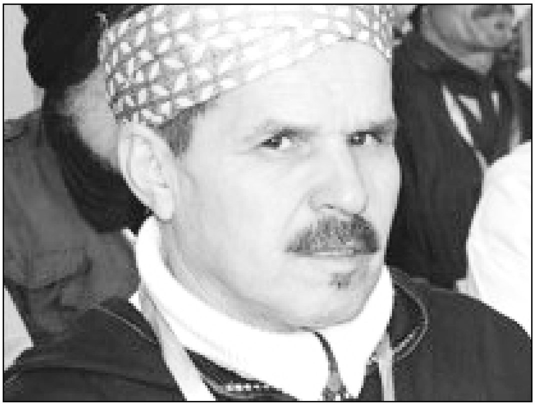

ولد الشاعـر المعروف بإبراهيم أوزال في 1963 في قرية تين تمازيرت جماعة أمالو-فرقة ئلمكرت- قبيلة ئندوزال، التحق بالمسجد وتعلم القراءة والكتابة وحفظ ما تيسّر من القرآن، ثم التحق بالخدمات التجارية بالمدينة، عشق فن أحواش منذ صباه، وبدأ يستمع إلى الشعر الحواري من أفواه شعراء مشهورين في الأطلس الصغير أمثال عبد الرحمن ؤدّو وساون وسيدي بورح و ؤهمو نايت ݣاح، وأخرين، وابتداء من سنة 1980 بدأ في اقتحام حواريات درست وأهناقار، وقد قابل جلّ الشعراء المعروفين وتجول في جميع القبائل والمدن، شارك بعد من القصائد في الدواوين التي أصدرها الأستاذ محمد مستاوي، كما سجّل حوالي أربعة أشرطة حوارية، الشاعر إبراهيم أوزال من الشعراء المجدين في الصياغة الشعرية الرصينة، وهو الآن عضو مستشار في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⴷ

ⴰⵃⵃ ⴰ ⵜⴰⴳⵓⵍⵉ ⵜⵔⴰ ⴰⵏⵖ ⵍⵀⵉⴼⴰⴷ
ⴽⵓⵍⵍ(ⵓ) ⵎⴰ ⵉⵣⴹⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵀⵉⵀ ⵡⴰⵍⴰⴱⵓⴷⴷ
ⴰ ⵢⴰⴷ ⵏⵏⵉⵅ ⴰ ⵏⵀⵕⵃ ⵉⵙ ⴷⴰⴳ ⵏⵇⵇⵏⴹ
ⴽⵓⵍⵍ(ⵓ) ⵎⴰ ⵀ ⵙⵎⵓⵎⵎⵉⵖ ⵓⵔ ⴰ ⵢⵖ ⵉⵙⵙⵀⵍⵉⴷ
ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵣⵏⵣⵓⵎ ⴰⴷ ⴳⵉⵖ ⵉⵖ ⵏⵉⵜ ⵏⴱⵉⴷⴷ
ⵉⵍⵙ ⵉⵏⵓ ⴹⵕⵏ ⵉⵣⵕⵉ ⴽⴰ ⵙ ⵏⵜⵜⵎⵏⵉⴷ
ⵓⵔ ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⴰⵎⵏⵅ ⵜⵉⵡⵓⵔⴳⴰ ⵏ ⵢⵉⴹ
ⴰⵡⴰⵍ ⵉⴳⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵍⴱⴰⵕⵓⴹ
ⵢⴰ(ⵏ) ⵉⵖⵓⵢⵏ ⵣⵥⵏⴷ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵉⵣⵥⵔⵓⴱ ⵓⴹⴰⴹ
ⵍⵉⵛⴰⵕⵜ ⵖⵉⵏⵏⴰ ⵙ ⵜⵏⵜ ⵉⵎⴷⵉ ⵢⵓⵊⴰⴷ
ⵉⵏⵏⴰ ⵙ ⵉⵔⴰ ⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵢⵓⵜ ⵉⵣⵣⴳⵓ ⵍⵃⵙⴰⴱ
ⵏⵜⵜⴰ(ⵏ) ⴰⵖ ⵍⵍⴰⵏ ⵉⵔⴽⴰⵏ ⵓⵔ ⴷ ⴰⵙⴳⴳⵯⵔⴷ
ⵉⵖ ⵜⵉ ⵜⵎⵍⵉⵜ ⵉ ⴽⵔⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⴱⵓⴽⴰⴹ
ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⵙⵎⵓⵇⵇⵓⵍⵏ ⵉⵙⵙⵉⵏⵀ ⴰⵙ ⴰⵡⵔⵣ
ⵡⴰⵢⵍⵉ ⵓⵃⴷⵉ ⵎⴰⵜⵜⴰ ⵙⵙⴰⵄⵜ ⴰⴷ ⵍⴽⵎⵖ
ⵉⴱⵍⵉⵙ ⴽⵛⵎⵏ ⵉⵍⵎⵎⴰ ⵙ ⵜⵉⵎⵣⴳⵉⴷ
ⵉⵙⵎⴰⵖ ⵍⵎⵓⴷⴷⵏ ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴷ ⵍⵀⵇⵇⵉⴼ
ⵉⴽⵛⵎ ⵃⵜⵜⴰ ⵙ ⵓⵏⵡⴰⵍ ⵉⴽⴽⵙ ⴰⵙ ⵍⴱⴰⴱ
ⴽⵓⵍⵏ(ⵓ) ⵎⴰ ⵉⵃⴹⴰⵏ ⵉⴹⵉ ⵜ ⵉⴷ ⵙ ⵓⵙⴰⵔⴰⴳ
ⵏⴳⵔ ⵍⵀⴰⵎⵉⵍⴰ ⴷ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⴰⵖ ⵉⵜⵜⵏⵥⵣⴰⴼ
ⵉⴱⴹⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵍⴰⵃⴱⴰⴱ ⴰⵎⵔ ⵙ ⵟⵟⵎⵄ
ⵢⴰⵏ ⴷⴰⵔ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵏⵙ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵉⵜⵜⵎⵉⵢⵢⴰⵣ
ⴰ ⵓⵔ ⵉⵎⵎⴰⵍ ⵉ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵏⵙ ⵖⴰⵔ ⵟⵟⵎⵄ
ⵉⵎⵎⴰⵖ ⵓⴽⴰⵏ ⴰⴷ ⴰⵙ ⵉⵎⵎⴰⵍ ⵍⵇⵏⵄ
ⴰⵛⴽⵓ(ⵏ) ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵓⵔ ⴷⴰⵡⵎⵏⵜ ⴰ ⵍⵃⵙⴰⴱ.

دّونيت أد

أحّ أ تاڭولي ترا أنغ لجيهاد
كُولّ ما يژضا يان يفيف والابودّ
أ ياد نّيخ أ نفرٍح يس داخ نقّنض
كُولّ ما ف سمومّيغ ور أ يغ يسّفليد
زون د أژنژوم أد ڭيغ يغ نيت نبيدّ
يلس ينو ضرٍن يژرٍي كا س نتّمنيد
ور را سول أمنخ تيوُورڭا ن ييض
أوال يڭا زون د وكان لبارٍوض
يان يغوين زّند أد ور يزّروب وضاض
ليشارٍت غينّا س تنت يمدي يوجاد
ينّا س يرا أ ت ينّ يوت يزّڭو لحساب
نتّان أغ لّان يركان ور د أسكُّرد
يغ تي تمليت ي كـرا زون د أبوكاض
ور أ ت سموقّولن يسّينف أس أورز
وايلي وحدي ماتّا سّاعت أد لكمغ
يبليس كشمن يلمّا س تيمزڭيد
يسماغ لمودّن نتّان د لفقّيه
يكشم حتّا س ونوال يكّس أس لباب
كُولّ ما يحضان يضي ت يد س وساراڭ
نڭر لفاميلا د تاڭُمات أغ يتّنزّاه
يبضا كولّو لاحباب أمر س طّمع
يان دار لعاقل نس أر يسّن يتّمييز
أ ور يمّال ي تودرت نس غار طّمع
يمّاغ وكان أد أس يمّال لقنع
أشكون دّونيت ور داومنت أ لحباب.

-9-

ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ ⴰⴳⵯⵔⵔⴰⵎ
ⴰⵀⵔⴰ – ⵜⴰⵟⴰ

الحسين أڭـرام

ولد في أكَادير الهنا بطاطا في سنة 1951، وبعد مروره بمسجد القرية التحق بالمدرسة العصرية بطاطا، لكنه لم يكمل مشواره الدراسي فيها، عشق منذ نعومة أظفاره شعر أسايس، وكان أبوه سيدي محند من أبرز رواة هذا الشعر بالمنطقة، وفي منتصف السبعينات دخل ميدان الإنشاد والحوار مع أكابر شعراء طاطا من أمثال رمضان أوعلا وحجوب ؤ طّاييب وييدر وؤعيلاّل وسييا حماد، تجوّل في مختلف مناطق سوس، وكان سريع البديهة غزير النظم فلا يقابلك إلاّ وفي جعبته إبداع في الحوار كما كان لذوع اللسان، متمكّنا من اللغة وأساليبها، اشتغل في تربية المواشي كما اشتغل مدة طويلة كجزّار، وفي الآونة الأخيرة استضفه المعهد الملكي للثقافة الأمازيغية بالرباط في إقامة الفنانين الأمازيغيين، وطبع له ديوان شعري سنة 2015.

ⵉⴳⵓⵢⵎⵔⴰ

ⴼⴰ ⵏⵏ ⵉⵅⵔⵔⵀ ⵓⵊⴷⴷⵉⴳ ⴰ ⵜⵉⵣⵣⵡⴰ
ⵡⴰ ⵇⵇⵏⵄⴰⵎⵜ ⵓⴽⴰⵏ ⵖ ⵉⵊⴰⵕⵉⵀⵏ
ⴰ ⵊⵊⵓⵄ ⴰⴽⵕⴰⵕⴰⵟ ⴰ ⴳⵉⵙⵏ ⵥⵕⵉⵅ
ⵎⵎⵓⵍⵍⵉⵢⴰⵎⵜ ⵍⴱⵔⵔⴰⴷ ⵓⵍⴰ ⵍⴽⴰⵙ
ⴰ ⴱⵓ ⴹⴹⴰⴱⵍⴰ ⴷ ⵉⵙ ⵢⴰⴷⴷⴰ ⵢⵓⵃⵍ
ⵉⴽⴽⵉⵙ ⴰⵙ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵡⴰⴳⴳⵓ ⴰⵍⵍⵏ
ⵉⵖ ⵓⴽⴰⵏ ⵀⵓⴽⴽⴰⵏ ⵉⵖ ⵓⵔ ⵉⵄⵎⵉ
ⵉⵙⵙⴰⵏ ⵉⵙ ⴳⴰⵏ ⵖ ⵡⵉⴷⴰ ⵚⵍⵃⵏⵉⵏ
ⴰⴷ ⴷ ⵏⵙⵉⵙⵀⵉⵡ ⴰ ⵜⴰⴳⵓⵔⵉ ⵏⵅ
ⵉⴽⵍⵍⵉ ⵉⴳ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ ⵉⵏⵉⵅ ⵜ
ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵍ ⵏ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ ⵕⵎⵉⵅ ⵜ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⵍⵍⵉ ⴳⴰⵏ ⵡⵉⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⴽⴽⵉⵅ ⵜ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰⴷ ⵖ ⴳⴰⵏ ⴹⴹⵎⵄ ⵏⵚⴰⵎⵃ ⴰⵙ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵜⵏ ⵉⵔⴰⵏ ⵉⵄⵎⵎⵕ ⵜⵏ
ⴰ ⵢⴰⴽ ⵍⵄⴷⴰⵡⴰⵜ ⴰⴷ ⴰⵡⵏ ⵙⴽⵔⵏ
ⴰ ⵏⴰⵀ ⵉⵟⴳⴰⵎ ⴰ ⵢⴰⴷ ⴰ ⵎⵉⴷⴷⵏ
ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵙ ⴰⵅ ⵏⵏⴰⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵃⵕⵛⵏ
ⴰ ⵍⵓⴹⵉⵍ ⵖ ⵉⵖⵔⵎ ⴰⵖ ⵎⵎⴰⵖⵏ
ⴰ ⵎⴰⴷ ⴷⴰ ⵜⵅⴰⵙⴰⵎⵏ ⴳⴳⵓⵎⵎⵉⵅ ⵜ
ⵓⵔ ⵉⴳ ⴰⵕⵊⴰⵍ ⵏⵙ ⵖ ⵉⵖⴰⵔⴰⵙⵏ
ⵓⵍⴰ ⵛⵔⴽⵏ ⵉⵡⵜⵜⴰ ⵖ ⵉⴽⴰⵍⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵖⴰⵢⴰⴷ ⵏ ⵍⵓⵇⵜ
ⵔⴰⴷ ⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵜⴰⵟⵓ ⵖ ⵉⴷⵡⵡⴰⵢⵏ
ⴰⵢⵍⵍⵉ ⵙⵎⵓⵏⵏ ⵖⴰⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵣⵔⵉⵏ
ⵓⵍⴰ ⵙⵓⵍ ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰⴷ ⵉⴷⴷⴰ ⵍⴰⵃ ⵜ
ⴰ ⵢⵉⵡⵉ ⵜ ⴱⵓⴳⴰⵟⵓ ⴷⴷⵔⵏ ⵉⵙⵙⵏ
ⴰ ⵙⵓⵍ ⵓⵔⵜⴰ ⵊⵊⵓⵏ ⵉⴼⵏⵏⴰ ⵍⴰⵃⴰⵍ.

يڤويمرا

ها نّ يخرّف وجدّيك أ تيزّوا
وا قّنعامت وكان غ يجاڕيفن
أ جّوع أكراڕاض أ ڭيسن ژڕيخ
مّولّييامت لبرّاد ولا لكاس
أ بو طّابلا د يس يادّا يوحل
يكّيس أس كولّو واڭو ألّن
يغ وكان فوكّان يغ ور يعمي
يسّان يس ڭان غ ويدا صلحنين
أد د نسيسفيو أ تاڭوري نخ
يكلّي يك يموريك ينيخ ت
أ ياوال ن يموريك ڕميخ ت
غ أسّ لّي ڭان وين ڕبّي كّيخ ت
غ أسّ أد غ ڭان طّمع نصامح أس
أ وانّا تن يران يعمّڕ تن
أ ياك لعداوات أد أون سكرن
أ ناف يضڭام أ ياد أ ميدّن
ويلّي س أخ نّان مدّن حرشن
أ لوطيل غ يغرم أغ مّاغن
أ ماد دا تخاسامن ڭومّيخ ت
ور يك أرجال نس غ يغاراسن
ولا شركن يوتّا غ يكالن
أ والايني غاياد ن لوقت
راد د أكّ تاضو غ يدواين
أيلّي سمونّ غاد أكّ يزرين
ولا سول غ أسّ أد يدّا لاح ت
أ ييوي ت بوڭاضو دّرن يسّن
أ سول ورتا جّون يهنّا لحال.

****

-10-

ⵎⵓⵍⴰⵢ ⵃⴱⴷⵍⵍⴰⵀ ⴱⵓⵙⵜⵜⴰ
ⴰⵔⵖⵏ
عبد اللّه بوستّا

ولد في أرغن سنة 1956 والتحق بالمسجد حيث نال نصيبه من محو الأمية، وقد تأثر بما عرفت به قبيلة أرغن من فنّ أهناقار، وبدأ يرتاد أسايس منذ فترة المراهقة، وقد تأثر وساجل مع بعض الشعراء المحلّيين من أمثال الحاج عبد الرحمن أبو الحمام، ومحمد الفقير، الحسين أوطالب، والحسين بن فضّول، وإبراهيم أووليد وغيرهم من شعراء القبائل المجاورة، وقد بدأ في الحوار الشعري سنة 1978، وهو الآن يشتغل بالخدمات التجارية، يمتاز شعره بحسن الصياغة وهو محبّ لفن أهناقار، وقد انخرط في الرابطة الوطنية لشعراء أسايس.

ⵏⴽⴽⵉ ⴷ ⵟⵟⵎⵄ

ⵍⵇⵉⵙⵜ ⵉ ⵢⵉⵅⴼ ⵉⵏⴻ ⴷ ⵟⵟⵎⵄ ⴰⴼ ⵔⵉⵅ ⴰⴷ ⵙⴰⵓⵍⵖ
ⵍⵍⵉⵖ ⴳⵉⵅ ⵛⵛⴰⴱⴰⴱ ⴰⴼⴻⴷ ⵉⵚⵃⴰ ⵣⴻⵏ ⴷ ⴰⵢⵢⵉⵙ
ⴰⴳⵙⴰⵔ ⵏⵜⵜⴰ ⴷ ⵉⵙⵉⵓⴰⵏ ⴻⵔ ⴰⵅ ⴰⴽⴽⵯ ⵀⴻⵓⵍⵏ
ⵜⴰⴱⵄⴰⵅ ⵍⵃⴻⴱⴱ ⵏⵜⵜⴰ ⴷ ⴻⵎⴰⵔⴳ ⴰⵔ ⵏⵜⴹⴻⵓⴰⵕ
ⴽⴻⵍⵍ(ⴻ) ⵎⴰ ⵙ ⵉⵢ(ⵉ) ⵉⵏⵏⴰ ⵓⴻⵍ ⵏⵅ ⵉⵔⴰ ⵜ ⵏⵥⵔⵉ ⵙⵔⵙ
ⵏⵥⵣⵔⵉ ⵛⵛⴰⴱⴰⴱ ⵉⵏⴻ ⵖ ⵍⴼⵕⵃ ⴷ ⵎⴷⴷⵏ ⵄⴷⵍⵏⵉⵏ
ⵜⴰⵙⵍⵉⵜ ⴰⴷ ⴷ ⵉⵎⴻⵏⵏ ⴷ ⵍⵀⵎⵎ ⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⴷ ⵍⴽⵎⵏ
ⴰⵔ ⴰⵅ ⵉⵎⵎⴰⵍ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⵏⵏⵙ ⵏⵜⴰⴱⵄⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ
ⵉⵎⵉⴽⴽ ⵙ ⵉⵎⵉⴽⴽ ⴰⵙ ⴰⵅ ⴽⵛⵎⵏ ⴰⵔ ⵜⴰⵙⴰ ⴷ ⵓⴻⵍ ⵏⵅ
ⵢⴰⵓⵉ ⴷ ⵟⵟⵎⵄ ⴰ ⴳⵉⵏ ⴰⵅ ⴰⵙⵎⴻⵏ ⵉⵊⵍⴻ ⴰⵅ
ⵏⵥⵥⴰ ⵖ ⵟⵟⵎⵄ ⴰ ⵜⵏ ⵖⴻⵢⵅ ⵉⵊⵍⴻ ⵉⵢⵉ ⵖ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⵏⵥⵥⴻ ⴳⵉⵙⵏ ⵖ ⵍⵎⴻⴷⴻⵏ ⴻⵔⵜⴰ ⵊⵊⴻ(ⵏ) ⴷ ⵓⵔⵔⵉⵅ
ⵣⵣⵉⵖ ⴰ ⵜⴰⵎⵎⴰⵔⴰ ⵏ ⴷⴷⴻⵏⵉⵜ ⵜⵎⴻⵏⵎⵜ ⴷ ⴻⵙⵙⴰⵏ
ⴻⵔ ⵢⴻⴼⵉ ⵢⴰⵏ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⴳⴰⵓⵔ ⴻⵍⴰ ⴰⴷ ⵕⴰⵃⴰⵏ
ⴰ ⴽⴰ ⵉⵜⵜⴰⵣⵣⴰⵍ ⵍⵅⵍⵇ ⴰⵔ ⴷ ⵉⴳⴳⴻⵣ ⴷ ⴰⴽⴰⵍ
ⴻⵔ ⵢⴻⴼⵉ ⵟⵟⵎⵄ ⴰ ⵉⴼⴼⴻⵖ ⵉⵖ ⴽ ⴻⵔ ⵉⴼⴼⵖ ⵕⵕⴻⵃ.

نكّي د طّمع

لقيست ئـ ييخف ينو د طّمع أف ريخ أد ساولغ

لّيغ كّيخ شّاباب أفود يصحا زون د أييس

أكّسار نتّا د يسيوان ور أخ أڭّ هوولن

تابعاخ لحوبّ نتّا د ومارڭ أر نتضووارٍ

كولّـ(و) ما س ئـيـ(ـي) ينّا وول نخ يرا ت نزري سرس

نزّري شّاباب ينو غ لفرٍح د مدّن عدلنين

تاسليت أد د يمونّ د لهمّ يلّي غ د لكمن

أر أخ يمّال أغاراس نّس نتابعا ت ينّ

يميكّ س يميكّ أس أخ كشمن أر تاسا د وول نخ

ياوي د طّمع أ كّين أخ أسمون يجلو أخ

نژّا غ طّمع أ تن غويخ يجلو ييي غ تيلّاس

نژّو كّيسن غ لمودون ورتا جّو(ن) د ورّيخ

زّيغ أ تامّارا ن دّونيت تموّمت د وسّان

ور يوفي يان أ كّيس يكّاور ولا أد رٍاحان

أ كا يتّازّال لخلق أر د يكّوز د أكال

ور يوفي طّمع أ يفّوغ يغ ك ور يفّغ رّوح.

****

-11-

ⵍⵀⴰⵛⵎⵉ ⴰⵣⴷⴷⵓ

ⵏⵉⵃⵉⵜ - ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ

الهاشمي أزدّو

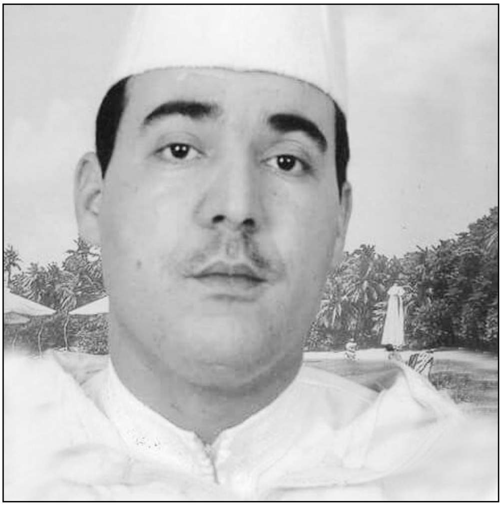

ولد في قرية أيت ئبورك -فرقة نيحيت- بقبيلة ئداوزدوت سنة 1981، بدأ حياته الفنية بعد أن مرّ بمسجد الدوار وبالمدرسة المحلية، تأثر بأكابر شعراء بلدته وتجوّل في مختلف القبائل المجاورة لها، وفي سنة 1999 دخل إلى ميدان الإنشاد بأسايس، ولم يلبث أن فرض وجوده كشاعر شابّ ملتزم بضوابط النظم وقواعد اللغة، شارك في الإعداد للملتقى الأول لشعراء أسايس بإغرم سنة 2017، وهو الآن عضو في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس، الشاعر ممتهن لخدمات تجارية بالقرب من مدينة تارودانت.

ⴳⴰⵔ ⴰⵣⵎⵣ

ⵓⵎⵏⵖ ⵙ ⵇⴱⴱⵉ ⵎⴰⵜⵜⴰ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⴰⴷ ⵉⴳⴰ ⴰⵥⵍⵎⴰⴹ
ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵙⵓⵍ ⵃⵎⵍⵖ ⵉⵅⴼ ⵉⵏⵓ ⵖ ⵉⵏⵏⴰ ⵖ ⵏⴱⵉⴷⴷ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵙ ⴽ ⵉⵏⵏ ⵉⵡⵉⵖ ⴰ ⵇⵇⵊⴰ ⴰⵔ ⴰⵖ ⵉⵙⵙⵉⵡⵉⴷ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵖ ⵜⵇⵊⵉⵜ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ ⴰⵔ ⴰ ⵙⵔⴽ ⵉⴳ
ⵓⵍⵍⴰⵀ ⵓⵔ ⴰⴽ ⵉⵎⵎⴰⵍ ⵓⴳⵙⴰⵏ ⵓⵍⴰ ⵚⵏⵏ ⵍⴱⴰⴱ
ⵉⵖ ⴰⵙ ⴽⴰ ⵏⵖⵔⴰ ⵙ ⵉⵍⵙ ⵓⵔ ⴰⴷ ⴰⵖ ⵉⵙⵙⴼⵍⵉⴷ
ⴰ ⴽⴰ ⵉⵥⵇ ⵎⴰⵏ ⴰⵟⵟⴰⵏ ⵙⵔⵖ ⵉⵔⴰⵏ ⴰⵎⵣⴷⴰⵖ
ⴰⴷ ⴰⵏⵖ ⵓⵔ ⵙⵖⵉⵏ ⵍⴽⵯⴼⵏ ⵡⴰⵍⴰ ⵢⵉⵡⵉ ⵜⵏ ⴷ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵙ ⵜⵏⵏⵉⵜ ⵉⴳⴰ ⴳⵯⵎⴰⴽ ⵉⵔ ⴰ ⴽ ⵉⵜⵜⵎⵏⵉⴷ
ⵓⵍⵍⴰⵀ ⴰⵔ ⴷ ⴰⴽ ⵉⴽⴽⵉⵙ ⵉⵥⵇⵉ ⵉⴳ ⴽⵯⵏ ⴷ ⵓⴱⵓⴽⴰⴹ
ⵜⵉⵙⵏⵜ ⵖ ⴰ ⵉⵛⵛⵔⵓⴽ ⵓⴼⴳⴰⵏ ⵜⴳⴰ ⵉⵢⵉ ⵜⴰⵢⵢⴰⴹ
ⵓⵍⵍⴰⵀ ⴰⵎⴽ ⵙⵓⵍ ⴰⵖ ⵉⵎⵎⵉⵎ ⵡⴰⵜⴰⵢ ⵉⵖ ⴰ ⵜⵏ ⵙⵙⴰⵖ
ⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵍⵉⵍⵉ ⴽⴰ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⵉⵙ ⴰⵔ ⴰⵅ ⵉⵃⵃⵇⴳ
ⴰ ⵜ ⵉⵙⴷⵓⵍⵍⴰⵏ ⴷ ⵡⴰⴷⴰ ⵉⴽⵛⵎⵏ ⴰⵎⵥⵥⵓⵖ
ⵉⴳⴰ ⵍⵖⵇⴹ ⵉⴳⴰ ⴷ ⵉⵍⵙ ⵏⵏⵓⵏ ⴰ ⵢⴰⵍⴳⵎⴰⴹ
ⵙⵓⵍ ⵉⵔⴱⵓ ⵙⵙⵎⵎ ⵉⴹⵓⴼ ⵎⴰⵏⴰⴳⵓ ⴰ ⵔⴰ ⴽ ⵉⵕⵓⴳ
ⵎⴰⵎⵏⴽ ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⴳ ⵓⵊⵎⵓⵄ ⵉⴽⵔⴼ ⵍⴱⵔⵔⴰⴷ
ⵉⴷⴷⴰ ⵓⵣⵎⵣ ⵏ ⵜⴰⵎⵓⵏⵜ ⵍⵍⵉ ⵖ ⵉⵎⵓⵏ ⵍⵖⵇⴹ
ⵜⵉⵎⴰⵎⵜ ⴰ ⵜⵉⵔⵎⵜ ⵉⵖ ⵏⵉⵜ ⵜⵏⵡⴰ ⵜⵜⵔⵙ ⴰⵡⵏ ⴷ
ⵢⴰⵏ ⵉⵇⵥⵎⵏ ⵉⵎⵉ ⵚⵚⵏⵏⵜ ⵍⴽⵏⵣ ⴰⴷ ⴷ ⵉⵙⵙⵓⴼⵓⵖ
ⵍⵓⵕⵉⵢⵜ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⵎⵜⴰⵜⵏ ⴰⴷ ⴷ ⵉⴼⴼⴰⵍ ⵉ ⵓⵊⵎⵓⵄ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴼⵍⵍⴰⵙⵏⵜ ⵉⵍⴽⵎⵏ ⴰⵔ ⴰⵙ ⵉⵙⵙⴼⵍⵉⴷ
ⵓⵔ ⴰ ⵙⴰⵔ ⵜ ⵛⵎⵜⵏ ⵖ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵏⵙⵏ ⵉⵖ ⵉⴼⴼⵓⵖ
ⵙⵓⵍ ⴰⵔ ⵜ ⵉⵙⵙ ⵜⵜⵇⵃⴰⵎⵏ ⵉⵖ ⵉⵎⵎⵓⵜ ⵉⴼⵍ ⵜⵏ ⴷ.

ڭار أزمز

ومنغ س رٍبّي ماتّا زّمان أد يڭا أژلماض
ور أڭ سول حملغ يخف ينو غ ينّا غ نبيدّ
وانّا س ك ينّ يويغ أ رّجا أر أغ يسّيويد
وانّا غ ترٍجيت تيفاوت تيلّاس أر أ سرك يڭ
ولّاه ور أك يمّال وخسان ولا قنّ لباب
يغ أس كا نغرا س يلس ور أد أغ يسّفليد
أ كا يژرٍ مان أطّان سرغ يران أمزداغ
أد أنغ ور سغين لكُفن والا ييوي تن د
وانّا س تنّيت يڭا ڭُماك ير أ ك يتّمنيد
ولّاه أر د أك يكّيس يژرٍي يڭ كُن د وبوكاض
تيسنت غ أ يشّروك وفڭان تڭا ييي تاياض
ولّاه أمك سول أغ يمّيم واتاي يغ أ تن سّاغ
أ زون د أليلي كا أد ڭان يس أر أخ يحّرٍڭ
أ ت يسدولّان د وادا يكشمن أمژّوغ
يڭا لغرٍض يڭا د يلس نّون أ يالڭماض
سول يربو سّمّ يضوف ماناڭو أ را ك يصوڭ
مامنك را سول يڭ وجموع يكرف لبرّاد
يدّا وزمز ن تامونت لّي غ يمون لغرٍض
تيمامت أ تيرمت يغ نيت تنوا تّرس أون د
يان يرٍژمن يمي قّنّت لكنز أد د يسّوفوغ
لوصييت ور يتّمتاتن أد د يقّال ئـ وجموع
أ يان فلّاسنت يلكمن أر أس يسّفليد
ور أ سار ت شمتن غ تودرت نسن يغ يقّوغ
سول أر ت يسّ ترٍحامن يغ يمّوت يفل تن د.

******

-12-

ⵄⴰⴱⴷⵕⵃⵎⴰⵏ ⴱⵓⵎⵀⴷⵉ
ⴰⵥⵥⴰ ⵏ ⵉⵅⵉⵔⵏ

عبد الرحمان بومهدي

من مواليد 18 شتنبر 1971 بقرية أقايكًرن جماعة أقايغان دائة فم زكًيض- طاطا، تتلمذ في مسجد قريته والتحق بالمدرسة العصرية، لكنه لم يستمر في دراسته، فانتقل منذ نعومة أظفاره إلى مهنة الخدمات التجارية، تأثر بعدد من المواهب، من أمثال الشاعر الكبير محمد الدمسيري فحفظ معظم قصائده، كما تأثر في أسايس بالشاعر عثمان أزوليض وغيره من شعراء سوس الذين طبعوا أشرطتهم، وقد بدأ في طرق باب الإنشاد منذ أن وصل عمره إلى ال 17، وكان متميزا بنبراته الصوتية وجرأته في السجال الشعري.

ⴰⵡⴷ ⵉ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⴽ

ⵜⴰⴷ ⵉⵎⵎⵏⵃⵏ ⵜⴰⴷ ⴼⴰⵣⵣⵏ ⵜⴰⴷ ⴽⴰ ⵇⴰⵢ
ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵖⵎⴽⴰⵍ ⴰ ⴳⵉⵎ ⵉⵜⵜⵚⵕⵕⴰⵅⵏ
ⴰ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ ⵏ ⵓⵊⴷⴷⵉⴳ ⵀⴰ ⵍ ⵓⵔ ⵜⵔⴳⵉⵎⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⴰ ⴽⵎ ⴷ ⵉⴽⴽⵉⵙ ⵉⵛⵓⵡⵕ
ⴰⴷ ⴷ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵢⴰⴹⴰⵕ ⴰⴳⴳⵓ ⵖ ⵓⴽⵓⵙ ⵍⵙ
ⴰ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ ⴷ ⵉⵎⵓⵏ ⵡⴰⴳⴳⵓ ⵎⴰ ⵖ ⵜⵕⵡⴰⵎⵜ
ⵓⵔ ⵔⴰ ⵙⵓⵇ ⴳⵉⵡⵏⵜ ⵢⴰⴹⵕⵏ ⵉⵙⴰⵅⴰⵔⵏ
ⴰ ⵟⵓ ⵜⵓⵣⵣⵇⵉⵏ ⵏ ⵜⴰⴹⵓⴹⵜ ⴰⴼⵡⴰ ⵢⵉⴼⴼⵇ
ⴰⵎⵢⴹⴰⵕ ⵀⴰ ⵍ ⵉⵔⴰ ⴳⵉⵡⵏ ⵇⵢⴰⵄⵄ ⵍⵙ
ⵉⵔ ⴰ ⵙⵓⵇ ⴷ ⴰⵔⴰⵏ ⵉⴳⵇⵇⵉⵏ ⵜⴰⵇⵇⵓⵢⵜ
ⵀⴰ ⵟⵓ ⵜⵎⵛⴹⵉⵏ ⵓⵊⴰⴷⵏ ⵇⴰⵙ ⴽⴰ ⵇⵓⵄⵜ
ⵔⴰ ⵙⵓⵇ ⴷ ⵉⵜⵜⵔⵙ ⵉⵥⵥⵉ ⵇⵇⵉ ⵉⵔ ⴰ ⵜ ⵉⵇⵇⵎ
ⵡⴰ ⴳⵏ ⵜⵉⵙⴳⵯⴰⵔ ⵉⵄⵄⵇ ⵣⵣⴰⵎⴰⵏ ⵙ ⵓⵢⴰⴼⴽ
ⵔⴰ ⵜ ⵉⴽⵕⵅⵚ ⵉⵔⴰ ⵜⵏ ⵟⵟⵉⵏ ⵔⴰ ⵜⵏ ⵉⵙⵙⵔⴽⵎ
ⵉⵎⵎⵏⵃⴰ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵉⵎⵎⵏⵃⴰ ⵔⴰⵏ ⵇⵢⵉⵇⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵉⵇⴰⵏ ⴰⵅⵓⴷ ⵏⵙ ⵉⵚⵢⵓ ⴰⵙⵏ
ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵜⵛⵓⵡⴰⵕⵏ ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵜⵏ ⵓⵔ ⵉⵟⵟⴼ
ⴼⴰⴽ ⴰ ⵜⵉⵕⵥⵉ ⵏ ⵓⵅⵓⴷ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵜⵇⵢⴰⵎⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵜⵅⵇ ⵚⵚⴰⵢⵜ ⵉⴳⵇⵇⵉⵏ ⵚⵎⵢ ⴰⵙⵏ
ⴰⴷ ⴰⵙ ⵓⵔ ⵜⵍⵉⵜ ⵏⵓⴳⵔ ⴽⵯⵏ ⵏⵓⵏⵔⴰ ⴽⵯⵏ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵍ ⵇⴰⵏ ⴰⵅⵓⴷ ⵏⵙ ⴼⵓⴳⵔ ⵡⵉⵍⴽ
ⵡⴰⴼⵍⵉ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵓⵔ ⵜ ⵓⵊⵊⵉⵏ ⵓⵔ ⵜ ⵓⵄⵄⵉⵔⵏ
ⴰⵃⴽⴽⴰⵣ ⵎⴰ ⵙ ⴰ ⵜⵜⵉⴷⵓⵏ ⵉⵅⴽⴰ ⴰⵙ ⵜ
ⵔⴰ ⵙⵓⵇ ⴰⵙ ⵜ ⵉⴽⴽⵉⵙ ⵉⴹⵕ ⵖ ⵇⵅⵕⴰⵛ ⵏⵙ
ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵖⵎⴽⴰⵍ ⴼⴰⴷⴷⴰ ⴰⵙ ⴰ ⵜⵚⵕⵕⴰⵅⵜ
ⵎⴰ ⴷ ⵉⵇⵓⵇⵏ ⴰ ⵎⴰ ⵍ ⵎⴹⵇⵏ ⵉⵅⵜⵓ ⵇⴰⵢⵜ
ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵜⴳⴰ ⵖⴰⵔ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⵔⴰ ⵏⵎⵎⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵓⵔ ⵉⵇⵉⵏ ⵇⵃⴰⵄⵇ ⵏⵙ ⴼⵉⵇⵉ ⵜⵏⵜ.

أود ئـ وضارٍ نك

تاد يمّنعن تاد يازّن تاد كا لاح
أ دّونيت غمكانّ أ ڭيم يتّصرّافن
أ تامّنت ن وجدّيك ها نّ ور ترخيمت
أ وانّا يران أ كم د يكّيس يشوورٍ
أد د ور يسّحاضارٍ أڭّو غ وكوس نّس
أ تامّنت د يمون واڭّو ما غ ترٍوامت
ور را سول ڭيونت حاضرٍن يسافارن
أ بو توزّلين ن تاضوضت أيوا حييل
أمحضارٍ ها نّ يرا ڭيون لحاقّ نّس
ير أ سول د أران يكّلّين تالّوحت
ها بو تمشضين وجادن لاس كا لوقت
را سول د يتّرس يزّي لّي ير أ ت يلّم
وا ڭن تيسكّار يقّل زّامان س وحايك
را ت يكرٍفص يرا تن بّين را تن يسّركم
يمّنعا زّمان يمّنعا ران لحيلت
أ وانّا يلان أفود نس يصحو أسن
أد أسن تشوّوارٍن أد أسن تن ور يبّي
ياك أ تيرٍزّي ن وفود ور أ تّلحامت
أ وانّا تفل صّاحت يكّلّين صمح أسن
أد أس ور تنّيت نوكّر كُن نْنرا كُن
يكّا تّ ينّ لان أفود نس يوكّر وينّك
واينّي زّمان ور ت وجّين ور ت وقيرن
أعكّاز ما س أ تّيدون يفكا أس ت
را سول أس ت يكّيس يضرٍ غ لفرٍاش نس
أ دّونيت غمكانّ يادّا أس أ تصرّافت
ما د يلولن أ ما نّ مضلن يفتو لاحت
أ دّونيت تكّا غار أغاراس را تمّت
أ وانّا ور يلين لعاقل نس ييلي تنت.

****

-13-
ⵄⵓⵎⴰⵔ ⴰⵢⵜ ⵓⵣⴽⴽⵯⴰⵖ
ⴰⴷⵉⵙ – ⵟⴰⵟⴰ
عمر أيت أوزكاغ

ولد في قرية أديس سنة 1965، وكانت قريته معروفة في طاطا بجهابذة الشعر الأمازيغي من أمثال رمضان أوعلاّ والمحجوب حاماد والحسين ؤمبارك، الذين أخذ عنهم جمله الأولى في النظم، كان مولعا بآلة تالّونت، حيث يعتبر من بين ضباط الإيقاع المرموقين الذين تتلمذوا على عباقرة الإيقاع بطاطا من أمثل علي ؤمحند أيت ئگيدر بتالدنونت، يتسم شعره بالرصانة والالتزام، وأثناء مشارمته في الحواريات يتسم بالتواضع ويتغاضى عن التسرّع، وهو قائد فرقة لجنة ولت لأهناقار، هذه الفرقة التي كان يرأسها علي ؤمحند قبل أن يتسلم رئاستها.

ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ

ⵔⵉⵅ ⴰ ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ ⵏⵅ ⴰ ⴳⴳⵉⵎ ⵏⴰⵔⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵎⵉⴽⴽ
ⴰ ⴽⵯⵏⵜ ⵏⵄⵃⴼ ⵉ ⵡⵉⴷⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⴰ ⴽⵯⵏⵜ ⵉⴼⵔⵏ
ⵓⵍⵍⴰⵀ ⴰⴱⵍⴰ ⵏⴽⴽⵉ ⴷ ⵉⵅⴼ ⵉⵏⵓ ⴽⴰ ⴰ ⵢⵓⵄⵍⵏ
ⵏⵥⵓⵥⴹ ⴰ ⵏⵙⵔⵔⵙ ⵍⵎⵉⵣⴰⵏ, ⵏⵍⵍⴰ ⵅ ⵍⵎⴰⵄⴰⵍ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⴰⵏⵅ ⵉⵎⵎⵛⴽⵍ ⵡⴰⵡⴰⵍ
ⴰⵢⵍⵍⵉ ⵣⵣⵏⵣⴰⵅ ⵓⴳⵯⵉⵏⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵍⵅⴰⵍⴰⵢⵢⵉⵇ
ⴰ ⵢⵓⴼ ⵉⵖ ⴼⵍⵍⴰⵙ ⵔⴳⵍⵅ ⴰ ⵜ ⵓⵔ ⵏⵙⵓⴽⴽⵓⵜ
ⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔⵖ ⴰⴷ ⴰⵜⵉⴳ ⵏⵙ ⵉⵙ ⵜ ⵏⵉⵜ ⵉⵟⵟⴰⴼ
ⴰⵣⵣⵏⵣ ⵏⵙ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵡⵉⵏ ⵜⵥⴰⵍⵉⵎⵉⵏ
ⴰ ⵀⴰⵜⵉ ⴳⵃⴰⵎ ⴰⵙ ⵏⵥⵣⴰⵏ ⵉ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵜ ⵉⵔⴰⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵉⴷ ⴱⴰⴱ ⵏⵙ ⴰ ⵙⵓⵍ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉⵏ
ⵖⴰⵢⴰⴷ ⴷ ⵉⴳⴳⵯⵔⴰⵏ ⴰⵜⵉⴳ ⵏⵙ ⵉⵙⵙⵍⴽⵎ ⵜ ⴰⴽⴰⵍ
ⴰ ⴽⴰⴷⴰ ⵏ ⵢⴰⵏ ⵉⵍⵍⴰ ⴷⴰⵔⵙ ⵍⵎⴰⵄⴰⵍ ⵉⵇⵇⵏ ⵜ
ⵉⵎⴰⴽⵔⵏ ⴰ ⵓⵔ ⵢⵓⵊⵊⵉⵏ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⵙⵓⵇ
ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵄⴹⵉⵏ ⵍⵊⵉⴱ ⵏⵙ ⵔⴰ ⵢⵙ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⴰⵡⵉⵏ
ⴰ ⴽⴰⴷⴰ ⵓⵛⵟⵟⴰⵃ ⴰ ⴳⵉⵡⵏ ⴰ ⵙⵙⵓⵇ ⵉⵜⵜⵍⵍⵉⵏ
ⴰ ⴽⵉⵡⴰⵏ ⵀⴰⵜⵉ ⵏⵏ ⵔⴱⴰⵏ ⵢⴰⵙⵉ ⴰⵛⵛⴰⴽⵓⵛ ⵏⵙ
ⴰ ⴱⵍⵄⴰ ⵇⵇ ⵎⴰⴷ ⵣⵣⵏⵣⴰⵏ ⴰ ⵙⵓⵍ ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵉⵏ.

تابرات

ريخ أ تابرات نخ أ ڨِّيم نارا يان يميكّ
أ كُنت نصرٍف ئـ ويدا يران أ كُنت يفرن
ولّاه أبلا نكّي د يخف ينو كا أ يوحلن
نژوژض أ نسرس لميزان، نلّا خ لماحال
أ والايني غيلّي غ أنخ يمّشكل واوال
أيلّي زّنزاخ وڨُينت أكُّ لخالاييق
أ يوف يغ فلّاس رڭلخ أ ت ور نسوكّوت
أ ها نّ ورغ أد أتيڭ نس يس ت نيت يطّاف
أزّنز نس ور يڭي زون د وين تژاليمين
أ هاتي ڭرٍام أس نزّان ئـ والّي ت يران
أ والايني يد باب نس أ سول ور يلّين
غاياد د يڭُّران أتيڭ نس يسّلكم ت أكال
أ كادا ن يان يلّا دارس لماحال يقّن ت
يماكرن أ ور يوجّين يان أ سول يسوق
يان ور يحضين لجيب نس را يس ت أكُّ أوين
أ كادا وعطّارٍ أ ڨيون أ سّوق يتّلّين
أ كيوان هاتي نّ ربان ياسي أشّاكوش نس
أ بلحاقّ ماد زّنزان أ سول ور نسّين.

****

-14-

ⵄⵉⵛⴰ ⵜⴰⵛⵜⵓⴽⵜ
ⴰⵢⵜ ⵎⵉⵍⴽ - ⴰⵛⵜⵓⴽⵏ

عيشة تاشتوكت

ولدت في التسعينات بأيت ميلك بقبيلة أشتوكن، وحاولت تجربة حظها في المدرسة لكن الظروف لم تسعفها فغادرتها، وترعرعت في فضاء تمازج فيه أجماك بفنّ رّوايس، لكنّها أشد تعلّقا بفنّ أجماك رغم أنه فنّ ذكوري، وكانت منذ صباها مولعة بسماع قصائد رّوايس المشهورين في بلدتها، فظلّت تتحين الفرصة لتفجّر ملكتها الشعرية، وقد تأتى لها ذلك بفضل تيكنولوجيا الإتصال عبر الفيس والواتساب، حيث ساجلت عددا من شعراء أحواش، وانخرطت في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرت أسايس، وحينما سمعت بأن الشعراء انتظموا في ملتقى ئغرم، أرسلت لهم عتابا لطيفا، وتمتاز عائشة بحبها لنظم الشعر الحواري، وبالخصوص في وزن أجماك.

ⴰⵙⵙ ⵉⵃⵓⵍⴽⵉⵏ

ⵓⵔⴰⵔ ⵏⴽ ⴰ ⴼⴼⵓⵕ ⴰⴷ ⵙⵎⵓⵙⵙⵏ ⵓⵍ ⵉⵏⵡ
ⴰⵏⵎⵓⴳⴳⴰⵔ ⵏ ⵉⵖⵔⵎ ⵉⴳⴰ ⵜⴰⵎⴰⵅⵉⵔⵜ
ⵉⵎⴰⵏⴰⵔⵏ ⴰ ⵢⴰⴷ ⴷ ⵉⵣⵣⴰⵏ ⴰⴽⴰⵍ ⵏⵙ
ⴰⵙⵙ ⵉⵃⵓⵍⴽⵉⵏ ⴰⵙⵙ ⵉⵥⵉⵍⵏ ⴰⵙⵙ ⵎⵇⵇⵓⵔⵏ
ⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵉⴹⴹⴰⵃ ⴷⴰⵔ ⵎⵉⴷⴷⵏ ⵜⵜⴰⵔⵉⵅ ⵏⵙ
ⵉ ⵕⵟⵟⵢⴰⵜ ⴰ ⵢⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⴽⵯⵏ
ⴰⵛⵛ ⴰ ⵢⴰⵜ ⵜⴳⵓⴼⵉ ⵜⴳⴳⵯⵉⵣ ⵓⴽⴰⵏ ⵃ ⵓⵍ ⵉⵏⵡ
ⵜⴰⵡⵏⵣⴰ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⵜⵙⵛⴰⴼⴰⵕⵎ ⵉ ⵉⵎⵓⵙⵙⵓⵜⵏ
ⵜⴰⵛⴳⴳⴰⵕⵜ ⵓⵀⵓ ⴰⵣⵎⵣ ⵏⵙ ⵉⵃⵜⴰ ⵍⴰⵛ ⵜ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⵉⴼⵓⴼⴰⵏ ⵉ ⵓⵃⵓⵙ ⵏⵛ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵙⵉⵜⵜⵉⵛ ⵏⵉⵛ ⵜ ⵏⵟⵟⵉ ⵔⴰ ⵢⵛ ⵉⵙⵙⵉⵛⵍ
ⵉⵡⴰ ⵜⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵉⵏ ⵎⴰⴷ ⴰⵛ ⵉⵙⵏⴰⵇⴰⵚⵏ
ⵎⴰⴷ ⴰⵛ ⵉⵎⴰⵙⴰⵏ ⵏⵓⴳⵯⵍ ⴽⴰ ⵉⴹⵕⵎⵓⵎⵏ
ⴰ ⵢⴰⴽ ⵓⵔ ⴷ ⵙⵙⵉⵄⵔ ⴰ ⴳⵉⵜⵏⵛ ⵉⵎⵎⵓⵜⵏ
ⵏⵉⵛ ⴷ ⵜⴰⵡⴷⴰ ⵍⵍⵉ ⵃ ⵏⵕⵟⵟⴰ ⴰ ⵢⵛ ⵉⵙⵔⴳⵏ
ⴰ ⵓⴽⴰⵏ ⵏⵓⵏⵜⵍ ⵜⵉⵖⵕⴼⵉⵏ ⵏⴽⵏⵓ ⵢⵉⵅⵃ
ⴰⵣⵎⵣ ⵉⴽⵃⴰ ⵢⴰⵛ ⴽⵉⴳⴰⵏ ⵓⵔ ⵙⵔⵙ ⵏⵙⵙⵏ
ⵉⵇⴰⵏ ⴰⵛ ⴰ ⴽ ⵉⴷ ⵏⴼⵉ ⴰ ⵢⴰⵙⵙⵢⴰⵃⴰ ⵏⵡ
ⴰⵎⴽ ⵏⵏⴰ ⵉⴳ ⵍⵛⴰⵍ ⵉⴳ ⵜ (ⵏ)ⵉⵜ ⵎⴰ ⵏⵔⴰ ⵍⵓⵇⵜ
ⴰⵃⵓⵙ ⵛ ⵓⵃⵓⵙ ⴰⴷ ⵏⴳ ⴰⵃⵓⵙ ⵛ ⵉⵃⴰⵙⵙⵏ
ⴰⵔ ⵏⵣⵣⵡⵓ ⵛ ⵍⵀⵎⵎ ⵎⴰⴷ ⴰⵛ ⵉⵜⵜⵎⵔⵔⴰⵜⵏ
ⵏⴳ ⴰⵙ ⴰⵚⵍⵍⴰⵟ ⵏⴳⵍⵉ ⵜ ⴰ ⵓⵔ ⵏⵞⵓⵡⵕ
ⴰ ⵙⵓⵍ ⵓⵔ ⵢⴰⵃⵉ ⴰ ⴳⵉⵛ ⵢⴰⵍⵍ ⵜⵉⴼⵜ ⵏⵙ
ⴰⵔⵡⴰⵙⵙ ⴰⵛ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵏⵊⵍⵓ ⵓⴽⴰⵏ ⵢⴰⵡⵉ ⵜⵏ
ⴰ ⵜⴰⵎⵓⵏⵜ ⵏⵜⵜⴰⵜ ⴰⴷ ⴷ ⵉⵜⵜⵍⵓⵛⵏ ⴰⵎⴰⴷⵍ
ⵜⵕⵥ ⵉⴷ ⵉⵙⵖⴰⵔⵏ ⵜⵛⵓⴷⴷⵓ ⴽⵯⵏ ⴰ ⵉⵡⴰⵍⵉⵡⵏ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵢⵛ ⵉⵏⵏⴰⵏ ⵓⵀⵓ ⵉⵏⵉⵛ ⴰⵙⵏ
ⴰⵊⵊⵉ ⵎⴰ ⵢⴽ ⵏⵏⵉⵛ ⵜⵕⵥⵎⵜ ⴰⵙ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵏ
ⴰ ⵀⴰⵜⵉ ⵉⵖⵔⵟⴰⵏ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⵜⵜⵓⵢⵏ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⴷ ⵓⵜⵏ ⵓⵔ ⴰ ⴽⴰ ⵥⵕⵕⴰⵏ ⵜⵉⵃⴰⵡⵜ
ⴰⵃⵓⵙ ⵛ ⵓⵃⵓⵙ ⴰⴷ ⵏⴳ ⴰⵃⵓⵙ ⵛ ⵉⵃⴰⵙⵙⵏ
ⴰⵡⵙ ⵉⵢ(ⵉ) ⵏⴰⵡⵙ ⴰⴽ ⵃⴰⴷ ⵕⵟⵟⵉ ⴰ ⵢⵛ ⵉⵜⵜⴰⵡⵙ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⵍⵃⴰⵀⵉⵎ ⴰⵔ ⵙⴰⵡⴰⵍⵏ
ⴰⵔ ⵉⵜⵜⴰⴽⵯⵣ ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵖ ⵓⵔⵜⴰ ⵜ ⵏⴽⵎⵎⵍ.

أسّ يفولكين

ورار نك أ ضّورٍ أد سموسّن ول ينو
أنموݣّار ن يغـرم يݣا تاماخيرت
يمانارن أ ياد د يزّان أكال نس
أسّ يفولكين أسّ يژيلن أسّ مقّورن
أ ها نّ يطّاف دار ميدّن تّاريخ نس
ئـ رٍبّيات أ ييمديازن ن سوس كولّو كُـن
أحّ أ يات تݣوضي تݣّيز وكان ف ول ينو
تاونزا ور أ ت تسحاضارٍم ئـ يموسّوتن
تاحݣّارٍت وهو أزمز نس يفتا لاح ت
أ يان أد ݣان يضوضان ئـ وفوس نح
وانّا سيتّيح نيح ت نبّي را يح يسّيحل
يوا تيمديازين ماد أح يسناقاصن
ماد أح يماسان نوݣُل كا يطـرٍمومن
أ ياك ور د سّيعر أ ݣيتنح يمّوتن
نيح د تاودا لّي ف نرٍبّا أ يح يسرݣـن
أ وكان نْنتل تيغرٍضين نكنو ييخـف
أزمز يكفا ياح كيݣان ور سرس نسّن
يقان أح أ ك يد نضي أ ياسّيافا نو
أمك نّا يڽك لحال يڽك ت يت ما نرا لوقت
أفوس ح وفوس أد نڽك أفوس ح يفاسّن
أر نزّوو ح لهمّ ماد أح يتّمرّاتن
نڽك أس أصلّاب نݣلي ت أ ور نشوورٍ
أ سول ور يافي أ ݣيح يالّ تيضت نس
أرواسّ أح را ت ينّ نجلو وكان ياوي تن

أ تامونت نتّات أد د يتّلوحن أمادل

ترڗ يد يسغارن تحودّو كُن أ يواليون

أ وانّا يح ينّان وهو ينيح أسن

أجّي ما يك نّيح ترڗمت أس كولّو تن

أ هاتي يغربان ن دّونيت أتّوين

وانّا د وتن ور أ كا ژرّان تيفاوت

أفوس ح وفوس أد نڽ أفوس ح يفاسّن

أوس يّـي ناوس أك فاد رّبّي أ يح يتّاوس

أ وانّا يڭان لفاهيم أر ساوالن

أر يتّاكُز أوال يغ ورتا ت نكمّل.

****

ⵢⴰⵏ ⵓⵙⴳⴰ ⵖ ⵓⴳⵔⴰⵡ ⵏ 2017

-15-

ⵍⵃⴱⵉⴱ ⴰⵣⴽⵔⵉ

ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴽⵔⵉ

الحبيب أزكري

ولد الشاعر الحبيب الزروالي المعروف بالحبيب أزكري سنة 1977 في قريته تاسركًا بقبيلة ئداوزكري، التحق بمسجد القرية ثم بالمدرسة العصرية لكنه غادرها في سنّ مبكرة، لكي يلتحق بميدان العمل في الخدمات التجارية بالمدن، لكن شغفه الكبير بفنون أحواش جعله يعود إلى بلدته ويتزوج لكييعطي كل وقته للإبداع في الحوار الشعري كمهنة، تأثر منذ نهاية التسعينات كفترة دخوله إلى ميدان قرض الشعر بعدد من شعراء الجبل كمحند أكرام وعبد الكبير شهاد وعبد الله بولا ومحمد زاموض، ولم يلبث أن دخل معهم في الحواريات، وبصفته شاعرا محترفا فقد زار جل قبائل سوس والأطلس الصغير ومختلف المدن المغربية، ساهم بعدد من قصائده في الدواوين التي أصدرها الشاعر عبد السلام ناصيف، وهو من أصغر الشعراء الذين أسسوا الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس ويشغل مهمة نائب الأمين.

ⴰⵃⵕⵕⵉⴳ ⵏ ⵜⴰⵢⵔⵉ

ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵎⵔⵔⴰⵜ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵉⵅ ⵉⴳⴰ ⴰⵎⵣⵡⵓⴳ
ⴰⵡⵉⵏ ⵜ ⵉⵊⴰⵡⵡⴰⵏ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵟⵟⴰⴼ ⴰⵎⵄⵕⴰⴹ
ⴰ ⵛⵛⴰⵀⵡⴰ ⵉⵅ ⵜⵏⵔⴰ ⵍⵅⵍⵇ ⵉⴳ ⴰⵙⵏⵜ ⵉⵙⵎⴳ
ⴰⵔ ⴰⵙⵏ ⵣⴳⴳⵓⵔⵏⵜ ⵙ ⵉⵍⵍⵉ ⵙⵔⵙⵏ ⵜⵇⵚⴰⴹ
ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵉⵏ ⴰⴼⴰⵙⵉ ⵏⵙ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵉⵏ ⴰⵥⵍⵎⴰⴹ
ⵉⵅ ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⵏⵏ ⵉⴹⵕ ⵅ ⵡⴰⵏⵓ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⴱⵓⴽⴰⴹ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴷⴰⵔ ⵓⵔ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵉⵚⵍⵃⵏ ⵅ ⵓⵣⵎⵣ ⴰⴷ
ⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵖⴰⵏⵉⵎ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⵉⵅ ⵉⵍⵍⴰ ⴼ ⵉⵣⵉⴳ
ⴰ ⵔⵔⵉⵃ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⴷ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⵉⵔⴰ ⵙⵔⵙ ⵉⵜⵜⵍⵄⴰⴱ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴷⴰⵔ ⵉⵍⵍ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵉⵚⵍⵃⵏ ⵅ ⵓⵣⵎⵣ ⴰⴷ
ⵉⴹⵓⴼ ⵙⵔⵙ ⴰⴳⴰⵢⵢⵓ ⵏⵙ ⴰ ⵏⵏ ⵓⴽⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵛⴰⴹ
ⵢⴰⵡⵉ ⵜ ⵡⴰⵙⵉⴼ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵉⴽⴽⴰⵜ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵎⵔⵓⴳ
ⵎⴰⵏⵉ ⵔⴰ ⵜ ⵉⴷ ⵉⵔⴰⵔ ⵎⴰⵏⵉ ⵅ ⵔⴰ ⵏⵏ ⵉⴱⵉⴷⴷ.

أحـرّيڭ ن تايري

أر يتمرّات لعاقل يخ يڭّا أمزووڭ
أوين ت يجاوان ور سول يطّاف أمعرٍاض
أ شّاهوا يخ تنرا لخلق يڭ أسنت يسمڭ
أر أسن زڭّورنت س يلّي سرسن تقصاض
ور يسّين أفاسي نس ور يسّين أژلماض
يخ أر كيغ نّ يضرٍ خ وانو زون د أبوكاض
أ يان دار ور لعاقل يصلحن خ وزمز أد
أ زون د أغانيم أد ڭان يخ يلّا ف يزيڭ
أ رّيح وانّا د يلّان يرا سرس يتّلعاب
أ يان دار يلّ لعاقل يصلحن خ وزمز أد
يضوف سرس أڭايو نس أ نّ وكان ور يشاض
ياوي ت واسيف أر يسّن يكّات أر يتّمروڭ
ماني را ت يد يرار ماني خ را نّ يبيدّ.

****

-16-
ⵎⵃⵏⴷ ⵍⵎⵓⵙⴰⵡⵉ
ⴷⴷⵓ ⵓⵙⴰⵡⵏ - ⵉⴷⴰ ⵓⵏⵉⴹⵉⴼ
محند الموساوي

ولد الشاعر محند المساوي بدوار ئغير فرقة دووساون قبيلة ئداونيضيف سنة 1970، وهو نجل الشاعر الكبير مبارك وْحماد شاعر دّووساون، التحق بالمسجد ثم بالمدرسة العصرية ونال قسطه من الثقافة المدرسية، وبعد بلوغه الدراسة الثانوية غادر الدراسة لظروف عائلية ولم يلبث أن حصل على وظيفة بجماعة أضار، بيد أن طموحاته في المجتمع المدني دفعته إلى أن يكون أبرز فاعل جمعوي بقبيلته، إذ ساهم بقسط وفير من الجهود المبذولة من أجل التنمية في دائرة ئغرم وشارك في تأسيس عددا من الجمعيات التنموية، ارتبط بحب عميق لفنون أحواش منذ صباه، وأدرك عددا من الشعراء ببلدته تأثر بهم إلى حد بعيد ك عبد الرحمان نايت الفقيه ومحمد نايت علا وبوبكر أزناك، وبعد ذلك دخل إلى ميدان الحوار الشعري وزار جل قبائل الأطلس الصغير مقارعا أكابر الشعراء، وقد حصل على الجائزة الثانية في مهرجان تيفاوين - ميكامدياز سنة 2014، أسس جمعية ئنضّامن ن وْسايس التي تحولت بعد ذلك إلى الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس التييشغل فيها نائب الرئيس، ويعتبر محند المساوي من بين رواد القصيدة ولديه الآن ديوان شعري معد للطبع.

ⴰⵖⴱⴰⵍⵓ

ⵀⴰ ⴷ ⴰⴱⵔⵉⴷ ⵏⴽⴽⴰ ⴳⵉⵙ ⵜⴰⵙⵓⵜ ⵏ ⵢⵓⵙⵙⴰⵏ
ⴰ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ ⴰⵖ ⵎⵎⵓⴷⴷⵉⴳ ⵍⴰⵛ ⵉⴼ(ⵉ) ⵜⵉⵃⴰⵢⵉⵏ
ⵏⵓⴽⵍ ⵃ ⵓⵃⵕⴰⴹ ⵖ ⵜⴰⴳⴰⵏⵜ ⵓⵍⴰ ⴰⵙⵏⵏⴰⵏ
ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⵏⵥⵕⵉ ⴼⴰⵏ ⴰⴷ ⴰⴳ ⵙⵓⵃⵓⵏ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵓⴽⵉⴳ ⵉⴳⵙⴰⵔⵏ ⵙ ⵉⴹⴰⵕⵏ ⵓⴽⵉⴳ ⵉⵙⵉⵢⴰⵏ
ⵏⴹⵕ ⵖ ⵉⴳⵯⴹⵉⴼⴰⵏ ⵓⴹⴹⵕⴳ ⵉⵙ ⵏⴽⴽⴰ ⴰⵃⵓⵙ
ⴼⵉⵍⵉ ⴳⵉⵏⴳ ⵓⵏⴰⵔⵓⵅ ⴰ ⵏⵓⵚⵍ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵔⵉⴳ
ⵏⵙⵙⵏ ⵏⵉⵜ ⵎⴰ ⵙ ⵎⵎⵓⴷⵉⴳ ⵏⵙⵙⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⵔⵉⴳ
ⴰ ⴷⴰⵔ ⵓⵖⴱⴰⵍⵓ ⵍⵍⵉ ⵖ ⴰ ⵉⵙⴰⵃⴰⵔⵏ ⵜⵍⵍⴰⵎ
ⵔⵉⴳ ⴰ ⵜⵏ ⵍⴽⵎⴳ ⴰ ⴽⴰ ⴳⵉⵙ ⵙⵉⵜⵜⵉⴳ ⵉⵔⴰⵃⴰⵏ
ⵢⴰ ⵖⵉⴽⴽ ⴰⴷ ⵖ ⵍⴽⵎⴳ ⵉⴷⴰ ⵏⵔⴰ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵓⵛⵍⴳ
ⵢⴰ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵏⵏ ⵜⵍⵍⵉⵜ ⵉⴷⴰ ⵖ ⵏⵉⵜ ⵏⴽⴽⴰ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⴰ ⵢⴰⵍⵍⵉ ⵛⵔⴰ ⵔⴰ ⵉⴼⵉ ⴷ ⵉⵙⵎⴰⵙⴰ ⵜⵉⵃⴰⵢⵉⵏ
ⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⴰⵔ ⵙⵔⴽ ⵏⵙⵉⴳⴳⵉⵍ ⴽⴼⴼⵉ ⵉⵙ ⵉⴼ(ⵉ) ⵜⵏⵜⵍⵜ
ⴼⴰⴽ ⵉⵙ ⴰⴳ ⵜⵏⵏⵉⵜ ⴰⴹⵓ ⵏⵏ ⴽⴼⴼⵉ ⵖ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵎⵜⴰ ⴷ ⵉⵙ ⵜⵓⵃⵉⵜ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵏⵓⵚⵍ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵔⵉⴳ
ⵢⴰ ⵖⵉⴽⴰⴷ ⵖ ⵍⴽⵎⴳ ⴰⵊⵊ ⴰⵙⵙⵃⵉⵢ ⵏⴽ ⵓⵔ ⵜⵏ ⵔⵉⴳ
ⴰ ⵜⴰⵃⵓⴽⵜ ⵉⵙ ⴷ ⵜⴰⵥ ⵏⵥⵕⴰ ⵜⵉⵎⵉⵜⴰⵔ ⵏⵙ
ⵉⵥⵏⵥⴰⵕⵏ ⵏⵙ ⴰ ⴼⴰⴷ ⵉⵍⴽⵎⵏ ⵉⵃⴰⵢ ⵍⵛⴰⵍ
ⵉⵎⵎⴰ ⵍⴰⵏⴱⴰ ⴷ ⵍⵇⵏⴷⵉⵍ ⵎⴰ ⵜⵏ ⵙⵓⵍ ⵉⵔⴰⵏ
ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵍⵀⵉⴳ ⵉⵖ ⵔⵖⴰⵏ ⵢⴰⵍⴰ ⴽⵉⵖ ⵏⵙⴰⵏ
ⵍⴽⵎⴳ ⴰⵖⴱⴰⵍⵓ ⵢⴰⴷⴰ ⵙ ⵏⵉⵜ ⵉⵢⵉⴳ ⴰⵔⵔⴰⵃ
ⴰ ⴳⵉⵙⵏ ⵙⵓⴳ ⵉⵙⵓ ⴳⵉⵙ ⴼⴰⵏ ⴰⴳ ⵉⵢⴰⵍⴰⵏ
ⵏⴽⴽⵉⵏ ⴰⵖⴱⴰⵍⵓ ⴰⴷ ⵏⴳ ⵓⵔ ⵏⵔⵉ ⴰ ⵜⵏ ⵃⵍⵖ
ⵉⵏⵉⴳ ⴰⵙⵏ ⵉ ⴼⴰⵏ ⵉⴳⴳⵓⵍⵍⵏ ⴰⴷ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵓⵔ ⵍⴽⵎⵏ
ⵉⵔⴰ ⵏⵉⵜ ⵙⵓⵍ ⵓⵅⵎⵅ ⵏ ⵉⵔⵉⵃ ⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⵍⵉⵏ
ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⴰⵢⵏ ⵉⵕⵉⵥ ⵉⴷⴰ ⵖ ⵏⵉⵜ ⵜⵙⵙⴰⵎ ⴰⵎⴰⵏ
ⵉⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⴷⴰⵔⵉ ⵜⵓⵜⵜⴰⴳⵯⵎⵎ ⵔⴰ ⵜⵙⵙⴰⵎ ⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⵜⵉⵏⵓⴹⵃⴰ ⴷ ⵉⵃⵕⴹⴰⵏ ⵢⵉⵍⵍⵉ ⴽⵯⵏ ⴼⵉⵢⵉⵏ
ⵓⵔ ⴰⵢⵏ ⵖⵥⴰⵏⵏ ⵖ ⵍⵀⵉⵃ ⵉⵙ ⴰⵢⵏ ⴽⴰ ⵟⵟⵍⵏ.

أغـبالـو

ها د أبريد نكّا ڭيس تاسوت ن ووسّان
أ تيلّاس أغ مّودّيخ لاح ئـيـ(ـي) تيفاوين
نوكل ف وفـراض غ تاڭانت ولا أسنّان
ور جّون نژري يان أد أخ سوفون أغاراس
وكيخ يڭسارن س يضارن وكيخ يسيوان
نضر غ يڭضييان وضّرخ يس نكّا أفوس
ييلي ڭينخ وناروز أ نوصل غيلّي ريخ
نسّن نيت ما س مّوديخ نسّن ماني ريخ
أ دار وغبالو لّي غ أ يسافارن تلّام
ريخ أ تن لكمخ أ كا ڭيس سيتّيخ يرافان
وا غيكّ أد غ لكمخ يدا نرا ور سول وحلخ
وا ماني غ نّ تلّيت يدا غ نيت نكّا تيلّاس
أ والّي حـرا را ئـيي د يسماسا تيفاوين
يلّي غ أر سرك نسيڭّيل كيّي يس ئيـ(ـي) تنتلت
ياك يس أخ تنّيت أضو نّ كيّي غ وغاراس
متا د يس توفيت أد ور نوصل غيلّي ريخ
وا غيكاد غ لكمخ أجّ أسّفيو نك ور تن ريخ
أ تافوكت يس د تاژ نژرا تيميتار نس
يژنژارن نس أ ياد يلكمن يفاو لحال
يمّا لانبا د لقنديل ما تن سول يران
ور يسّن لهيخ يغ رغان والا كيغ نسان
لكمخ أغبالو وادا س نيت يويخ أرّاف
أ ڭيسن سوخ يسو ڭيس يان أخ يوالان
نكّين أغبالو أد نخ ور نري أ تن فلغ

ينيخ أسن ي يان يڭّولّن أد ت ينّ ور لكمن
يرا نيت سول وزمز ن يريف أ سول يلين
را سول أون يرٍيژ يدا غ نيت تسّام أمان
يرا سول داري تْتّاڭُمّ را تسّام أمان
أ تينوضفا د يفرٍضان ويلّي كُن ييوين
ور أون غژانّ غ لهيف يس أون كا طّلن.
****

-17-
ⵃⴰⵙⴰⵏ ⵙⵙⵄⴷⵓⵏⵉ
ⵏⵏⵉⵃⵉⵜ - ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ
حسن السعدوني

من مواليد 1966 بقرية ءايت إبورك، فرقة النحيت، قبيلة إداوزدوت، إقليم تارودانت، شاعر ومطرب أمازيغي يعزف على الآلات الموسيقية (بانجو، قيتارة، أورگن أو السانتيتيزور) ممثل تلفزيوني ومسرحي. بدأ مشواره الفني وهو في الثانية عشرة من عمره، حيث كانت الوسيلة الوحيدة للترفيه حينها (خصوصا في المناطق الجبلية) هي أحواش - فلكلور المنطقة - وحدث أن أقيم حفل زفاف بقرية ءايت إبورك، وكان من بين الحاضرين قائد المنطقة، وخلال رقصات أحواش (الدرست) كان هناك شعراء يتبادلون حوارات نظمية (تنظامت)، الشاعر الكبير رحمه الله (أحمد بن ألحيان) والشاعر الكبير كذلك (أحمد أوعابد ن تيلكيست).. وكان الشاعران الكبيران يناقشان موضوع المرأة في حوارهما الشعري آنداك، بطريقة هزلية لتسلية المدعووين. وقطع الشاعر حسن السعدوني من بعد ذلك مسارا فنيا، بدأه بالمشاركة في رقصات أحواش في مناسبات عدة، وكان ينظم الشعر كلما سنحت له الفرصة، وكان له لقاءات مع كبار الشعراء في ساحات أبراز، منهم المرحوم علي أولحاج، والمرحوم يحيى بوقدير، الرايس لحسن أجماع، الرايس عثمان أزوليض، بوسلام إفدادن، موسى، بن ألحيان، وغيرهم من الشعراء الجدد. وبولعه بالحرف الأمازيغي (تفناغ)، نجد الفنان والشاعر حسن السعدوني يحفظ قصائده بعناية في ديوانه الجميل والذي يفوق مائتا صفحة، كلها بخط يده بتفيناغ، وما زاد لديوانه جمالية بعض الرسومات التي أبى من خلالها إلا أن يظهر ميوله للرسم.

ⵍⵡⴰⵜⵚⴰⴱⴱ

ⵍⵡⴰⵜⵚⴰⴱⴱ ⵕⵥⵎⵖ ⴰⴳⵔⴰⵡ ⴰⴷ ⵙⵍⵍⵎⵖ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⴽⵔⴰ ⴳⵉⴽ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⵔⴰⴷ ⴰⵙ ⴷ ⵉⵏⵉⵖ
ⵏⴹⴰⵍⴱ ⴰⵡⵏ ⵍⴰⴷⵏ ⴼⴰⴷⴷ ⴰⴷ ⵙⴰⵡⵍⵖ
ⴰⴷ ⴷ ⵏⵥⵣⵡⵓⵔ ⵍⵍⴰⵄⴰⵡⵏ ⴰ ⵢⴰⵏ ⴷ ⵓⴼⵉⵖ
ⵉⴳⴰ ⵍⵅⵉⵔ ⴰⴷ ⵍⵎⴰⵚⵍⴰⵃⴰ (ⵏ)ⴳⵔⴰⵜⵏⵖ
ⴰⵔ ⴰⵅ ⴷ ⵉⵜⵜⴰⵡⵉ ⵍⴰⵅⴱⴰⵕ ⴰⵔ ⴷⴰⵔⵏⵖ
ⴰⵔ ⴰⵏⵖ ⵉⵎⵎⴰⵍ ⵓⴷⵎ ⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵥⵕⵕⴰⵖ
ⵏⵉⵙⵙⴰⵏ ⴳⵉⵙ ⴰⵎⴷⴷⴰⴽⴽⵯⵍ ⵏⵥⵕ ⵜⵏ ⵥⵕⵉⵏ ⴰⵖ
ⵎⵉⵜ ⴷ ⵓⵔⴳⴰⵣ ⴰⴷ ⴷ ⵏⵥⵓⵢⴷ ⵉ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⵏⵖ
ⵍⵡⴰⵜⵚⴰⴱⴱ ⴰⴷ ⵉⵙⵙⵏⵛⵟ ⴰⴽⴽⵯ ⴰⵇⴱⵉⵍ ⵏⵅ
ⵉⴹⵉ ⴷ ⴳⵉⵙ ⵍⵅⵉⵔ ⵎⴷⴷⵏ ⴰⵖ ⴰ ⵜ ⵥⵕⵕⴰⵖ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵙ ⴽⴰ ⵜⵙⴷⵓⵇⵇⵔⵜ ⵉⵏⵏⴰ ⴷ ⵀⴰ ⵢⴰⵖ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⵍⵅⵉⵔ ⵓⵔ ⵔⴰ ⴳⵉⵙ ⴱⵔⵔⴰⵅ
ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵉⵇⴱⵍ ⵕⴱⴱⵉ ⵍⵊⵏⵜ ⴰⵖ ⵜⵏ ⵔⵉⵖ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵓⵔ ⵉⵔⵉⵏ ⵍⵅⵉⵔ ⵢⵉⵜⵜⵉ ⵏⵏ ⴳⵉⵜⵏⵖ
«ⵍⵉⵣⴰⵏⴷⵉⴱⵉⵅⵅⵉⵛ» ⴰⴼ ⵔⵉⵖ ⴰⴷ ⵙⴰⵡⵍⵖ
ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⵃⵜⴰⵕⴰⵎⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⴱⴹⵓⵏ ⴰⵖ
ⵜⴰⵥⵉⵜ ⴷ ⴳⴰⵔ ⴰⵡⴰⵍ ⴰⵖ ⵏⵉⵜⵜⵉ ⵜⵜⵀⵏⵏⴰⵖ
ⴰⴷ ⵓⵔ ⴼⵍⵖ ⵍⵄⵉⴱ ⵉ ⴽⵔⴰ ⵖ ⵎⴷⴷⵏ ⴰⵃⵍⵖ
ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵓⵔ ⵉⵀⵎⵎⵉ ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵜ ⵄⴰⵛⵔⵖ
ⴰⴷ ⴰⵙ ⵄⴰⵡⵏⵖ ⵉⵖ ⴰ ⵉⵅⵍⵍⵓ ⴱⵍⴰ ⵔⵉⵖ
ⴰ ⵜ ⵉⵀⴷⵓ ⵕⴱⴱⵉ ⵀⴰ ⵏⵏ ⴳⴰⵏ ⴰⴷⵊⴰⵕ ⵏⵖ
ⵉⴳⴰ ⵍⵄⵉⴱ ⵉⵖ ⴰⵔ ⵏⵜⵜⵥⵉ ⴷ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⵏⵖ
ⵎⴰⵅ ⵓⵔ ⵢⵓⴼ ⵉⵖ ⵏⵎⴰⵏ ⵖ (ⴰ)ⵎⴽ ⴰⴷ ⵙ ⵏⵏⵉⵖ
ⵉⵖ ⴰ ⵏⵅⵍⵍⵓ ⵏⴳⵔ ⵎⵉⴷⴷⵏ ⵔⵡⵍⵏ ⴳⵉⵜⵏⵖ
ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ ⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⵎⴰⴷ ⵔⵉⵖ ⴰⴷ ⵅⵍⵍⵓⵖ
ⵓⵔ ⴰⵖ ⵜⵉⵡⵉ ⴼ ⵍⵄⴰⵕ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⴳⵯⵎⵎⵔⵖ
ⵉⵖ ⵓⵔ ⵙⴰⵡⵍⵖ ⵍⵅⵉⵔ ⵢⵓⴼ ⴰⴷ ⴼⵉⵙⵙⴰⵖ
ⵢⴰⵏ ⵉⵕⴹⴰⵏ ⴰ ⵢⴰⵙⵉ ⴷⴷⵏⵓⴱ ⵉⵖ ⵙⴰⵡⵍⵖ
ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵊⵔⵔⴰⵎ ⴰⵔ ⵉⵥⵣⵍⵓⴳ ⴰⵢⴷⴰ ⵏⵏⵉⵖ

ⴰ ⴽ ⵉⵟⴷⵓ ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⵢⴰ(ⵏ) ⵉⵙⴰⵡⵀⵏ ⴳⵉⵜⵏⵖ
ⴰⵔ ⵉⵢⵉ ⵜⵜⴼⵉⴱⵜ ⵏⴽⴽⵉ ⵏⵙⴰⵀⴰ ⵀⵟⵎⵎ ⵏⵖ
ⵓⵔ ⵏⵥⴹⴰⵕ ⵉ ⴹⴹⵉⴷⴷ ⴰ ⵜ ⵏⵔⴱⵓ ⵖ ⵡⵓⵀ ⵏⵖ
ⵢⴰⵏ ⵉⵜⵜⵊⵔⵔⴰⵎⵏ ⵖ ⵎⴷⴷⵏ ⵓⵔ ⵉⴷⵙ ⵀⵀⵉⵖ
ⵓⵔ ⵔⴰ ⵢⵖ ⵉⴳ ⴰⵎⴷⴷⴰⴽⴽⵯⵀ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵜ ⴼⴰⵛⵔⵖ
ⵉⵙ ⴰⴽⴽⵯ ⵔⴰ ⵜ ⴱⵀⵓⴽⵉⵖ ⴱⴰⵛ ⴰⴷ ⵟⵍⴰⵖ
ⴰ ⵙⵓⵀ ⴷ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⴰⵣⵏ ⴷⴷⵏⵓⴱ ⵏⵙ ⴷⴰⵔⵏⵖ
ⵢⴰⵏ ⵉⵃⵟⵎⵏ ⵉⵡⴰⵀⵉⵡⵏ ⴰⴷ ⴼⴷⵔⵏ ⴰⵖ
ⵟⴰ ⵍ ⵓⵔ ⴳⵉⵙⵏ ⴽⴽⵉⵖ ⴰⴱⵀⴰ ⵎⴰⵢⴷ ⵍⵉⵖ
ⴰⵔ ⴰⵏⵖ ⵉⵣⵣⵉⵡⵉⵣ ⵀⵖⵢⴰⵔ ⴰⵔ ⴱⵔⵔⵉⵖ
ⵓⵔ ⵏⵄⵎⵀ ⵜⴰⵥⵉⵜ ⵉⵖ ⵜⵀⵀⴰ (ⵏ)ⴳⵔⴰⵜⵏⵖ
ⵏⵛⵔⴽ ⴷ ⵎⴷⴷⵏ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ ⵏⵔⴰ ⴰⴷ ⵕⴰⵄⴰⵖ
ⵉⵖ ⴰⵔ ⵜⵏ ⵜⵜⵎⵏⵉⴷⴰⵖ ⴳⴰⵏ (ⴰ)ⵎⴽ ⴷⴰ ⵔⵉⵖ
ⵢⴰⵏ ⴰⵖ ⵢⵓⴳⵔⵏ ⵓⵇⵇⵔⵖ ⵜ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵜ ⵖⵉⵢⵢⵔⵖ
ⵟⴰ ⵍ ⵀⵖⵢⴰⵔ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴱⵀⴰ ⴰⴼⴷⴰⵡ ⵏⵖ
ⴰⵔ ⵏⵃⵃⵔⵏ ⴰⵡⴰⵀ ⵉⵖ ⵔⵉⵖ ⴰⴷ ⵙⴰⵡⵀⵖ
ⴰⴷ ⴷ ⵓⵔ ⴹⵉⵖ ⵀⴼⵉⴱ ⵉⴳ ⵡⵉⵍⵓ ⴱⵀⴰ ⵔⵉⵖ
ⵡⴰⵍⴰ ⵉⵙⴰⵀⴰⵏ ⵀⴳⵉⵔ ⵔⵉⵖ ⴰ ⵜ ⴼⴰⵡⵏⵖ
ⵢⴰⵏ ⵉⵊⴱⵓⴷⵏ ⵙ ⵀⴼⴰⵕ ⵎⴰ ⵎⵉ ⵜ ⵣⴰ ⵔⵉⵖ.

لواتصابّ

لواتصابّ ڔژمغ أڭراو أد سلّمغ
كولّو كرا ڭيك يلّان راد أس د ينيغ
نضالب أون لادن فادّ أد ساولغ
أد د نزّوور لّاعاون أ يان د وفيغ
يڭا لخير أد لماصلاحا نـڭـراتنغ
أر أخ د يتّاوي لاخبارِ أر دارنغ
أر أنغ يمّال ودم ن يان ور ژرّاغ
نيسّان ڭيس أمدّاكّل نژرِ تن ژرِين أغ
ميت د ورڭاز أد د نزويد ئـ تاڭمات نغ
لواتصابّ أد يسّنشط أكّ أقبيل نخ
يضي د ڭيس لخير مدّن أغ أ ت ژرّاغ
وانّا س كا تسدوقّرت ينّا د ها ياغ
وانّا يران لخير ور را ڭيس برّاخ
أد أسن يقبل ربّي لجنت أغ تن ريغ
وانّا ور يرين لخير ييتّي نّ ڭيتنغ
«ليزانديبيخّيش» أف ريغ أد ساولغ
ويلّي ور يتّحتارامن مدّن بضون أغ
تاژيت د ڭار أوال أغ نيتّي تّهنّاغ
أد ور فلغ لعيب ئـ كرا غ مدّن أحلغ
والّي ور يهمّي يان ور را ت عاشرغ
أد أس عاونغ يغ أ يخلّو بلا ريغ
أ ت يهدو ربّي ها نّ ڭان أدجارِ نغ
يڭا لعيب يغ أر نتّژي د تاڭمات نغ
ماخ ور يوف يغ نمان غ مك أد س نّيغ

يغ أ نخلّو نـݣـر ميدّن رولن ݣيتنغ
لحورِما ن رِبّي ماد ريغ أد خلّوغ
ور أغ تيوي ف لعارِ ور أ ت ݣُمّرغ
يغ ور ساولغ لخيرِ يوف أد فيسّاغ
يان يرِضان أ ياسي دّنوب يغ ساولغ
أر يتّجـرّام أر يزّلوڭ أيدا نّيغ
أ ك يهدو رِبّي أ يان يساولن ݣيتنغ
أر ييي تّعيبت نكّي نسالا لهمّ نغ
ور نژضارِ ئـ ضّيدّ أ ت نربو غ وول نغ
يان يتّجرّامن غ مدّن ور يدس لّيغ
ور را يغ يڭ أمدّاكُّل ور را ت عاشرغ
يس أكُّ را ت بلوكيغ باش أد هنّاغ
أ سول د ور يتّازن دّنوب نس دارنغ
يان يفهمن يواليون أد عدرن أغ
ها نّ ور ݣيسن كّيغ أبلا مايد نّيغ
أر أنغ يزّيويز لغيار أر برّيغ
ور نحمل تاژيت يغ تلّا نـݣـراتنغ
نشرك د مدّن تامّنت نرا أد رِاحاغ
يغ أر تن تّمنيداغ ݣان مك دا ريغ
يان أغ يوݣرن وقّرغ ت ور را ت غيرِغ
ها نّ لغيار ور يݣّي بلا أعداو نغ
أر نقّرن أوال يغ ريغ أد ساولغ
أد د ور ضيغ لعيب يڭ وينّو بلا ريغ
وانّا يسالان لخيرِ ريغ أ ت عاونغ
يان يجبودن س لعارِ ما مي ت زا ريغ.

-18-

ⵕⴰⵛⵉⴷ ⴰⵅⵔⵔⴰⵣ

ⵜⴰⴳⵎⵓⵜ ⵏ ⵢⴰⵃⵍⵓⵙ

رشيد أخراز

من مواليد قرية أزمز- قبيلة تاكموت بإقليم طاطا سنة 1979، التحق بالمدرسة وقطع فيها أشواطا، وقد ترعرع في وسط معروف بعشقه للفنون أحواش، وأدرك عباقرة الشعر الأمازيغي بقبيلته من أمثال سيدي بورح وبولاّه أوعلي وغيرهم، فنهل منهم مشربه الأول وهو لازال طالبا، وبعد انقطاعه عن الدراسة التحق بسلك القوات المساعدة، ومع ذلك ظلّ وفيا لفنّ النظم، شرع في بداية مشواره الفني ينشد في أحواش ن تعيالين منذ سنة 2001، ومنذ سنة 2014 بدأ يطرق باب الحوار بأسايس مع ثلة من زملائه الشباب الذين يشاركونه عشقه لفنون أحواش، ومنذ تعيينه بأيت باها كان يتردد على بلدته من حين لآخر، وهو إنسان ودود محب لزملائه الشعراء، وقد ساهم بقسط وافر في إنجاح الملتقى الأول لشعراء أسايس بإغرم في مارس 2017.

ⵜⴰⵎⵎⵓⵔⵖⵉ

ⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⵉⵣⵕⵉ ⵏⵓ ⴷ ⵍⵃⴰⵥⵍ ⵉⵏⵓ ⵎⴰ ⵜⵓⵅⴰⵎ
ⴰⵄⵄ ⴰ ⵎⵏⵛⴽ ⴰ ⵏⵣⵕⴰ ⵖⵉⵔ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵏ ⵜⵜⵉⵏⵉⴼ
ⴰⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵜⵓⴽⴽⵯⵍⵜ ⵕⴱⴱⵉ ⵏⴽ ⴰ ⵢⴰⴽⴰⵍ ⵏ ⵙⵓⵙ
ⵢⵓⴽⴽⵯⵍ ⵜ ⵓⵟⵖⴰⵕ ⵍⵍⵉ ⴳⵉⵡⵏ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⴽⴰⵜⵉⵏ
ⴰ ⵜⴰⵎⵎⵓⵔⵖⵉ ⵏ ⴽⴽⵯⵓⵣ ⵉⴹⴰⵕⵏ ⵉⵛⵜⵜⴰⵏ ⴰⴽⴰⵍ
ⵎⴰⴷ ⴰⵎ ⵉⵕⵣⵎⵏ ⵍⴱⴰⴱ ⵉⴽⴽⵙ ⵉⵢⵉ ⵜⴰⵙⴰⵔⵓⵜ
ⵙⵓⵍ ⵉⵙⵙⵓⴽⵅ ⵉⵡⵜⵜⴰ ⵖ ⵍⵎⵍⴰⴽⴰⵜ ⵏ ⴽⵉⵡⴰⵏ
ⴰⵡⵉⵏ ⴰⴼ ⴷ ⴰⵎⴽⵙⴰ ⴷ ⵓⴼⵢⴰⵎ ⴷ ⵜⵡⵔⵓⵜ ⵏⵙ
ⵓⵍⴰ ⵢⵉⵍⵅ ⴰ ⴱⵓ ⵜⴰⴳⴰⵏⵜ ⵍⵍⵉ ⵏⵏ ⵉⵡⴰⵍⴰⵏ
ⵓⵔ ⵉⵢ(ⵉ) ⵙⵓⵍ ⵅⵉⵍⵏ ⵖ ⵉⴳⵔ ⵎⴰ ⵉⵜⵜⴰⵙⵉ ⵢⴰⵏ
ⵓⵍⴰ ⵢⴰⵔⴳⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵢ(ⵉ) ⴳⵉⵙ ⵅⵉⵍⵏ ⵜⴰⵥⵥⴰⵢⵉⵏ
ⵎⴰ ⵙⵓⵍ ⵏⵏ ⴳⵉⵡⵏ ⵢⴰⴳⵓⵔⵏ ⴰ ⵢⴼ ⵜ ⵉⴷ ⵜⴰⵡⵉⵎ
ⴰ ⵢⴰⴽ ⵓⵔ ⴷ ⴰⵙⵉⵅ ⴰⴷ ⴰⴼ ⵏⵉⵜ ⴰⵙⵉ(ⵏ) ⵡⴰⵎⴰⵏ
ⵎⵉⵛⵛ ⵍⵄⴰⵎⴷⵓ ⵍⵉⵍⵍⴰⵀ ⵏⴼⵜⵎ ⵙⵔⵙ ⴰⵡⴰⵍ ⵏⴼ
ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ «ⵖⴷⴰⵢⵛ» ⵖ ⵍⵊⵏⵜ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵢⴰⴼ ⵏⵔⴰ ⵜⵜ.

تامٌّورغي

ئـ رٍبّي أ يژرٍي نو د لعاقل ينو ما توفام
أحّ أ منشك أ نژرٍا غيرٍ ور أ تن تّينيخ
أد وكان توكٌّلت رٍبّي نك أ ياكال ن سوس
يوكٌّل ت وصغارٍ لّي ڭيون ولا تاكاتين
أ تامّورغي ن كٌّوژ يضارٍن يشتّان أكال
ماد أم يرٍژمن لباب يكّس ئيي تاساروت
سول يسّوكف يوتّا غ لملاكات ن كيوان
أوين أخ د أمكسا د وخيام د توروت نس
ولا ييلف أ بو تاڭانت لّي نّ يوالان
ور يي(ي) سول فيلن غ يڭر ما يتّاسي يان
ولا يارڭان ور ئـيـ(ـي) ڭيس فيلن تاقّايين
ما سول نّ ڭيون ياڭورن أ يخ ت يد تاويم
أ ياك ور د أسيف أد أخ نيت أسيـ(ـن) وامان
ميشّ لحامدو ليلّاه نختم سرس أوال نخ
يغ يلّا «غدايش» غ لجنت كولّو ياخ نرا تّ.

****

-19-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⵍⵇⴰⴷⵉⵔⵉ
ⵉⵍⵎⴳⵔⵜ - ⵉⴷⴰ ⵓⴽⵏⵙⵓⵙ

محمد القادري

ولد الشاعـر محمد القادري سنة 1960 بقرية دووزرو فرقة ئلمكرت قبيلة ئداوكنسوس، وهو ابن المقاوم أحمد القادري، أخذ حروفه الأولى من مسجد قريته قبل أن يلتحق بالمدرسة العصرية، ولكن مساره التعليمي لم يكن موفقا، لذلك مارس عدة مهن قبل أن يلتحق بالعمل في دار الأطفال ببلدية ئغرم، واكب منذ صغره ممارسي فنون أحواش بقبيلته، وتأثر إلى حدّ بعيد بالشعراء المتنقلين بأعالي الأطلس الصغير كالشاعر سيدي بورح وعلي ؤموح وعبد الرحمن أيت الفقيه ومحمد نايت علا، ومنذ أن بلغ الـ 15 عمره بدأ يرتاد ميدان الإبداع الشعري إلى أن أصبح من أبرز محاوري فنّ أهناقار وفن درست، غير أنّه من بين القلائل الذين دأبوا على نظم القصيدة ويوجد الآن في حوزته سيل من هذه القصائد الرائعة التي أعرب من خلالها عن شغفه بتراث أجداده حتى أصبح جل شعره ذا نزعة ثراتية، كما عرف عنه دفاعه المستميت عن حقوق قبيلته، ويشغل الآن مهمة أمين مال الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⵜⴰⴽⵎⵎⵓⵙⵜ

ⵉⵙ ⴽⴰ ⵔⵉⵅ ⴰⴷ ⴰⵡⵏ ⵉⵏⵉⵅ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵇⵚⵉⴷ
ⵉⵙⴽⵔ ⴳⵉⴽⵉ ⵜⵉⵢⵙⴰⵙ ⵉⵙⴽⵔ ⵜⴰⴳⵓⴹⵉ
ⵢⴰⵏ ⵎⵉ ⵓⵔ ⵜⴽⴽⵉ ⵜⴽⵎⵎⵓⵙⵜ ⴰⵎⴳⴳⵕⴹ
ⵏⵉⵖ ⴷ ⴰⵇⵍⵍⴰⵍ ⵏ ⵜⴽⴰⵛⵛⴰⵜ ⵏⵉⵖ ⵍⵃⵔⵣ
ⴰⴽⵢⵓⴹ ⴰⴷ ⵉⵍⵉⵏ ⵖ ⵉⴳⴳⵉ ⵏ ⵓⵎⵥⵥⵓⵖ
ⵓⵔ ⴳⵉⵏ ⴰⵛⵍⵃⵉ ⵓⵍⴰ ⵉⴳⴰ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
ⵓⵔ ⴳⵉⵙ ⵍⵀⵎⵎ ⵏ ⴳⴳⵯ ⵙⵓⵙ ⵓⵍⴰ ⵍⵇⴱⴰⴱ
ⵉⵙ ⴽⴰ ⵉⴽⵛⵎ ⵜⵓⵔⵜⵉⵜ ⴰⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⴽⴽⵔⵣ
ⵓⵔ ⵔⴰ ⵢⴰⵙⵉ ⵜⵉⵖⵔⴰⴷ ⴰⵔ ⵜ ⵏⵜⵜⵎⵏⵉⴷ
ⵃⵜⵜⴰ ⵜⴰⵅⵓⵏⴰⵙⵜ ⵉⴳⴰⵏ ⵓⵍⵜ ⵖⵉⴷ
ⴰⵔ ⴰⵙ ⵜⵜⵉⵍⵉ ⵜⴽⵎⵎⵓⵙⵜ ⵖ ⵓⵎⴳⴳⵕⴹ
ⵓⵔ ⵜⵏⵜ ⵙⵡⴰ ⴷ ⵉⴱⵔⴰⵔⵏ ⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⵢⴰⴹⵏ
ⵏⵙⵙⵏ ⵎⵏⵏⴰⵡ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⴰⵢⵜ ⵍⵎⵍⴽ ⴰⴷ
ⵓⵍⴰ ⵎⴰⵎⵏⴽ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⵉⴽⴽⵔⵙ ⵏⵏⴳⴳⴰⴱ
ⵓⵔ ⴰⵅ ⵅⵅⵉⵏ ⵍⴰⵡⵚⴰⵅ ⵏ ⵜⵎⵉⵣⴰⵔ ⴰⴷ
ⴰⵙⴰⵢⵙ ⵀⴰⵜⵉ ⵉⵃⴰⴷⴰ ⵏⵏ ⵜⵉⵎⵣⴳⵉⴷ
ⵍⵎⴹⵕⵚⵜ ⵀⴰⵜⵜⵉ ⵖ ⵜⴰⵎⴰ ⵏ ⵓⵎⵣⴷⴰⵖ
ⵓⵍⴰ ⴰⵅⵔⴱⵉⵛ ⵉⵛⵡⴰ ⵍⵓⵇⵜ ⵏ ⵓⵚⵎⵎⵉⴹ
ⵖⵉⵏⵏ ⴰⵖ ⵙⴽⴰⵔⵏ ⵜⵜⵢⴰⵡⵉⵍ ⵅ ⵉⵏⵅⵍⴰⴹ
ⵔⵉⵖ ⴰ ⵏⵏ ⴱⴷⵔⵖ ⵍⵃⵛⵓⵎ ⵏ ⵜⵎⵉⵣⴰⵔ ⴰⴷ
ⵉⵎⵉ ⵏ ⵓⴳⴰⴷⵉⵔ ⵍⵍⵉ ⵖ ⵏⵜⵜⵍⵄⴰⴱ
ⵓⵔ ⴳⵉⵙ ⴱⵍⴰ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵅⵔⴷⵓ ⵏ ⵍⴱⴰⵕⵓⴹ
ⴰⵔ ⵉⵇⵇⴰⵢ ⴰⵎⴰⵏ ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵢⵉⴳⴳⵉⴳ
ⴰⵔ ⴳⵉⵙ ⵙⵙⴰⵏ ⵉⴳⴹⴰⴹ ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵅⴰⴷ
ⵙⵙⵏⵏ ⵉⵏⵅⵍⴰⵙ ⵏ ⵜⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⵍⵃⵓⴷⵓⴷ
ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵙⵙⴰⵄⵜ ⴰⴷ ⵉⵔⵡⵉ ⵓⵊⵎⵓⵄ
ⵓⴽⴽⵍⵅ ⵕⴱⴱⵉ ⵅ ⵍⵃⵕⵓⵅ ⵏ ⵜⵅⵉⵏⴰⵖ ⴰⴷ
ⵏⵜⵜⵏⵉ ⴰ ⵉⵅⵍⴰⵏ ⴰⵛⴱⴰⵕⵏ ⵅ ⵓⵎⴰⵣⵉⵖ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵏⵙⵙⵏ ⵎⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⴰⵎⵓⴷ ⵏ ⵖⵉⴷ
ⴳⵉⵅ ⴰⴽ ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵔ ⵉⴳⵉⵏ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
ⴰⵔ ⵉⵙⵙ ⵉⵙⴰⵇⵇⵓⵔ ⴰⵔ ⵉⵙⵙ ⵉⵜⵜⵖⵕⴰⴳ
ⵎⵉⵛⵛ ⵉⵖ ⵏⵔⴰ ⴰⵙⴰⵢⵙ ⴰ ⵏⴰⵔⵎ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ

ⴰ ⴽⴰ ⵏⴱⴷⵓ ⵖ ⵓⵃⵡⴰⵛ ⵢⵉⵔⵉ ⴰ ⵉⴼⴼⵓⵖ
ⴰⵛⴽⵓ ⵜⴰⵊⵎⵎⴰⵄⵜ ⴰⵙ ⵉⴳⴰ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
ⵔⴰ ⴽⵯⵏ ⵙⵇⵙⴰⵖ ⴰ ⵍⵄⴰⵍⵉⵎ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵊⵎⵓⵄ
ⵓⴷⴰⵢ ⵖⵔⴰⵏ ⵍⵓⵇⵔⴰⵏ ⵉⴳ ⵍⴼⵇⵇⵉⵀ
ⴰⵔ ⵉⵙⵙ ⵜⵜⵥⴰⵍⵍⴰⵅ ⵏⴽⴽⵉ ⵓⵍⴰ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ
ⴰⵔ ⴰⵙ ⵜⵜⵉⵏⵉⵅ ⵙⵉⴷⵉ ⵏⵅ ⴰⵙ ⴰⵜⵉⴳ
ⵍⵓⵇⵔⴰⵏ ⵉⵖⵔⴰ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⴰⵔ ⵉⵙⵙ ⵉⵜⵜⵓⵄⴰⴹ
ⴰⵔ ⵙⵎⵓⵏⵏ ⵍⵉⵃⴹⴰⵕ ⵉⵙ ⴷⵉⵙ ⵏⵛⵕⴹ
ⵖⵉⴽ ⴰⴷ ⴰⴷ ⴰⴽ ⵉⵊⵕⴰⵏ ⴰ ⵢⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
ⴰ ⵢⴽ ⵉⵕⵥⵎ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵡⴰⵟⵟⴰⵏ ⵏ ⴹⴹⵓⵕ ⴰⴷ
ⵉⴹⵀⵕ ⴱⴷⴷⴰ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵔ ⵉⴳⵉⵏ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
ⵓⵔ ⴷ ⵉⵍⵓⵍⴰ ⵖ ⵓⴷⵔⴰⵔ ⴰⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⴽⴽⵔⵣ
ⴰⵔ ⵉⴱⵏⵏⴰ ⵜⴰⴼⴼⵉⵡⵉⵏ ⵏ ⴳⴰⵔ ⴰⵎⵓⴷ
ⵎⴰ ⵖ ⵔⴰ ⵏⵏ ⵉⵙⵔⵡⴰⵜ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵔⴰ ⵏⵏ ⵉⵣⵣⵉⴳ
ⵉⵙ ⴽⴰ ⵏⵙⵙⵏ ⵎⴰⴷ ⴳⵉⵅ ⵉⵙⵙⵏ ⵉⵢ(ⵉ) ⵡⴰⵢⵢⴰⴹ
ⴳⵉⵅ ⴰⴽ ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵔ ⵉⴳⵉⵏ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⵛⵛⵉⵏ ⴰⵖⵔⵓⵎ ⵏ ⵜⵎⵉⵣⴰⵔ ⴰⴷ
ⵓⵍⴰ ⵉⵙⵡⴰ ⵖ ⵍⵖⴷⵉⵔ ⵓⵍⴰ ⵖ ⵉⴼⵕⴹ
ⵓⵍⴰ ⵉⵥⵕⴰ ⵜⴰⵙⵍⵉⵜ ⵉⵖ ⵔⴰ ⵜⴼⴼⵓⵖ
ⴰⵔ ⵜⴰⵍⵍⴰ ⵎⴰⵙ ⴰⵔ ⵏⴰⵍⵍⴰ ⵕⵕⵊⴰ ⴼ ⵍⵍⴰⵀ
ⴰⵛⴽⵓ ⵜⴰⵙⵓⵖⴰⵏⵜ ⵓⴳⵔⵏⵜ ⵍⴱⴰⵕⵓⴹ
ⵎⵜⴰ ⵃⴰⴹⵕⵏ ⵉ ⵓⵣⵔⴳ ⵉⵖ ⴰⵔ ⵉⵥⵥⴰⴹ
ⴰ ⴽⴰ ⵉⵙⵙⴼⵍⴷ ⵉ ⵍⵀⵉⵎⵎⴰ ⵏ ⵓⵎⴰⵣⵉⵖ
ⵎⵜⴰ ⵜ ⵜⵔⴱⵉ ⵎⴰⵙ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵜⴽⴽⵔⵣ
ⴰⵔ ⵉⵙⵙⴼⵍⵉⴷ ⵉ ⵜⴳⵯⵔⵙⴰ ⵓⵍⴰ ⵍⵄⵢⴰⴹ
ⵉⵕⵥⵎ ⵜⵉⵡⴰⵍⵍⵉⵏ ⵖ ⵓⵣⵎⵣ ⵏ ⵡⴰⴳⵯⴰⵥ
ⵎⵜⴰ ⵜ ⵜⵔⴱⵉ ⵎⴰⵙ ⵜⵓⵥⵥⵓⵎⵜ ⵏ ⵎⴰⵢⵢⵓⵀ
ⴰⵔ ⵙⵔⵙ ⵜⵎⴳⴳⵔ ⵖ ⵉⵎⵜⴰⵍ ⵏ ⵜⵎⵉⵣⴰⵔ ⴰⴷ
ⵜⵔⴱⵓ ⵜⵏ ⵄⴰⵎⴰⵢⵏ ⵉⵙⵙⵓⵎⵎ ⴳⵉⵙ ⵍⵄⴰⴷⴰ
ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵃⵜⴰⵊⵊⴰⵅ ⴰⴷ ⴰⵙ ⵏⵙⵙⵄⵢⴰⴹ
ⵉⵙ ⴽⴰ ⵔⵉⵅ ⴰⴷ ⴰⵡⵏ ⵉⵏⵉⵅ ⵓⵏⵛⴽ ⴰⴷ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⴳⴳⵯⵔⴰⵏ ⵉ ⵍⵎⵍⴽ ⴰⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⴽⴽⵔⵣ
ⴰ ⴽⴰ ⵉⵎⴳⵔ ⵙ ⵉⵖ ⵔⴰⵏ ⴰⴷ ⴳⵉⵙ ⵉⴼⴼⵓⵖ.

تاكمّوست

يس كا ريخ أد أون ينيخ يا(ن) وقصيد
يسكر ڭيكي تييساس يسكر تاڭوضي
يان مي ور تكّي تكمّوست أمڭّرض
نيغ د أقلّال ن تكاشّات نيغ لحرز
أكيوض أد يلين غ يڭّي ن ومژّوغ
ور ڭين أشلحي ولا يڭا أمازيغ
ور ڭيس لهمّ ن ڭُّ سوس ولا لقباب
يس كا يكشم تورتيت أر ڭيس يكّرز
ور را ياسي تيغراد أر ت نتّمنيد
حتّا تافوناست يڭان ولت غيد
أر أس تّيلي تكمّوست غ ومڭّرض
ور تنت سوا د يبرارن ن ماني ياضن
نسّن منّاو أد ڭان أيت لملك أد
ولا مامنك أد ڭان يكّس نّكّاب
ور أخ خفين لاوصاف ن تميزار أد
أسايس هاتي يحادا نّ تيمزڭيد
لمضرصت هاتّي غ تاما ن ومزداغ
ولا أخرببيش يشوا لوقت ن وصمّيض
غينّ أغ سكارن تّياويل ف ينفلاض
ريغ أ نّ بدرغ لحشوم ن تميزار أد
يمي ن وڭادير لّي غ نتّلعاب
ور ڭيس بلا يا(ن) وفردو ن لبارض
أر يقّاي أمان يغ يلّا ييكّيك
أر ڭيس سّان يڭضاض يغ يلّا فاد

سّنّ ينفلاس ن ثمازيرت لحودود

والايني سّاعت أد يروي وجموع

وكّلخ رٍبّي ف لحرٍوف ن تفيناغ أد

نتّني أ يخلان أشبارٍن ف ومازيغ

ور سول نسّن ما يݣّان أمود ن غيد

ڭيخ أك رٍبّي أ يا(ن) ور يݣّين أمازيغ

أر يسّ يساقّور أر يسّ يتّغرٍاڭ

ميشّ يغ نرا أسايس أ نارم يموريڭ

أ كا نبدو غ وحواش ييري أ يفّوغ

أشكو تاجمّاعت أس يڭّا أمازيغ

را كُن سقساغ أ لعاليم يا(ن) وجموع

وداي غران لوقران يڭ لفقّيه

أر يسّ تّژالّاخ نكّي ولا وييّاض

أر أس تّينيخ سيدي نڭ أس أتيڭ

لوقران يغرا ت أڭّ أر يسّ يتّوعاض

أر سمونّ ليحضارٍ يس ديس نشرٍض

غيك أد أك يجرٍان أ يامازيغ

أ يك يرٍژم رٍبّي غ واطّان ن ضّورٍ أد

يضهرٍ بدّا يا(ن) ور يݣّين أمازيغ

ور د يلولا غ ودرار أر ڭيس يكّرز

أر يبنّا تافّيوين ن ڭار أمود

ما غ را نّ يسروات ماني غ را نّ يزّيڭ

يس كا نسّن ماد ڭيخ يسّن ئيـ(ـي) واياض

ڭيخ أك رٍبّي أ يا(ن) ور يݣّين أمازيغ

ور جّون شّين أغروم ن تميزار أد

ولا يسوا غ لغدير ولا غ يفرٍض

ولا يژڔا تاسليت يغ را تفّوغ

أر تالّا ماس أر نالّا ڕّجا ف لّاه

أشكو تاسوغانت وڭرنت لباڕوض

متا حاضرڹ ئـ وزرڭ يغ أر يژّاض

أ كا يسّفلد ئـ لهيمّا ن ومازيغ

متا ت تربي ماس أر يسّن تكّرز

أر يسّفليد ئـ تكُرسا ولا لعياض

يرڕثم تيوالّين غ وزمز ن واكُاژ

متا ت تربي ماس توژّومت ن مايوه

أر سرس ثمڭّر غ يمتال ن ثميزار أد

تربو تن عاماين يسّومّ ڭيس لعادا

ور أكُ حتاجّاخ أد أس نسّعياض

يس كا ريخ أد أون ينيخ ونشك أد

وانّا يكُّران ئـ لملك أر ڭيس يكّرز

أ كا يمڭر س يغ ران أد ڭيس يفّوغ.

****

-20-

ⵢⵓⵙⵙⴼ ⴱⵓⵔⵔⵉⵛ

ⵉⴷⵎⵖⴰⵕⴹⵉⵢⵏ – ⵜⴰⵍⵉⵡⵉⵏ

يوسف بو الريش

ولد بدوار أنامّر قبيلة ئلمغارطيين – تاليوين في ال 15 من يوليوز 1987، وبعد مروره بمسجد القرية انصرف إلى الخدمات الحرفية، تأثر بعدد من الشعراء المشهورين في الساحة الفنية بسوس من أمثال الحاج مبارك كوكو، عن طريق الاستماع إلى مختلف الشرائط، وقد ولج أسايس سنة 2010، وتمكن في فرض وجوده كشاب طموح في الحواريات الشعرية سواء ببلدته أو بالقبائل المجاورة، ساجل عددا من الشعراء كأزوليض وأجماع مزيين، زعبد الله منهو وغيرهم.

ⴰⵃⵇⴰⴱ

ⵓⵊⵉⴳ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⴼⵎⵓⵃ ⵏⵙⵏⵉ ⵏⴰⴳⴱⴰⵇ ⵏⵙ
ⵜⴰⵙⴰ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵙⵙⵏⵜⴰⵏⵜ ⴰⴹⴹⴰⵏ ⴷ ⵏⴳⵓⵊ
ⵉⴳⴰ ⵡⵓⵏ ⴰⵎⴰⴳⵓⵙ ⵓⵔ ⵉⵥⵇⵉ ⵢⴰⵏ
ⴰⵔ ⵢⴰⵏⵏⴰ ⵉⵥⵇⵉ ⵎⴰⵛ ⵓⵔ ⵉⵚⵄⵉ ⵢⴰⵜ
ⴰ ⵢⴰⵙⵖⴰⵔ ⵏ ⵏⵏⵓⵣ ⵓⵔ ⴳⵉⴽ ⵉⵄⵀⵇ ⵢⴰⵜ
ⵜⵉⵡⵏ ⴰⴽ ⴽⴰ ⵜⴰⴽⴰⵜ ⵉⵊⵔ ⴰⵔ ⴰⴽ ⴷ ⵉⴹⴹⴰⵇ
ⴰ ⵎⵉⵛⴽ (ⵏ) ⵓⵊⵔⵓⵖ ⵎⵙⴽⵉⵏ ⵉⴼⴷⵔ ⵏⵉⵜ
ⵉⵎⵓⵙⵏⵎⵏ ⴽⵓⵏⵏⵓ ⵜⴳⴰⵎ ⵉⴼⴱⵉⵢⴰⴽ
ⵢⵓⵊⴰ ⵓⴷⴰⵢ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⴰⵔ ⵉⵙⴷⵓⵚⵚⵓⵔ
ⵜⵏⵣⴰⵎⵜ ⴰ ⵜⵉⵎⵉⵣⴰⵔ ⵖ ⵉⵏⵏⴰ ⵄⵄⵢⴰⵎⴰⵏ
ⵜⵉⴷⴰ ⵖ ⵓⵔ ⵏⵏⵉⵏ ⵓⵏⵊⵏⵜ ⵉ ⵢⵉⴼⴰⵡⵡⴰⵏ
ⵢⴰⵏ ⵉⵙⴽⵔⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵇⵇⵕⴰⵕ ⴰⴷ ⴷ ⴱⴰⵢⵍ
ⵉⵚⴰⵏ ⴷ ⴰ ⵜⵏ ⵜⵜⴰⵔⵎⵏ ⵖ ⵎⴷⴷⵏ ⴼⵀⵏⵏⵉⵏ
ⵓⴷⴰⵢ ⵀⴰ ⵍ ⵉⵅⵇⵛ ⵉⵙ ⵖⵓⵢⵏ ⴰⵛⴱⴰⵇ ⵏⵙ
ⵏⵚⵓⴷⵙ ⴰⵙ ⴱⴷⴰⵏ ⵉⵙ ⵜⵏⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵃⵎⵎⵇⵏ
ⵏⵉⵙⵏⴰⵎ ⵓⵔ ⵉⵎⵎⵓⵜ ⵎⴰⵛ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⵥⵇⵇⴰⴳ
ⵔⴳⵏⵏ ⵜⵉⵊⵏⵡⵉⵏ ⵏⵙ ⴰⴷ ⴷ ⵓⵔ ⴱⴰⵢⵍ
ⴰⵏⵏⴰⵀ ⵉⵇⵅⵎ ⵛⵛⵓⵀⴰⴷⴰ ⵡⵉⵏⵏⵉ ⵣⵔⵉⵏⵉⵏ
ⵉⵎⵎⴰ ⴰ ⴳⵯⵎⴰ ⵖⵉⴽⴰⴷ ⵓⵔ ⵙⵓⵏ ⵉⵄⵀⵇ ⵢⴰⵜ
ⴰ ⵢⴰⵃⵇⴰⴱ ⵉⵣⵣⵏⵣⴰ ⵖⵉⵏⵏⵉ ⵖ ⴷ ⵉⵏⵓⵏ
ⵉⵣⵣⵏⵣ ⴽ ⴰ ⵛⵛⴰⵇⴰⵊ ⵓⵏⴰ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⵏⵙ
ⵏⵀⵎⵎ ⵏⵖ ⵏⴽⴽⵉ ⵏⵉⵜ ⴰⵔ ⴰⴳ ⴱⵔⵔⵉⵏ
ⴰ ⵙⵉⴷⵉ ⵇⴱⴱⵉ ⵙⵙⵉⵏⵊ ⴰⴳ ⵉ ⵢⵉⴼⴰⵡⵡⴰⵏ
ⴰⵄⴰⵇ ⴰⵥⵏⵎⴰⵄ ⵉⴱⵔⵉ ⵉⵢⵉ ⵏⵖⴰⵏ ⴰⴳ
ⵉⵖ ⵜ ⵉⵔⵡⴰⵙ ⵓⵊⴰⵙⵉ ⵔⴰⴷ ⵏⵄⵇ ⴰⴽⴰⵏ.

أعـرٖاب

وفيخ يا(ن) وجموع نسني لاخبارٖ نس
تاسا ور أ تسّنتالت أطّان د لخوف
يڭا وول أماڭوس ور يژرٖي يان
أر يالّا يژرٖي ماش ور يقضي يات
أ ياسغار ن لّوز ور ڭيك يضهرٖ يات
تيون أك كا تاكات يفر أر أك د يطّارٖ
أ ميشك (ن) وفـروغ مسكين يجدر نيت
يموسلمن كولّو تڭام يجبيياك
يوفا وداي أغاراس أر يسدوقّور
تنزامت أ تيميزار غ يلّا ضّيامان
تيدا غ ور لّين ونفنت ئـ ييجاوان
يان يسكرن كرا ن رّصاص أد د باينّ
يقان د أ تن تّارمن غ مدّن جهلنين
وداي ها نّ يحرٖش يس غوين أشبارٖ نس
لقودس أس بدان يس تنت أڭّ عمّرٖن
ليسلام ور يمّوت ماش ور أ ت ژرّاخ
رڭلن تيفلوين نس أد د ور باينّ
ألّاه يرٖحم شّوهادا ويلّي زرينين
يمّا أ ڭما غيكاد ور سول يضهرٖ يات
أ ياعرٖاب يزّنزا غيلّي غ د يلول
يزّنز ك أ شّارٖاف ولا تاڭمات نس
لهمّ نغ نكّي نيت أر أخ برّين
أ سيدي رٖبّي سّينف أخ ئـ ييجاوان
أضارٖ أژلماض يبري ئيي نغان أخ
يغ ت يرواس وفاسي راد نضرٖ أكال.

****

-21-

ⵄⵓⵎⴰⵔ ⴰⵢⵜ ⴱⵉⵀⵉ
ⴰⵢⵜ ⵎⵏⵚⵓⵔ – ⵜⴰⴼⴰ

عمر أيت بيهي

عمر أيت بيهي ولد في تين فو – قبيلة أيت منصور – جماعة أقايغان، في سنة 1982، والتحق بالمدرسة إلى أن وصل إلى الدراسة الإعدادية، كانت بلدته مولعة بفنون أحواش، وهناك استهواه فنّ النظم منذ صباه، فولج أسايس وهو لا زال تلميذا في الإعدادي في التسعينات، تأثر بالشعراء الذين يزورون البلدة من أمثال الشاعر أبرشاح وبن موسى وغيرهم، إضافة إلى أنه ينتمي إلى أسرة عاشقة للفن، وقد بدأ حوارياته ببلدته، وهو الآن في دار الغربة بفرنسا، يمتاز بين الشعراء الشباب ببلدته بحسن الصياغة والالتزام بالضوابط العروضية.

ⴰⴹⴹⴰⵍ

ⵡⴰ ⵊⵎⵄⴰⵖ ⵏⵉⵜ ⵏⴽⴽⵉ ⴷ ⵉⵅⴼ ⵉⵏⵓ ⴰⵔ ⵏⵙⴰⵡⴰⵍ
ⵡⴰ ⵙⴽⵔⵅ ⴰⵊⵎⵓⵄ ⵏⴽⴽⵉ ⴷⵉⵙ ⵏⵏⵉⵖ ⴰⵙ ⵓⴽⴰⵏ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⴰ ⴽⵎ ⵙⵉⴳⴳⵉⵍⵖ ⴰ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ ⵍⵃⵓⵕⵕ
ⵡⴰ ⵏⵓⵙⵉ ⴱⴷⴷⴰ ⵜⴰⵎⴰⵟⵓⵏⵜ ⴰⵔ ⴰⵙⵏⵜ ⴰⵍⵍⴰⵖ
ⵡⴰ ⴽⴽⵉⵖ ⵉⴷⵔⴰⵔⵏ ⴽⴽⵉⵖ ⵍⴱⵃⵓⵕ ⴽⴽⵉⵖ ⴰⵙⵉⴼ
ⵓⵍⴰ ⴽⴰ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⵙⵙⴼⴰⵡⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⴽⴽⵉⵖ
ⵎⵉⵢⵢⴰ ⵏ ⵓⵟⴱⵉⴱ ⵏⴷⴷⴰ ⴷⴰⵔⵙ ⴰⵔ ⵉⵢⵉ ⵜⵜⵉⵏⵉⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵏⴳⴰ ⵉ ⵜⵎⴰⵟⵓⵏⵜ ⵏⴽⴽⵉ ⵓⵍⴰ ⴽⵢⵢⵉⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⵓ ⴱⵍⴰ ⴰ ⵜⵥⵥⵉⵟⵕⵜ ⴰ ⴼⵍⵍⴰⴽ ⵉⵍⵍⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⴽ ⵉⵄⴼⵓ ⵕⴱⴱⵉ ⴳⴰⵏ ⵎⴰ ⵙ ⴰⴽ ⵉⵏⵏⴰ ⵢⴰⵏ
ⵉⵙⴰⵡⵍ ⴷ ⵉⵏⵏⴰ ⵉⵢⵉ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵜⵓⵏⴼⵜ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵡⴰ ⵜⵓⴱ ⴰ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵜⵓⴱ ⵉⵖ ⵙⵓⵍ ⴰⵙⵏ ⵜⵓⴼⵉⵜ
ⵉⵙⵙⴰⵏ ⵉⵙ ⵔⴰ ⵜⵣⵔⵉ ⴷⴷⵓⵏⵢⴰ ⵜⵍⵍⴰ ⵍⵉⵅⵔⵜ
ⵉⵙⵙⴰⵏ ⵉⵙ ⵔⴰ ⵏⵣⵔⵉ ⴷⴰⵔ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ ⵏ ⵡⴰⴽⴰⵍ
ⴰ ⴽ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⴼⵕⵃ ⵛⵛⴱⴰⴱ ⵏⴽ ⵓⵍⴰ ⵚⵚⵉⴼⴰⵜ ⵏⴽ
ⴰ ⴹⴹⵓⵍ ⵏ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⴰ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵉⴽⵏⵓ ⵉⵅⴼ ⵉ ⴽⵉⵡⴰⵏ
ⵡⴰ ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⵕⵎⵉⵏ ⵉⵟⴰⵕⵏ ⵏⵏⴰ ⴽ ⵓⵙⵉⵏⵉⵏ
ⵉⴼⵍ ⴽ ⵉⵥⵕⵉ ⴰⵔ ⵜⵙⵉⴳⴳⵉⵍⵜ ⴰⴼⵓⵙ ⵉⵃⵏⵏⴰⵏ
ⵜⴰⵍⵍⵉ ⵜⵏⵜ ⵢⵓⴳⵔⵏ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⴰⵙⵙ ⵏⵏⴰ ⴽⵯⵏ ⴼⵍⵏ
ⵎⴰ ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⴷⵉⵜⵓⵏ ⵉⴳⴳⴰⵡⵔ ⴰ ⵙⵔⴽ ⵉⵙⴰⵡⴰⵍ
ⴰⵔⵔⴰⵡ ⵉⵜⵜⵏⴰⵙⴰ ⵍⵍⵉⵖ ⴰⵙⵏ ⵜⴰⴽⴽⴰⵜ ⴰⵜⴰⵢ
ⵡⴰ ⵜⵍⴽⵎⵜ ⵏⵉⵜ ⵖ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵜⵉⵍⵍⵉ ⵃⵕⵕⴰⵏⵉⵏ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⴳⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⴷ ⵓⴼⵀⵉⵎ ⵙⴽⵔⵏ ⵍⵅⵉⵔ
ⵏⵜⵜⴰ ⴰ ⵔⴰ ⵏⵏ ⵢⴰⴼ(ⵉ) ⵉⵖ ⵉⴷⴷⴰ ⵙ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ ⵏ ⵡⴰⴽⴰⵍ.

أطّان

وا جمعاغ نيت نكّي د يخف ينو أر نساوال
وا سكرخ أجموع نكّي ديس نّيغ أس وكان
أحّ أ ميشك أ كم سيگّيلغ أ تامّنت لحورّ
وا نوسي بدّا تاماضونت أر أسنت ألاّغ
وا كّيغ يدرارن كّيغ لبحورٍ كّيغ أسيف
ولا كا يگنوان رٍبّي سّفاون ماني كّيغ
مييا ن وضبيب ندّا دارس أر ييي تّينين
أ يان أ نگّا ئـ تماضونت نكّي ولا كيين
أ والو بلا أ تژّيضرٍت أ فلاّك يلّان
أد أك يعفو رٍبّي گّان ما س أك ينّا يان
يساول د ينّا يّي ها نّ تونفت أغاراس
وا توب أ بنادم توب يغ سول أسن توفيت
يسّان يس را تزري دّونيا تلّا ليخرت
يسّان يس را نزري دار تيلاّس ن واكال
أ ك ور يسّفرٍح شّباب نك ولا صّيفات نك
أ طّول ن زّمان أ راد د يكنو يخف ئـ كيوان
وا را سول رٍمين يضارٍن نّا ك وسينين
يفل ك يژرٍي أر تسيگّيلت أفوس يحنّان
تالّي تنت يوگرن لعاقل أسّ نّا كُن فلن
ما را سول ديتون يگّاور أ سرك يساوال
أرّاو يتّناسا لّيغ أسن تاكّات أتاي
وا تلكمت نيت غ تودرت تيلّي حرّانين
أ وانّا يگّا رٍبّي د وفهيم سكرن لخير
نتّا أ را نّ يافـ(ـي) يغ يدّا س تيلاّس ن واكال.

****

-22-

ⵙⴰⵄⵉⴷⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ
ⵍⴰⵅⵚⴰⵚ

سعيدة تامازيغت

ولدت الشاعرة بقبيلة لاخصاص في سنة 1966، وكغيرها من الفتيات البدويات ظلت محرومة من التعلّم، وكان أبوها قد التحق بالخارج، وكان مولعا بالأشرطة الفنية لشعراء رّوايس، وقد نشأت في هذا الجوّ واستمعت إلى روائع الدمسيري وبيهتي وسعيد أشتوك وغيرهم، إلى أن تولّدت لديها موهبة الإبداع الشعري، وكان لمعاناتها مع عائلتها الأثر الكبير في الاندفاع الشعري الوجداني الذي تمخض عنه سيل من القصائد المعبرة عن هذه الوضعية، تمكنت من جمع قصائدها وهي الآن تعد لنشر ديوان لها تحت اسم «أسيف ن توكَوضيوين».

ⴰⵙⵎⴰⵎⵎⵉ

ⴰⴷ ⴷⴰⵖ ⵏⵙⵎⴰⵎⵎⵉ ⵖ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ ⵏⵖ ⵉⵖ ⴷ ⵏⵙⴰⵡⵀ
ⴰⵃⵃ ⵉⵏⵓ ⵜⴳⴰ ⵉⵢⵉ ⴽⵓⵀⵀⵓ ⵜⴰⵙⴰ ⵏⵡ ⵉⴱⵔⵔⴰⵢⵏ
ⴰⵎⴽ ⵍⴰ ⵓⴽⴰⵏ ⵙⴽⵔⵖ ⵉ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⴰ ⵜⴳ ⴰⵙⴰⵡⵏ
ⴰⵜⵉ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵏⴽⴽⵉ ⵜⵓⴼ ⴰⵅ ⵀⵎⵓⵜ ⵏⴳⴳⵯⵣ ⵉⴽⴰⵀⵏ
ⴰⵃⵃ ⵉⵏⵓ ⵅⵀⵉⵖ ⵍⵉⵢⵜ ⴰ ⵉⵢⵉ ⵉⴼⴽⴰⵏ ⵉ ⵉⵊⴰⵕⵉⴼⵏ
ⴰⵔ ⵏⵜⵜⴰⵎⵏ ⴰⵢⵀⵀⵉⵖ ⴰⴽⴽⵯ ⵏⴳⴰⵔⴰⵅ ⴷ ⵀⵄⴰⵇⵀ
ⵜⵏⵖⴰ ⵉⵢⵉ ⵀⵃⴰⵏⴰⵏⴰ ⵃⵓⵙⵙⵉⵖ ⵙ ⵡⵓⵀ ⵉⴱⵔⵉ ⴰⵏⵖ
ⵉⴳⴰ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵉⵖ ⴰⵅ ⵉⵀⵀⴰ ⴼ ⵀⴽⴰⵏⵓⵏ ⵉⵊⴷⵔ ⴼⵉⵙⵙⵖ
ⵓⵔ ⵏⴹⴹⴰⴼ ⵎⴰ ⴼ ⴰⵀⵀⴰⵖ ⴰ ⵏⵙⵜⵓ ⵀⴰⵟⵎⵓⵎ ⵉⵏⵡ
ⵉⵙⴳⴳⵯⴰⵙⵏ ⴰ ⴱⴷⴷⴰ ⴳⵉⵖ ⵏⴽⴽⵉⵏ ⵡⴰⵃⴷⵓ ⴰⵏⵖ
ⵓⴽⴰⵏ ⵏⴽⵛⵎ ⵙ ⵀⵟⴰⵡⴰ ⵢ‾ⴰⴷ ⴷ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵉⵎⵎⵉⵎⵏ
ⵎⵇⴰⵔ ⵍ ⵎⴰⴹⵀⵖ ⵏⴼⴼⵓⵖ ⴰⴱⴰⵔⴰⵣ ⴷ ⵓⵙⴰⵢⵙ
ⴰ ⵟⴰ ⵢⴰⵖ ⵏⵓⵔⵔⵉ ⴷ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵏⵚⴱⵕ ⵖ ⵉⵟⵡⴰⵡⵉⵢⵏ
ⴰⴷ ⴷⴰⵖ ⵏⵙⵜⵓ ⵜⴰⴳⵓⴻⵉ ⴷ ⵀⵟⵎⵎ ⵉ ⵓⴳⴰⵢⵢⵓ ⵏⵡ
ⵉⵎⵎⴰ ⵢⴰⵏ ⴼ ⴰ ⵜⴰⵀⵀⴰⵜ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⴰⴷⴷ ⵉ ⵊⵊⵕⵓⵃ ⵏⴽ
ⵏⵓⵔⵔⵉ ⴷ ⴰ ⵏⵀⵓⵃ ⴰⵎⵓⴷ ⵏ ⵉⵊⴷⴷⵉⴳⵏ ⵖ ⵜⴰⵙⴰ ⵏⵡ
ⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⵎⵎⵖⵉ ⵉⴼⵀⵓⵊⵊⵓ ⴰⵡⵉⴳ ⵕⵕⵊⵀⵜ ⵏⵙⵏ
ⵏⵓⴼⴰ ⴷ ⴰⵢⵜ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ ⵍⴰⵏ ⴰⵅ ⴰⴷⵔ ⵉ ⵡⴰⵀⵀⵏ
ⵜⵕⵥⵎⵜ ⵉ ⵓⵔⴰⵔ ⵏⵎ ⴰⵛⴽⵓ ⵉⵎⵎⵉⵎ ⵉⴳ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ
ⵏⵙⵔⵙ ⵉ ⵀⵟⵎⵎ ⵉⵏⵉⴳ ⵡⴰⵀⴰⵀ ⴰⵀⴰⵢ ⴷ ⴰⵀⴰⵢⵀ.

أسامّي

أد داغ نسمامّي غ يموريڭ نغ يغ د نساول

أحّ ينو تڭا يّي كولّو تاسا نو يبرّاين

أمك نّا وكان سكرغ ئـ تودرت أ تڭ أساون

أتي زون د نكّي توف أخ لموت نڭُّز يكالن

أحّ ينو خليغ نّييت أ يّي يفكان ئـ يجاڕيفن

أر نتّامن أيلّيغ أڭُّ نڭاراخ د لعاقل

تنغا ييي لحانانا حوسّيغ س وُول يبري أنغ

يڭا زو(ن) د يغ أخ يلّا ف لكانون يجدر فيسّغ

ور نطّاف ما ف ألّاغ أ نستو لاهموم ينو

يسڭُّاسن أ بدّا ڭيغ نكّين واحدو أنغ

وكان نكشم س لهاوا ياد د ومارڭ يمّيمن

مقار نّ ماطلغ نفّوغ أباراز د وسايس

أ ها ياغ نورّي د ور را نصبڕ غ يهواويين

أد داغ نستو تاڭوضي د لهمّ ئـ وڭايو نو

يمّا يان ف أ تالّات أر يتّادّ ئـ جّـڕوح نك

نورّي د أ نلوح أمود ن يجدّيڭن غ تاسا نو

أ ڭيس يمّغي يفلوجّـو أويخ ڕّجلت نسن

نوفا د أيت يموريڭ نّان أخ أدر ئـ والّن

تڕژمت ئـ ورار نم أشكو يمّيم يڭ تيفاوت

نسرس ئـ لهمّ ينيخ والال ألاي د ألايل.

****

-23-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴰⴷⵔⴰⵔ
ⵜⴰⴳⵎⵓⵜ ⵏ ⵢⴰⵄⵇⵓⴱ

محمد أدرار

مزداد بتاگموت ن ياعقوب باقليم طاطا سنة 1981

بدأت في ممارسة فن أحواش منذ الصغر، وتتلمذت على يد الشيخ سيدي أحمد التدرارتي رحمه الله الذي كان يدون الأشعار وخاصة شعر المرحوم الحسن بوزنير وباها أوموسو بعدهم مبارك أومسعود وموح أومبارك، هؤلاء هم من كانوا المثل الأعلى في ولوعي بالشعر الأمازيغي في فن أحواش، وبعد متابعتي لمجموعة من الشعراء الجدد أخدت فكرة واسعة عن النظم (تيگوريوين ن ومارگ) وكذا الألحان (لارياح)، وأصبحت أشارك مجموعة من الشعراء في الأفراح والاعراس بمحاورات شعرية أمثال الشاعر والأستاذ والباحث الأمازيغي إبراهيم أوبلا والشعراء رشيد أخرّاز ومحمد گّوسا والقائمة طويلة...

ⵍⵊⵏⵜ ⴼ ⵡⴰⴽⴰⵍ

ⵡⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⵏⵣⵣⵓⵔ ⴷ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵡⴰⵡⴰⵍ
ⴰⴷ ⴷⴰⵅ ⵍⵓⵃⵅ ⴰⵎⵓⴷ ⵉⵛⵡⴰⵏ ⵉ ⵢⵉⴹⵕⴼⴰⵏ
ⴰⵔⵎⵅ ⵜⴰⵢⵢⵓⴳⴰ ⵖ ⵍⵃⵕⵓⴼ ⵓⵔ ⴷ ⴰⴽⴰⵍ
ⴳⴰⵜ ⴰ ⵙⵙⵍⴰⵎ ⵉⵏⵓ ⴰⵏⵥⴰⵕ ⵉⴱⴹⴰ ⵔⵔⵉⵃ
ⴼ ⵓⵙⵙⵓⵏ ⵏ ⵓⵎⴰⵣⵉⵖ ⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⵏⵥⵍⵉ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⵜⴰⴳⵎⵓⵜ ⵍⵄⵉⵏ ⴰ ⵜⴳⵉⵜ ⵓⵔ ⴷ ⴰⵙⵉⴼ
ⴰⵎⴰⵏ ⵏ ⵜⵔⴳⵯⴰ ⴰⵙ ⴰ ⵙⵙⵡⴰⵏ ⵉⴳⵔⴰⵏ ⵏⵎ
ⵉⴳ ⵓⵙⵖⴰⵔ ⵍⵊⵉⴷ ⴰⵔ ⵢⴰⴽⴽⴰ ⵍⵖⵍⵍⴰⵜ
ⵉⴳ ⵓⴼⴳⴰⵏ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵙ ⵓⵍ ⵏⵙ ⴷ ⴰⴽⴰⵍ
ⵉⴳ ⵍⵉⵙⵍⴰⵎ ⴷⴷⵉⵏ ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⵏⴳⴳⵯⵣ ⴰⴽⴰⵍ
ⵡⴰ ⵜⵓⵙⵙⵏⴰ ⵏ ⵜⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⵍⵍⵉ ⴼ ⴷ ⵏⵍⵓⵍ
ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⵙ ⵜⵓⵜⵜⴰⵜⵜⵓⵢⵜ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵓⵜⵜⴱⴰⵍⴰⵜ
ⵙⵙⵓⵜⵍⵅ ⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⴰ ⵜⵉⴹⵜ ⵉⵙⵜⴰⵔⴰ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⵅ
ⴰ ⵜⴰⴳⵎⵓⵜ ⴰⵏⴰⵡ ⵏⵎ ⵓⵔ ⴰⵅ ⴱⴰⵢⵏⵏ
ⴰ ⵜⵉⵣⵣⵡⴰ ⴰⵊⵊⵉⴳ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵖⵉⴷ ⴰⵖ ⵍⵓⵍⴰⵏ
ⵡⴰ ⵎⵉⵛⵜ ⴷ ⵓⵎⴰⴷⴰⵍ ⴰⴷ ⴷ ⵢⵉⵡⵉ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⵙ
ⴰⴼⵉⵏ ⴷ ⴰⵣⴰⵖⴰⵔ ⵉⵏⵎⴰⵍⴰ ⵓⴹⵕⴼ ⵏⵙ
ⵜⵉⵔⴰⵛ ⵏ ⵜⵎⵥⵉⵏ ⴰ ⵉⵙⵎⵖⴰⵢ ⴷ ⵍⵅⵉⵔ
ⴰⴼⵉⵏ ⴷ ⵉⵖⴰⵔⴰⵙⵏ ⵏⴳⴰⴷⴷⴰⵏ ⵣⵉⵢⵢⵏⵏ
ⵉⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰ ⵉⴽⴽ ⵜ ⵍⵅⵍⵇ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵀⵓⵡⵍⵏ
ⵜⴰⴷⴷⴰⵔⵜ ⵏ ⵍⵀⵏⴰ ⴷ ⵓⵙⵍⴰⵍ ⴰ ⵉⴳ ⵍⵃⴰⵍ
ⵓⵔ ⴰⵙ ⴳⵉⵅ ⵍⵄⵉⴱ ⵉⵙ ⵢⵓⴼⴰ ⵍⵊⵏⵜ ⵏⵙ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⵏⵃⴰⵛⴰ ⵢⴰⵏ ⵡⴰⵍⴰ ⵏⴱⵔⵔⴰ ⵜ
ⵓⵍⴰ ⵏⴳⴰ ⵍⵇⴼⵓⵍ ⵉ ⵜⴼⵍⵡⵉⵏ ⴷ ⵓⵍ ⵏⵅ
ⵡⴰ ⵎⵔⵃⴱⴰ ⵎⵉⵢⵢⴰⵜ ⴰⵍⴼ ⵏ ⵎⵔⵃⴱⴰ ⵙⵔⴽ
ⴰ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⵓⵍⴰ ⵍⵊⵉⵛ ⵏⵎ.

لجنت ف واكال

وا بيسمي لّاه نزّور د رٍبّي غ واوال
أد داخ لوحخ أمود يشوان ئـ يضرٍفان
أرمخ تايوڭا غ لحـرٍوف ور د أكال
ڭات أ سّلام ينو أنژارٍ يبضا رّيح
ف وسّون ن ومازيغ أ نّ ور نژلي يان
أ تاڭموت لعين أ تڭيت ور د أسيف
أمان ن ترڭُا أس أ سّوان يڭران نم
يڭ وسغار لجيد أر ياكّا لغلّات
يڭ وفڭان أمازيغ س ول نس د أكال
يڭ ليسلام دّين أر كيغ نڭُّز أكال
وا توسّنا ن تمازيغت لّي ف د نلول
أمارڭ أس تْتّاتّويت ور أ تْتّبالات
سّوتلخ د أڭُ أ تيضت يستارا وضارٍ نخ
أ تاڭموت أناو نم ور أخ باينّ
أ تيزّوا أجّيڭ ها نّ غيد أغ لولان
وا ميشت د ومادان أد د ييوي وضارٍ نس
أفين د أزاغار ينمالا وضرٍف نس
تيراش ن تمزين أ يسمغاي د لخير
أفين د يغاراسن نڭادّان زيينّ
ينّا يرا يڭ ت لخلق ور سول هوولن
تادّارت ن لهنا د وسلال أ يڭ لحال
ور أس ڭيخ لعيب يس يوفا لجنت نس
ها نّ ور نحاشا يان والا نبرّا ت
ولا نڭا لقفول ئـ تفلوين د ول نخ
وا مرحبا مييّات ألف ن مرحبا سرك
أ تاڭُمات تامازيغت ولا لجيش نم.

****

-24-

ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⵡⴰⵀⵔⵓⵛ

ⵉⴳⵯⵟⵟⴰⵢ

ابراهيم واهروش

ولد في قبيلة ئكّـُطّاي سنة 1950، ولم يسعفه الحظ في طرق أبواب المدرسة، ونشأ في بيئة بدوية في أحضان قبيلة مولعة بفنّ درست، وقد تأثر بالشعراء المعروفين في القبائل المجاورة كالشاعر محند باخشين بإداوزدوت، وقد لازم بلدته ولا يتجاوزها إلى ما هو أبعد إلا نادرا، يمتاز الشاعر بقوة صوته ونبراته الشجية، وله باع طويل في مساجلة أكابر الشعراء الذين يزورون محيطه.

ⴰⴼⵓⵍⴽⵉ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ

ⴰ ⴽⵯⵏ ⵙⴰⵇⵙⴰⵖ ⴰ ⵟⵟⵍⴱⴰ ⵓⵍⴰ ⴰⴳⵯⵔⵔⴰⵎ
ⴰ ⵢⴰⴼⵓⵍⴽⵉ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵎⴰ ⵜ ⵉⴳⴰⵏ
ⵏⵉⵖ ⴰⵡⵏ ⵜ ⵎⵍⵉⵖ ⵎⵇⴰⵔ ⵜ ⵓⵔ ⴼⵀⵎⵖ
ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵡⴰⵏⴰⵡ ⵏ ⵚⵚⴰⵃⵜ ⵉⵖ ⵜⴷⵓⵙ
ⵉⵎⵎⴰ ⵍⴰⵎⵡⴰⵍ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵔⴰⴷ ⵣⵔⵉⵏ
ⵓⵍⴰ ⴰⵡⴰⵍ ⵏ ⵉⵎⴷⴷⵓⴽⴽⵯⴰⵍ ⴷⴰ ⵉⵣⵔⴰⵢ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵙ ⵜⵏⵏⵉⵜ ⵔⴰ ⴽⵯⵏ ⵏⴼⵄⵓⵏ
ⴰⵙⵙ ⵏⵏⴰ ⵖ ⵜⵏ ⵜⵃⵜⴰⵊⵊⴰⵜ ⵔⴰ ⴽ ⵣⵔⵉⵏ
ⴰⴼⵓⴷ ⵏⴽ ⵓⴽⴰⵏ ⵏⵜⵜⴰ(ⵏ) ⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⴳⵯⵎⴰⴽ
ⵏⵉⵖ ⴰⵔⵔⴰⵡ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵜ ⵉⵟⵟⴰⴼⵏ ⵉⵏⴼⵄⵓ ⵜ
ⵉⵎⵎⴰ ⵜⴰⵔⵡⴰ ⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⴷ ⵉⵙ ⵔⴰ ⴽ ⵊⵍⵓⵏ
ⵓⵍⴰ ⵢⴰⵏ ⵡⴰⵡⴰⵍ ⵓⴼⵉⵅ ⵜ ⴰ ⵜ ⴱⴷⵔⵅ
ⵎⵇⴰⵔ ⵉⴳⴰ ⵓⵔⴳⴰⵣ ⵡⴰⵏ ⵡⴰⵙⵙⴼⴷⴰⵍ
ⵏⵉⵖ ⵉⴳⴰ ⵉⴼⵉⵢⵙ ⵏⵉⵖ ⵉⴳ ⵡⴰⴳⵔⵣⴰⵎ
ⵏⵉⵖ ⵉⴳⴰ ⵍⴱⴰⵣ ⵍⵃⵓⵕⵕ ⵉⵜⵜⵢⴰⵡⵄⴹⴰⵎ
ⵉⵙⵜⴰⵔⴰ ⵖ ⵡⴰⴽⴰⵍ ⵉⵙⵜⴰⵔⴰ ⵍⴱⵃⵓⵕ
ⵉⵙⵜⴰⵔⴰ ⵖ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ ⵉⴽⴽ ⴰⴼⴰ ⵓⴷⵔⴰⵔ
ⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⴽⵔⴰ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⴰⵔ ⵜⵏ ⵥⵕⵕⴰⵏ
ⵉⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵍⵡⵔⴽ ⵖ ⵡⵓⵍ ⵏⵙ ⵉⴹⵕⵕⴰ ⵜ
ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⵍⵄⵉⴱ ⵉ ⴽⵔⴰ ⵖ ⵍⵍⴰⵏ
ⴰ ⵟⵟⵓⵍ ⵏ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵙⵍⵉ ⵉⵥⵡⵉ ⵜ
ⵔⴰ ⵜ ⵉⴳ ⴷ ⵓⵃⴰⵇⵇⴰⵢ ⵔⴰ ⵜ ⵉⴷ ⴳⵍⵓⵏ.

أفولكي ن دُّونيت

أ كُن ساقساغ أ طّلبا ولا أكْرّام
أ يافولكي ن دّونيت ما ت يڭان
نيغ أون ت مليغ مقار ت ور فهمغ
ور يلّي واناو ن صّاحت يغ تدوس
يمّا لاموال ن دّونيت راد زرين
ولا أوال ن يمدّوكّال دا يزراي
أ وانّا س تنّيت را كُن نفعون
أسّ نّا غ تن تحتاجّات را ك زرين
أفود نك وكان نتّا(ن) أ يڭان كُماك
نيغ أرّاو وانّا ت يطّافن ينفعو ت
يمّا تاروا ن مدّن د يس را ك جلون
ولا يان واوال وفيخ ت أ ت بدرخ
مقار يڭا ورڭاز وان واسّفدال
نيغ يڭا يفيس نيغ يڭ واڭرزام
نيغ يڭا لباز لحورّ يتّياوعضام
يستارا غ واكال يستارا لبحور
يستارا غ يڭنوان يڭ أفا ودرار
أ كولّو كرا يلّان أر تن ژرّان
يغ يلّا لورك غ وول نس يضرّا ت
نتّان أ يڭان لعيب ي كرا غ لّان
أ طّول ن زّمان را ت يسلي يژوي ت
را ت يڭ د وعاقّاي را ت يد خلون.

-25-

ⵍⴱⴰⵛⵉⵔ ⴰⵃⴷⴷⴰⴷ

ⵜⴰⵎⴰⵏⴰⵔⵜ

البشير أحدّاد

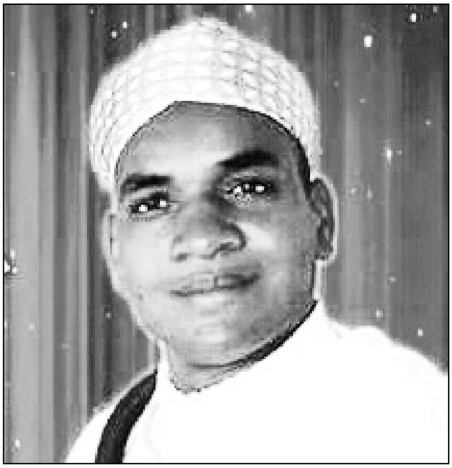

ولد في لقصبت ن أيت حربيل بتامانارت في الـعشرين (20) من يناير 1977، وبعد ذلك قطع شوطا كبيرا في الدراسة وحصل على الباكلوريا التقنية ثم التحق بالتعليم العالي، ويعمل الآن كمسير لمقاولة، نشأ الشاعر في بيئة فنّية شاعرية حيث كان منزلهم موئل الشعراء المشهورين بالمنطقة وتأثر إلى حد بعيد بالشاعر مبارك أشيلوش، والشعراء المحجوب وعلي بوزيد من توزونين، بدأ مشواره الشعري في سنة 1996 بمقطوعات شعرية في أحواش ن تعيالين، وفي سنة 1998 طرق باب السجال الشعري مع أبرز زوّار موسم سيدي محند ؤبراهيم من شعراء سوس، ولم يلبث أن علا كعبه مع أكابر الشعراء، يمتاز بصوته الأخاد وموهبته في الصياغة الشعرية الخالية من الأخطاء، أنشأ مع ثلة من أبناء البلدة مجموعة فنّية، وقد كان من بين ثلاثة شعراء حصلوا على الجائزة الأولى في المهرجان الأول لشعراء أسايس بطاطا سنة 2012.

ⵜⴰⵥⴰⵢⵜ

ⵉⵜⵜⵍ ⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵢⴰⵏ ⵓⵣⵎⵣ ⵉⵙⵙⵜⵍⴼ ⵍⴳⴰⵍⴰⵢⵢⵉⵇ
ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵉⵏ ⵎⴰ ⴼ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⵓⵙⴰⴼⴰⵔ ⴰⵙⴰⴼⴰⵔ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵢⴰⴷ ⵙⵔⵙ ⵉⵙⵉⴳⴳⵉⵍⵏ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵏ ⵜⵜⴰⴼⴰⵏ
ⵉⵖ ⵉⵔⴰ ⴽⵔ ⴰ ⵉⵣⵣⵏⵣ ⵉⵅⴼ ⵏⵙ ⵉⵖⵓⵢ ⵜⵜⴰⵎⴰⵏ
ⵓⵔ ⴰⵙ ⴰⴽⴽⵯ ⴳⵉⵅ ⵍⵄⵉⴱ ⴰⵛⴽⵓ ⵉⵍⴽⵎ ⴼⵍⵍⴰⵙ
ⵜⴰⵡⴰⴷⴰ ⵖ ⵜⵍⵍⴰ ⵜⴰⵥⴰⵢⵜ ⴰⵔ ⵙⵙⵍⴽⴰⵎⵏⵜ
ⵉⵎⵎⴰ ⵢⴰⵏ ⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵣⵣⵔⴱ ⵓⴷⵎ ⵏⵙ ⴰⴼ ⴰ ⵏⵏ ⵉⵟⵟⴰⵕ
ⵙⵙⵓⵜⵍⵅ ⵍⵃⵙⴰⴱ ⵏ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⴰⵢⵍⵍⵉⵖ ⵕⵎⵉⵅ
ⴰⴼⵉⵅ ⵏⵏ ⵎⵉⴷⴷⵏ ⵃⴰⴷⴰⵏ ⵖⴰⵔ ⵍⵎⴰⵚⴰⵍⵉⵃ
ⵢⴰⵏ ⴰⴽ ⵉⵖⵓⵣⵏ ⵣⵣⵔⴱ ⴰⵙ ⵔⴰⵏ ⴰ ⴽ ⵉⵏⵏ ⵉⵍⵓⵃ
ⴰ ⵙⵓⵍ ⴰⵔ ⴽ ⵉⵏⵏ ⵜⵜⴰⴳⴳⵯⴰⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⵔⴰ ⴽⵯⵏ ⵢⵓⵜ
ⵉⵍⵍⴰ ⵎⴰⴷ ⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⴳⴰⵏ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ ⵍⵎⵏⵛⴰⵕ
ⴱⴱⵉⵏ ⴰⴽⴽⵯ ⴰⵙⵖⴰⵔ ⵍⵍⵉ ⴷ ⵉⵜⵜⵍⵓⵃⵏ ⵜⵉⵎⵉⵎⵉⵏ
ⴼⵍⵏ ⴰⵅ ⴰⵙⵖⴰⵔ ⵓⵔ ⵉⴳⵉⵏ ⵢⴰⵜ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⴰⵜⵜⵓⵢ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏ ⴰⵚⵎⵎⵉⴹ ⴰⵔ ⵜ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⵙⵙⵓⴽⵓⴼ
ⴰⵊⵏⵡⵉ ⴱⵔⵉⵏ ⴰⵅ ⵉⴷⴰⵎⵎⵏ ⵉⵏⵓ ⴽⴽⴰⵏ ⴰⴽⴰⵍ
ⴳⴰⵔ ⴰⴹⴱⵉⴱ ⵏⴷⴷⴰ ⴷⴰⵔⵙ ⴰⵔ ⵉⵢⵉ ⵜⵜⵉⵏⵉⵏ
ⵙⴰⵡⴰⵍⴰⵜ ⴽⴰ ⵙ ⵉⴹⵓⴹⴰⵏ ⵏⵙⵙⵏ ⵎⴰ ⵜⵏⵏⵉⵜ
ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵉⵏ ⵎⴰ ⵉⵢⵉ ⵢⴰⵖⵏ ⵓⵍⴰ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵏⵜⵜⵓⵜ
ⴰⴹⴰⵕ ⵉⵕⵎⵉ ⵜⴰⵡⴰⴷⴰ, ⵉⵖⴰⵔⴰⵙⵏ ⵃⴰⵡⵍⵏ
ⵎⴰⵎⵏⴽ ⴰⵙ ⵔⵉⵅ ⴰⵎⵓⴷⴷⵓ ⵏⵅ ⴰ ⵙⵔⵙⵏ ⴽⵎⵎⵍⵏ
ⴽⴰⴷⴰ ⵏ ⵎⴰ ⵉⵄⵎⵎⵕⵏ ⴰⴹⵉⵍ ⵖ ⵉⵎⵉ ⵏ ⵍⵎⵍⵍⴰⵃ
ⵡⴰ ⴳⴳⵔⵏ ⴰⵙ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵡⵓⴷⴰⵢⵏ ⵏⵏⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵎⵎⵉⵎ
ⵀⴰⵜⵉ ⵟⵟⴰⴱⵍⴰ ⵜⵙⴳⴰⴷⴷⴰ ⵍⴽⵉⵙⴰⵏ ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵉⵏ
ⵍⴽⴰⵙ ⵉⵅⵡⴰⵏ ⴷ ⵡⴰⴷⴰ ⵖ ⵜⵍⵍⵉⵜ ⴰ ⵢⴰⵜⴰⵢ
ⵉⵖ ⵓⵔ ⵉⴼⵀⵉⵎ ⵍⵇⴰⴹⵉ ⵍⵃⵓⴽⵎ ⵎⴰ ⵙ ⵉⴽⴽⴰⵜ
ⵎⴰⵅ ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵓⵔ ⵉⵚⵕⴹ ⵉⵅⴼ ⵏⵙⵏ ⵉⵇⵇⵏ ⵜ ⵉⵏⵏ
ⴰⴷ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⵍⵓⵃ ⵍⴱⴰⴹⵍ ⴼ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵃⵓⵕⵕⴰⵏⵉⵏ.

تاژايت

يتّل د أڱ يان وزمز يسّتلف لخالاييق
ور نسّين ما ف ور يڱي وسافار أسافار
وانّا ياد سرس يسيڱيلن ور أ تن تّافان
يغ يرا كر أ يزّنز يخف نس يغوي تّامان
ور أس أڱ ڱيخ لعيب أشكو يلكم فلّاس
تاوادا غ تلّا تاژايت أر سّلكامنت
يمّا يان غ يلّا زّرب ودم نس أف أ نّ يطّارٍ
سّوتلخ لحساب ن تودرت أيلّيغ رٍميخ
أفيخ نّ ميدّن حادان غار لماصاليح
يان أك يغوزن زّرب أس ران أ ك ينّ يلوح
أ سول أر ك ينّ تّاڱان ماني را ڱن يوت
يلّا ماد د وكان يڱان غ وفوس لمنشارٍ
بّين أڱ أسغار لّي د يتّلوحن تيميمين
فلن أخ أسغار ور يڱين يات أر يتّاتّوي
أ والاين أصمّيض أر ت وكان يسّوكوف
أجنوي برين أخ يدامّن ينو ڱان أكال
ڱار أضبيب ندّا دارس أر يّي تّينين
ساوالات كا س يضوضان نسّن ما تنّيت
ور نسّين ما يّي ياغن ولا ماني غ نتّوت
أضارٍ يرٍمي تاوادا، يغاراسن حاولن
مامنك أس ريخ أمودّو نخ أ سرسن كمّلن
كادا ن ما يعمّرٍن أضيل غ يمي ن لملّاح
وا ڱرن أس كولّو ووداين نّان ور يمّيم
هاتي طّابلا تسڱادّا لكيسان ور نسّين
لكاس يخوان د وادا غ تلّيت أ ياتاي
يغ ور يفهيم لقاضي لحوكم ما س يڱات
ماخ أد أسن ور يصرٍض يخف نسن يقّن ت ينّ
أد ور يتّلوح لباضل ف ويلّي حورٍّانين.

-26-

ⵎⵓⵙⴰ ⴰⵍⵃⵢⴰⵏ
ⵜⴰⵎⵢⵖⴰⵟⵜ - ⵢⵖⵔⵎ

موسى ألحيان

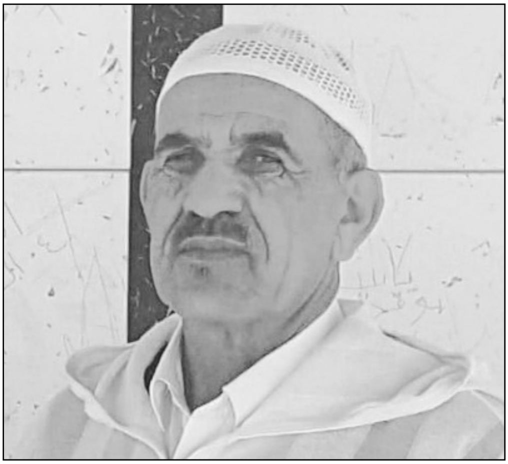

ألحيان موسى بن محمّد من مواليد سنة 1954، بقبيلة تاميغاطّ دائرة ئغرم، التحق بمسجد القرية منذ صباه ولكنه لم تسعفه الأحوال في متابعة دراسته، وقد شبّ على حب فنون أحواش في وسط معروف بعشقه لهذا الفنّ، تأثر بشعراء قبيلته وبمختلف الشعراء الذين يزورون القبيلة من أمثل سيدي بورح ؤ تكموت، بدأ مشواره الفني في سنة 1974، ثم انصرف عنه مدّة ليعود بقرو في سنة 1984، وقد ساجل عددا لا يستهان به من شعراء الأطلس الصغير، وزار العديد من القبائل، واتخذ من أولائك الشعراء أصدقاء وهو عضو في الرابطة الوطنية لشعراء أسايس.

ⵜⴰⵏⴰⴼⵓⵜ

ⴰⵡⴰⵍ ⵏ ⵛⵛⵍⵓⵃ ⵉⴳⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⴼⴰⵔ ⵓⵔ ⵉⵎⵎⵓⵜ
ⴰ ⵖⴰⵔ ⵉⵙⵡⴰ ⵉⵙⴽⵔ ⴷ ⵉⴼⵔⴰⵡⵏ ⵜⴰⵙⴰⵡⵏⵜ
ⴰ ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⴽⵯⵏ ⵜⴳⵯⵕⴰⵥ ⴰ ⴽⵔⴰ ⵉⵢⵉ ⵜ ⵓⵔ ⵉⵔⵉⵏ
ⵍⵍⴰⵀ ⵉⵚⴰⵕⴽ ⴰⴳⵍⵍⵉⴷ ⵉⵙⵙⴼⴰⵡ ⵍⵅⴰⵍⴰⵢⵢⵉⵇ
ⴰ ⵍⵍⵉⵖ ⵉⵙⴽⵔ ⵍⵉⴷⴰⵄⴰ ⴼⴽⵉⵏ ⴰⵅ ⵍⵃⴰⵇⵇ ⵏⵖ
ⵛⵛⴰⵚⴰⵚ ⵏ ⵉⵛⵍⵃⵉⵢⵏ ⴳⴰⵏ ⵎⵉⵢⵢⴰ ⵏ ⵄⵍⴰⵅⵉⵔ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⴷⴰⵔ ⴽⵔⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵎⴰ ⵖ ⴰ ⵏⵏ ⵉⵙⴰⵡⴰⵍ
ⴰ ⵥⴰⵢⵢⴰⵏ ⴷ ⵔⵔⵉⴼ ⵏⵅ ⴰⴽⴽⵯ ⵢⴰⵏ ⵏⵛⵔⴽ ⴰⵡⴰⵍ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵏⵅⴰ ⴼ ⵍⵎⵉⴷⴰ ⵏⵅ ⵏⵎⵓⵏ ⴰⵙⵏⵜ ⴰⴽⴽⵯ
ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵓⵏⵅⵉⵍⴰⴼ ⴰⴷ ⴰⵅ ⵜ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⵢⴰⵏ
ⴰⵜⵉ ⵍⴰⵄⴹⵕⵜ ⵓⵔ ⴰⴷ ⵉⵙⵙ ⵙⵓⵍ ⵉⵜⵜⵓⵔⵔⵉ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰ ⴰ ⵉⵙⵚⵉⴹⵉⵕ ⵢⵓⵔⵔⵉ ⵖ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⵉⴹⵓⴹⴰⵏ ⵛⵔⴽⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⴼⵓⵙ
ⴰⵜⵉ ⵜⴰⵖⵕⵓⴹⵜ ⵏⵅ ⵉⴳⴰ ⵜⵜ ⵎⵓⵍⴰⵢ ⵍⵅⴰⵎⵉⵙ
ⵏⵜⵜⴰ ⴰⴷ ⴷ ⵉⵙⵎⵓⵏⵏ ⵉⴽⴰⵚⴰⵕⵏ ⵓⵍⴰ ⵙⵓⵍ ⴰⴽⴰⵍ
ⴰ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵏⵏ ⴳⵉⵙⵏ ⵢⴰⴳⵓⵔⵏ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵎⴰⵟⵉⵍ
ⵉⵔⵓⵔ ⵜ ⵉⴷ ⵓⴳⵍⵍⵉⴷ ⵏⵅ ⵎⵓⵍⴰⵢ ⵍⵃⴰⵙⴰⵏ
ⴰ ⴹⵉⵏ ⵍⵄⴷⵓ ⵖ ⵜⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⵉⴼⴰⵡ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰⵍⴼⴰⵢⵏ ⵓ ⵃⴷⴰⵄⵛ ⵏⵅⴰⴷⴷⴰⵏⵜ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵍⵉⵎⵓⵕⴰⵜ
ⴰ ⵀⴰ ⴷⴷⵓⵙⵜⵓⵔ ⵉⵙ ⵉⴳⴰ ⵄⵍⴰⵅⵉⵔ ⵉⴽⵎⵎⵍⵏ
ⵉⵎⴰⵣⵉⵖⵏ ⴰⵜⵉ ⵏⵏ ⵕⴹⴰⵏ ⵜ ⵉⵎⵎⵉⵎ ⵉ ⴽⵉⵡⴰⵏ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰⴷ ⵉⴹⵀⵕ ⴷ ⵍⵎⵉⵣⴰⵏ ⵢⴰⵏ ⵉⵔⴰⵏ ⵍⵃⴰⵇⵇ
ⵖⵉⵍⴰ ⵢⴰⵏ ⵢⵓⵔⵓⵏ ⵉⴳ ⴰⵙ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ ⵍⴽⵯⵏⵏⴰⵛ
ⴰⴷ ⴰⵙ ⵉⵙⵙⵖⵔ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⴰ ⴼⵍⵍⴰⵙ ⵉⵍⵍⴰⵏ
ⴰⵡⴰⵍ ⴰⵇⴷⵉⵎ ⵃⵜⴰⵊⵊⴰⵅ ⵜ ⴰ ⵜ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⵓ ⵢⴰⵏ
ⵡⴰ ⴼⵍⵏ ⴰⵅ ⵜ ⵉⴷ ⵖⵡⵉⴷ ⴰⵅ ⵓⴽⴰⵏ ⵓⵔⵓⵏⵉⵏ
ⴰⵜⵉ ⵍⴰⴱⵍ ⵓⵔ ⴰ ⵥⵥⵎⵥⵉⴽⵏ ⴰⵇⵍⵍⴰⵍ ⵏ ⵢⴰⵏ.

تانافُـوت

أوال ن شّلوح يگا زون د أفار ور يمّوت
أ غار يسوا يسكر د يفـراون تاساونت
أ را سول كُن تگُراژ أ كرا ييي ت ور يرين
لّاه يبارك أگلّيد يسّفاو لخالايّيق
أ لّيغ يسكر ليداعا فكين أخ لحاقّ نغ
شّاباب ن يشلحيين ڭان ميبا ن علاخير
أ وانّا دار كرا ها نّ ما غ أ نّ يساوال
أ ژايان د رّيف نك أكُّ يان نشرك أوال
أ يان أ نگا ف لميدا نخ نمون أسنت أكُّ
ور يلّي ونخيلاف أد أخ ت ور يتّيني يان
أتي لاعطرت ور أد يسّ سول يتورّي يان
أ وانّا يرا أ يسبيضير يورّي غ وغاراس
أ يان أد ڭان يضوضان شركن يان وفوس
أتي تاغروضت نخ يگا تّ مولاي لخاميس
نتّا أد د يسمونّ يكابارن ولا سول أكال
أ والّي نّ گيسن ياڭورن ور أكُّ يماطيل
يرور ت يد وگلّيد نخ مولاي لحاسان
أ ضين لعدو غ تمازيرت يفاو وغاراس
ألفاين و حداعش نگادّانت كولّو ليمورات
أ ها دّوستور يس يگا علاخير يكمّلن
يمازيغن أتي نّ رضان ت يمّيم ي كيوان
غ أسّ أد يضهر د لميزان يان يران لحاقّ
غيلا يان يورون يك أس غ وفوس لكُنّاش
أد أس يسّغر تامازيغت أ فلّاس يلّان
أوال أقديم حتاجّاخ ت أ ت ور يتّو يان
وا فلن أخ ت يد غويد أخ وكان ورونين
أتي لاصل ور أ زّمڭيكن أقلّال ن يان.

******

-27-

ⵍⵃⵙⵏ ⴰⵙⴳⴰⴷⵔⴰⵏ

ⵉⵎⵊⵊⴰⴹ

لحسن أسكاضرار

ولد بقبيلة مجّاض في سنة 1973، والتحق بمسجد القرية ثم بالمدرسة، ولكنه لم يلبث أن غادرها إلى ميدان العمل، أدرك ثلة من شعراء القبيلة فأخذ عنهم دروسه الأولى في النظم، كما كان شعراء آخرون من أمثال عبد الكبير شوهاد والحاج علي وبيضني والحاج الحبيب، يزورون القبيلة ويتملى بشعرهم، لذا فقد التحق بأسايس وهو في سن ال16 من عمره، وقد ساهم في الملتقى الأول لشعراء أسايس سنة 2017.

ⴰⵣⵔⴼ

ⴰⴷ ⴷⴰⵖ ⵏⴽⵛⵎ ⴷ ⵍⴱⴰⴱ ⵏ ⵍⴳⴰⵟⴰⵕ ⴰ ⵜ ⴰⵔⵎⵖ
ⴰⵅⵅ ⴰ ⵍⵎⵙⴽⵉⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⴳⴰⵏ ⵜ ⵉⵍⵍ ⵙ ⵍⵉⵛⴰⵕⴰⵜ
ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵔⴰ ⵉⵄⵍⵍⵎ ⴹⴹⵕⴱ ⴰⵔ ⴼⵍⵍⴰⵙ ⵉⵜⵜⵏⵉⵢⵢⴰⵛ
ⴰ ⵀⴰ ⵍⵍ ⵓⵔ ⴷ ⵍⵄⵉⵏ ⴰⵖ ⵓⵔ ⵜⵍⵍⵉⵎ ⴰ ⵢⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵣⵡⴰⵏⵜ ⵜⵔⴳⴳⵉⵡ(ⵉⵏ) ⵜⵉⵍⵍ(ⵉ) ⴰⵙ ⵉⵙⵙⵓⵜⵍⵏ
ⴰ ⵜⵉⴳⴳⵓⵏⴰ (ⵏ) ⵡⴰⵏⵓⴹ ⴰ ⵜⴳⴰⵎ ⴰ ⵍⵎⵙⴰⴽⵉⵏ
ⴰⵎⴽ ⵍⵍⴰ ⵉⴳⴰ ⵍⵅⴷⵉⴷ ⵔⴰ ⵍⵍ ⴼⵍⵍⴰⵙⵏⵜ ⵉⵜⵜⵔⵙ
ⵍⵅⴰⵇⵇ ⵉⵛⵡⴰ ⴱⴷⴷⴰ ⴳⴰⵏ ⵎⴰ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⵜ ⵓⴽⴰⵏ ⵙⴰⵡⵍⵖ ⵉⵖ ⵏⵥⵕⴰ ⵎⴰ ⵜ ⵓⵔ ⵉⵔⵉⵏ
ⴰ ⴳⵉⵙ ⵏⵙⵙⴼⴰⵡ ⵉⵙ ⵉⴳⴰ ⵖ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⴽⵓⴼⵕⵏⵉⵏ
ⴰ ⵀⴰ ⵍⵍ ⴰⵢⵜ ⵍⵖⴰⵕⴰⴹⴰⵜ ⴽⴰ (ⴰ) ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵎⵢⴰⵔⵏ ⴽⵉⴳⴰⵏ ⴽⴰ (ⴰ) ⵙⵓⵍ ⵉⵜⵜⴰⵅⵍⵏ
ⵉⴳⴰ ⵏⵉⵜ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵍⴱⴰⵣ ⵓⵍⴰⵡⵏ ⴽⴰ (ⴰ)ⵖ ⵉⵄⵉⵛ
ⴰ ⵀⴰ ⵍⵍ ⵉⵙⴽⵔ ⴱⴷⴷⴰ ⵖⴰⵔ ⴼ ⵍⵎⵓⵜ ⵏ ⵍⵎⴰⵍ
ⵉⴳⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵓⵛⵛⵏ ⵜⴰⴳⴰⵏⵜ ⴰⵖ ⵍⵍ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵄⵉⵛ
ⴰ ⵜⴰⵍⵍⴰ ⵙ ⵜⵓⵣⵣⵍ ⵜⵓⵣⵣⴰⵍⵜ ⵏⵉⵖ ⵎⵎⴰⴹⵕⵚⵏⵜ
ⴰⴷ ⴰⵙ ⵉⴹⴼⴰⵕ ⵍⵖⵕⴹ ⵏⵙ ⴰ ⵙⵔⵙⵏⵜ ⵉⵄⵉⵛ.

أزرف

أد داغ نكشم د لباب ن لخاطاڕ أ ت أرمغ
أحّ أ لمسكين مدّن ڭان ت ينّ س ليشاڕات
وانّا را يعلّم ضّڕب أر فلّاس يتّنييّاش
أ ها نّ ور د لعين أغ ور تلّيم أ يامان
أ كولّو زوانت ترڭّيـو(ين) تيلّـ(ـي) أس يسّوتلن
أ تيڭّونا (ن) وانوض أ تڭام أ لمساكين
أمك نّا يڭا لحديد را نّ فلّاسنت يتّرس
لحاقّ يشوا بدّا ڭان ما يتّيني يان
أ ت وكان ساولغ يغ نژڕا ما ت ور يرين
أ ڭيس نسّفاو يس يڭا غ ويلّي كوفڕنين
أ ها نّ أيت لغاڕاضات كا (أ) سول يقّامان
أ يان يميارن كيڭان كا (أ) سول يتّاحلن
يڭا نيت زو(ن) د لباز ولاون كا (أ)غ يعيش
أ ها نّ يسكر بدّا غار ف لموت ن لامان
يڭا زون د وشّن تاڭانت أغ نّ أكّ يعيش
أ تانّا س توزّل توزّالت نيغ مّاضڕصنت
أد أس يضفاڕ لغـڕض نس أ سرسنت يعيش.

****

-28-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴰⵣⴷⴷⵓ

ⵡⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ

محمد أزدو

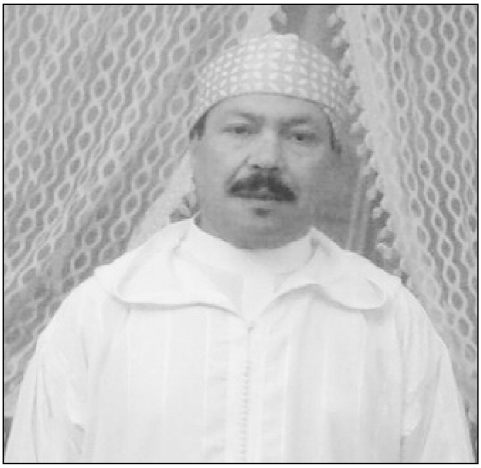

ولد في 1958 بدوار تيسفرا تافراوت ئداوزدوت، التحق بمسجد القرية ولم يلبث أن غادر الدراسة للالتحاق بالمدينة، أدرك عباقرة الشعر بقبيلته وأخذ عنهم الحروف الأولى، ولكن المؤثر الرئيسي له هو الشاعر ئحيا بوقدير وزميله أجماع الحسن حينما التحق بالفرقة التي أسسها ابن قبيلته بوقدير ئحيا، وفي سنة 1978 دخل إلى فضاء أسايس كمبتدئ، وفي سنة 1983 مارس تجربته الأولى في الحوار، قضى حوالي ست سنوات مع تلك الفرقة ثم أصبح حرّا، يمارس الشاعر الآن خدمات تجارية بمدينة الرباط.

ⵏⴽⴽⵉⵏ ⴷ ⵓⵎⴰⵔⴳ

ⴰ ⵎⵏⵛⴽ ⴰ ⵏⴽⴽⴰ ⵖ ⵓⵙⵔⵉⵔ ⵓⵔ (ⴰ) ⴰⴽⴽⴰⵖ ⵓⵔ ⴰ ⴹⴹⴰⵢⵖ
ⴰ ⵜⴰⵖⵔⵉⵜ ⵏⵜⵜⴰⵜ ⴷ ⴼⵀⴱⴰⵇ ⴰⵙ ⵏⵜⵜⴰⵙⵉ ⵜⴰⴼⴼⵓⵏⵜ
ⴰⵔ ⵏⴽⴽⴰⵜ ⵉⵎⵓⴷⴰⴼ ⴰⵔ ⵏⵜⵜⴰⵙⵉ ⵜⴰⵙⵓⵖⴰⵏⵜ
ⴼⵙⴰⵖ ⵜⴰⵊⴼⴼⴰⴱⵉⵢⵜ ⵏⵃⵕⵀ ⴰⵔ ⵏⵜⵜⴰⴼ ⵓⵔⴰⵔⵏ
ⵉⵙⴰⵃⵃⵏ ⴷ ⵜⴳⵎⵓⵜ ⴰⵔ ⵜⴰⴹⴰ ⴷ ⵉⴱⵔⴽⴰⴽ ⵏⴽⴽⴰ ⵜⵏ
ⴰ ⵢⴰⵇⴱⵉⴼ ⴰⵣⴽⵔⵉ ⵓⴼⴰ ⴰⴽⵏⵙⵓⵙ ⵙⵜⴰⵔⴰⵖ ⵜ
ⵎⵔⴰⵢⵜ ⵓⴼⴰ ⵉⴷ ⵓⵙⴽⴰ ⵏⵙⵜⴰⵔⴰ ⵜⵏ ⵙ ⵓⵎⴰⵔⴳ
ⴰ ⵜⵓⵃ ⴼⵟⵣⵣ ⵓⴼⴰ ⴰⵡⵣⴰⴼ ⴷ ⵜⵎⵉⵖⴰⵄⵜ ⵙⵜⴰⵔⴰⵖ ⵜ
ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ ⵉⴷⴰ ⵓⵃⵉⵏⵉⵙ ⵅⴼⴰⵚⵚ ⵙⵜⴰⵔⴰⵖ ⵜ
ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⴰ ⵏⵓⵍⴰ ⴷ ⵓⵇⵚⵉⵄ ⵏ ⵡⵓⵔⴰⵔ ⵏ ⵜⵎⴰⵣⵉⵖⵜ
ⵓⵔ ⵉⴼⴼ ⵖ ⴼⴽⴰⵚⵉⴹⴰ ⵓⴼⴰ ⴼⴽⵜⴰⴱ ⵓⴼⴰ ⵏⵓⵔⴰ ⵜⵏ
ⵉⴼⴼⴰ ⵎⴰ ⵜ ⵉⵖⵓⵢⵏ ⵉⴼⴼⴰ ⵎⴰ ⵜ ⵢⵓⵊⵊⴰⵏ ⵉⴼⵉⵀ ⵜ
ⴽⵓⴼⴼⵓ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⴷⴰ ⴷ ⵏⵓⵃⴰ ⵖ ⵓⵙⴰⵢⵙ ⴼⴰⵀ ⵉⵢ(ⵉ) ⵜⵏ
ⵡⵉⴼⴼⵉ ⴷ ⵉⵖⴰⵎⴰⵏ ⵉⵙ ⴷ ⵕⵎⵉⵏ ⴰⵡⴰⴼ ⵓⴼⴰ ⴰⵙⴰⵢⵙ
ⵓⵔ ⵏⵖⴰⴼ ⵉⵙ ⵉⵔⴰ ⵅⴽⴰⴷ ⴰ ⵢⵉⴼⵉ ⴳⵉⵡⵏⵜ ⴰ ⴼⵓⵇⵜ
ⵏⵄⴰⴼⴱ ⴰⴽ ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵙⵙⵃⴰⵡⵏ ⵄⵉ ⴰⵖ ⵙ ⵜⵉⵃⴰⵡⵜ
ⵉⵖ ⵏⵎⵎⵓⵜ ⵏⵃⴼ ⴷ ⴼⴰⵅⴱⴰⵕ ⵉⵏⵓ ⵣⵓⵏ ⵓⵔ ⵎⵎⵓⵜⵖ.

نكّين د ومارڭ

أ منشك أ نكّا غ وسرير ور (أ) أكّاغ ور أ طّايغ
أ تاغريت نتّات د لحباق أس نتّاسي تالّونت
أر نكّات ېودال أر نتّاسي تاسوغانت
لساغ تاجلّابييت نفرٍح أر نتّال ورارن
يسافّن د تڭموت أر تاطا د ييركاك نكّا تن
أ ياقبيل أزكري ولا أكنسوس ستاراغ ت
مرايت ولا يد وسكا نستارا تن س ومارڭ
أ توف لعزّ ولا أوزال د تميغاضت ستاراغ ت
يدا وزدّو يدا وفينيس خلاصّ ستاراغ ت
أ ميشك أ نْتّا د وقصيد ن وُورار ن تمازيغت
ور يلّ غ لكاصيطا ولا لكتاب ولا نورا تن
يلّا ما ت يغوين يلّا ما ت يوجّان يليح ت
كولّو يمديازن دا د نوفا غ وسايس لاح يّي تن
ويلّي د يغامان يس د رٍمين أوال ولا أسايس
ور نغال يس يرا خكاد أ ييلي ڭيونت أ لوقت
نضالب أك أ يان يسّفاون ضي أغ س تيفاوت
يغ نمّوت نفل د لاخبارٍ ينو زون ور مّوتغ.

****

-29-
ⵎⵃⵏⴷ ⵚⴰⴱⴰ
ⴰⵢⵜ ⴱⴰⵀⴰ
محند صابا

ولد الشاعر محند صابا في قرية تيسيلي فرقة تمديونّ جماعة تانالت سنة 1963، وبعد مروره بالمدرسة التحق بأسرته بالمدينة ليمارس العمل التجاري، تفاعل منذ صباه مع فنّ أجماك، حيث أنه استهوته حواريات عباقرة الشعراء بمنطقة أيت باها وئداكورسموك، من أمثال أحمد ؤدريس وسعيد كَوزرو وأحمد الريح، الذي اعتبرهم كأساتذة له في قرض الشعر، أسس مع زملائه الشباب وبعض الممارسين المخضرمين أول فرقة احترافية لفن أجماك وهي فرقة أجماك سوس، التحق بالرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس فور تأسيسها وهو الآن عضو من أعضاء مجلسها الإداري.

ⵎⴰⴷ ⵔⵉⵖ ?

ⵡⴰⵙⵙⵉ ⴷ ⵏⵄⵔⴽ ⵙⵀⵎⵎ ⵔⴰ ⵃⵙⵙⴰⴽ ⴰⵙⵙⴰⵅ
ⴰⴹⴹⴰⵏ ⵉⵏⵡ ⵔⵉⵅ ⴰⴷ ⵉⵊⵊⵉ ⴱ ⴻⵎⴹⴹⴰ ⴰ ⵜ ⵏⵙⴻⵛ
ⴰ ⴼⴰⴽⴰⵙ ⵀⴰ ⵍ ⵙⵊⴷⴻⴷ ⵉⵏⵡ ⴰ ⵉⴼⵉ ⵜ ⵉⴷ ⵉⵃⵙⵏ
ⵡⴰⵙⴰⴼⵏⵉ ⵏⴽⴽⵉ ⴳⵉⵖ ⵃⵙⵙⴰⴱ ⴰⵅⵎⵎⴰⴱ
ⵏⴽⵔⵣ ⵉⴳⵔⴰⵏ ⴰⵔ ⵎⴳⴳⵔⵖ ⵜⴰⵎⵎⴰⵔⴰ ⴰⵅ ⵙⵙⵉⵅ
ⴰ ⵜⴰⵃⴻⴽⵜ ⵏ ⵚⵚⵉⵃ ⵎⴷⴰⵏⵜ ⵉⴼⵉ ⴽⴻⵙⵙⴻ ⵙⵙⴻⵏ
ⵉⵖⴻⴼ ⴽⵔⴰ ⴰⵎⴰⵙⴻ ⵅⵉⵏ ⵎⴻⵔⵔⴰⵏ ⵉⴽⵎⵎⵙⵏ
ⴰⴽⴻⴷ ⵍⴰ ⵅ ⴽⴻⵙⵙⴻ ⵣⴻⵣⵣⵔⵖ ⴼⴰⵡⵉ ⵍ ⵙⵅⵏⵄⴰⵜ
ⵉⵍⴰ ⵜⴻⵎⵥⵉⵏ ⴰⵣⵔⵅ ⵉⵏⵡ ⴰⴱ ⴰⴷ ⵜⵏⵜ ⴰⵡⵉⵖ
ⴰⵙⵉⵎ ⵉⵖ ⴱⵔⴱ ⵜⵇⵇⵏⴵⴰⵜ ⴰⵡⵉ ⴼⴰⵏ ⵉⵎⵉⴽⴽ
ⵚⴰⵃⵉ ⵚⵎⵉⵅ ⴰ ⵜⴻⴷⵔⵜ ⴻⴱⴱⴰⵏ ⵉⵛⵕⵕⴰⵏ
ⵉⵅ ⵉⴳⴰ ⵅⴽⴰⴷ ⵚⵚⵟⵕ ⵀⴰ ⵍ ⵛⴰⵇⵇⴰⵏ ⵉⴱ ⵕⵎⵉⵅ
ⵉⵅ ⵉⴳⴰ ⵚⵚⴰⵟⴰⵇⴰ ⵀⴰ ⵍ ⵛⴰⵇⵇⴰⵏ ⵏⴱⴱⴻⵃⴰ ⵜⵜ
ⵉⵅ ⵉⴳⴰ ⴰⵊⵎⵉⵙ ⴻⵔ ⵏⵟⴻⵃ ⵎⴰ ⵉⴼⵉ ⴱⵔⴱ ⵉⴱⴱⵍ
ⵉⵅ ⵉⴳⴰ ⵜⵉⴽⵚⵚⴰⵟ ⵏⵄⵄ ⵃⵙⵙⴰⴱ ⴰⴽⴻⵕⴰⴼ
ⵔⵉⵅ ⴰⴷ ⴷ ⵃⵙⵅ ⵉ ⵎⴰⴷ ⴷ ⵏⵃⵙ ⴰⵣⵔⵃ ⵉⴽⵎⵎⵙⵏ
ⴰⴷ ⴻⵔ ⵏⵣⵔⵉ ⵣⴻ(ⵏ) ⴷ ⴰⵅⵅⴻ ⴽⵉⵖ ⵜ ⴼⵉⵡⵉ ⵔⵔⵉⵛ.

ماد ريغ ؟

والّي د نشرك لهمّ را فلّاك ألّاخ

أطّان ينو ريخ أد يجّي س ومطّا أ ت نلوح

أ ياكال ها نّ لجدود ينو أ يّي ت يد يفلن

والايني نكّي ڭيغ فلّاس أخمّاس

نكرز يڭران أر مڭّرغ تامّارا أخ لّيخ

أ تافوكت ن صّيف مدانت يّي كولّو لّون

يغوي كرا أمالو ڭين مورّان يكمّلن

أكود نّا خ كولّو زوزّرغ ياوي نّ لخنشات

ينّا تومڤين أزرڭ ينو أس أد تنت أويغ

أليم يغ سرس تقّنعات أوي يان يميكّ

صافي صميخ أ تودرت وسّان يحرّان

يخ يڭا خكاد صّبرٍ ها نّ حاقّان يس رٍميخ

يخ يڭا صّاضاقا ها نّ حاقّان نسّوفا تّ

يخ يڭا أجميل ور نضوف ما يّي سرس يسّنّ

يخ يڭا تيكصّاض نشّ فلّاس أكورٍاي

ريخ أد د فلخ ي ماد د نفل أزرف يكمّلن

أد ور نزري زو(ن) د أڭّو كيغ ت ييوي رّيح.

****

-30-

ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ ⵃⴰⵍⵉⵎ

ⵉⵎⵉ ⵏ ⵜⴰⵜⵍⵜ

الحسين حليم

ولد في قرية ئمي ن تاتلت سنة 1986، وابن أحد أعيان بن يعقوب الحاج حليم، التحق بالمدرسة المحلّية لكنه لم يكمل مشواره الدراسي، ومنذ صباه استهواه فنّ أحواش وبدأ يتجوّل مع الفرقة المحلّية في المناطق المجاورة، تأثر بجيل من الشعراء الذين يزورون بلدته كأجماع الحسن وأزوليض عثمان، ولم يلبث في سنة 2003 أن دخل أسايس في بابه الواسع، الشاعر طموح في مجال الصناعة الشعرية وهو الآن يخلق شهرة في جميع مناطق الأطلس الصغير.

ⵜⴰⵢⵔⵉ ⵏ ⵡⴰⵣⵎⵣ ⴰⴷ

ⵡⴰ ⵀⴰ ⴷⴰⵅ ⵢⴰ ⵓⵇⵚⵉⴷ ⵏ ⵜⴰⵢⵔⵉ
ⵔⴰ ⵜ ⴰⵔⴰⵅ ⵉ ⵛⵛⴰⴱⴰⴱ ⴰ ⵜ ⴰⵇⵇⵔⴰⵏ
ⵡⴰ ⴽⵔⴼ ⴰ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵛⵛⴰⵀⴰⵡⴰ ⵏⴽ
ⴰ ⴽ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⴰⵡⵉ ⵡⴰⴹⵓ ⵙ ⵍⵅⵍⴰ
ⵢⴰⵏ ⵉⵥⵥⴰⵏ ⵖ ⵉⵥⵏⴽⵯⴰⴹ ⵉⵙⵉⵢⵃ
ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⴷ ⵉⴹⵕ ⵖ ⵉⵊⴰⵕⵉⴼⵏ
ⵜⵉⵍⵉ ⴳⵉⵙ ⵜⵕⵥⵉ ⴷ ⵉⴱⵔⵔⴰⵢⵏ
ⵉⵖ ⵉⵔⴰ ⴰⵙⴰⴼⴰⵔ ⵉⴳⴳⵓⵎⵎⵉ ⵜⵏ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⵏⵍⵍⴰ ⵖ ⵢⴰⵏ ⵡⴰⵣⵎⵣ ⴰ ⵡⵉⵏⵏⵅ
ⵓⵔ ⴷ ⵍⵅⵉⵔ ⴰ ⵉⴼⴼⴰⵖⵏ ⵍⴰⵙⵡⴰⵇ
ⵜⵍⵍⴰ ⵜⵉⵢⵏⵉ ⴷ ⵍⵍⵓⵣ ⵉⴼⵓⵍⴽⵉⵏ
ⴰ ⵜⴰⵎⵉⵎⵜ ⴰ ⵉⴼⴼⴰⵖⵏ ⵍⵓⵇⵜ
ⴰⵜⵉ ⵍⵉⵃⵢⴰ ⴷ ⵚⵚⵡⴰⴱ ⵎⵎⵓⵜⵏ
ⴰⵎⴽⵙⴰ ⵉⵖ ⵓⵔ ⵉⴳⴰⴱⵍ ⵜⴰⵡⵓⵔⵓⵜ
ⵎⵏⴰⵚⵚ ⵏⵙ ⵔⴰ ⵉⴷⴷⵓ ⴷⴰⵔ ⵓⵛⵛⵏ.

تايري ن وزمز أد

وا ها داخ يا وقصيد ن تايري
را ت أراخ ي شّاباب أ ت أقّران
وا كرف أ بنادم شّاهاوا نك
أ ك ور يتّاوي واضو س لخلا
يان يژّان غ يژنگُاض يسييح
را سول د يضرٍ غ يجارٍيفن
تيلي گيس ترٍژي د يبرّاين
يغ يرا أسافار يگّومّي تن
ها نّ نلّا غ يان وزمز أ وينّخ
ور د لخير أ يفّاغن لاسواق
تلّا تييني د لّوز يفولكين
أ تاميمت أ يفّاغن لوقت
أتي ليحيا د صّواب مّوتن
أمكسا يغ ور يگابل تاوروت
مناصّ نس را يدّو دار وشّن.

******

-31-

ⵅⴰⵍⵉⴷ ⴰⵛⵀⴱⵓⵏ
ⵉⵏⴷⵓⵣⴰⵍ
خالد أشهبون

ولد في سنة 1977 بدوار ئكّنان قبيلة ئندوزال، التحق بمسجد القرية ولكنه كغيره من أبناء البادية لم يستمرّ في الدراسة ليلتحق بمجال الخدمات التجارية بالدار البيضاء، في بداية التسعينات بدأ ينشد في أسايس وخصوصا في مقطوعات أحواش ن تعيالين، ثم انقطع مدة عن فضاء الإنشاد ليعود مرذة أخرى في نهاية العشرية السابقة، تأثر بشعراء القبيلة وما جاورها، وهو الآن يرتاد ميدان الحوار في كل المناسبات وخصوصا في المدن حيث التحق ببعض الفرق التي تمارس هذا الفنّ، من أهمّ الشعراء الذين أعجب بهم الشاعر براهيم واهروش بإكّطاي، ساهم في الملتقى الأول لشعراء أسايس، وهو الآن عضو في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⴰⵎⴰⵍ

ⵉⵖ ⵓⵔ ⵢⵓⵙⵉ ⵎⴰⵙⵉⴼ ⴰⵛⴰⵏ ⵉⵣⵣⴳⵔ ⵜ ⵉⴷ ⴽⵉⵎⴰⵏ
ⵉⵛⵛⴰ ⵉⵖ ⵓⵙⵉⵏ ⴰⵛⴰⵏ ⵓⵔ ⴰⵔ ⵉⵙⴽⴰⵔ ⵓⴷⵛ ⵉ ⵢⴰⵏ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵛⴰ ⴳⵉⵛ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵉⵙ ⵜ ⵉⵖⵍⴱ ⵎⴰⵎⴰⵍ
ⴰⵎⴰⵍ ⴷ ⵍⵡⵡⵓⵍ ⴰⵙ ⴰ ⵜⵜⴰⴼⴰⴳ ⵛⴷⴷⵏ ⵍⵍⵉ ⵃⴷⵍⵏⵉⵏ
ⵉⵍⵍⴰ ⵍⴱⴰⵃⵄ ⵖ ⵛⴷⴷⵏ ⴽⵉⵖ ⵉⵙⴰⵎⵍ ⵉⵜⴰⴱⵃ ⴰⵎⴰⵍ
ⵉⴳ ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⵜⵏ ⵉⴽⵛⵛⵍ ⴼⴰⴷ ⴰ ⵉⵊⵛⵃⴰ ⴷ ⵎⵉⵢⵢⴰⵄ
ⵛⵡⴰⵔ ⴷ ⵉⴼⴼⴰⵖ ⵍⴱⴰⵕⵓⵄ ⴰⵏⵏ ⵉⵣⵣⴳⵔ ⵜⵉⵛⴷⴰⵢⵉⵏ
ⵉⵍⵍⴰ ⵍⴱⴰⵃⵄ ⵖ ⵛⴷⴷⵏ ⵛⵡⴰⵔ ⵉⵜⵜⴳⴰⵍⵍⴰ ⴰⵔ ⴷ ⵕⵛⵉⵏ
ⵛⵡⴰⵔ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⴰⵎⴰⵍ ⵏⵙ ⵓⵔ ⴼⵍⵍⴰⵙ ⵃⵓⵎⵍⴳ
ⵉⵡⴰⵏ ⴷ ⴰ ⴽ ⵖⴷⵔⵏ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵉⵏ ⵉⵙ ⴽ ⵓⴽⴰⵏ ⵄⵕⵕⴰⵏ
ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵉⵏ ⵍⵛⵃⵏⴰ ⵏ ⵞⵞⵛⵓⵜⵉⵢⵜ ⵓⵍⴰ ⵜⵀⵛⵛⴰ ⵜ
ⵏⵄⴰⵍⴱ ⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⴼⵍⵍⴰⴳ ⵉⵙⵙⵔⴳⵓ ⵣⵣⵛⴰⵏ ⵏⵙ
ⴰⴷ ⴰⴳ ⵉⵙⵏⵛⵓⴳⴳⵓⵔ ⵕⴱⴱⵉ ⴷ ⵎⵉⵍⵍⵉ ⵃⴷⵍⵏⵉⵏ
ⴰⴷ ⵉⵢ(ⵉ) ⵓⵔ ⵉⵙⵏⵛⵓⴳⴳⵓⵔ ⴷ ⴳⴰⵔ ⵛⴷⴷⵏ ⵓⵍⴰ ⵊⵍⴰⵏ ⴰⴳ
ⵉⵙ ⵜⵙⵙⵏⵜ ⵛⴰ ⴼ ⵉⵜⵜⴰⵥⵓⵛ ⵍⴳⵍⵡ ⵛⴰ ⴼ ⴰ ⴽⴰ ⵜⵥⴰⵍⵍⴰⵏ
ⴰⵔ ⵏⵜⵜⵄⴰⵍⴰⴱ ⵕⴱⴱⵉ ⴰⴷ ⴰⴳ ⵉⴽⴽⵉⵙ ⵉ ⵜⴰⵎⴷⵉⵎⵉⵏ
ⵉⴳⴰⵏ ⵜⵉⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵏⵜⵜⵏⵜⵉ ⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⵍⵃⴷⵓ (ⵏ) ⵢⴰⵏ
ⵛⵛ ⵍⵖⵔⵓⵔ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⵊⵊⵉⴳ ⵏⵛ ⵔⴰⴷ ⵢⴰⵙⵓⵙ
ⴽⴰⴷⴰ ⵏ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵜⵉⵎⵉⵜ ⵛⵙⴽⵉⵏ ⵉⵏⴳⴰⵔⴰ ⴷ ⵍⵉⴳⵔⵜ
ⵢⴰⵏ ⵓⵔⵜⴰ ⵉⴼⴼⴰⵖⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰ ⵓⵔ ⵉⵡⵡⵏⵄ ⵖ ⵉⴼⵉⵙ
ⴰⴷ ⴰⵏⴳ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⴱⵉⴷⴷ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵓⵣⵛⵣ ⴰⴷ ⵖ ⵍⵍⵉⴳ
ⵉⵔⴰ ⴹⴹⵛⴰ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵙⴷⵓⵍⵍⵓ ⵍⵊⴰⵛⵉⵃ.

أوال

يغ ور يوسي واسيف أمان يزّڭر ت يد كيوان
يمّا يغ وسين أمان ور أر يسكار ودم ئـ يان
كولّو ما ڭيم أ دّونيت يس ت يغلب واوال
أوال د لقّول أس أ تّافاخ مدّن لّي عدلنين
يلّا لباعض غ مدّن كيغ يساول يتابع أوال
يخ أر كيغ تن يكمّل فاد أ يجمعا د وييّاض
مقار د يقّاغ لبارۅض أنّ يزّڭر تيمدايين
يلّا لباعض غ مدّن مقار يتّڭالّا أر د ۅمين
مقار يتّيني أوال نس ور فلّاس عُووْلخ
يقان د أ ك غدرن ور يسّين يس ك وكان ضۅّان
ور يسّين لمعنا ن شّموتييْت ولا تهمّا ت
نضالب ئـ ۅبّي أ فلّاخ يسّرخـو زّمان نس
أد أخ يسنموڭّور ۅبّي د ويلّي عدلنين
أ يّي ور يسنموڭّور د ڭار مدّن ولا جلان أخ
يس تسّنت ما ف يتّاژوم لخلق ما ف أ كا تژالّان
أر نتّضالاب ۅبّي أد أخ يكّيس ئـ تاوديوين
يڭان تين دّونيت نتّنتي أ يڭان لعدو ن يان
مّ لغرور أ دّونيت أجّيڭ نم راد ياسوس
كادا ن يان أ تيويت مسكين ينڭارا د ليخرت
يان ورتا يقّاغن دّونيت أ ور يقّنض غ يفيس
أد أنخ وكان يبيدّ ۅبّي غ وزمز أد غ لّيخ
يرا طّما ن دّونيت أد أڭّ يسدولّو لجاميع.

****

-32-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴱⵓⵇⴷⵉⵔ

ⵢⴰⵖⵓⵔⵜⵏ

محمد بوقدير

بوقدير محمد ولد في قرية ياغورتن قبيلة أيت زوليت سنة 1982، التحق بمسجد القرية ثم بالمدرسة، وبعد أن شبّ استهواه فنّ أحواش، وفي سنة 2001 بدأ يرتاد ميادين الحوار، وقد بدأ أولا بأحواش ن تعيالين كمقطوعات ثم لم يلبث أن التحق بفن أهناقار، وهو ابن الشاعر محند بوقدير الذي كان له باع طويل في حواريات أحواش بالمنطقة، كما تأثر بثلة من شعراء القبيلة ك أحمد أوبراهيم وعثمان أزوليض، وفي طاطا تواصل مع عدد من الفرق الفنية ومارس معها، وأول شاعر حاوره لأول مرّة هو عبد الرحمان بومهدي، وغيره من شعراء جيله، وقد استطاع أن يفرض وجوده في ميادين الحوار مع أكابر الشعراء بفضل تمكنه من اللغة والضوابط الفنية، وهو الآن عضو في مجلس الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس، وقد أسس مؤخرا فرقة من أبناء قبيلته باسم «ئزوليضن».

ⴰⵙⴰⵢⵙ

ⴰⴷ ⴷ ⴻⴽⴰⵏ ⵉⵏⵉⵅ ⵜⴰⴳⴻⵔⵉ ⵏⵓ
ⵏⵅ ⴰⵙⵏⵜ ⵖ (ⴰ)ⵎⴽ ⵃⵃⵉ ⴳⵉⵙ ⵏⵙⵙⵏ
ⴰ ⵢⴰⵙⴰⵢⵙ ⴰⴷ ⴰⵜⵉⴳ ⵉⵃⴰ ⵜⵏ
ⵖ ⴻⴳⵯⵏⵙ ⵏ ⵜⴰⵙⴰ ⵏⵓ ⴷ ⴻⵃ ⵉⵏⵓ
ⵇⵟⵟⵉ ⴽⴰ ⵜⵏ ⵉⵙⵙⵍ ⵉⴹⴻⴼ ⴰⵏⵅ
ⵏⴳⴰ ⵟⴻ ⵃⵀⴰⵓⴰ ⵙ ⵃⵚⴰⵥⵃ ⵏⵅ
ⴷ ⵉⵓⴰⵃⵉⵓⵏ ⵏⵔⴰ (ⴰ) ⵜⵏ ⴷ ⵏⵙⵙⴰⵛⴽ
ⴰ ⵎⴰ ⵔⴰ ⵢⵙ ⵉⵎⴰⵙⴰ ⴳⴳⴰⵎⵎⵉⵅ ⵜ
ⴰⴷ ⴰⵙ ⵉⵣⵓⴻⵔ ⵙ ⵓⴰⴳⵯⵙ ⵏⵙ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵍ ⵢⴰⵏ ⴻⵣⵎⵣ ⴰⵙⴰⵢⵙ
ⵉⵖ ⵉⵃⵃⴰ ⵃⴼⵇⵄ ⵎⴷⴷⵏ ⵖⵔⵏ ⴰⵓⵏ
ⵉⵚⴻⵎⵎⴻ ⴽⴻⵃⵃⴻ ⴰⴳⴰⵢⵢⴻ ⵏⴽ
ⴻⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵏⵙⵙⵏ ⵎⴰ ⵔⴰⴷ ⵍⵍ ⴰⴼⵅ
ⵏⴳⵉ ⵍⵍ ⵇⵇⵊⴰ ⵙ ⴰ ⴽⴰ ⴳⵉⵙ ⵏⴼⴽ
ⵜⴰⴳⴻⵔⵉ ⵉⵃⴰⵏ ⴰⵜⵉⴳ ⵎⵥⵥⴻⵔⵏ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵍ ⵢⴰⵏ ⴻⵣⵎⵣ ⴰⵙⴰⵢⵙ
ⵏⴰⵓⵉ ⵍⵍ ⵇⵇⵊⴰ ⴼ ⴰ ⴽⴰ ⴳⵉⵙ ⴰⴼⵅ
ⵜⴰⵓⴰⵃⴰ ⵖ ⵓⴰⵓⴰⵃ ⴰⴷ ⴷ ⵏⵙⴰⵓⵃ
ⴼⴰⵙⵔⵏ ⵎⵉⴷⴷⵏ ⵜⴰⴳⴻⵔⵉ ⵏⵅ
ⴰⵔ ⵉⵢⵉ ⵜⵜⵉⵏⵉⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵇⵇⴰⵢⵕ
ⴰ ⴽⴻ ⵢⴰⵏ ⴷ (ⴻ)ⵎⴽ ⵃⵃⵉ ⴳⵉⵙ ⵉⵙⵙⵏ
ⴰ ⵢⴰⵙⴰⵢⵙ ⵉⵟⴰⴷⵃ ⴷ ⴻⵔ ⵏⵙⵙⵏ
ⴻⵔ ⵙⴻⵃ ⴰⵏⵅ ⵉⵎⵎⵉⵎ ⵉⵖ ⵏⵙⴰⵓⵃ.

أسايس

أدّ وكان ينيخ تاڤوري نو
نڠ أسنت غ مك لّي ڤيس نسّن
أ ياسايس أد أتيڠ يلا تن
غ وڭنس ن تاسا نو د ول ينو
رڥّي كا تن يسّنّ يضوف أنخ
نڭا بو لهاوا س لعاقل نخ
د يواليون نرا تن د نسّاشك
أ ما را يس يماسا ڭامّيخ ت
أد أس يزوُور س واڭنس نس
يڭا تّ ينّ يان وزمز أسايس
يغ يلّا لفرح مدّن غرن أون
يعومّو كولّو أڭايو نك
ور أڭ نسّن ما راد نّ أفخ
نڭي نّ رّجا س أ كا ڤيس نفك
تاڤوري يلان أتيڠ مقّورن
يڭا تّ ينّ يان وزمز أسايس
ناوي نّ رّجا ف أ كا ڤيس أفخ
تاوالا غ واوال أد د نساول
فاسرن ميدّن تاڤوري نخ
أر ييي تّينين مدّن رّايص
أ كو يان د مك لّي ڤيس يسّن
أ ياسايس يبادل د ور نسّن
ور سول أنخ يمّيم يغ نساول.

****

-33-

ⵃⴰⵙⴰⵏ ⴰⵏⵛⵛⴰⴷ

ⵜⴰⴼⵉⵏⴳⵓⵍⵜ

حسن أنشاد

ولد في بلدة تافينكَولت سنة 1979، والتحق بالمدرة إلى أن أكمل تعليمه الإعدادي، بدأ مشواره الفني في مصاحبة الشاعر الحسن الإكَاسي وهو الذي اعتبره قدوته في الإنشاد والصناعة الشعرية، وتأثر بالجوّ الشاعري للمنطقة، وفي سنة 2004 بدأ يرتاد ميادين الحوار الشعري، ساهم في الملتقى الأول لشعراء أسايس، وهو الآن يعمل في بلدته في الأعمال الحرّة.

ⵍⵓⵚⵉⵢⵜ

ⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⴳⵉⵅ ⵏⵏ ⵙ ⵕⴱⴱⵉ ⵏⵏⵉⵢⵜ ⵏⵛⵓⵡⵕ
ⴰⴷ ⵉⵢⵉ ⵕⵥⵎⵏ ⵍⴱⵉⴱⴰⵏ ⴰ ⵓⵔ ⵏⵎⵔⵔⵜ
ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ ⴰⴷ ⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵏⵎⴰⵇⵇⴰⵔⵏ
ⴰ ⵀⴰ ⵢⴰⵜ ⵍⵓⵚⵉⵢⵜ ⵕⵥⵎⵖ ⴰⵙ ⴼⵍⵍⴰⵡⵏ
ⴰⵎⴰⵏ ⵉⵖ ⵎⵓⵏⵏ ⵖ ⵍⵄⵉⵏ ⵓⵔ ⵏⵜⵉⵍⵏ
ⴰⴷ ⴰⵙ ⵏⵙⴽⵔ ⵛⵛⴰⵔⵉⵊ ⵏⵙ ⵎⴰ ⵜⵏ ⵉⵇⵇⴰⵢⵏ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵢⴰⵖ ⴼⴰⴷ ⵉⵙⵓ ⴳⵉⵙⵏ ⵍⵃⴰⵇⵇ ⵏⵙ
ⴰ ⵜⴰⴼⵓⴽⵜ ⴰⵣⴰⵍ ⴽⴰ ⵖ ⴰ ⴽⵎ ⵙⵎⵓⵇⵇⵓⵍⵅ
ⵏⵍⵓⵃ ⵉⵥⵕⵉ ⵏⵡ ⴰⵎⵏⵉⴷ ⵏⵅ ⵉⵙⵙⴼⴰⵡ ⴰⵏⵅ
ⵎⴰⵅ ⴰⵢⵢⵓⵔ ⵖ ⵢⵉⴹ ⵏⵜⵜⵓ ⵍⵃⴰⵇⵇ ⵏⵙ
ⴰ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⵍⴰⵏ ⴰⵣⵎⵣ ⵉⵍⵓⵃ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ.

لوصييْت

أ بيسمي كّيخ نّ س رِبّي نّييت نشووْرِ
أد يّي رِژمن لبيبان أ ور نمرّت
يمديازن ن سوس أدّ أكُّ ينماقّارن
أ ها يات لوصييْت رِژمغ أس فلّاون
أمان يغ مونّ غ لعين ور نتيلن
أد أس نسكر شّاريج نس ما تن يقّاين
وانّا ياغ فاد يسو كّيسن لحاقّ نس
أ تافوكت أزال كا غ أ كم سموقّولخ
نلوح يژرِي نو أمنيد نخ يسّفاو أنخ
ماخ أيُّور غ ييض نتّو لحاقّ نس
أ كو يان لان أزمز يلوح تيفاوت.

****

-34-
ⵎⵓⵙⴰ ⵡⴰⴹⴹⴰⵛ
ⵉⴷⴰ ⵓⴼⵉⵏⵉⵙ
موسى واضاش

ولد بقرية تمَاريضن بإداوفينيس في الخمسينات من القرن الماضي، ولم يطرق المدرسة قط، كانت أسرته مشتغلة بالرعي فاستمرّ في هذه المهنة بتفان، ولكن قبيلته المشهورة بفنّ دّرست جعلته ينتهج نهج من وجده فتعلّم أصول هذا الفنّ ولم يلبث أن دخل أساس كشاعر متمكّن، فكانت إبداعاته عاكسة لبيئته الجبلية وله صوت جميل، لم يكن من مبدعي القصائد ولكن وضعيته وإحساسه بكبر سنّه أفاض ملكته وأتحفنا بهذه الكلمات العذبة الرقيقة.

ⵓⵙⵙⴼⴰⵏ

ⵃⵇⵉⵟⵜ ⵉ ⵢⵉⵅⴼ ⵉⵏⵓ ⵜⴳⴰ ⵏⵉⵜ ⵖⵉⴽⴰⵍⵍ
ⴰⵀⵀ ⵉⵏⵡ ⴰ ⵢⵉⵎⵎⵉ ⴳⴰⵏ ⴷ ⵉⴼⴰⴷⴷⵏ ⴰⵎⴰⵏ
ⴰⵔ ⴰⵏⵅ ⵉⵜⵜⵕⵎⴰⵢ ⵉⵥⵕⵉ ⵣⴰⵖ ⴷ ⵏⵜⵜⴰⵏ
ⵉⴹⴰⵃⴱ ⵓⵄⴽⴽⴰⵣ ⴰⵏⵅ ⵉⵃⵉⵏ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ
ⴰ ⵎⵔⵀⴱⴰ ⵙⵔⵙⵏ ⵃⵓⵇⵜ ⴰ ⵜ ⵉⴷ ⵢⵉⵡⵉⵏ
ⴰ ⵜⴰⵖⵣⵓⵜ ⴰⵔ ⵉⵢ(ⵉ) ⵜⴰⵇⵇⵔⴰ ⴰⴷ ⴳⴰⵡⵔⴳ
ⴰⵎⴰⵔⴳ ⵏ ⵃⵀⴱⴰⴱ ⵏⴳ ⴽⴰ ⵉⵢⵉ ⵉⵚⵓⵡⵃⵏ
ⵉⵀ ⴰ ⵜⵏ ⵓⵔ ⵏⵥⵕⵕⴰ ⵓⵃⴰ ⴰⵔ ⴰⵅ ⵥⵕⵕⴰⵏ
ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵚⴰ ⵍⵍ ⴳⴽⴰⴷ ⴰ ⵜⴳⵉⵜ ⵏⵥⵕⴰ ⴽⵯⵏⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵍⵍ ⵜⵃⵓⵀⵎⵜ ⵜⴰⵙⵉⵜ ⴷ ⵡⴰⵢⵢⴰⴹ
ⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵇⵛⵛⴰⴱ ⴰ ⵜⴳⵉⵜ ⵓⵔ ⴱⴰⵃⴰⵏ
ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵓⴽⴰⵏ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵃⵙ ⵉⴳ ⴰⵔ ⴷ ⵕⵎⵉⵏ
ⵉⴽⴽⵉⵙ ⵜ ⵉ ⵡⴰⵢⵢⴰⴹ ⵉⴼⵃ ⴰⵙⵏ ⵜ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ
ⵉⴳ ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⵣⵣⵔⵉⵏ ⵓⵙⵙⴼⴰⵏ ⵉⵣⵔⵉ ⴰⴽⴽⵯ
ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⵉⴷⴰⵡⵎⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⵜⵜⵖⴰⵎⴰⵏ
ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⵃⴳⵉⵔ ⴰ ⵢⵙ ⵉⵃⵉⵏ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ
ⵉⴽⵔⵣ ⵜⵏ ⵖ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵎⴳⵔ ⵙⵓⵃ
ⵉⵇⴰⵏ ⴽⵯⵏⵜ ⴷ ⴰ ⵃⵉⵊⴰⵕⵜ ⵉⵖ ⵉⴳⴷⵎ ⵢⴰⵏ.

وسّفان

لقيصت ئـ ييخف ينو تڴا نيت غيكانّ
أحّ ينو أ ييمّي ڴان د يفادّن أمان
أر أنخ يترِماي يژرِي زاغ د نتّان
يضالب وعڴاز أنخ يلين غ وفوس
أ مرحبا سرسن لوقت أ ت يد ييوين
أ تاغزوت أر يّي تاقّرا أد ڴاورخ
أمارڭ ن لحباب نخ كا ييي يهوولن
يغ أ تن ور نژرّا ولا أر أخ ژرّان
دّونيت ها نّ خكاد أ تڴيت نژرا كُنت
أ وانّا نّ تلوحمت تاسيت د واياض
أ زون د أقشّاب أ تڴيت ور بالان
وانّا وكان را ت يلس يخ أر د رِمين
يڴّيس ت ئـ واياض يفل أسن ت غ وفوس
يخ أر كيغ زّرين وسّفان يزري أڭُ
رِبّي أ يداومن رِبّي أ ڴيس يتّغامان
وانّا يران لخيرِ أ يس يلين غ وفوس
يكرز تن غ دّونيت را ت يمڴر سول
يقان كُنت د أ ليجارِت يغ يخدم يان.

*****

-35-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴰⵢⵜ ⴷⴷⵉⴱ

ⴰⵢⵜ ⴱⴰⵀⴰ

محمد أيت الديب

ولد ب أيت باها في سنة 1954 في دوار تاڭاديرت ؤوملال، والتحق بالمدرسة لكنه لم يكمل مشواره الدراسي، ولمّا شبّ احترف مهنة الخدمات الكهربائية وانتقل إلى منطقة ئغرم ن ئداوكنسوس في سنة 1985، حيث قضى معظم فترات يفوعته، وفي جو هذه القبيلة المعروفة بفن أهناقار تتلمذ على عباقرة الشعر من أمثال علي ؤموح ؤ تانجاجمشت وموح أوعلى ؤ تسدرمت وسيدي بورح، وبدأ مشواره الإبداعي وهو في سنّ ال18 من عمره، حيث تمكن مع مختلف الفرق المعروفة هناك من زيارة جل القبائل، كان أبرز زملائه في الحوار الشعري هو الشاعر محند اليعقوبي الزكراوي، انخرط في الرابطة الوطنية منذ تأسيسها.

ⵎⵎ ⵍⵖⵔⵓⵔ

ⴰⵔ ⵉⵙⵎⵓⵎⵎⵓⵢ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵉⵏⵓ ⵉⴳⵍⵍⵉⵏ
ⵎⴰ ⵔⴰ ⵢⵙ ⵉⵙⵙⴼⵍⵉⴷ ⵉⴳⴰ ⵜⵜ ⵉ ⵜⵖⵓⵢⵢⵉⵜ
ⴱⴰⴱ (ⵏ) ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ ⵉⵙⵙⴼⵍⴷ ⴰⵅ ⵉⵎⵀⵍ ⵏⵉⵜ
ⵉⵎⵎⴰ ⴰⴽⴰⵍ ⴽⵔⴰ ⴳⵉⵙⵏ ⵉⴹⵓⵕⴹⵕ ⵏⵉⵜ
ⵎⵇⴰⵔ ⵜⴰⵍⵍⴰⵜ ⵉⴷⴰⵎⵎⵏ ⵓⵔ ⴰ ⴽ ⵥⵕⵕⴰⵏ
ⵡⴰⵅⵅⴰ ⵉⴳⴰ ⴰⵎⴷⴷⴰⴽⴽⵯⵍ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⵏⴽ
ⵉⵏⵏⴰ ⵖ ⴽ ⵉⵎⵎⴰⵇⵇⴰⵔ ⵢⴰⵏⴼ ⴰⴽ ⴰⴷⴷⵏ ⵉ ⵜⵉⴹⵜ
ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵙⵙⴰⵏ ⵏⵙ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⴷⴰⵡⵎⵏ
ⴰ ⵏⵉⵜ ⵜⵥⵕⵜ ⴽⵔⴰ ⵣⵉⴽⴽ ⵜⵙⵓⵜ ⵉⴷⵙ ⴰⵜⴰⵢ
ⵓⵔ ⴰⵔ ⴷ ⵉⵜⵜⵕⵡⴰⵃ ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⴰⴽ ⴷ ⵏⵏⴰⵏ
ⵀⴰⵜⵉ ⴼⵍⴰⵏ ⵉⵕⵓⵃ ⵎⵙⴽⵉⵏ ⵉⴳⴳⵯⵣ ⴰⴽⴰⵍ
ⵢⵉⵔⵉ ⴽⵔⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵉⴽ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ.

مّ لغـرور

أر يسمومّوي لعاقل ينو يڭلّين

ما را يس يسّفليد يڭّا تّ ئـ تغوييت

باب يڭنوان يسّفلد أخ يمهل نيت

يمّا أكال كـرا ڭيسن يضورضر نيت

مقار تالّات يدامّن ور أ ك ژرّان

واخّا يڭّا أمدّاكّل ولا تاڭمات نك

ينّا غ ك يمّاقّار يانف أك أدّن ئـ تيضت

دّونيت ها نّ وسّان نس ور أكّ داومن

أ نيت تژرت كرا زيكّ تسوت يدس أتاي

ور أر د يتّرواح أر كيغ أك د نّان

هاتي فلان يروح مسكين يڭّز أكال

ييري كرا دّونيت أ تنت يك غ وفوس.

****

-36-
ⵕⴰⵛⵉⴷ ⵓⵄⴷⴷⵉ
ⴰⵥⵥⴰ
رشيد أوعدي

ولد بأقّا في سنة 1985، والتحق بالمدرسة واستمرّ حتى وصل إلى التعليم الثانوي، وقد أخذ الشعر عن أشهر الشعراء في المنطقة بعد أن استأنس بالشرائط التي امتلكها، وفي منتصف العشرية السابقة دخل إلى أسايس، وصار يرافق بعض الفرق الفنية ويحتك بعدد من الشعراء إلى أن تكونت لديه ملكة النظم، وقد شارك في الملتقى الأول لشعراء أسايس سنة 2017.

ⵙⵙⵉⵃⵔ

ⴰⵊⵊ ⴰ ⵢⴰⴼⴳⴰⵏ ⵍⴰ ⵖ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵙⵙⵉⵃⵔ
ⵉⵙ ⵓⴽⴰⵏ ⴽⴰ ⵉⵍⴰ ⴷⴷⵔⵏ ⵉⵎⵎⴰ ⵎⵎⵓⵜⵏ
ⴰⵎⵣⵔⵓⵢ ⵏ ⵍⴰⵊⴷⵓⴷ ⵏⵜⵜⴰ ⴰⴼ ⵙⴰⵡⴰⵍⵅ
ⵓⵔ ⵉⵢ(ⵉ) ⴽⵎ ⴷ ⴼⵍⵏ ⴰ ⵜⴰⴷⴰⵍⵍⵉⵜ ⵖ ⵓⵍ ⵉⵏⵡ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰⴷ ⵉⵍⴽⵎ ⴷ ⵓⵣⵎⵣ ⵍⵍⵉ ⵜⵔⴰ ⵍⵓⴹⵜ
ⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵏⵎⵓⵏ ⴰⴷ ⵏⴳ ⴰⴼⵓⵙ ⵖ ⵉⴼⴰⵙⵙⵏ
ⴽⵉⵡⴰⵏ ⴰ ⵢⵉⵍⵉ ⵖ ⵉⴷⵉⵙ ⵏⵙ ⵃⵎⵎⵕⵏ ⵜ
ⴰⵏⵎⵎⴰⵍ ⵡⴰⵍⴰ ⵜ ⵉⴳⴰⵏ ⴰ ⵢⵅ ⵎⵎⴰⵍⵏ
ⵀⴰ ⵍ ⵍⵡⵔⴽ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⴳⵉ ⵡⵉⵏ ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ
ⴰⵎⵊⵄⴰⵕ ⵖⴰⵔ ⵏⴽⵔ ⴷ ⴰⵙⵉ ⵚⵚⵎⵊ ⵏⴽ
ⵏⴹⵏⵃⴰ ⵙ ⵢⴰⵏ ⵉⵖ ⵕⵄⴰⵏ ⴰⵏⵅ ⵎⵎⴰⵍⵏ
ⵏⴽⴽⴰ ⴷ ⴰⵏⵎⵓⴳⴳⴰⵔ ⵉⴳⴰ ⵢⴰⵅ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ
ⵓⴷⴰⵏ ⴰⵅ ⴳⵉⵙ ⵉⴷ ⴷⴰⴷⴷⴰ ⵍⵍⵉ ⵏⵎⴰⴹⴹⴰⵔⵅ
ⵏⵉⵡⵉ ⴷ ⵜⴰⵟⵔⴰⵜ ⵏⵅ ⵏⵅⴰ ⵜⵏⵜ ⵖ ⵉⴼⴰⵙⵙⵏ
ⴰ ⴽⴰ ⵏⵎⵃⵉⵡⵉⵏ ⵜⴰⴳⴳⵯⴰⵜ ⴰ ⵓⵔ ⵏⵎⵔⵔⵜ
ⴰ ⵢⴰⵙⴰⵢⵙ ⴰ ⵜⴼⵓⵍⴽⵉ ⴳⵉⵙⵏ ⵜⵖⵍⴰⵏⵜ
ⴰ ⵎⵉⵛⵛ ⴰ ⵏⴳ ⴰⵎⴷⵢⴰⵣ ⵉⵍⵉⵅ ⵙ ⵍⵉⵢⵜ
ⴰ ⵏⵎⵎⴰⵖ ⴼ ⵉⵎⵓⵔⵉⵅ ⴰ ⵜ ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵕⵅⵚ
ⴰ ⵀⴰ ⵍ ⴰⴳⴷⵓⴷ ⵏⵅ ⵉⴳⴰ ⵢⴰⵏ ⴼ ⵓⵙⴰⵢⵙ
ⵉⵙⵙⵏ ⵏⵉⵜ ⵎⴰ ⴷⴰⵔ ⵉⵅⵔⵔⵓ ⵉⵡⴰⵍⵉⵡⵏ
ⵓⵔ ⵏⵚⴰⵎⵊ ⵉ ⵢⴰⵏ ⵉⵣⵣⵏⵣⴰⵏ ⴰⵡⴰⵍ ⵏⵅ
ⵉⵣⵣⵏⵣ ⴰⴼⴳⴰⵏ ⵉⵣⵣⵏⵣ ⵓⵍⴰ ⴰⴽⴰⵍ ⵏⵙⵏ
ⵔⵉⵅ ⴰ ⵢⴰⴼⴳⴰⵏ ⴰ ⴽ ⵉⴷ ⵏⵛⴰⵡⵕ ⵉⵏ(ⵉ) ⴰⵏⵅ
ⵢⴰⴽ ⵍⵃⴰⴹⵍ ⴰ ⴽ ⵉⵙⵙⵎⵖⵔⵏ ⵉⴼⴽ ⴰⴽ ⵉⵍⵙ
ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴰⵙ ⵜⵓⴼⵎ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵉ ⵢⵉⴼⵓⵏⴰⵙⵏ
ⵉⵍⴰ ⵖ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵊⴰⴷⴰⵏⵜ ⵉⵎⵔⵡⴰⵢⵏ
ⴰⵊⵊ ⵉⵏⵓ ⵓⵔ ⵓⴼⵉⵅ ⴰⴷ ⵊⵓⴷⴷⵓⵅ ⵉⵏⴰⴼⴰⵍⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵙ ⵜⵍⵉⵜ ⵔⴰⴷ ⵉⵍⵉⵏ ⵙ ⵍⵃⴰⴹⵍ
ⵉⵙ ⴰⵔ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⵙⵎⵓⴷⴷⵓ ⵎⴰ ⵓⵔ ⵉⵍⵉⴹⵏ
ⵡⴰⵍⴰ ⴽⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⴰ ⵜⴰⵥⵉⵜ ⴰ ⴽⵎ ⵉⵊⴰⵡⵍ
ⵉⵎⵎⴰ ⵀⴰ ⵍ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵏⴳⴰⴷⴷⴰⵏ ⵉⵡⴰⵍⵉⵡⵏ.

سّيعـر

أحّ أ يافڭان نّا غ ور يلّي سّيعـر
يس وكان كا ينّا دّرن يمّا مّوتن
أمزروي ن لاجدود نتّا أف ساوالخ
ور يّي كم د فلن أ تادالّيت غ ول ينو
غ أسّ أد يلكم د وزمز لّي ترا لوقت
أ كولّو نمون أد نڭ أفوس غ يفاسّن
كيوان أ ييلي غ يديس نس عمّرن ت
أنمّال وانّا ت يڭان أ يخ مّالن
ها نّ لورك ور أڭّ يڭي وين تامارت
أمحضارِ غار نكر د أسي صّمح نك
نقنعا س يان يغ رِضان أنخ مّالن
نكّا د أنموڭّار يڭا ياخ تيفاوت
ودان أخ ڭيس يد دادّا لّي نماقّارخ
نيوي د تابرات نخ نڭا تنت غ يفاسّن
أ كا نمعيوين تاڭّات أ ور نمرّت
أ ياسايس أ تفولكي ڭيسن تغنّانت
أ ميشّ أ نڭ أمدياز يليخ س نّبيت
أ نمّاغ ف يموريڭ أ ت ور نسّرِخص
أ ها نّ أڭدود نخ يڭا يان ف وسايس
يسّن نيت ما دار يڭرّو يواليون
ور نصامح ئـ يان يزّنزان أوال نخ
يزّنز أفڭان يزّنز ولا أكال نسن
ريخ أ يافڭان أ ك يد نشاورِ يني أنخ
ياك لعاقل أ ك يسّمغرن يفك أك يلس

نتّان أس توفم تودرت ئـ ييفوناسن
ينّا غ ور يلّي حادانت يمروان
أحّ ينو ور وفيخ أد حودّوخ ينافالن
أ وانّا س تنّيت راد يلين س لعاقل
يس أر وكان يسمودّو ما ور يليقن
وانّا كا يران أ تاژيت أ كم يحاول
يمّا ها نّ كولّو نڭادّان يواليون.

****

-37-

ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ ⴱⴰⴹⵕ
ⵜⴰⴼⵉⵏⴽⵓⵍⵜ
الحسين باضر

ولد في تافينكولت سنة 1977 والتحق بالمدرسة العصرية ولكنه لم يتجاوز التعليم الابتدائي، تأثر كثيرا بشعراء منطقته من أمثال الرايس المختار والحسن الإكّاسي، والرعيل الأول ممّن تركوا بصمتهم في الشعر الحواري بالمنطقة كعبد الله بوزييت وعمر أوتولوا، وفي السادسة عشرة من عمره بدا يرتاد فضاء الحوار، ولكنه لم يبدأ جولاته الفنية إلا مؤخرا، وهو الان يمارس خدمات تجارية بالمدن.

ⵔⵔⵉⵣⵓ

ⴰⵍⵍⴰⵀ ⵓⴽⴱⴰⵕ ⴰⵍⵍⴰⵀ ⵉⴱⴰⴷⵍ ⵣⵣⴰⵎⴰⵏ
ⵉⴽⵓⵃⵕ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵜⴽⵓⵃⵕ ⵙⵔⵙⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ
ⵓⵙⵙⴰⵏ ⵏ ⵍⵢⴰⵏⴰⵏⴰ ⴷ ⵓⵙⵙⴰⵏ ⵉⵣⵉⵚⵚⵏⵏ
ⵓⵍⴰ ⵡⵉⵏⵏⵎ ⴰ ⵙⵙⵓⵜⵔⴰ ⵎⵎⵓⵜⵏ ⵔⴰⴷ ⴰⵍⵍⴰⵅ
ⴰ ⵖⴰⵚⴰⴷ ⵏ ⵔⵔⵉⵣⵓ ⵀⵍⴽⵏ ⵉⵚⵉ ⴽⵎ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ
ⴰ ⵎⵏⵏⴰⵛⴽ ⵏ ⵚⴰⵏ ⵉⵙⵙⵔⴱⴰ ⵚⴰⵙ ⵜⴰⴷⴰⵍⵍⵉⵜ
ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵖ ⵜ ⵏⵏⵉⵅ ⵚⴰⵚⵍ ⴽⴽⵉⵏ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ
ⴰ ⵣⵣⵔⴱ ⴰⵙ ⵔⴰ ⵏⵏ ⵉⵍⴽⵎ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵔⴰⴷ ⵍⴽⵎⵏ
ⵉⵖ ⵉⴳⴰ ⵍⵅⵉⵔ ⵓⵍⴰ ⵛⵛⵕⵕ ⵉⵣⵔⵉ ⴳⵉⵜⵓⵏ
ⴰ ⵜⵜⵉⵍⵉⵃⵓⵏ ⵓⵔ ⵜ ⵉⴷ ⵉⵔⵓⵔ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵉⵖ ⵉⵃⵓⵍⴽⵉ ⵚⴰⵏ ⵡⴰⴳⴳⴰ ⴳⴰⵏ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⴰⵚⵚⵓⵔ
ⴰ ⴳⵉⵙ ⵓⵔ ⵚⵉⵍⵉ ⵍⴽⵉⴱⵔ ⴽⵔⵃⵏ ⴰⴹⴰⵕ ⵏⵙ
ⴰ ⵚⴰⵎⴰⵔⴳ ⵓⵔ ⵔⴰ ⴽ ⵃⵍⵅ ⵓⵔ ⵔⴰ ⴽⵯⵏ ⴱⵔⵔⴰⵅ
ⴰ ⵜⴰⵙⴰ ⴷ ⵡⵓⵍ ⵉⵏⵡ ⴰⴷ ⴰⴽ ⵏⵃⴽⴰ ⵄⵎⵎⵕ ⵜ
ⵓⵔ ⵉⵚⵉ ⵏⵏ ⵙⵉⵜⵓⵏ ⵉⴳⵉ ⵟⵟⵎⵄ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ
ⵓⵍⴰ ⵍⵎⴰⵍ ⵙⵙⵉⵄⵔ ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴰ ⴳⵉⵜⵏⵅ.

رّيـزُو

ألّاه وكبارٍ ألّاه يبادل زّامان
يكوفرٍ بنادم تكوفرٍ سرسن دّونيت
وسّان ن لحانانا د وسّان يزييّنّ
ولا وينّم أ سّوترا مّوتن راد ألّاخ
أ غاياد ن رّيزو هلكن يّي كم أ دّونيت
أ منّاشك ن يان يسّربا ياس تادالّيت
أوال يغ ت نّيخ يايل كّين يكّنوان
أ زّرب أس را نّ يلكم والّي راد لكمن
يغ يكّا لخير ولا شّرٍّ يزري كّيتون
أ تّيليفون ور ت يد يرور وغاراس
يغ يفولكي يان واخّا كّان زون د أيّور
أ كّيس ور ييلي لكيبر كـرفن أضارٍ نس
أ يامارك ور را ك فلخ ور را كُن برّاخ
أ تاسا د وُول ينو أد أك نفكا عمّرٍ ت
ور يّي نّ سيتون يكّي طّمع ن دّونيت
ولا لمال سّيعـر نتّان أ كّيتنخ.

****

-38-

ⵄⵜⵎⴰⵏ ⴰⵣⴷⴷⵓ

ⴰⵢⵜ ⵎⵓⵙⵉ - ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ

عثمان أزدو

من مواليد قرية ئغيل ن وُونا بفرقة أيت موسي قبيلة ئداوزدوت سنة 1979، التحق بالمدرسة وقضى فيها ما تيسّر له، ولمّا شبّ التحق بالخدمات التجارية بالدار البيضاء، كانت قريته معروفة بعشقها لفنون أحوش حيث استقبلت العديد من الفرق الفنّية، وفي هذا الجوّ تكونت لديه ملكة الإبداع الفني، واستهواه نظم الشعر، وقد تأثر بأكبر شعراء قبيلته من أمثال بوسلام كَـ ؤضار، وئحيا بوقدير، ولم يلبث أن بدأ في الإنشاد بفضاء أسايس في أواخر التسعينات، ساهم في تنظيم الملتقى الأول لشعراء أسايس، وهو الآن عضو في جمعية تماريرن.

ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ

ⵡⴰ ⵀⴰ ⵢⴰⵏⵖ ⴰ ⴱⴰⴱ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵢⴰ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ ⵏⵏⵓⵏ
ⴰ ⴽ ⵉⴷ ⵏⵥⵣⵡⵓⵔ ⵏⵔⴰ ⴰⴷ ⴰⵅ ⵜⵎⵍⵉⵎ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⵏ ⵍⵀⵏⴰ ⴷ ⵕⵕⵃⵎⵜ ⵓⵍⴰ ⵍⴰⵎⴰⵏ
ⵉⵏⵏⴰ ⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵓⴼⵕⴰⴹ ⴰ ⵢⵙ ⵏⵙⵙⵉⵏⵉⴼ ⴰⴹⴰⵕ
ⴰⵔ ⵏⴽⴽⵔⵣ ⵍⵅⵉⵔ ⵎⵅⵔⵅ ⵜ ⴰⵔ ⵜⵏ ⵏⵙⵔⵡⴰⵜ
ⵕⴱⴱⵉ ⵡⴰⵃⴷⵓⵜ ⴰ ⵉⵢⵉ ⴷ ⵉⵜⵜⴽⵎⵎⴰⵍⵏ ⵙ ⵍⵅⵉⵔ
ⵉⵖ ⵍⴽⵎⵏ ⴷⴰⵔ ⵓⵣⵔⵅ ⵏⵛⵛ ⵜⵉⵔⴰⵎ ⵏⵇⵇⵉⵏⵉ
ⵎⴷⴷⵏ ⵅⵍⴹⵏ ⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵅⵉⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⴰⵙ ⵓⴼⵉⵖ
ⵉⵍⵍⴰ ⵎⴰ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⵙⵉⵅⵅⵉⵍⵏ ⵍⵃⴰⵍⴰⵍ ⵉⵄⵉⵛ
ⵢⵉⵍⵉ ⵎⴰ ⴽⴰ ⵉⵜⵜⵕⴼⵓⵏ ⵜⵉⵍⵍⵉ ⵃⵕⵕⴰⵏⵉⵏ
ⵉⵖⴰⵍ ⵉⵣ ⴷ ⵉⵎⵕⵥⵉⵅ ⴰⵙ ⵔⴰ ⵉⴽⴽ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵏⴽⴽⵉ ⵖⴰⵢⴷⴰ ⵏⵥⵕⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⵏⵙⵙⵏⵜⴰⵍ
ⴰⵜⵉ ⵍⴰⵚⵍ ⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵅⴰⵏⵜ ⴰ ⵓⵔ ⵢⴰⵃⵍ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⴽⵉⵡⴰⵏ ⴷ ⴰⵢⵍⵍⵉ ⵙ ⴷ ⵉⵏⴽⵔ ⵔⴰ ⵜⵏ ⵙⴰⵍⴰⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⴼⵀⵎⵏ ⵉⵙⵙⵏ ⴷⴷⵓⵏⵢⴰ ⵉⵙ ⵜⵏⵜ ⵉⴼⴼⵓⵖ
ⵉⵛⵔⴽ ⵍⵀⵏⴰ ⴷ ⵎⴷⴷⵏ ⵅⵉⵏ ⵡⵉⵏ ⵍⵅⴰⵍⴰⵢⵢⵉⵇ
ⴰⵔ ⴰⵙ ⵉⵜⵜⴽⵎⵎⴰⵍ ⵕⴱⴱⵉ ⴽⵔⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵙⴰⵍⴰⵏ
ⵉⵖ ⵉⵅⴰ ⵍⵅⵉⵔ ⵉⵙⵎⴷ ⴰⵙ ⵡⴰⵢⵢⴰ(ⴹ) ⵙⵙⴰⴼⵓⵏ ⴰⵙ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⵖ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵓⵙⵙⴰⵏ ⵉⵅⵉⵢⵢⵔⵏ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⵉⵇⴰⵏ ⴷ ⵚⵚⴱⵕ ⵉⵅⵅⵓⵜⵏ ⴰ ⵢⵉⵍⵉ ⵖ ⵓⵍ ⵏⵙ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⵖ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵍⵅⵉⵔ ⵉⵃⴰⵡⵍⵏ
ⴰⵖ ⵍⵍⴰⵏ ⴷ ⵍⵡⴰⵍⵉⴷⴰⵢⵏ ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵜ ⵉⵔⴰⵏ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰⵏ ⵖ ⵜⵏⴹⴹⴰⵎⵜ ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵅⵉⵢⵢⵔⵏ
ⵢⴰⵙⵉ ⵍⵓⵟⵕⴰ ⴷ ⵍⵎⵉⵣⴰⵏ ⵖⵉⵏⵏⴰ ⵖ ⵉⵙⴰⵡⴰⵍ.

أغاراس

وا ها يانغ أ باب ن دّونيا غ وفوس نّون
أ ك يد نزّوُور نرا أد أخ تّمليم أغاراس
أغاراس ن لهنا د رّحمت ولا لامان
ينّا غ يلّا وفـرّاض أ يس نسّينيف أضارّ
أر نكّرز لخير مكّرخ ت أر تن نسروات
رّبّي واحدوت أ يّي د يتّكمّالن س لخير
يغ لكمن دار وزرڭ نشّ تيرام نقّينين
مدّن خلضن أ كولّو ڭين يان ور أس وفيغ
يلّا ما وكان يسيڭّيلن لحالال يعيش
يِيلي ما كا يتّرجون تيلّي حـرّانين
يغال يز د يمّرژيڭ أس را يڭ أغاراس
نكّي غايدا نژرّا ها نّ ور أ ت نسّنتال
أتي لاصل أ كُـولُّـو ڭانت أ ور ياحـل يان
أ كيوان د أيلّي س د ينكر را تن سالان
أ يان يفهمن يسّن دّونيا يس تنت يفّوغ
يشرك لهنا د مدّن ڭين وين لخالايّيق
أر أس يتّكمّال رّبّي كرا كولّو سالان
يغ يڭّا لخير يسمد أس وايّا سّافون أس
وانّا يران غ تودرت وسّان يخييّرن
ها نّ يقان د صّبرّ يڭّوتن أ ييلي غ ول نس
وانّا يران غ تودرت لخير يحاولن
أغ لّان د لواليداين أ وانّا ت يران
وانّا يران غ تنضّامت أوال يخييرن
ياسي لوطرّا د لميزان غينّا غ يساوال.

****

-39-

ⵄⵍⵉ ⵍⵃⴰⵎⵛⵉ
ⴰⴳⵯⵍⵍⵉⵣ

علي الحامش

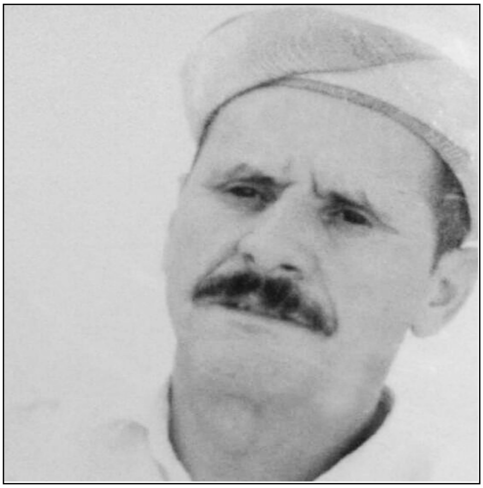

ولد في أكَـلّيز في سنة 1954، والتحق بالمدرسة لكنه لم يكمل مشواره، ومنذ بلوغه ال14 من عمره بدأ يلامس فضاء أسايس مع شعراء قريته من أمثال حب الدّين محمد وقد أخذ حروفه الأولى عن أكبر شعراء قريته، وفي الثمانينات التحق بفرقة المعمورة بمدينة الرباط وتراءسها فأضاف لهذه الفرقة عنفوانا حيث كان أحد أبرز المؤسسين لفن أهناقار بالمدن المغربية، وفي نفس الوقت أبدع في الشعر وسار على منوال شعراء قريته في الجرأة والحماس الشعري، هو الآن عضر المجلس الإداري للرابطة الوطنية.

ⴰⵃⵔⴰⵏ

ⴰⵏⵏⵉⵢⴰⵜ ⵜⵕⵥⵎⵜ ⵍⵃⴰⵚⵍ ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵜ ⵉⵍⴰⵏ
ⵀⴰ ⵢⴰⴳ ⵏⴽⵛⵎ ⴷ ⵓⴳⵓⴷⵉ ⴰⵃⵓⵙ ⴰⵔ ⵉⵃⵃⵔⵏ
ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵉⵏ ⵎⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⴳⵉⵙⵏ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⴰ ⵜ ⴰⵙⵉⵏ
ⵉⴳ (ⵏ)ⵉⵜ ⴰⵥⵕⵓ ⵏⵉⵖ ⵉⴳⴰ ⵉⴽⵉⴽⵔ ⵏⵉⵖ ⴰⵍⵉⵎ
ⵉⵖ ⵉⴳⴰ ⴰⵇⴱⵓⴱ ⵏ ⵜⵎⵥⵉⵏ ⴰⵔ ⵜⵏ ⵉⵙⵙⵉⵏⵉⵃ
ⴰⴷ ⵍⴽⵎⵏ ⴷⴰⵔ ⵉⵣⵔⴳⴰⵏ ⴰ ⵉⵏⵖⴷ ⴰ ⵢⴰⵃⵓⵃ
ⴰ ⵉⵅⵊⵏ ⵉⵏⵓ ⴷ ⵖ ⵜⵓⵥⵥⵓⵎⵜ ⵏⴽ ⴰ ⵢⴰⵃⵔⵔⴰⵏ
ⴰ ⵜⵏ ⴷ ⵉⵎⴹⵉ ⵉⵍⵙ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵢⵉⵏⵉ ⵎⴰ ⵏⵏ ⵓⵃⴰⵏ
ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵍ ⴷⴰ ⵙ ⵜⵙⵉⴳⴳⵉⵍⵜ ⵔⴰ ⴽ ⵉⵏⵏ ⵍⴽⵎⵏ
ⵜⴰⵡⴰⴷⴰ ⵏ ⴱⴰⴱ ⵏⵣⵣⵔⴱ ⴰⵔ ⵏⵉⵜ ⵙⵙⵕⵎⵓⵢⵏⵜ
ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵜⵔⵉ ⴰⵣⴰⵍ ⵓⵔ ⵜⵔⵉ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⴰⵏⵚⵚⵉⴷ ⵖⴰⵢⵍⵍⵉ ⴳⵉⵙⵏ ⴰⵙ ⵏⵜⵜⵏⵄⵉⵕⵕⵉⵃ
ⵍⵎⴰⵍ ⵓⵔ ⵙⵔⵙⵏ ⵜⵓⴳⵯⵔⵜ ⴰ ⵎⴰ ⵎⵉ ⵄⴰⵇⴰⵏ
ⵉⵖ ⴰⴽ ⵉⵃⴽⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵉⴳⵃ ⵏⵏⴰ ⵜⵉⵃⴰⵡⵉⵏ
ⴰⴷ ⴰⵡⵏ ⵥⵡⵓⵔⵏⵜ ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⵔⴰ ⵜⵍⴽⵎⵜ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵏⵏ ⵓⵣⵎⵣ ⴰⴷ ⵉⵣⵔⵉⵏ ⵍⵍⵉⵖ ⵏⵍⵓⵍ
ⴰ ⴽⴰⴷⴰ ⵏ ⵢⴰⵏ ⴰⵃⵓⴷ ⵏⵙ ⴰⵙ ⵉⵛⵛⴰ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ
ⴰⵣⵎⵣ ⴰⴷ ⵖ ⵏⵅⵉⵛ ⵉⴱⵕⵕⵎ ⴰⵙⵏ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵄⵄⵓⵕ
ⵡⴰⵍⵓ ⵎⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⵙⵙⵓⴳⵯⵔ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⴽ ⵉⵇⴰⵛⴰⵏ
ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⵉⵟⵟⴰⵃ ⵍⴱⴰⴱ ⵏⵙ ⵢⴰⵙⵉ ⵜⴰⵙⴰⵔⵓⵜ
ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵎⴰ ⵔⴰ ⵜⵏ ⴷ ⵉⵙⵙⵓⴽⵯⵃ ⵍⵓⵇⵏ ⵜ ⵉⵏⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵢⴰⵖ ⵉⴳⴰⴱⵍⵏ ⴰⵔ ⴰⴼ ⵉⵜⵜⴰⵏⵏⴰⵢ
ⵉⵖ ⴰⵙⵏ ⵏⵙⴽⵔ ⵍⵇⵙⴰⴱ ⵏⵙ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵙⴰⵔ ⴰⵇⵍⴼ
ⴰ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵉⵍⴰⵏ ⴰⵃⵓⴷ ⵉⵄⵇⴰⵏ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵉⵇⵉⵍ
ⴰⵙⵏⵏⴰⵏ ⵏ ⵓⴽⵕⵥⴰⵥ ⵉⵙⴽⵓⵛⵎ ⵎⵉⵛⵜ ⵏ ⵢⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⴼ ⵓⵔ ⵉⵅⴷⵎ ⵕⴱⴱⵉ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⴰ ⵜⵜⴰⴽⵯⵍⴼ
ⴰⴷ ⵉⵢⵉ ⴳⵏ ⵜⵉⵥⵕⴱⴰⵢ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵏⵓⵡⵕⵏⵉⵏ.

أفـران

أنّبيَات ترِژمت لعاقل أ وانّا ت يلان
ها ياخ نكشم د وڭودي أفوس أر يقّرن
ور نسّين ما كولّو ڭيسن يلّان أ ت أسين
يڭ يت أژرِو نيغ يڭا يكيكر نيغ أليم
يغ يڭا أحبوب ن تمژين أر تن يسّينيف
أد لكمن دار يزرڭان أ ينغد أ يافوف
أ يعجن ينو د غ توژّومت نك أ يافرّان
أ تن د يمضي يلس أ ڭيس ييني ما نّ وفان
أ ياوال دا س تسيڭّيلت را ك ينّ لكمن
تاوادا ن باب نزّرب أر نيت سّرِموينت
دّونيت أد ور تري أزال ور تري تيلّاس
أنقّيد غايلّي ڭيسن أس نتّنصيرّيف
لمال ور سرسن توكُّرت أ ما مي صاحان
يغ أك يفكا رِبّي غ يخف نّا تيفاوين
أد أون زوورنت ور جّون را تلكمت تيلّاس
يكّا تّ ينّ وزمز أد يزرين لّيغ نلول
أ كادا ن يان أفود نس أس يشّا ويياض
أزمز أد غ نعيش يبرّم أسن كولّو صّورِ
والو ما سول يسّوكُّر والّي ك يحاشان
كو يان يطّاف لباب نس ياسي تاساروت
ور يلّي ما را تن د يسّوكُف لوحن ت ينّ
أ والّي ياغ يڭابلن أر أخ يتّانّاي
يغ أسن نسكر لحساب نس ور را سار أحلخ
أ والّي يلان أفود يصحان أر يسّيحيل
أسنّان ن وكرِژاژ يسكوشم ميشت ن يان
أد أخ ور يعدم رِبّي غيلّي غ أ تّاكُلخ
أد ييي ڭن تيژرِباي كولّو نوورِنين.

****

-40-
ⵍⵃⵙⵏ ⵍⵀⵔⵔⴰⵙ
ⴰⵢⵜ ⵄⵍⵉ
لحسن الهراس

ولد بدوار أيت فاسك قبيلة أيت علي سنة 1980، والتحق بالمدرسة ولكنه لم يلبث أن انصرف إلى المجال المهني، أدرك عددا من عشاق فنّ أهناقار بقبيلته من أمثال الحاج إبراهيم لشكر والحاج بوبكر أخياط والحاج ئدّر وغيرهم وأخذ عنهم المشعل، وقد شرع في ارتياد أسايس منذ ال 19 من عمره، وتجوّل في معظم قبائل الأطلس الصغير، كما ألف مع شباب منطقته فرقة لفن أهناقار، ساهم في الملتقيين لشعراء أسايس بإغرم، وهو عضو في مجلس الرابطة لشعراء أسايس.

ⵎⴰⴷ ⴰⵢ ⴷ ⵉⵥⴰⵍ

ⴰ ⵙⵙⵏⵖ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵉⵙ ⴳⵉⵎ ⵓⵔ ⴷⴰⵡⵎⵢ
ⵎⵥⴰⵔ ⴳⵉⵎ ⴽⴽⵉⵖ ⵓⵔ ⴷ ⵉⵎⵉⴽⴽ ⵏ ⵓⵙⵙⴰⵏ
ⵎⵥⴰⵔ ⴳⵉⵎ ⵣⵕⵉⵢ ⵛⵢⵉⵔ ⵓⵔ ⴷ ⵉⵎⵉⴽⴽ
ⵖⵉⵛⵛⵉ ⵉⴷⴰⵡⵎⵏ ⵉⴳⴰ ⵜⵏ ⵉⵢ ⵏⴳⴳⵯⵣ ⴰⴽⴰⵛ
ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵙⵙⵓⵥ ⵉⵢ ⴳⵉⵙ ⵉⵣⵔⵉ ⵀⴰⵏ
ⵉⵎⵎⴰⵖ ⴰ ⴳⵉⵙ ⴰⵡⵉⵏ ⵜⵉⴷⴰ ⴼⴷⵛⵍⵉⵏ
ⴰ ⵀⴰⵙⵙ ⵏ ⵛⵃⵙⴰⴱ ⵓⵔ ⵔⴰ ⴽ ⵉⵃⴹⵉ ⵀⴰⵜ
ⵖⵉⵍ ⵓⵔ ⴳⵉⵙ ⴳⵯⵎⴰⴽ ⵓⵔ ⴳⵉⵙ ⴰⴷⵊⴰⵕ ⵏⴽ
ⵓⵛⴰ ⵛⵎⴰⵛ ⵍⵓⵏ ⵛⴰⵚⴼⴰⵛ ⴰ ⵉⵢ ⵛⵃⴰⵛ
ⵉⵍⴰ ⵍ ⵙⵔⵙⵏ ⵜⵉⵡⵉⵜ ⵔⴰⴷ ⴰⴽ ⴱⴰⵀⵍⵍ
ⴰⵚⵓⵛⴽⵉ ⵡⴰⵛⴰ ⴳⴰⵔ ⵔⴰⴷ ⴰⴽ ⴷ ⵉⵜⵜⵔⵙ
ⴰ ⵀⴰⵚⴳⴰⵏ ⵟⵟⵎⴼ ⵉⴱⴹⴰ ⴽⵯⵏ ⴷ ⵛⵉⵎⴰⵏ
ⵉⵛⵛⴰ ⴽⵔⴰ ⵉⵟⵟⴰⵚ ⵛⴰⵎⵡⴰⵛ ⵓⵔ ⴷ ⵉⵎⵉⴽⴽ
ⵉⴼⵉⵄ ⵖ ⵛⵃⴰⵕⴰⵎ ⵓⵔ ⵜ ⵉⵙⵙⵉⵡⴷ ⵛⵃⴰⵛ
ⵉⵜⵜⵓ ⵛⵎⵓⵜ ⵜⵜⵓⵏ ⵉⵙ ⵔⴰⴷ ⵉⴳⴳⵯⵣ ⴰⴽⴰⵛ.

ماد أخ د يقانّ

أ سّنغ أ دّونيت يس كّيم ور داومخ
مقار كّيم كّيغ ور د يميكّ ن وسّان
مقار كّيم ژرِيخ لخيرِ ور د يميكّ
غيلّي يداومن يكّا تن يخ نكُّز أكال
دّونيت زو د سّوق يخ كّيس يزري يان
يمّاغ أ كّيس أوين تيدا عدلنين
أ ياسّ ن لحساب ور را ك يحضي يات
غينّ ور كّيس كُماك ور كّيس أدجارِ نك
ولا لمال نّون لافعال أ يكّ لحال
ينّا نّ سرسن تيويت راد أك باينّ
أفولكي والا كّار راد أك د يترّس
أ يافكّان طّمع يبضا كُن د ليمان
يلّا كرا يطّاف لاموال ور د يميكّ
يعيش غ لحارِام ور ت يسّيود لحال
يتّو لموت نّون يس راد يكُّز أكال.

-41-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴱⵏ ⴱⵄⵉⴷ

ⵜⴰⵏⴽⵔⵜ - ⵉⴼⵔⴰⵏ

محمد بنسعيد

ولد في سنة تانكرت بقبيلة ئفران سنة 1975، والتحق بالمدرسة، ثم انصرف إلى المجال المهني، وقد وجد قبيلته تمارس عددا من التقاليد الفنية انشغل بها هو وزملاؤه من الشباب، وأخذ مشعل النظم عن عدد من شعراء منطقته من أمثال عبد الله ؤبيحم ومحمد أوحي وآخرين، كما تأثر بشعراء مخضرمين بالمنطقة كالمحفوظ زنيور والحسين أكَـيلال، وفي المدينة تواصل مع الفرق الفنية وخصوصا فرقة المعمورة التي تجوّل معها في مختلف المدن المغربية، وأتيحت له الفرصة لمساجلة مختلف الشعراء الذين عمروا أسايس.

ⵔⵔⵉⴱⴰ

ⴰ ⵎⴰⵜⵜⴰ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⴰⴷ ⵉⴳⴰⵏ ⵡⵉⵏ ⵜⵎⵔⵡⴰⵙⵉⵏ
ⴰ ⵎⵉⵜ ⵏ ⴻⵔⴳⴰⵣ ⵉⵣⵣⵏⵣ ⵉⴳⵃ ⵏⵙ ⴻⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵙⵙⵉⵏ
ⵉⵢⵢⴰ ⵃ ⴻⴳⵯⵄⵉ ⵏ ⵔⵔⵉⴱⴰ ⴻⵔ ⵉⵙⴻⵢ ⴻⵔ ⵉⵎⵎⴻⵜ
ⵢⵅⴰⴹⵇ ⴽⴰ ⵙ ⴰ ⵙⵉⴳⴳⵉⵢⵏ ⴻⵔ ⵜ ⵙⴰⵔ ⴻⵃⵉⵏ
ⴰⵙⵙ ⵍⴰ ⵖ ⴳⵉⵙ ⵉⴱⵉⴷⴷ ⴰⵔ ⵏⵉⵜ ⵉⵜⵜⵔⵃⴻⵃⴻⵏ
ⴰ ⵟⴰ ⵍ ⵎⵙⴽⵉⵏ ⵙⵙⵉⵣⵉ ⴻⴽⴰⵏ ⴰ ⵙⵔⵙ ⵉⵀⵀⵢⵏ
ⵖⵉⴽⴰⴷ ⵉⵛⵡⴰ ⵖ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵉⵖ ⴰ ⵉⵜⵜⴰⵡⵉ ⵛⵛⴻⵇ
ⴰ ⵜⴰⵍⵍⴰ ⵢⴽⵎⵏ ⵙ ⵢⵉⵊⴰⵇⵜ ⵏⵙ ⵉⵡⴰⵢⴰ ⵜⵏⵜ
ⴰ ⵜⴰⵍⵍⴰ ⴻⵔ ⵢⴽⵎⵏ ⴰⵊⵊⵉⵏ ⵜⵏⵜ ⵉⵚⵎⵕ ⴰⵙⵏⵜ
ⵇⴱⴱⵉ ⴳⴰⵏ ⵢⵕⴻⴷⴻⴷ ⵉ ⵢⴳⵢⵀ ⵉⵏⵉ ⵜⵏ ⵔⴰⵏ
ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵔⴰ ⵍ ⴳⵉⵙ ⵉⵛⴰⵄ ⴰ ⴼⵙ ⴰⴽⴽⵯ ⴻⵔ ⵏⴻⵍⵍⴰ ⴼⴰⵜ
ⵢⵅⴰⴹⵇ ⴷ ⵡⴰⵡⴰⵢ ⵉⴷⴻⵙⵏ ⵉⵅ ⵜⵏ ⵉⵔⴰ ⴼⴰⵏ
ⴽⴻⵢⵢⴻ ⵎⴰ ⴼⵙ ⵉⵕⵇⵎ ⵇⴱⴱⵉ ⴰ ⵜⵏ ⵉⵍ ⴰⴽⴽⵯ ⴻⵔ ⵢⴽⵎⵏ
ⴽⴻⵢⵢⴻ ⵎⴰ ⵍ ⵜⴻⵃⵉⵜ ⵉⵖⵉⴼⴼⵔ ⵉⵙ ⵉⵛⵛⴰ ⴰⴽⴻⵇⴰⴼ
ⴰ ⵟⴰ ⵍ ⵏⴳⵔⴰⵙⵏ ⴷ ⵇⴱⴱⵉ ⴻⴽⴰⵏ ⴰⵖ ⴰ ⵍ ⵉⵃⵃⴰⵢ
ⴰ ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵉⴽⵔⵣⵏ ⵜⴻⵥⵥⴻⵎⵜ ⵍⴻⵏ ⴰ ⴼⴰⵙⵉⵃ
ⴰⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⴻⵔ ⵉⵜⵜⵇⵊⴻ ⴰ ⴳⵉⵙ ⴼⴰⵙⵉ ⵜⴰⴼⴰⵃⴻⵜ.

رّيبا

أ ماتّا زّمان أد يڭان وين ثمرواسين
أ ميت ن ورڭاز يزّنز يخف نس ور أكّ يسّين
يلّا ف وڭضي ن رّيبا ور يسول ور يموت
لخاطرِ كا س أ سيڭيلن ور ت سار وفين
أسّ نّا غ ڭيس يبيدّ أر نيت يتّرفوفون
أ ها نّ مسكين سّيزي وكان أ سرس يقّلن
غيكاد يشوا غ بنادم يغ أ يتّاوي شّورِ
أ تانّا لكمن س ليجارِت نس يوالا تنت
أ تانّا ور لكمن أجّين تنت يصمح أسنت
رِبّي ڭان لحودود ئـ لخلق يني تن ران
وانّا را نّ ڭيس يشاض أ يس أكّ ور نّنّا يات
لخاطرِ د واوال يدوسن يخ تن يرا يان
كولّو ما يس يحرِم رِبّي أ تن ينّ أكّ ور لكمن
كولّو ما نّ توفيت يغيير يس يشّا أكورِاي
أ ها نّ نڭراسن د رِبّي وكان أغ أ نّ يقّال
أ وانّا يكرزن توزّومت نّون أ ياسيف
أد أكّ ور يترِجو أ ڭيس ياسي تايافوت.

******

-42-

ⵍⵃⵙⵏ ⵏ ⵉⵎⵖⴰⵔⵏ

ⵜⴰⴽⵎⵓⵜ ⵏ ⵢⴰⵃⵢⵓⵙ

لحسن ن إمغارن

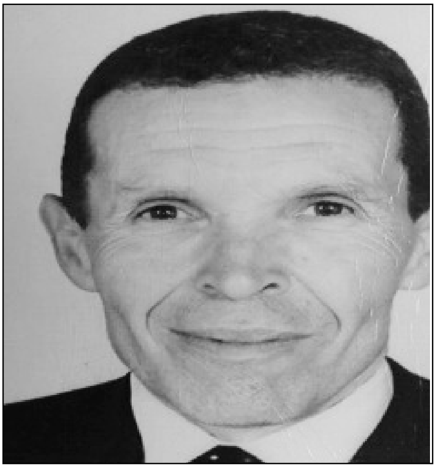

ولد في قرية أزمز قبيلة تاكموت سنة 1956،وهو من بين القلائل الذين استهوتهم كتابة الشعر، وأغرتهم القصيدة الطويلة، وهو من جيل الشعراء الشباب في بلدة تاكموت الذين أدركوا شعراء كبار من أمثال موح ؤمبارك وبوكريم ؤحمّو وسيدي بورح وبولاه ؤعلي، فأخذوا عنهم صناعة الشعر، ولم يلبثوا أن شاركوهم هموم أسايس، وقد أثبت الشاعر بعد دخوله إلى فضاء أسايس في بداية الثمانينات، أنه ملمّ بقضايا مجتمعه متأثرا بكل صغيرة وكبيرة يحس بها هذا المجتمع، ومن ناحية الصياغة الفنية يأبى الشاعر إلا أن ينسج على منوال جميع الأوزان المألوفة في فنون أهناقار التي برعت فيها قبيلته، ومن أهمّ ما تميّز به الشاعر في ميادين الإنشاد جرأته واستخفافه بأي شاعر يريد أن يبرز جبهته فهو لا يتورع عن إسكات الأصوات المتعالية في أسايس، وهو الآن عضو في الرابطة الوطنية.

ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ

ⴼⵕⵃⴰⵜ ⴰ ⵢⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵉⵕⴹⴰ ⵡⵓⵍ
ⴰⵣⵎⵣ ⵙ ⴰ ⵜⵜⴰⵡⵉⵜ ⵕⵕⵊⴰ ⴷ ⵉⵙ ⴷ ⵍⴽⵎⵏ
ⵀⴰ ⴷⴷⵓⵙⵜⵓⵔ ⴼⴽⴰⵏ ⴰⵅ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ
ⴰ ⵏⴰⵇⵇⵔⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⵏⵅ ⵏⵙⵙⵖⵔ ⵜⵏⵜ
ⵉⵔⵓⵔ ⴷ ⵕⴱⴱⵉ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ ⵏⴼⴼⴰⵖ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⵕⴱⴱⵉ ⴰ ⵢⴰⴳⵍⵍⵉⴷ ⴰ ⵢⴽ ⵉⵥⴰⵢⴷ ⵓⵙⵙⴰⵏ
ⴰ ⵉⵢⵉ ⴽⵯⵏ ⵉⵃⴼⴹ ⵕⴱⴱⵉ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⵡⵊⴰ ⵏⵏⵓⵏ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⴰⵊⵎⵉⵍ ⵉⴳⴰ ⵡⵉⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⴷ ⵡⵉⵏⵏⵓⵏ
ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵙⵙⵏ ⵉⵙ ⴳⵉⵡⵏ ⵍⵀⵎⵎ ⵏⵙ
ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵓⵔ ⵉⵔⵉⵏ ⵍⵎⴰⵖⵔⵉⴱ ⴰⴷ ⵀⵏⵏⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⵏⵅ ⵉⴳ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵍⵀⵏⴰ ⴷ ⵄⵍⴰⵅⵉⵔ
ⴰⵜⵉ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵉⵔⴰ ⴳⵉⵏⵅ ⴰⴼⵓⵙ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ
ⴰ ⵏⵉⵜ ⵏⴱⵏⵓ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⵏⵅ ⵏⵅⴷⵎ ⵜⵏⵜ
ⵓⵍⴰ ⴰⵄⵕⴰⴱ ⵏⴽⴽⵉ ⴷⵉⵙ ⵓⵔ ⵏⴱⴹⵉ ⵢⴰⵜ
ⵀⴰ ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ ⵏⵅ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵏⴰⵔⴰ ⵜⵖⵔⵜ ⵜⵏⵜ
ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵉⵡⴰⵍⴰⵏ ⵍⵎⴰⵄⵀⴰⴷ ⵉⵥⵍⵉ ⵙⵔⴽ
ⵢⴰⴽⴰⵜ ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵙⴰⵇⵙⴰⵏ ⴰⵔ ⵊⵍⵍⵓⵏ
ⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵎⴰⵏⵉ ⴽⴰ ⵉⵡⴰⵍⴰ ⵉⴷⵉⵙ ⵏⵅ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⴰ ⴳⵯⵎⴰ ⵜⵙⵎⵓⵏ ⴰⵅ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵖⵉⵎⵉⵜ
ⴰⴷ ⴰⵏⵅ ⵓⵔ ⵜⴱⵔⵔⴰⵜ ⵓⵍⴰ ⵏⴱⵔⵔⴰ ⴽ
ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵢⴰⵏ ⵎⵏⵏⴰⵡ ⴽⴰ (ⴰ)ⵖ ⴰ ⵜⵜⵀⵍⵍⵓⵎ
ⴰ ⴷⴷⵓⵙⵜⵓⵔ ⵓⵔ ⴰⵅ ⴰⴽⴽⵯ ⵢⵓⵚⵚⵉ ⴼ ⵖⵉⴽⴰⵏⵏ
ⴰⵔⵔⴰⵡ ⵏ ⵓⵎⴰⵣⵉⵖ ⵉⵙ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵉⴳⴰ ⵢⴰⵏ
ⴷⴷⵉⵏ ⵏⵅ ⴷ ⵓⴳⵍⵍⵉⴷ ⵏⵅ ⴷ ⵕⴱⴱⵉ ⵉⴳⴰ ⵢⴰⵏ.

أمازيغ

فـرٍحات أ يامازيغ ها نّ يرٍضا وُول
أزمز س أ تّاويت رٍّجا د يس د لكمن
ها دّوستور فكان أخ كولّو يزرفان
أ ناقّرا تامازيغت نخ نسّغر تنت
يرور د رٍبّي تيفاوت نڤّاغ تيلّاس
رٍبّي أ ياڭلّيد أ يك يزايد وسّان
أ يّي كُن يحفض رٍبّي ولا تاوجا نّون
ها نّ أجميل يڭا وين رٍبّي د وينّون
أمازيغ سّنّ يس ڭيون لهمّ نس
ويلّي ور يرين لماغريب أد هنّان
أد أنخ يڤ رٍبّي غ لهنا د علاخير
أتي زّمان يرا ڭينخ أفوس غ وفوس
أ نيت نبنو تامازيرت نخ نخدم تنت
ولا أعرٍاب نكّي ديس ور نبضي يات
ها تابرات نخ أ تنت نارا تغرت تنت
والّي يوالان لماعهاد يژلي سرك
ياكات يان ور يساقسان أر جلّون
أ رٍبّي ماني كا يوالا يديس نخ
ها نّ أ ڭُما تسمون أخ كولّو تغيميت
أد أنخ ور تبرّات ولا نبرّا ك
والايني يان منّاو كا غ أ تّهلّوم
أ دّوستور ور أخ أڭّ يوصّي ف غيكانّ
أرّاو ن ومازيغ يس كولّو يڭا يان
دّين نخ د وڭلّيد نخ د رٍبّي يڭا يان.

******

-43-

ⵄⵓⵎⴰⵕ ⵓⵎⴰⵏⵏⵉ

ⵜⵉⵔⴳⴳⴰⵏ - ⵜⴰⵟⴰ

عمر أوماني

ولد سنة 1957 في قرية تيرگان بقبيلة طاطا، التحق بالمدرسة لمنه لم يكمل مشواره الدراسي، فالتحق بالخدمات التجارية، وقد ادرك عباقرة الشعر في طاطا أمثال ئدر وعلال ورمضان أوعلا ومبارك ؤمسعود، فأخذ عنهم حروفه الأولى في النظم، وفي بداية التسعينات اقتحم فضاء أسايس وبدأ في مساجلة شعراء البلدة، وقد تجوّل في معظم مناطق الأطلس الصغير، وساهم في التأسيس للعمل الجمعوي في قريته، كما أسس مؤخرا جمعية «تيزار ن ؤمارك» بمعية الشاعر محمد المحمدي.

ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ

ⵜⴰⵎⵙⵎⵓⵏⵜ ⵜⵉⵏ ⵜⵡⵉⵣⵉ ⵏ ⵡⴰⵔⵔⴰⵡ ⴰⴽⵏⵙⵓⵙ
ⵜⵉⵡⵉⵜ ⵕⵕⵊⵍⵜ ⵏ ⵎⴰⴷ ⴰ ⵉⵛⵍⵃⵉⵢⵏ ⵜⵓⵔⵓⵎ
ⵉⵖⵔⵎ ⴰ ⴽⵯⵏ ⵉⴳ ⵕⴱⴱⵉ ⴷ ⵍⵅⵢⴰⵔ ⵏ ⵜⴰⵎⴰⵔⵉⵏ
ⴽⵢⵢⵉ ⴰⴷ ⴷ ⵉⵙⵎⵓⵏⵏ ⵜⴰⴷⴷⴰⵔⵜ ⴰ ⵜⵉⵍⵉ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵏⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵣⵎⵣ ⵉⵔⵡⴰⵙ ⵉⵢⵉ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⵏⴳⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⴱⵓⴽⴰⴹ ⵉⵊⵍⴰ ⵢⴰⵅ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵖⵉⵍⴰⴷ ⵏⵙⵙⴼⴰⵡ (ⴰ)ⵎⵏⴰⴷ ⵏⵅ ⵏⵙⵙⵏ ⵎⴰⵏⵉ ⵔⵉⵅ
ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵏ ⵓⵎⴰⵣⵉⵖ ⵉⵙ ⵔⵉⵖ ⴰ ⴽⵯⵏ ⵅⴰⵚⵎⵖ
ⵙ ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵏⵅ ⵓⵍⴰ ⵜⵉⴷⴷⵉ ⵏⵅ ⵓⵍⴰ ⴰⵡⴰⵍ ⵏⵅ
ⵓⵍⴰ ⵖ ⵓⵙⵙⴼⴰⵏ ⵏ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵇⵇⴰⵎⴰⵏⵉⵏ
ⵢⴰⵏ ⴰ ⵏⴳⴰ ⵙ ⵓⴳⵓⴷⵉ ⵏⵛⵔⴽ ⵍⵎⵉⵔⴰⵜ
ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⵡⵉⵏ ⴽⴽⵯⵓⵥ ⵎⴷⴷⵏ ⵍⵍⵉ ⵜ ⴰⵟⵟⴰⵏⵉⵏ
ⴰ ⴽⵯⵏⵜ ⴷ ⵏⵙⵙⴼⵔⵙ ⴰ ⵜⵓⵣⵣⴰⵍⵜ ⵉⵏⵓ ⵍⵍⵉ ⵙ ⵏⵇⵇⵔⵙ
ⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⴱⴱⵉⵖ ⵉⴹⵓⴹⴰⵏ ⵍⵍⵉ ⵜⵜⴰⴽⵯⵔⵏⵉⵏ.

تيفاوت

تامسمونت تين تويزي ن وارّاو أكنسوس
تيويت رّجلت ن ماد أ يشلحيين توروم
يغرم أ كُن يڭ رّبّي د لخيار ن تامارين
كيي أد د يسمونّ تادّارت أ تيلي تامّنت
يكّا تّ ينّ يان وزمز يرواس ييي تيلّاس
نڭا زون د أبوكاض يجلا ياخ وغاراس
غيلاد نسّفاو مناد نخ نسّن ماني ريخ
يزرفان ن ومازيغ يس ريغ أ كُن خاصمغ
س لعاقل نخ ولا تيدّي نخ ولا أوال نخ
ولا غ وسّفان ن تودرت ويلّي قّامانين
يان أ نڭا س وڭودي نشرك لميرات
ور يڭي وين كُّوژ مدّن لّي ت أطّانين
أ كُنت د نسّفرس أ توزّالت ينو لّي س نقّرس
أ كولّو بّيغ يضوضان لّي تّاكُرنين.

******

-44-
ⵃⴰⵎⵉⴷ ⵜⵏ ⵜⵃⴰⵡⵉⵍ
ⵉⴷⴰ ⵓⵅⴰⵣⴷ

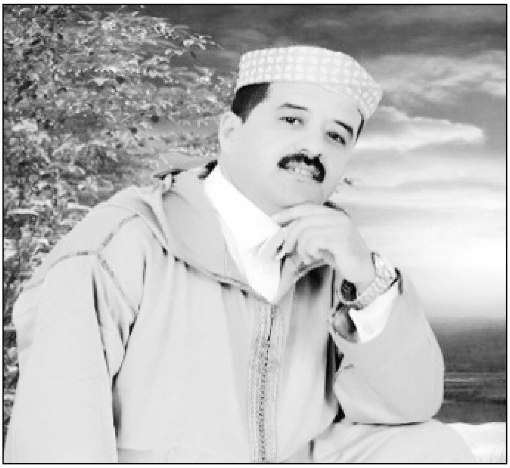

ولد الشاعر لمين رشيد بدوار أوكليض قبيلة ئكّنان سنة 1980، ولمّا انفصل عن المدرسة التحق بالمدينة من أجل العمل، وجد في منطقته ضالّته في فنون أحواش، وتتلمذ على جملة من الشعراء الذين ألفوا التنقل في المنطقة، من أمثال أكّرام منحد أزكري وعبد الكبير شوهاد والحاج علي ؤبيضني، وكان للغربة لديه أثرها في خلق شغف بالنظم، وابتداء من العشرية السابقة بدأ في الانشاد الشعري مع أحواش ن تعيالين، ثم مع الفرق التي أسسها شباب المنطقة، انخرط في الرابطة الوطنية لشعراء أسايس.

ⵜⴰⵢⵔⵣⴰ

ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵓⵔ ⵊⵊⵓ(ⵏ) ⴳⵉⵙⵏⵜ ⵉⵍⵍⵉ ⵍⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⵢⵓⴼ ⴰ ⴽⴰ ⵏⴽⴽⵔⵣ ⵍⵅⵉⵔ ⵉⵖ ⴰⵙ ⵓⴼⵉⵅ
ⵏⵜⵜⴰ(ⵏ) ⴱⴰⵄⴷⴰ ⵔⴰ ⵜ ⵎⴳⵔⵖ ⴰⵙⵙ ⵏⵏⴰ ⵜⵏ ⵔⵉⵅ
ⵉⵎⵎⴰ ⵣⴰ ⵍⵄⴰⵕ ⴷ ⴱⴰⴱ (ⵏ) ⵍⵄⴰⵕ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵎⵔⵔⴰⵜ
ⵢⵓⵜⵉ ⴱⴷⴷⴰ ⵎⴰ ⵖ ⵉⵖⵉⵢⵢⵔ ⵎⴰ ⵖ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⴼⵕⵃ
ⵉ ⵕⴱⴱⵉⵢⴰⵜ ⴰ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⴷ ⵏⵜⵜⵎⵓⵏ ⵏⵛⵔⴽ ⴰⵡⴰⵍ
ⴰ ⵜⵉⵍⵉ ⵍⵃⴰⵏⴰⵏⴰ ⴳⵉⵏⵖ ⴰ ⵢⵉⵍⵉ ⵜⵜⵉⴼⴰⵇ
ⴰ ⴽⴰ ⵓⵔ ⵏⵜⵜⵍⵓⵃ ⴰⵎⵓⴷ ⴰⵔ ⵜ ⵉⵛⵜⵜⴰ ⵡⴰⴽⴰⵍ
ⴳⴰⵜ ⵏⵏ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵓⴳⴳⵯⴰⵙ ⴰ ⵏⵜⵜⵎⵄⵉⵡⵉⵏ
ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵖ ⵜ ⵉⵏⵏⴰ ⴱⴰⴱ ⵏⵙ ⵡⴰⵢⵢⴰ(ⴻ) ⵔⴰ ⵜ ⴰⵔⴰⵏ
ⴰⵙⵙ ⵏⵏⴰ ⵖ ⵉⵎⵎⵓⵜ ⵓⵀⵓ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵎⵎⵓⵜ
ⴰⴷ ⴷ ⵉⴼⴼⴰⵍ ⵎⴰ ⵙ ⴰ ⵜ ⴰⴷⴷⵔⵏ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵇⵇⴰⵎⴰⵏⵉⵏ
ⴰⴷ ⵓⵔ ⵉⴽⵔⵣ ⵍⵄⵉⴱ ⵓⵍ ⴰⵔ ⵜⵏ ⵉⵙⴰⵡⴰⵍ.

تايرزا

أ دّونيت ور جّو ڭيسنت يلّي لامان
أ يوف أ كا نكّرز لخير يغ أس وفيخ
نتّا باعدا را ت مڭرغ أسّ نّا تن ريخ
يمّا زا لعارِ د باب لعارِ أر يتّمرّات
يوتي بدّا ما غ يغيير ما غ وكان يفرِح
ي رِبّييات أ ويلّي د نتّمون نشرك أوال
أ تيلي لحانانا ڭينغ أ ييلي تّيفاق
أ كا ور نتّلوح أمود أر ت يشتّا واكال
ڭات نّ كولّو توڭّٗاس أ نتّمعيوين
أوال يغ ت ينّا باب نس وايا را ت أران
أسّ نّا غ يمّوت وهو ها نّ ور أكُّ يمّوت
أد د يفّال ما س أ ت أدّرن ويلّي قّامانين
أد ور يكرز لعيب ول أر تن يساوال.

****

-45-

ⵎⵃⵏⴷ ⴰⵊⵎⵎⴰⵄ ⵎⵣⵣⵉⵢⵏ
ⵉⵏⴷⴰⵡⵣⴰⵍ

محند أجماع مزين

ولد الشاعر في دوار تاوريرت ن ئزناگن بقبيلة ئنداوزال سنة 1964، والتحق بالمسجد لكنه لم يدم طويلا فانتقل إلى ميدان العمل في باكورة شبابه، وقد وجد فنّ أحواش بمنطقته مزدهرا، كما أدرك ثلة من الشعراء الكبار من أمثال بيحزماي وأوشّن وكوكو وعثمان ؤبلعيد وغيرهم ممن تركوا بصمتهم على الإبداع الشعري الحواري بسوس، ولما كان عاملا بمنطقة أمّلن سنة 1987، بدأ يطرق أبواب الإنشاد مع فرق المنطقة، وقد التقى الشاعر لشگر إبراهيم بدوار ئگيدار سنة 1994 وبعدها انتفتح له باب النظم، يمتاز بقوة الصوت وشجى النبرات، وقد سمّي بأجماع مزيين نظرا لأنّ صوتهما متشابه، يشتغل الشاعر الآن بالفلاحة، وهو من المساهمين في إنجاح الملتقى الأول لشعراء أسايس سنة 2017، وهو عضو في مجلس الرابطة الوطنية.

ⴼⵉⵜⵉⵀⴰⴼ

ⴰ ⴽ ⵏⵄⵓⵕⵎⵓ ⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵙⴰⴼⴼⴽ ⵉⵢ(ⵉ) ⵖ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ
ⵉⵎⵎⴰ ⵖⴰⵢⴷ ⵏⵜⵜⵎⵏⵉⴷ ⴼⵖⴹⵕⵜ ⵜⴳⴳⵯⵓⵜ
ⴰ ⵎⴰ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵙⵓⴼ ⵉⵏⵉⵅ ⵓⵔ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵥⵕⵉⵖ
ⴰⵔ ⵏⵜⵜⵉⴽⵚⴰⴹ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵉⵡⵉⴷ ⵣⵣⵎⴰⵏ
ⴰ ⵎⴰ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵙⵓⴼ ⵏⵎⵓⵏ ⵓⵔ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵥⵕⵉⵖ
ⴰ ⴽ ⵏⵄⵓⵕⵎⵓ ⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵙⵙⵏⵊⵎ ⴰⵅ ⵖ ⵡⴰⵟⵟⴰⵏ
ⵉⵎⵎⴰ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵏ ⵖⵉⴽⴽⴰⴷ ⵓⵔ ⵄⴷⴼⵏ
ⴰⴱⵓⵀⵓⵎ ⵢⴰⵏ ⵉⵜⴰⵀⴼⵏ ⵓⵔ ⵅⴷⵉⵎⵏ
ⴰ ⴽ ⵓⵚⵚⵓⵖ ⴰ ⵛⵛⴰⴱⴰⴱ ⴰⴷ ⵏⵉⵜ ⵜⵣⵣⴳⴰⵜ
ⵜⴰⵄⵢⵢⴰⴼⵜ ⵏ ⵖⵉⴽⴰ ⵡⴰⵍⵍⴰ ⵜⵜ ⵉⵜⴰⵀⴼⵏ
ⴷⴰ ⵃⴼⴼⴰⵙⵏ ⵜⵛⵛⵕⵓⴹ ⴰ ⵉⴱⴹⵓ ⴷ ⴱⴱⴰⵙ
ⵓⴼⴰ ⵎⴰⵙ ⴷ ⴰⵢⵜⵎⴰⵙ ⴰ ⵜⵏ ⵓⵔ ⵥⵕⵉⵏ
ⴰ ⴼⴼⵉⵖ ⵏⵥⵕⴰ ⵡⵉⴼⴼⵉ ⵢⴰⴷ ⵉⵜⴰⵀⴼⵏ
ⵢⴰ ⴼⴰⵟⵉⵃ, ⵢⴰ ⴼⴰⵟⵉⵃ ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⵜⵜⵀⵍⵍⴰⵏ
ⴰ ⵜⴰⵇⵇⵓⵔⵜ ⴰⵖ ⵜⵜⵉⴼⵉⵏ ⴷ ⴼⵡⴰⴼⵉⴷⴰⵢⵏ
ⵢⴰⵏ ⵉⴳⴰⵏ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵅⴽⴰⴷ ⵎⴰ ⵔⴰⴷ ⵙⴽⵔⵏ
ⵢⵓⵔⵓ ⵜⴰⵔⵡⴰ ⵉⵎⵎⴰⵖ ⴰ ⵜⵏ ⵙⵙⵖⵔⵉⵏ
ⵉⵔⵉⵏ ⴼⴽⵙⵓⵜ ⴷ ⵎⴰⵜⵛⴰ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵅⴷⵎⵏ
ⴰⵄⵄ ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵜⴰⵀⴼⵏ ⵣⵓⴳⵏ ⵉⴳⴼⴼⵉⵏ
ⵓⵔ ⵅⴷⵎⵏ ⵓⵔ ⵔⴷⵎⵏ ⴰⵔ ⴽⴰ ⵉⴳⴳⵯⴰⵏ
ⴰⵄⵄ ⴰ ⵢⴰⵙⵎⵓⵏ ⵏⵙ ⵉⵎⵔⵔⵜ ⵉⴳⴼⴼⵉⵏ
ⴰ ⵡⴰⵛⵛ ⴰ ⵉⴳⴰ ⵥⵥⴼⴹ ⵓⵔ ⵉⵛⵡⵉ ⵖ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ
ⴼⵉⵜⵉⵀⴰⴼ ⵢⴰⵏ ⵜⵏ ⵉⴽⴽⴰⵏ ⵓⵔ ⵜⵜⵀⵍⵍⴰⵏ
ⵓⵔ ⵉⴽⵎⵎⴼ ⵉ ⵛⵛⴰⵀⴰⵡⴰ ⵏ ⵎⴰⴷ ⵥⵕⴰⵏ.

ليتيهال

أ ك نحـورٍمو أ رٍبّي سلّك يّي غ دّونيت
يمّا غايد نتّمنيد لغضرٍت تكّٓوت
أ ما راد د سول ينيخ ور ت أكّٓ ژرٍيغ
أر نتّيكصاض أر يسّيويد زّمان
أ ما راد د سول نمون ور ت أكّٓ ژرٍيغ
أ ك نحورٍمو أ رٍبّي سّنجم أخ غ واطّان
يمّا زّمان ن غيكّاد ور عدلن
أبوهوم يان يتاهلن ور خديمن
أ ك وصّوغ أ شّاباب أد نيت تزّݣات
تاعيالت ن غيكا وانّا تّ يتاهلن
دا فلّاسن تشّرٍوض أ يبضو د بّاس
ولا ماس د أيتماس أ تن ور ژرٍين
أ لّيغ نژرٍا ويلّي ياد يتاهلن
يا لاطيف، يا لاطيف ور جّون تّهنّان
أ تاقّورت أغ تّيلين د لواليداين
يان يݣّان زون خكاد ما راد سكـرن
يورو تاروا يمّاغ أ تن سّغرين
يرين لكسوت د ماتشا ور أكّٓ خدمن
أحّ أ يان يتاهلن زوݣن يݣّلّين
ور خدمن ور ردمن أر كا يݣّٓان
أحّ أ ياسمون نس يمرّت يݣّلّين
أ واشّ أ يݣّا ژّلض ور يشوي غ دّونيت
ليتيهال يان تن يكّان ور تّهنّان
ور يكمّل ئـ شّاهاوا ن ماد ژرٍان.

******

-46-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴽⴰⴼⴼⴰ
ⴰⵢⵜ ⵡⴰⴼⵇⵇⴰ

محمد كافا

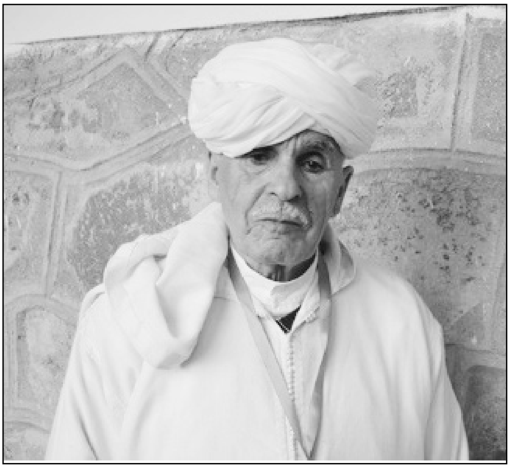

ولد بأيت وافقا سنة 1939، والتحق بمسجد القرية، وبعد أن شبّ التحق بالمدينة كممارس لخدمات تجارية ثم بفرنسا حيث حصل على التقاعد، دخل إلى أسايس في فترة الشباب وكان يتردد على القبائل المجاورة، حضر في الملتقى الأول لشعراء أسايس وانضمّ إلى الرابطة الوطنية سنة 2018.

ⵍⵄⵉⴱ

ⴽⵉⴳⴰⵏ ⵏ ⵉⵙⵓⵢⴰⵙ ⴰⴷ ⴷ ⵏⴽⴽⴰ ⵓⵔ ⵉⵢⵉ ⵙⵙⵓⵙⵎⵏ
ⵉⵣⵣⴰ ⴷ ⵍⵄⵉⴱ ⵖ ⵜⵏⴹⴹⴰⵎⵜ ⵓⵔ ⴰⵙⵏⵜ ⵉⵍⵉⵇ
ⴰⵙⵙ ⵍⵍⴰ ⵖ ⵏⵉⵜ ⵏⵎⵉⴳⴳⵉⵔⵏ ⴰⵢⵜ ⵎⴰⴼⴰⵡⴰⵍ
ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⴰⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⵜⵜⵓⵣⴰⵏ ⵜⴰⵢⵢⵉⵜⵉ (ⵏ) ⵡⴰⵢⵢⴰⴹ
ⴰ ⵎⴰ ⵎⵉ ⵜⵔⵉⵜ ⵍⵄⵉⴱ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵉⵖ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵟⵟⴰⴼ
ⵕⴱⴱⵉ ⴽⴰ ⵉⴷⵍⵏ ⵍⵄⵉⴱ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⵉⵍⴰ ⵜ
ⵀⴰ ⵍ ⵍⵀⵉⴱⵜ ⵏ ⵢⴰⵏ ⴰⴷ ⴷ ⵉⵜⵜⵎⴰⵖ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵉⵍⵉⵏ
ⴰⵎⴽ ⵍⵍⴰ ⵉⵔⴰ ⵉⴳ ⵜ ⵕⴹⵓⵏⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵍⵅⴰⵍⴰⵢⵢⵉⵇ
ⴰⵎⴽ ⵍⵍⵉ ⵉⵔⴰ ⵢⵉⵥⵉⴹ ⴰⴼⵔⴰⵏ ⴰⵡⵏ ⵜⵏ ⵔⴰⵏ
ⵉⵡⴰⵍⵉⵡⵏ ⴰ ⵢⵉⴷ ⵙⵉⴷⵉ ⴰ ⵏⵙⵎⵎⵙⵜⴰⵢ ⴰⵡⴰⵍ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵍ ⵓⵎⴷⵢⴰⵣ ⵏⵅ ⴰⵙⵙ ⵍⵍⴰ ⵍ ⵉⴼⴼⵓⵖ
ⴰⵡⵉⵏ ⵕⵕⵡⴰⵃ ⵏⵙⵏ ⴷⴰⵔ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵙⵔⵙ ⵉⵇⵇⵍⵏ
ⴰⵎⵟⵟⴰ ⴰⵙ ⵉⵜⵜⵏⵎⵉⴳⴳⵉⵔ ⵡⴰⵢⵢ ⴰⵙ ⴰⵔ ⴰⵟⵟⴰⵏ
ⵖⵉⵍⴰⴷ ⴰ ⴼⵍⴰⵏ ⵉⵣⵣⴰ ⴷ ⴰ ⴽⵯⵏ ⴰⵙⵉⵖ ⴰ ⵢⴰⵎⴰⵏ
ⴰⵙⵉⵖ ⵍⵄⵡⵉⵏ ⵉⵏⵓ ⵣⵓⵏ ⴰⵅ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵢⴰⵏ
ⵏⵅⴰ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵎⵣⵡⵓⵅ ⵉⵖ ⵏⵉⵜ ⵉⴽⴽⴰ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵉⵏ ⵜⵉⵎⴳⴳⵕⴰⴹ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵜⵉⵙⵉⵡⴰⵏ
ⵖⴰⵢⴰⴷ ⵉⵣⵔⵉⵏ ⴰⵏⵎⵓⴳⴳⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⴽⵛⵎⵅ ⵓⵔⴰⵔ
ⵃⴰⴹⵕⵏ ⵉⵎⴰⵔⵉⵔⵏ ⵀⴰ ⵍ ⵢⴰⵙⵜⵡⴰ ⵡⴰⵡⴰⵍ
ⵉⵙⵏⵇⵔ ⴷ ⵏⵉⵜ ⵍⵊⵎⵀⵓⵕ ⵎⴰ ⵙ ⵏⵔⴰ ⴰ ⵜ ⵉⵏⵉⵅ
ⵃⴰⴹⵕⵏ ⴷ ⴳⵉⵙ ⵟⵟⵉⵍⴱⴰ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵜⵜⴰⵔⴰⵏⵉⵏ
ⵢⴰⵏ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⵍⵃⴰⵇⵇ ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵉⵍⵍⴰ ⵙⴰⵡⵍ ⵙⵓⵍ.

لعيب

كيڤان ن يسوياس أد د نكّا ور يّي سّوسمن
يزّا د لعيب غ تنضّامت ور أسنت يليق
أسّ نّا غ نيت نميكّْرن أيت مافاوال
كو يان أر ڭيس يتّوزان تاييتي واياض
أ ما مي تريت لعيب ن كرا يغ ت أكّْ يطّاف
رِبّي كا يدلن لعيب ن كرا يلّان يلا ت
ها نّ لهيبت ن يان أد د يتّماغ أ تنت يلين
أمك نّا يرا يڭ ت رِضونت أكّْ لخالايّيق
أمك لّي يرا ييژيض أفران أون تن ران
يواليون أ ييد سيدي أ نسمّستاي أوال
يكّا تّ ينّ ومدياز نخ أسّ نّا نّ يڤّوغ
أوين رّواح نسن دار والّي سرس يڤّلن
أمطّا أس يتّنميكّْر واي أس أر أطّان
غيلاد أ فلان يزّا د أ كُن أسيغ أ يامان
أسيغ لعوين ينو زون أخ ور يسّن يان
نڭا زون د أمزوُوڭ يغ نيت يكّا أغاراس
ور يسّين تيمڭّْراض ور يسّن تيسيوان
غاياد يزرين أنموڭّار كيغ كشمخ ورار
حاضرِن يماريرن ها نّ ياستوا واوال
يسنقر د نيت لجمهورِ ما س نرا أ ت ينيخ
حاضرِن د ڭيس طّلبا ويلّي تّارانين
يان ينّان لحاقّ أد أسن ينّا ساول سول.

******

-47-

ⵎⴱⴰⵇ ⴱⴰⵀⴰ

ⴰⵣⵣⴰ ⵏ ⵉⵅⵉⵔⵏ

مبارك باها

ولد في أقايكَرن بناحية الفايجة سنة 1980، والتحق بالمدرسة ولكنه لم يتجاوز السلك الإعدادي، تأثر بشعراء قريته من أمثال الحاج بحسين ؤهمو والهاشم أيت واحمان لإضافة إلى الشعراء الذين يزورون القرية من أمثال إبراهيم أوبلا، وفي سنة 2000 بدا يرتاد ميدان الحوار وقد زار معظم قبائل الأطلس الصغير وساجل جل شعراء سوس، وهو الان يشتغل في الخدمات التجارية بالدار البيضاء.

ⵜⵉⵖⵔⵉ

ⴰ ⵟⵟⵍⴱⴰ ⵜⵜⴰⵔⴰⵏⵉⵏ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵉⵖⵔⴰⵏ
ⵀⴰ ⵍ ⵍⵄⵉⵍⵎ ⵓⵔ ⵜ ⵉⴳⵉ ⵍⵃⵇⴼ ⴷ ⵙⵉⵏ
ⴰ ⵜ ⵉⴳⴰⵏ ⴷ ⵍⵃⴰⴷⵉⵜ ⴰ ⵜⵏⵜ ⴷ ⵜⵖⵔⵜ
ⵉⵍⵍⴰ ⵎⴰⴷ ⴷ ⵓⵔ ⵉⴼⵍⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵎⵃⴹⴰⵇ
ⵎⵢⵢⴰ ⴷ ⵢⴰⵏ ⴰⵅⵔⴱⵉⵛ ⴽⴰ (ⴰ)ⴷ ⴽⵛⵎⵏ
ⴰⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⴳⴳⵯⴰⵏ ⴰⵔ ⵉⵥⵥⴰⵢ ⵜⵉⵔⵜⴱⴰⵢ
ⵓⵔ (ⴰ) ⴰⴽⴽⴰⵏ ⵍⵃⴰⴷⵉⵜ ⵓⵔ ⵔⴰⴷ ⵜⵜ ⵖⵓⵢⵏ
ⴰ ⵜⵉⵍⵍⵉ ⵢⴰⴷ ⵙⵙⵍ ⴰ ⵢⵙ ⵉⵊⵍⵍⵓⵏ
ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⴰⴽⴽⵯ ⵙⵓⵍ ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵉⵏ ⵉ ⵜⴱⵔⴰⵜ
ⴰⵔ ⵉⵜⵜⴰⴼ ⵓⵄⴰⵎⵉ ⴷⴰ ⵓⵔ ⵉⴳⵯⵎⵎⵉⵏ
ⵢⴰⵏ ⵉⴽⴽⴰⵏ ⴰⴳⵯⵎⵎⴰⵢ ⵓⵔ ⴰ ⴳⵯⵎⵎⵉⵏ
ⵎⵍⴰ ⵓⴼⵉⵅ ⴰⴷ ⴰⵔⴰⵅ ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⴷⵍⵉⵙ
ⴰ ⵉⵢⵉ ⵙⵔⵙ ⵉⵜⵜⵇⵃⴰⵎ ⵢⴰⵏ ⵉⵖ ⴷⴷⵉⵅ
ⵏⵖⵓⵢ ⵜⵉⵖⵔⴰⴷ ⴰⵡⵉⵅ ⵓⵍⴰ ⵍⵉⵊⵓⵇ
ⴰ ⵜⴰⴷ ⵉⵙⵙⵏ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵓⵔ ⵃⴹⵓⵏ
ⵍⵄⵉⵍⵎ ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵃⵓⴷⴷⵉ ⵉⴳⴰ ⵍⴱⵃⵓⵇ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵖⵔⴰⵏ ⵉⵖⵔ ⵣⵓⵏ ⵓⵔ ⵖⵔⵉⵏ
ⵜⴰⵍⴰ ⵢⴰⴷ ⵉⵙⵙⵏ ⵢⴰⵏ ⵔⴰ ⴳⵉⵙ ⵜⵜⵖⵓⵢⵏ
ⴰ ⵍ ⵙⵔⵙⵏⵜ ⵉⵜⵜⴰⴳⴳⵯⴰ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵜⵜ ⴼⵍⵏ
ⵉⵖ ⵉⵎⴰⵟⵍ ⵓⴹⴰⵇ ⵉ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⵣⵔⵉⵏ
ⴽⵓⵍⵍ(ⵓ) ⵎⴰ ⵜⴼⵍⵜ ⵔⴰ ⴽ ⵉⴼⵍ ⵉⵖ ⵜ ⵜⴼⵍⵜ.

تيغـري

أ طّلبا تّارانين ويلّي يغـران
ها نّ لعيلم ور ت يڭي لحـرٍف د سين
أ ت يڭان د لحـاديت أ تنت د تغـرت
يلّا ماد د ور يفلن يان ومحـضارٍ
ميا د يان أخـربيش كا د كشمن
أر ڭيس يڭُّان أر يقّاي تيرتباي
ور أكّان لحـاديت ور راد تّ غوين
أ تيلّي ياد سّنّ أ يس يجلّون
أر كيغ أكُّ سول ور نسّين ئـ تبرات
أر يتّاف وعامي دا ور يڭُمّين
يان يكّان أڭُمّاي ور أ ڭُمّين
ملا وفـيخ أد أراخ يان ودليس
أ ييي سرس يترٍحـام يان يغ دّيخ
نغوي تيغراد أويخ ولا ليجـورٍ
أ تاد يسّن يان أ تنت ور حـضون
لعيلم ور أكُّ يحـودّي يڭا لبحـورٍ
أ يان يغران يغر زون ور غرين
تانّا ياد يسّن يان را ڭيس تّغوين
أ نّ سرسنت يتّاڭُّا ماني غ تّ فلن
يغ يماطل وضارٍ ئـ غيلّي غ زرين
كولّـو ما تفلت را ك يفل يغ ت تفلت.

ⵍⵃⴱⴰⵇⵜ ⵜⵓⵣⵣⵓⵜ ⵏ ⴰⵙⵜ ⵓⵎⴰⵔⵖ

-48-

ⵍⵎⵃⵊⵓⴱ ⵍⵄⴱⴱⴰⵙⵉ

ⵜⵓⵣⵓⵏⵉⵏ - ⵜⴰⵟⴰ

المحجوب العباسي

ولد في قرية توزونين سنة 1952، وكانت بلدته مشهورة بفنّ ئسمڭان، ولكن شهرتها في مجال النظم مرتبطة بأسرة مشهورة وهي أسرة بن إغيل، وقد ادرك المحجوب الشاعـر الكبير محمد بن إغيل والشاعر ؤحماو، فأخذ عنهم حـروفه الأولى في النظم، وبقدر مشاركته في فرقة ئسمڭان بتوزونين بقدر ما شارك في حواريات درست بالمنطقة، وقد تجول في معظم مناطق الأطلس الصغير وكان مع زميله جاكان من مشاهير لكلمة الشعرية الشفوية، وقد أصدر مع الرايس المحفوظ الإفراني شريطا صوتيا في فن الدرست، كما أصدر ديوانه بشراكة مع المعهد الملكي، شارك في الملتقى الأول لشعراء أسايس 2017.

ⴰⴼⴳⴰⵏ

ⵢⴰⴽ ⴰ ⵢⴰⵢⵜ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵏⴽⴽⵉ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⵉⵔⵓⵔ ⴰⵅ ⴷ ⵕⴱⴱⵉ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵓⵔ ⵉⵅⴰⵚⵚⴰ ⵢⴰⵜ
ⴰⴳⵍⵍⵉⴷ ⴳⴰⵏ ⴰⵅ ⵍⵀⵉⴱⵜ ⵉⵙⵙⵕⵚⴰ ⴰⵡⴰⵍ
ⵉⵡⵉⵅ ⴰⴽ ⴷ ⵍⵎⵄⵏⴰ ⴳⵉⵙ ⵏⴰⵔⵎ ⵢⴰⵏ ⵉⵎⵉⴽⴽ
ⴰⵙⵙ ⵏ ⵜⵜⴰⵡⴱⴰ ⵉⵇⵇⵏⴹ ⴰⴽⴽⵯ ⴼ ⵍⵎⵓⵏⴰⴼⵉⵇⵉⵏ
ⵡⴰ ⵛⵛⵉⵟⴰⵏ ⵀⴰⵜⵉ ⵍⵉⵊⴰⵕⵜ ⵏⵙⵏ ⴽⴰ ⴼ ⵉⵎⵎⴰⵖ
ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵎⵉ ⵖⵔⴰⵏ ⵉⵙ ⵉⴳⴰ ⵍⵡⵔⵜ ⵏⵙ ⵉⵛⵛⵓⴽⴽⵓ ⵜ
ⵕⴱⴱⵉ ⵅⵍⵇⵏ ⴰⴽⴽⵯ ⵎⴷⴷⵏ ⴳⴰⵏ (ⴰ)ⵎⴽ ⵍⵍⵉ ⴽⴰ ⵔⴰⵏ
ⵢⵉⵍⵉ ⵢⴰⵏ ⵡⴰⵏⴰⵡ ⵓⵀⵓ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵉⵏ ⵉⵙ ⵍⵍⴰⵏ
ⵡⴰ ⵛⵛⴰⵏ ⴰⵢⴷⴰ ⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⴳⴰⵏ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⴰⵖⵓⵢⵢⵓⵜ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵍⵃⵙⴰⴱ ⵏⵙ ⵓⵔ ⴰⵙ ⵉⴽⴽⵉ ⵎⴰⵏ
ⵡⴰ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⴷ ⵓⵙⴽⵍⵓ ⴷⴰⵔⵙ ⵔⵣⵇ ⵏⵙ ⵏⵜⵜⴰⵏ
ⴰⵙⵙ ⵏⵏⴰ ⵖ ⴽⵎⵎⵍⵏ ⵉⴳ ⴰⵙ ⵡⴰⵡⴰⵍ ⵏⵙⵏ ⵢⴰⵏ.

أفڭان

ياك أ يايت يموريڭ ور سول نكّي تيلّاس
يرور أخ د ربّي تودرت ور يخاصّا يات
أڭلّيد ڭان أخ لهيبت يسّرصا أوال
يويخ أك د لمعنا ڭيس نارم يان يميكّ
أسّ ن تّاوبا يقّنض أكُّ ف لمونافيقين
وا شّيطان هاتي ليجارت نسن كا ف يمّاغ
وانّا مي غران يس يڭّا لورت نس يشوڭّو ت
ربّي خلقن أكُّ مدّن ڭان مك لّي كا ران
ييلي يان واناو وهو ور يسّين يس لّان
وا شّان أيدا ن مدّن ڭان كولّو تاغويّوت
أ والايني لحساب نس ور أس يكّي مان
وا بنادم د وسكلو دارس رزق نس نتّان
أسّ نّا غ كمّلن يڭ أس واوال نسن يان.

******

-49-
ⴱⵓⴱⴽⵔ ⵎⵔⵃⴰⵡⵍ
ⵜⵉⵎⵓⵍⴰⵢ ⵏ ⵢⵉⵣⴷⴰⵔ

ولد الشاعر أبوبكر مرحاول في مدشر تيمولاي ن ئزدار -ناحية بويزاكارن- سنة 1975، قضى حوالي خمس سنوات بمسجد القرية، وحاول في فترة الشباب أن يمتهن عدة مهن إلى أن استقر على التجارة، لفت انتباهه فنّ أحواش وهو في فترة المراهقة، وشب على الاستماع إلى أشرطة شعراء أحواش وتيرويسا، وقد ادرك في منطقته عدة أسماء حاول ان يقاسمهم الحوار كالطاهر وْحمود ومحمد أنفلوس، ولم يلبث أن انتقل إلى محاورة الشعراء المتجولين في المنطقة كعلي بوزيد والمحجوب وْتوزونين وغيرهم، لم تتجاوز جولاته منطقة باني الغربي، وهو الان عضو مستشار في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⵉⴳⵉⴳⵉⵢ

ⴰⵢⵢⴰⴼ ⵓⴽⴱⴰⵕ ⵉⴳⵉⴳⵉⵢ ⴰⵔ ⴽⴰ ⴰⵢⵢⴰⵏ
ⵜⵎⵎⵓⵜ ⵎⴰⵙ ⵢⵢⵉ ⴳⵉⵙ ⵉⵜⵜⵅⵍⵓⵏ
ⵉⴹⵕ ⵖ ⴳⴰⵔ ⴰⵎⵓⴷ ⵢⵢⵉ ⵉⵅⵕⵕⴰⵏ
ⵏⵙⵉⵏ ⵖ ⵓⵚⵎⵎⵉⴹ ⵓⵢⴰ ⵉⵔⴰⵃⴰⵏ
ⴱⴰⴱⴰⵙ ⵉⵃⵢ ⵜ ⵢⴼⵎⵎ ⵏⵙ ⵉⵜⵜⵓⵜ
ⵉⵜⴰⴼⵢ ⵜⴰⵇⵇⴰⴹ ⵓⵔ ⵙⵓⵢ ⵜ ⵉⵙⵙⵉⵏ
ⵜⵉⴳⵎⵎⵉ ⴽⵓⵢⵢⵓ ⴳⵉⵏⵜ ⴰⵙ ⵜⵉⵢⵢⴰⵙ
ⴰ ⵜⴰⴼⵔⴰ ⵜⵢⵢⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⵃⵔⴰ ⵇⴰⵙ
ⵉⵖ ⵉⴳⴰ ⵢⵅⴰⵢ ⵢⵄⵉⴷ ⴰⵔ ⵉⵙⵎⵉⵀⵀⵉⵡ
ⵜⵉⵔⴳⵉⵏ ⵏ ⵡⴰⵣⴰⴹ ⴰⵙ ⴰ ⵜⵜⵎⵏⵙⴰⵏ
ⵜⵉⵔⵎⵜ ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⴳⵉⵙⵏⵜ ⵜⴽⵎⵎⵉⵢ
ⵉⴽⴽⵓⵄⵎⴰ ⴰⵀⵀⴰⵏ ⵉⴳⴰ ⴰⵙⵎⵓⵏ ⵏⵙ
ⴰ ⵜⴰⴱⵔⵉⴷⴰ ⵜⵎⴷⵉ ⴰⵣⵢⴰⵢ ⵏⵙ
ⵓⵔ ⵉⵢⵙⵉ ⵇⴰⵜ ⴰⴹⴰⵕ ⵏⵙ ⵉⵛⵛⴰ ⵜⵜ
ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵇⵓⵃⴰ ⵎⴰ ⴳⵉⵙ ⵉⵜⵅⵍⵓⵏ
ⵎⵏⴷⵓⵏ ⵓⴷⵎ ⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⴰⵖ ⵉⵙⵎⵓⵥⵥⵓⵢ.

يڤـيڤـيـل

ألّاه وكبارٍ يڤـيڤـيل أر كا ألّان

تمّوت ماس لّي ڤيس يتّحـنّون

يضرٍ غ ڤار أمود لّي يحـرّان

نسين غ وصمّيض ولا يرافان

باباس يفل ت لهمّ نس يتّوت

يتاهل تاياض ور سول ت يسّين

تيڭمّي كولّو ڤينت أس تيلّاس

أ تاهـرا تلّا ڤيس يفـرا ياس

يغ يڤا لحال لعيد أر يسميطّيـو

تيرڤين ن واژاض أس أ تمّنسان

تيرمت ور جّـون ڤـيسنت تكمّيـل

يڭّوعما أطّان يڤا أسمون نس

أ تابريدا تمدي أخـلال نس

ور يلسي يات أضارٍ نس يشّا تّ

ماني غ يوفا ما ڤيس يتّحـنّـون

مندون ودم ن رٍبّي أغ يسموقّـول.

******

-50-

ⵍⵃⵕⴱⵉ ⴰⵥⴷⴷⵓ
ⵉⴷⴰ ⵓⵥⴷⴷⵓ
العربي أزدو

ولد بقرية أيت ئبورك قبيلة ئداوزدوت سنة 1963، وهو نجل أحد شعراء ئداوزدوت المخضرمين، وقد أدرك شعراء كبار فنهل منهم شربته في النظم من أمثال بوسّلام أفداد، بدأ مشواره في الإبداع الحواري في سنة 1986، وهو عضو في الرابطة الوطنية لشعراء أسايس ومجلسها الإداري.

ⵟⴰⴳⴳⴰⵍⵣⴰ

ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵏ ⵏ ⵉⵎⵓⵔⵉⴳ ⵉⵙ ⵏⵉⵜ ⵉⵏⴰ ⵛⵛⴰⵇⴰⴼ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵣⵣⵎⵥⵉⵢ ⵓⵔ ⴰⵙⵏ ⵙⵏⵏⴰⵖ
ⵀⴰⵜⵉ ⵙⵙⵚⴰⵚ ⵏ ⵜⵇⵥⵉ ⵏⵙⵏ ⵔⴰ ⵙⵓⵏ ⵏⴽⵎⵏ
ⴰ ⵜⴰⴳⴳⴰⵍⵣⴰ ⵏ ⵉⵏⵎ ⵀⴰ ⵍ ⵓⵔ ⵜⵜ ⵉⵔⵉ ⵢⴰⵏ
ⵃⴰⵄⵄⴰⵏ ⵉⵣ ⴷ ⵏⵡⵔⴽ ⴰⴷ ⴷ ⵉⴽⵛⵎⵏ ⵏⴳⴰⵏⴰⵢⵢⵉⵄ
ⵉⴳⴰ ⵛⵛⵉⵏⵡⴰ ⵢⴰ ⴹⴹⵉⴷⴷ ⵏ ⵏⵃⵔⴼⵜ ⵢⴰ ⵏⴰⴹⵉⴼ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵉⵃⴰⴷⴰ ⵔⴰⴷ ⴰⵙ ⵉⴽⴽⵙ ⵜⵉⵎⵏⵙⵉⵜ
ⵎⴰⵎⵏⴽ ⴰ ⵉⵃⵓⵏ ⵓⵏⴰⵥⵓⵇ ⴰ ⵢⵉⵏⵉ ⵜⵉⵙⵏⵜ
ⵎⵄⴰⵔ ⴰⵔ ⵀⵏⵏⵉ ⵜⵜⵓⴷⴷⴰⵍ ⵓⵔ ⵍ ⵉⵄⵄⵏ ⵢⴰⵏ
ⵓⵏⵏⴰⵀ ⴰⵔ ⵢⵓⵙⵉ ⵖ ⵏⵀⵎⵎ ⵎⴰ ⵍ ⴰⴽⴽⵯ ⵓⵔ ⵉⵜⴰⵎ
ⵎⴰⴷ ⴰⵙ ⵉⵜⵜⴰⵡⵙⵏ ⵖ ⵜⴰⴳⴳⵯⴰⵜ ⵓⵔ ⵜⵏ ⴰⴽⴽⵯ ⵓⴼⵉⵏ
ⵓⵔ ⵓⴼⵉⵏ ⴰ ⵜⴰⵎⴰⴹⵓⵏⵜ ⵏⵙ ⴰⵙⴰⴼⴰⵔ ⵏⵎ
ⴰⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵙⵔⵙ ⵉⵙⵉⴳⴳⵉⵏ ⵢⴰⵙⵉ ⵜⵏ ⵡⴰⴹⴹⴰⵏ.

تاڭّانزا

أ ياوال ن يموريڭ يس نيت يلا شّاڕاف

أ وانّا را ت يزّمڗييْ ور أسن سلّاغ

هاتي سّباب ن ترڕڗي نسن را سول لكمن

أ تاڭّانزا ن يلم ها نّ ور تّ يري يان

حاقّان يز د لورك أد د يكشمن لخالايّيق

يڭا شّينوا يا ضّيدّ ن لحرفت يا لاطيف

أ وانّا يحادا راد أس يكّس تيملسيت

مامنك أ يحول وناڗوڕ أ ييلي تيسنت

مقار أر هلّي تّودّانّ ور نّ يقّل يان

ولّاه أر يوسي غ لهمّ ما نّ أڭّ ور يتام

ماد أس يتّاوسن غ تاڭّات ور تن أڭّ وفين

ور وفين أ تاماضونت نس أسافار نم

أد وكان سرس يسيڭّيل ياسي تن واطّان.

****

-51-

ⵎⵓⵍⵉⴷ ⴱⵓⵍⵎⴰⵏ

ⵜⴰⴳⵎⵓⵜ ⵏ ⵙⴰⵃⵣⵓⴱ

موليد بولمان

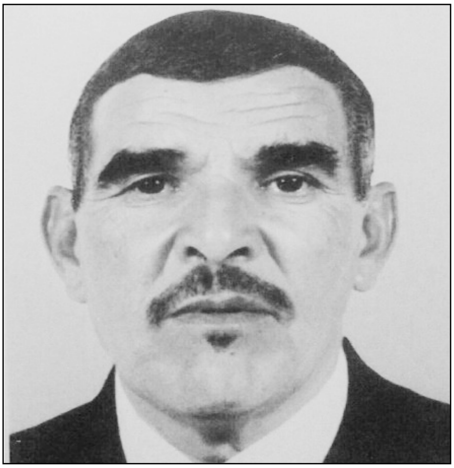

ولد ميلود بولمان سنة 1956 بقرية أكَلاكَال فرقة سمنات قبيلة تاكموت، وقد الحتق بالمسجد من أجل تعلّم القرآن منذ نعومة أظفاره، وكان ملازما لأبيه الحاج محمد بن موليد وعليه تتلمذ وحفظ القرآن، ثم التحق بالمدرسة العتيقة "سيدنا دانيال"، ورغم أنّ أباه قد بذل مجهودا من أجل تأهيله كيكون خليفة له في هذا الدرب، إلاّ أنّه لم يلبث أن تأثر بالوسط الذي ترعرع فيه فنهل من فنون أحواش، وقد اختار من هذا الفنّ قرض الشعر، وكان لاهتمام والده رحمه الله بالشعر الأمازيغي أهمّ باعث شجّعه على الانتظام في الشعر الحواري، ولا بدع فبلدة تأكموت تعج بأمثاله ممن تركوا بصمتهم في الشعر الأمازيغي، وقد أدرك ثلة من عباقرة النظم من أمثال سيدي بورح ومحمد أومبارك وبوكريم أحمو وبولاّه أوعلي، فسار على منوالهم ابتداء من سنة 1970، وهو الآن من بين نخبة من شعراء تاكموت الذين ذرعوا قبائل الأطلس الصغير، إضافة إلى اهتماماته الإبداعية يعتبر من بين شباب تاكموت الذين أسسوا للعمل الجمعوي التنموي، وهو الآن مستشار في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⴱⵍⴷⵉ

ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ, ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ ⵍⵃⴰⵇⵍ ⵉⵏⵓ ⵜⵀⵓⵡⵍⵏ
ⵉⵍⵍⵉ ⴼ ⵀⵓⵡⵍⵅ ⴰ ⵡⵉⵏⵏⵅ ⴰ ⵜ ⵉⴷ ⴼⴰⵄⵍⵅ
ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⴷ ⴰⴱⵍⴷⵉ ⵉⴷⴷⴰ ⵉⴳⵍⵍⵉⵏ
ⵏⴰⴽⵕⵏ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵖⵡⵉⴷⴰ ⵉⵖⵓⵢⵏ ⴰⵛⴱⴰⵕ ⵏⵙ
ⵉⴼⴼⵓⵖ ⵉⵙⵓⵢⴰⵙ ⵓⵍⴰ ⵜⵉⵇⴱⵉⵍⵉⵏ
ⵉⵍⵍⵉ ⵉⴳⴰⵏ ⵙⵙⴱⴰⴱ ⴰ ⵜ ⵉⴷ ⵉⴱⴷⵔ ⵢⴰⵏ
ⵉⴳⴰ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⴰⴷ ⵉⴼⵉⵢⵙ ⵉⵥⵥⴰ ⵖ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⴷ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵜ ⵉⴳⴰ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⵙ
ⵢⵓⵣⵣⵍ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵥⴹⴰⵕ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵜ ⵖⴰⵡⵍⵏ
ⵢⴰⵏ ⵍⴱⵔⵉⵊ ⵏⵔ ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵉⵙⵙⵍⴷ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ
ⴰⴼⵓⵍⴽⵉ ⵏ ⵜⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⴰⴷ ⵓⵔ ⴱⴰⵍⴰⵏ
ⵢⴰⵏ ⵉⴼⴼⴰⵖ ⵙⵙⵉⵃⵔ ⵎⴰⵏ ⴰⵙⴷⵔⵎ ⵏⵙ
ⵎⵇⴰⵔ ⵏⵉⵜ ⵉⴱⵉⴷⴷ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵉⵖ ⵉⴳⴳⵯⵣ ⴰⴽⴰⵍ.

أمارڭ أبلدي

يالّاه، يالّاه لعاقل ينو تهوولن
يلّي ف هووْلخ أ وينّخ أ ت يد فاصلخ
أمارڭ أد أبلدي يدّا يڭلّين
ناكرٍن ت أڱّ غويدا يغوين أشبارٍ نس
يفّوغ يسوياس ولا تيقبيلين
يلّي يڭان سّباب أ ت يد يبدر يان
يڭا زّمان أد يفيِيْس يژّا غ كو يان
أ كو يان د ماني غ ت يڭا وضارٍ نس
يوزّل زّمان ور يژضارٍ يان أ ت غاولن
يان لبريح نر أد أسن يسّلد كو يان
أفولكي ن ثمازيرت أد ور بالان
يان يفّاغ سّيعر مان أسدرم نس
مقار نيت يبيدّ زون د يغ يڱّز أكال.

-52-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴱⵍⵄⵕⴱⵉ
ⵉⴷⴰⵡⵅⴰⵍⴷ
محمد بلعربي

ولد الشاعر محمد خالدي بقبيلة ئداوخالد ناحية تافراوت سنة 1965، وكدأب الأطفال في هذه البوادي التحق بالمسجد ثم بالمدرسة، ولكنه لم يتابع دراسته لظروف عائلية، تأثر بجو التقاليد الفنية المألوفة في قبيلته منذ صباه، وفي سنة 1982 بدا في ارتياد ميادين الحوار الشعري وهو ابن ال17 من عمره، وكانت أول مواجهة له مع شاعر اسمه أحمد أوعلي تايس من قرية تيمقييت ن ئكنان، ثم شرع في اختراق مختلف القبائل القريبة بحوارياته الشعرية مع عدد لا يستهان به من الشعراء المتواجدين في الساحة، وفي سنة 1998 انتقل إلى العمل الجمعوي فأسس جمعية تنموية وساهم في تأسيس جمعيات أخرى بالمنطقة، كما انتخب كعضو مستشار في الجماعة التيينتمي إليها، وهو الآن عضو مستشار في الرابطة الوطنية لشعراء وشاعرات أسايس.

ⵓⵔ ⵏⵥⴹⴰⵕ

ⵢⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵖⵔⵉⵖ ⴰⴽ ⵏⵅⴰ ⵍ ⵙⵔⵡⵏ ⵜⵓⵔⴰⵡⵉⵏ
ⴰⴷ ⴰⵅ ⵓⵔ ⵉⵀⴽⵎ ⵓⴹⴰⵕ ⵓⵀⴰ ⴰⵃⵓⵙ ⵏ ⵢⴰⵏ
ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵏⵥⴹⴰⵕ ⵉ ⴹⴹⵉⴷⴷ ⵓⵔ ⵔⵉⵅ ⵀⵎⴰⵛⴰⴽⵉⵀ
ⵓⵀⴰ ⵔⵉⵅ ⴳⵉⵡⵏⵜ ⴰ ⴷⴷⵀⵀⵜ ⴰ ⴽⵎ ⵢⴰⵙⵉ ⵢⴰⵏ
ⵓⵔ ⴰⴽ ⵏⵥⴹⴰⵕ ⴰ ⵙⵙⵔⴱⵉⵙ ⵓⵀⴰ ⴰⴽⵓⵕⴰⵢ
ⵓⵔ ⴰⴽ ⵏⵥⴹⴰⵕ ⴰ ⵀⴰⵥ ⵓⵀⴰ ⵜⵉⴽⴽⵉ ⵏ ⵓⵃⵓⵙ
ⴰ ⴽⵯⵏ ⵄⵓⵕⵎⵓⵖ ⴰ ⴱⴰⴱ ⵏ ⵜⵀⵉⵀⴰ ⵃⵓⴽⴽⵓ ⴰⵖ
ⵖⴰⵢⴰⴷ ⴷ ⵉⴳⴳⵯⵔⴰⵏ ⵉⵀⵀⴰ ⴳⵉⵙ ⵎⴰ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⵢⴰⵏ
ⵀⵟⵓⵀ ⵉⴽⵛⵎ ⴷ ⵙ ⵜⴰⴷⴷⴰⵔⵜ ⵏⵖ ⵉⵙⵙⵕⵄⵀ ⵜⵏⵜ
ⵜⴰⵍⴰ ⵎⵉ ⵙⵙⵕⵄⵀⵏ ⵉⵣⵉ ⵏⵙⵏⵜ ⵉⵙⴰⵀⴰ ⵜⴰⵢⵢ
ⴰ ⵜⵏⵜ ⵏⵅ ⵖ ⵓⵃⵓⵙ ⵉⴷⵓⵙⵏ ⵉⵖ ⴰⵙⵏⵜ ⵓⵃⵉⵖ
ⵡⴰⵍⴰ ⵎⵉ ⵙⵡⴰⵀⴰⵖ ⵀⵟⵎⵎ ⵏⵉⵡ ⵜⵜⵢⴰⵇⵏ ⵙⵔⵙ
ⵡⴰ ⵎⵎⴰⵖⴰⵜ ⴰⴷ ⴷ ⵓⵔ ⵉⴹⵕ ⵙ ⵡⴰⴽⴰⵀ ⵉ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ
ⵉⵎⴰⵏⴰⵔⵏ ⴰⵙ ⵏⵜⵜⵉⵣⵣⵉⵀ ⴰⵜⵉ ⵔⵉⵖ ⴰⵢⵢⵓⵔ
ⵉⵎⵎⴰ ⴰⴽⴰⵀ ⵕⵎⵉⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵉⴽⵔⴽⴰⵙ ⵏ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ.

ور نژضاڕ

يا ڕبّي غريغ أك نڭا نّ سرون توراوين

أد أخ ور يلكم وضاڕ ولا أفوس ن يان

ور أڭّ نژضاڕ ئـ ضّيدّ ور ريخ لماشاكيل

ولا ريخ ڭيونت أ دّلّت أ كم ياسي يان

ور أك نژضاڕ أ سّربيس ولا أكوڕاي

ور أك نژضاڕ أ لاژ ولا تيكّي ن وفوس

أ كُن حوڕموغ أ باب ن تليلا فـوكّو أغ

غاياد د يكّْران يلّا ڭيس ما يتّيني يان

لهول يكشم د س تادّارت نغ يسّڕحل تنت

تانّا مي سّڕحلن يزي نسنت يسالا تاي

أ تنت نڭ غ وفوس يدوسن يغ أسنت وفيغ

وانّا مي سوالاغ لهمّ نيـو تّياقـن سرس

وا مّاغات أد د ور يضڕ س واكال ئـ وييّاض

يمانارن أس نتّيزّيل أتي ريغ أيّور

يمّا أكال ڕمين مدّن يكركاس ن وييّاض.

****

-53-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⵥⴰⵎⵓⴹ
ⵎⵔⴰⵢⵜ

محمد زاموض

ولد في قرية أكَرض بقبيلة مرايت سنة 1960، وبعد ان جرب حظه بمسجد القرية التحق بفضاء الخدمات التجارية بالمدن، وقد بدأ مشواره في الإنشاد الشعري في ال 15 من عمره، وتأثر كثيرا بالشعراء المتجوّلين في قبيلته من أمثال سيدي بورح ومولاي محمد أسكانّاي وغيرهم، وهو مجيد لآلة الإيقاع تالونت، ساهم في الملتقى الثاني لشعراء أسايس وانخرط في الرابطة الوطنية سنة 2018.

ⵍⵀⵉⴱⵟ

ⵢⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⴰ ⵙⵔⴽ ⴱⴷⴻⵅ ⵏⴱⵏⴻ ⵕⵕⴰⵛⵜ
ⵀⴰ ⴷ ⵍⴼⴰⵥⵍ ⵉⵏⴻ ⵔⴰ ⵙⵔⵙⵏ ⵏⴰⵔⴰ ⵉⴳⵯⵎⵎⴰⵢⵏ
ⴰⵢⵍⵍⵉ ⵣⵇⵉⵖ ⵉⴳⴳⵯⴻⵜ ⴰⵡⴰⵍ ⵏⵙ ⴻⵔ ⴷ ⵉⴽⵎⵎⵍ
ⴰⴷ ⴰⴽ ⴽⴰ ⵅⵜⴰⵕⵇⵅ ⴰⵡⴰⵍ ⵜⵛⴰⵡⵍ ⵜⵊⵎⵎⴰⴼⵜ
ⴰⵜⵉ ⵕⵕⴰⴱⵜ ⴰⵙ ⵏⵙⵙⵏ ⵜⵉⵔⴰⵄ ⴻⵍⴰ ⵉⵣⴰⵎⵎⴰⵔⵏ
ⴻⵍⴰ ⴰⴳⵯⵍⵉⵃ ⵉⵖ ⵉⵍⵍ ⴻⵊⴷⴷⵉⴳ ⵉⴹⵀⵇ ⵎⴰⵇⵕ
ⵀⴰ ⵍ ⵍⵃⵉⴼⵍ ⴰⵙ ⵏⵙⵙⵏ ⵄⵄⴰⵊⵉⴼ ⵉⵍⴰ ⵖ ⴷ ⵉⵙⴰⵡⵍ
ⵉⵍⴰ ⵖ ⵉⴱⴷⴰ ⴰⵡⴰⵍ ⵉⴱⵉⴷⴷ ⴰⵙ ⴰⵔ ⴷ ⵉⴽⵎⵎⵍ
ⵍⴼⵉⵍⵎ ⴷ ⵍⴻⵥⵔⴰⵏ ⵏⵙⵙⵏ ⵜⵜⴰⵡⴰⴹⴻⴼ ⴷ ⵍⵉⵢⵜ
ⴻⵍⴰ ⵍⴼⴰⵥⵍ ⵉⵖ ⵍⵍⴰⵏ ⵏⵜⵜⴰ ⴷ ⵍⵥⴰⵍⴱ ⵉⵕⵍⵛⵏ
ⴰⵜⵉ ⵍⴰⵕⵍ ⵏⵙⵙⵏ ⵜ ⵉ ⵕⵕⴰⵡⴰⴱ ⵉⵍⴰ ⵖ ⴷ ⵉⵙⴰⵡⵍ
ⵉⵖ ⵉⵔⴰ ⴰ ⵉⵙⴰⵡⵍ ⴷⵉⵜⴻⵏ ⵔⴰ ⵢⴰⴷⵔ ⵉ ⵡⴰⵍⵍⵏ
ⵀⴰ ⵍ ⵍⵀⵉⴱⵜ ⵉⵖ ⵉⵙⵙ ⵉⵍⵍⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵍⴰ ⴱⴷⴰ ⵍⴻⵥⵔ
ⵡⴰⵍⴰ ⵜⵜ ⵉⴼⴷⵎⵏ ⵉⴳⵍⵍⵉⵏ ⵜⵜⵇⵣⴰ ⵍⵀⵉⵎⵎⴰ ⵏⵙ
ⴰ ⵀⴰⵜⵉ ⴻⴷⴰⴷ ⵍⵎⵏⴼ ⴰⵖ ⵃⴽⴰⵏ ⵉ ⵢⵉⵊⴰⵇⵉⵃⵏ
ⵎⵥⴰⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⴳⵉⵙⵏ ⵊⵊⴻⴼ ⴻⵔ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵍ ⴰⵣⵏ ⵉⵃⴰⵙⵙⵏ
ⵉⵛⵇⵎ ⴻⵕⵢⵢⴰⴹ ⵉⵖ ⴻⵔ ⵉⵄⴰⴹⵇ ⴰ ⵉⴳ ⵍⵃⴰⵔⵙ
ⴰ ⵙⵙⴻⵜⵔⴰ ⵜⴻⵃⵉ ⵉⵢⵉ ⴷⴷⴰⵀⴰⴱ ⴻⵍⴰ ⵉⴷⵉⵏⴰⵇⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵕⴱⵇⵏ ⵉⵥⵥⵏⴼⴰ ⵢⴻⵃⴰ ⵜⴰⴳⵯⵎⵔⵜ ⵏⵙ
ⵀⴰ ⵍ ⵍⵖⵍⵍⵜ ⵏ ⴷⴷⴻⵏⵉⵜ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵉⴳⴰⵏ ⴷ ⵍⵅⴰⴹⵇ.

لهيبت

يا بيسمي لّاه أ سرك بدوخ نبنو صّاحت
ها د لعاقل ينو را سرسن نارا يڭّمّاين
أيلّي ژرِيغ يڭّوت أوال نس ور د يكمّل
أد أك كا ختاصرِخ أوال تحاول تجمّاعت
أتي صّابت أس نسّن تيراش ولا يزامّارن
ولا أڭليف يغ يلّ وجدّيڭ يضهرِ مارِص
ها نّ لفيعل أس نسّن شّاجيع ينّا غ د يساول
ينّا غ يبدا أوال يبيدّ أس أر د يكمّل
لعيلم د لوقران نسّن تّاواضوع د نّيية
ولا لعاقل يغ لّان نتّا د لقالب يصلحن
أتي لاصل نسّن ت ئـ صّاواب ينّا غ د يساول
يغ يرا أ يساول ديتون را يادر ئـ والّن
ها نّ لهيبت يغ يسّ يلّا يان يلا بدا لوقر
وانّا تّ يعدمن يڭلّين ترِژا لهيمّا نس
أ هاتي وداد لمنع أغ فكان ئـ ييجارِيفن
مقار أكّ ڭيسن جّوع ور را ت ينّ أژن يفاسّن
يحرِم وصياض يغ ور يشاطرِ أ يڭ لفارس
أ سّوترا توفي ييي دّاهاب ولا يدينارِن
أ يان يصبرِن يقّنعا يوفا تاڭّمرت نس
ها نّ لغلّت ن دّونيت أ تنت يڭّان د لخاطرِ.

-54-

ⵢⵉⴷⴰⵔ ⵓ ⵎⵏⵚⵓⵕ
ⵜⴰⴽⵎⵓⵜ ⵏ ⵢⴰⵄⵇⵓⴱ
ييدير أومنصور

ولد في تاكموت ن يعقوب سنة 1956 في أسرة تشتغل بالفلاحة، وبعد أن شبّ دخل إلى فضاء أسايس خصوصا وأن تاكموت وفية لفنون أحواش، وكانت بدايته في مقطوعات شعرية بأحواش ن تعيالين، ولمّا انتقل إلى المدينة انضمّ إلى فرقة إحيا بوقدير وقضى مع هذه الفرقة حوالي 13 سنة، استفاد خلالها من 46 خرجة إلى مختلف دول العالم، كانت قبيلتا ئداونيضيف وئدازدّوت أهم فضاء فنّي له حيث كان يقضي فيها معظم أيام الصيف، تجوّل في معظم قبائل الأطلس الصغير، كما أن داره صارت بتاكموت موئلا لشعراء أحواش، وقد حضر في ملتقيات شعراء أسايس كما انخرط في الرابطة الوطنية منذ تأسيسها.

ⴰⵃⵕⴰⴱⵏ

ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵖ ⵜ ⵉⵄⵍⵇ ⵕⴱⴱⵉ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵜ ⵉⵅⵍⵍⵓ ⵢⴰⵏ
ⴰⵜⵉ ⵏⵏⵉⵢⵜ ⴰ ⵉⵙⵙⵉⴳⵯⵓⵜ ⵢⴰⵏ ⵉⵔⴰⵏ ⵍⵅⵉⵔ
ⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵍⵀⵏⴰ ⵉⵛⵡⴰ ⵖ ⵍⵎⵙⴰⵢⵍ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵏⵜ
ⵡⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵏⵥⵕⴰ ⵏⵏ ⴹⴹⵕⴱⴰⵜ ⵖ ⵓⵚⵍⵍⴰⵍ ⵏ ⵡⵉⵢⵢ
ⴰⵡⵉ ⵛⵛⵓⵕ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵍⵃⵕⴱⵓⵏ ⵔⴰ ⵢⴽ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵏⵎⵎⴰⵍ
ⴰ ⵀⴰ ⵎⵉⵄⵕⴰ ⴰⵔ ⵜⴼⵓⴼⴼⵓⵔ ⵍⴰⵇ ⴰⵙⵏⵜ ⴰⵍⵉⵎ
ⵓⵍⴰ ⵜⵓⵎⵥⵉⵏ ⵉⴳⵉⴳⵉⵍⵏ ⴰⵔ ⵓⴽⴰⵏ ⴰⵍⵍⴰⵏ
ⵓⵍⴰ ⵜⵓⵏⵙ ⵀⴰ ⴽⴰⴱⴰⴱ ⵏⵙ ⵉⵍⵍⴰ ⵣ ⵍⴽⴰⵏⵓⵏ
ⵍⵢⴰⵎⴰⵏ ⵀⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵉⴳⴰ ⵉⵣⴰⵙⵙⵏ ⵣ ⵓⵚⵍⵍⴰⵍ
ⵉⴹⵕ ⵏⵏ ⵍⵃⵊⵉⵏ ⵉⵖⴰⴱ ⴰⵙ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵜ ⵉⵙⵙⵏⵡⴰⵏ
ⵎⴰⵎⵏⴽ ⴰⵙ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵏⵙⵎⴷ ⴰⵖⵔⵓⵎ ⵉ ⵜⵎⴽⴰⵍⵉⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵢⴰⵖ ⵊⵊⵓⵃ ⵉⵙⵎⵓⵏ ⴷ ⵜⵉⵖⵉⵎⵉⵜ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵓⵎⵄⵓⴹ ⵉⴼⴼⴰ ⴷ ⵉⵙⵎⵓⵙⵙ ⵍⵚⵕⵟⴰⵄ ⵏⵙ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⴷ ⴽⴰ ⵉⵏⵎⴰⴳⴳⴰⵔ ⵉⵙⵙⵍⴽⵎ ⵜ ⴰⴽⴰⵍ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⵎⵢⴰⵔⵏ ⴰⴷ ⵙⵙⵏⴷⵓⵏ ⵖ ⵉⵍⵎ ⵏ ⵓⴽⵏⵟⵓⵕ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⴹⴹⵓⵕ ⴰⴷ ⵉⵣⵍ ⴰⵙ ⵓⵖⵓ ⵜⵉⵔⵎⵜ
ⴰ ⵏⵉⵜ ⵉⴼⴼⵔⵉ ⵄⵄⵉⵣ ⴰⴷ ⵏⵉⵖ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵓⵔ ⵉⴽⵎⵎⵉⵍ
ⵍⵃⵉⵔⴰⵚ ⵀⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵍⵃⴰⵚⵍ ⵓⵔ ⵜⵏ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵟⵟⴰⵣ
ⵡⴰ ⵏⵏⴰⵏ ⴰⵙ ⵏⵉⵜ ⴰⴹⵓ ⴷ ⵉⵣⴽ ⴰⵡⵏⵜ ⴰ ⵜⵉⵍⵍⴰⵙ
ⴰ ⵣⵉⵍⵉⵄⵟⵉⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⴳⴰⵏ ⵍⵃⴰⵚⵍ ⵣⵍⵍⴰⴽ
ⴰ ⵎⵉⵛⵛ ⴰⵥⵕⵓ ⵓⵔ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵉⵔⴰⵔ ⴰⴽⴰⵍ ⵏⵏⵓⵏ
ⴰⵚⵔⵢⴰⵏ ⴷ ⵍⴱⴰⵕⵓⴹ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⵓⵣⵓⵙ ⵏⴽ
ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵍ ⵣ ⵓⵣⵍⵍⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⴰⵅ ⵉⵟⵟⵍ ⵢⴰⵜ
ⵉⴳⴰ ⵏⵏ ⵉⴱⵍⵉⵙ ⴰ ⵜⵓⴳⴳⵯⴰⵙ ⵢⴰⵙⵉ ⴰⴽⵓⵕⴰⵢ
ⴰⵜⵉ ⵏⴳⵔ ⵍⵡⴰⵔⵜⴰ ⴰⵖ ⴰⵏⵅ ⵉⵣⵣⴰⵍ ⵉⵏⴰⵖⴰⵏ
ⴰⵢⵜⵎⴰⵜⵏ ⴰⵙ ⵉⵙⵉⴳⴳⵉⵍ ⵢⴰⵏ ⵉⵔⴰⵏ ⵍⵅⵉⵔ.

أعـڕابـن

أوال يغ ت يصلح ڕبّي ور را ت يخلّو يان
أتي نّييت أ يسّيكُّوت يان يران لخير
أ ها نّ لهنا يشوا غ لمسايل كولّو تنت
وا ها نّ نژڕا نّ ضّڕبات غ وقلّال ن ويي
أوي شّوڕ ها نّ لعڕبون را يك ت ينّ تمّال
أ ها ميصرا أر تزوزّور لاح أسنت أليم
ولا تومژين يكّيكّيلن أر وكان ألّان
ولا تونس ها كاباب نس يلّا ف لكانون
ليامان ها ت ينّ يكّا يفاسّن ف وقلّال
يضرّ نّ لعجين يغاب أس والّي ت يسّنوان
مامنك أس راد د نسمد أغروم ئـ تمكالين
أ والّي ياغ جّوع يسمون د تيغيميت
أ يان ومصوض يزّا د يسموسّ لقڕطاص نس
أ وانّا د كا ينماكّار يسّلكم ت أكال
ها نّ ميارن أد سّندون غ يلم ن وكنطوڕ
أ والايني ضّوڕ أد يفل أس وغو تيرمت
أ نيت يزّري صّيف أد نيغ ت أكُّ ور يكمّيل
لعيراق ها ت ينّ لعاقل ور تن أكُّ يطّاف
وا نّان أس نيت أضو د يفك أونت أ تيلّاس
أ فيليصطين ڕبّي كّان لعاقل فلّاك
أ ميشّ أژڕو ور راد د يرار أكال نّون
أقريان د لباڕوض ور يلّي غ وفوس نك
أ ياوال ف وفلّا ها نّ ور أخ يطّل يات
يكّا نّ يبليس أ توكُّاس ياسي أكوڕاي
أتي نكّر لواراتا أغ أنخ يفّال يناغان
أيتماتن أس يسيكّيل يان يران لخير.

****

-55-

ⵙⴰⵄⵉⴷ ⵉⴷ ⴱⵏⵏⴰⵚⵕ

ⵜⵉⵣⵏⵉⵜ

سعيد إد بناصر

ولد بإغير ملّولن ناحية تيزنيت سنة 1953، وبعد وصوله إلى القسم الخامس بالمدرسة العصرية انفصل عن التعلّم، وشبّ كممارس للخدمات التجارية، دخل إلى فضاء الإبداع الشعري متأثرا بأشهر فنّاني تيرويسا بمنطقة سوس، حيث حفظ مقطوعاتهم الشعرية، ولم يلبث أن شرع في الكتابة الشعرية في سنة 1972، وصار له سجال طويل مع أبرز شعراء منطقة سوس الممارسين في فن تيرويسا، كما أن له باعا في المجموعات الغنائية بمنطقة أكَادير في فن تازنزارت، أصدر ديوانه «أكَـليف أزلماض» واسس جمعية مهتمة بالتراث الفني بأيت ملول. ورغم أنه ليس من شعراء أحواش فقد طلب مني أن أحشره في هذا الديوان احتراما له لهؤلاء الشعراء.

ⴰⵎⵔⵔⵉⵇ

ⵡⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵔⴰⴷ ⴷ ⴰⵡⵉⴳ ⵉⵎⵉⵙⵙ ⵏⴳⵔ ⵉⵎⴰⵙⵙⵏ
ⵓⴽⴰⵏ ⵏⵜⵜⴽⵔ ⵅ ⵕⴱⴱⵉ ⴰⵔ ⵏⴽⴽⵔⵣ ⵉⴳⵔⴰⵏ ⵉⵏⵡ
ⴰ ⵡⴰⵔⵔ(ⵉ) ⴰⵖ ⵢⵓⵔⵓⵏ ⴰ ⵢⴰⴷ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⴰⵎⵥ ⴰⵔⵔⴰⵜⵏ
ⵎⵔⵉⵏ ⴰⵏⵖ ⵉⵡⵜⵜⴰ ⵅⵔⵏ ⵉⵢⵉ ⴷ ⵉⴳⵔ ⵉⵟⵔⵚⵏ
ⴰ ⴱⵉⴷⴷⴰⵜ ⵅ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⴽ ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵔⵔⴰⵏ ⵖ ⵓⵛⴰⵜⵜⵔ
ⴰⵙⴳⴳⵯⴰⵙ ⴽⵉⵖ ⵉⴹⴹⴰⵟ ⵓⵎⵔⵣⵓⵚ ⵉⵖ ⴷ ⵉⵙⵙⵓⵜⵔ
ⵟⵟⴰⵄ ⵏ ⵉⵔⵉⵎⵎ ⴰⵙ ⵍⵍⴰⵏ ⵉⴳⴰ ⵜ ⵔⵄⵛⵓⵕ ⵏⵙ
ⴰⵎⵉⵏ ⴰⴷ ⴷ ⵢⴰⵔⵔ ⵕⴱⴱⵉ ⵉⵎⵎⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⴽⵔⵣⵏ ⵉⵔⴰⵎⵎⵏ
ⴰ ⵡⴰⴳⴰ ⴷ ⴽⴰ ⵉⴽⴽⴰⵜ ⵉⴳⵍⵍⴰ ⵙ ⵓⵏⵥⴰⵕ ⵏⵙ
ⵓⵔⵔⴰⵀ ⵓⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⵜⵜⴰⵙⵉ ⵜⴰⵇⵇⴰⵢⵜ ⴰⵢⵀⴰⵢⵢⴰ ⵏⵙ
ⵍⵍⴰⵏ ⴰⵖ ⵖⵡⵉⴷ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉⵏ ⴰⵡⴰⵔ ⵉⴳ ⴷ ⵓⵎⵉⵢⵏ
ⴰ ⵜⵓⵥⵥⵓⵎⵜ ⵏ ⵜⵎⵥⵉⵜ ⴰⴽⵓⵣ ⴰⵖ ⵉⵎⴳⵔ ⵟⵟⴰⴱⵜ
ⵉⵏⵉⵏ ⴰⵖ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ ⵏⴳⴰ ⴽⵕⵥⴰⵥ ⵏⴳ ⵜⴰⵙⵙⴰⵙⵜ
ⴰⵔ ⵎⵎⴰⵔⵖ ⵓⴱⴱⵉⵛ ⵉ ⵣⵣⵉⵜ ⵔⵄⵓⴷ ⵏⴳ ⵜ ⵉ ⵢⵉⵔⵙ
ⴰ ⵙⵓⵔ ⵏⵛⵛ ⵅⵔⵔⴰⵙ ⴰⵎⵔⵔⵉⵇ ⵉⵖ ⴰⵖ ⴳⵉⵙ ⵉⴹⵕ
ⵏⵎⴰⴳⴳⴰⵔⵏ ⵉⴱⵓⵖⴰⵖ ⴰⴽⵙⵙⴰⴱ ⵉⴳⵔⵉ ⵜⴰⵜⵜⵏ
ⵍⵍⴰⵏ ⴰⵙ ⵔⴰⴷ ⴷⵉⴽ ⵏⵎⵓⵏ ⵉⵙⵙⵔⴷ ⵉ ⵔⵄⵎⵎⴰⵕⵜ
ⵉⵖⴰⵔ ⵉⵣ ⴷ ⵔⵎⵓⵚⵉⴱⴱⴰ (ⵏ) ⵔⵄⵡⵉⵏ ⵉⴳⴳⵯⵣ ⵉⴽⴰⵔⵏ
ⴰⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵢⴰⵔⵓ ⵡⴰⵖⴰⴹ ⵉⵛⵛ ⴰⵙ ⵉⵎⵥⵉⵢ ⵏⵙ
ⵓⵟⵟⴰⵏ ⴰⴳ ⵅⵔⵔⴰⴽ ⴰⵔⴰ ⴰⵎⵥⵥⵓⵖ ⴰ ⵔⴳⵉⵏⵓⵏⵜ
ⵔⴱⴰⵣ ⵓⵔ ⴳⵉⵏ ⴳⵯⵎⴰⵙ ⵏ ⴱⵉⴱⵉ ⵜⴰⵊⵊⵜ ⴰⵏⵓⵅⵔ
ⴰ ⵀⴰ ⵍ ⵓⵔ ⴳⵉⵏ ⴳⵯⵎⴰⵙ ⵓⵔⴰ ⴳⴰⵏ ⴰⵇⴱⵉⵔ ⵏⵙ
ⵉⵙ ⴰⵖ ⴰⵙ ⴽⴰ ⵜⵜⴰⵙⵉⵏ ⵔⵎⵉⵄⴰⴷ ⴰⵔ ⴷ ⵉⵚⵉⵢⵢⵔ
ⴰ ⵡⴰⵔⵔ(ⵉ) ⴰⵏⵖ ⵉⵍⵍⴰⵏ ⵏⴳⴰ ⴰⵏⴰⵅⴰⵔ ⵉⵖⵥⴰⵏ ⴰⵏⵖ
ⵓⵔ ⴰⴽ ⴰ ⴳⵯⵎⴰ ⴳⵉⵖ ⵔⵄⵉⴱ ⵏⵅⵔⴽ ⵉ ⵓⴳⴰⵢⵢⵓ ⵏⵡ
ⵕⵀⵏⵖ ⵉⴳⵅ ⵉⵏⵓ ⵏⵛⵛⴰ ⴰⵜⵉⴳ ⵉ ⵓⴳⴰⵢⵢⵓ ⵏⵡ
ⴰ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵔⴰⴷ ⴷ ⴰⵡⵉⵖ ⴰⵜⵉⴳ ⴰ ⵎⵉ ⵜⵜⵀⵎⵎⵉⵎⵖ.

أمـرّيـق

وا بيسمي راد د أويخ ڭيسّ نڭر ڭاسّن
وكان نتّكل ف رٍبّي أر نڭرز يڭران ينو
أ والّي أغ يورون أ ياد ينّان أمڗ أرّاتن
ملين أنغ يوتّا فلن ييي د يڭر يصلحن
أ بيدّات ف وضارٍ نك أ يان يلّان غ وشاتّل
أسڭُّاس كيغ يطّاص ومرزوح يغ د يسّوتل
صّاع ن يليمّ أس نّان يڭا ت لعشورٍ نس
أمين أد د يالّ رٍبّي ڭمّا يان يكرزن يلامّن
أ واخا د كا يڭّات يڭنّا س ونڗارٍ نس
ولّاه ور ڭيس يتّاسي تاڨّايت أيهايا نس
نّان أغ غويد يتّينين أوال يڭ د وميين
أ توڗّومت ن ڭمڗيت أكوز أغ ڭمڭر صّابت
ينين أغ وبياض نڭا كرٍڗاڗ نڭ تاسّاست
أر مّالغ وبّيش ئـ زّيت لعود نڭ ت ئـ ييلس
أ سول نشّ فلّاس أمرّيق يغ أغ ڭيس يضرٍ
ڭاڭّارن يبوغاغ أكسّاب يڭلي تاتّن
نّان أس راد ديك ڭون يسّلد ئـ لعمّارٍت
يغال يز د لموحيبّا ن لعوين يڭُّز يكالن
أد وكان يارو واغاض يشّ أس ڭمڗيي نس
وصّان أخ فلّاك أرا أمڗّوغ أ لڭينونت
لباز ور ڭين ڭُماس ن بيبي تاجّت أنوفل
أ ها نّ ور ڭين ڭُماس ولا ڭان أقبيل نس
يس أغ أس كا تّاسين لميعاد أر د يحييل
أ والّي أنغ ينّان نڭا أنافال يغڗان أنغ
ور أك أ ڭُما ڭيغ لعيب نفرك ئـ وڭايو نو
رٍهنغ يخف ينو نشّا أتيڭ ئـ وڭايو نو
أ ماني غ راد د أويغ أتيڭ أ مي تّهمّيمغ.

****

-56-
ⵄⴱⴷⵍⵍⴰⵀ ⴳⴳⵯ ⵉⵙⴰⴼⴼⵏ
ⵉⵙⴰⴼⴼⵏ ⵏ ⴰⵢⵜ ⵀⴰⵔⵓⵏ – ⵜⴰⵎⴰ
عبدالله ك إسافن

ولد بقرية تاكموت ن وامران بقبيلة ئسافن ن أيت هارون سنة 1973، واستمرّ في دراسته إلى أن بلغ الدراسة الإعدادية، وبعد ذلك التحق بمجال الخدمات التجارية بالدار البيضاء، تأثر منذ ذلك الحين بشعراء مرموقين لديه منهم الشاعر محند أكرام الزكراوي وعبد الكبير شوهاد والحاج علي ؤبيضني وغيرهم، كما أسس مع رفقائه فرقة شباب ئسافّن لفن أهناقار وكان قد انضمّ قبلها بفرقة تيزغت، ساهم في إنجاح الملتقى الأول لشعراء أسايس سنة 2017.

ⵜⵉⵎⵉⵣⴰⵔ ⵏ ⵓⵎⴰⵔⴳ

ⴰⵙⵉⴼ ⵏ ⵉⵙⵙⴰⴼⵏ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵉⵙ ⵉⴳⴰ ⴰⵇⴱⵉⵍ ⵉⵏⵡ
ⵖⵉⵏⵏ ⴰⵅ ⴷ ⵉⵍⵓⵍ ⵍⵀⴰⵡⴰ ⵖⵉⴽⴰⵏⵏ ⴷ ⵓⵎⴰⵔⴳ
ⵢⵉⵍⵉ ⵍⵅⵉⵔ ⴷ ⵡⴰⵎⴰⵏ ⴷⴷⵔⵏ ⵍⵃⵢⵓⵏ ⵏⵙ
ⴰ ⵢⴰⵙⵉⴼ ⵏ ⵜⴰⵟⴰ ⵔⴰ ⴽ ⵏⵎⵍ ⵍⴰⵅⴱⴰⵕ ⵏⵙ
ⴰ ⵜ ⵓⴽⴰⵏ ⵍⴽⵎⵅ ⵏⵜⵜⵓ ⴳⵉⵙⵏ ⵍⴰⵀⵎⵓⵎ ⵉⵏⵡ
ⵉⵍⵉⵏ ⴳⵉⵙ ⵉⵙⵓⵢⴰⵙ ⵍⵀⵉⵎⵎⴰ ⵜⴳⴰ ⵜⵉⵏⵙ
ⵖⵉⵏⵏ ⴰⵖ ⵙⵓⵍ ⵣⵕⵉⵅ ⵍⵀⴰⵡⴰ ⵙ ⵍⵃⴱⴰⵕ ⵏⵙ
ⵉⵎⵓⵏ ⴳⵉⵙ ⴱⵓⵢⵟⵟⵓⴱ ⴷ ⵍⵊⵉⵀⵍ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵍⵊⵓⵀⵕ
ⴰ ⵢⴰⵙⵉⴼ ⵏ ⵜⴳⵎⵓⵜ ⵉⵖ ⵍⴽⵎⵅ ⵉⴳⵔⴰⵏ ⵏⵙ
ⵓⵔ ⵏⵙⵅⵉ ⴰ ⵜⵏ ⵏⴼⴼⴰⵖ ⵢⴰⴽ ⵍⵀⴰⵡⴰ ⵜⴳⴰ ⵜⵉⵏⵙ
ⴰ ⴳⴳⵯ ⵉⴷⴰ ⵓⴽⵏⵙⵓⵙ ⵍⴱⵕⵊ ⵏⴽ ⴰⵖ ⴰ ⵜⵜⴳⵉⵡⵉⵔⵅ
ⴰⵜⵉ ⵍⵍⴰⵏ ⴼ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ ⵉⵏⵏⴰ ⴷ ⵏⴽⴽⴰ ⵣⵔⵉⵅ ⵉⵙⵙⵏ
ⵡⴰ ⵖⵉⵏⵏ ⴰⵖ ⵏⵎⴰⵇⵇⴰⵔⵏ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵖ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ
ⵜⵉⵎⵉⴹⵉ ⴷ ⵓⵣⴳⵏ ⴰ ⵉⵖⵓⵢⵏ ⴰⵙⴰⴼⵓ ⵣⵣⴳⵔⵏ ⵉⵙⵙⵏ
ⴰⴽⴰⵍ ⵏ ⵉⴱⵔⴽⴰⴽ ⵏⵜⵜⴰⵏ ⵉⴳⴰ ⴰⴷⵊⴰⵕ ⵏⵅ
ⴰⵙⵙ ⵏⵏⴰ ⵏⴼⴰⵇ ⵉ ⴼⴰⴷ (ⵏ) ⵓⵛⵡⴰⴻ ⵏⵣⵣⴳⵔ ⵙⵔⵙⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵓⵎⵅⵍⵍⴼ ⵢⵓⴼ ⵉⵢ(ⵉ) ⵜⴰⴳⵓⵏⵉ ⵏ ⵃⴰⵎⴰⵢⵏ.

تيميـزار ن ومارڭ

أسيف ن يسّافن ها نّ يس يڭا أقبيل ينو
غينّ أخ د يلول لهاوا غيكانّ د ومارڭ
ييلي لخيرِ د وامان دّرن لعيون نس
أ ياسيف ن تاطا را ك نمل لاخبارِ نس
أ ت وكان لكمخ نتّو ڭيسن لاهموم ينو
يلين ڭيس يسوياس لهيمّا تڭا تينّس
غينّ أغ سول ژرِيخ لهاوا س لعبارِ نس
يمون ڭيس بويطّوب د لجيهل زون د لجوهـرِ
أ ياسيف ن تڭموت يغ لكمخ يڭران نس
ور نسخي أ تن نقّاغ ياك لهاوا تڭا تينّس
أ ڭٌ يدا وكنسوس لبرِج نك أغ أ تّڭيويرخ
أتي لّان ف وغاراس ينّا د نكّا زريخ يسّن
وا غينّ أغ نماقّارن يمديازن غ تيفاوت
تيميضي د وزڭن أ يغوين أسافو زّڭرن يسّن
أكال ن ييركاك نتّان يڭا أدجارِ نخ
أسّ نّا نفاق ئـ فاد ن وحواش نزّڭر سرسن
أ يان ومخلّف يوف يّي تاڭوني ن عامايِن.

****

-57-
ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴱⴰⵔⴽⴰ
ⵜⵉⵙⵙⵉⵏⵜ - ⵜⴰⵟⴰ
محمد باركا

ولد في سنة 1977 بقرية تانزيضا قبيلة تيسينت، وتتلمذ في المدرسة العصرية لكنه لم يكمل مشواره بها، بعد أن شبّ تأثر بالجوّ الفني بمنطقته وبالخصوص بالشاعر أحمد ؤمالك، ومنذ ذلك الحين انصرف إلى أحواش وبدأ منذ بلوغه ال 20 من عمره يساجل شعراء منطقته، ولم يلبث أن تجوذل في القبائل المجاورة.

ⵐⵖⵐⴰ

ⴱⴰ ⵟⴰ ⵇⴰⵖ ⵔⴰ ⵏⵝⴷⵓ ⵖ ⵓⵀⵔⴰⵏ ⵏⴳ ⵏⵛⵓⴱⵕ ⵍ
ⵟⴰ ⵍ ⵉⴳⴰ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⴰⴷ ⵐⵟⵎⵎ ⴽⵓⵐⵐⵓ ⵙⵙⵓⵜⵐⵏ ⴰⴳ
ⵉⵖ ⵓⵔ ⵉⵐⵐⵉ ⴲⴲⵝⵕ ⵉⴳⴳⵓⵜⵏ ⵉⵛⵤⵤⴰ ⴰ ⵜⵐⴽⵎⵜ
ⴱⴰⴳⴳⴰ ⴷⴰ ⵓⴽⴰⵏ ⵜⵜⴰⵣⵣⴰⵐⵜ ⴰⵔ ⴷ ⴽⴰ ⵜⵕⵎⵉⵜ
ⴰⵇⵍ(ⴰ) ⴰⴱⵏ ⵉⴽⵜⵝ ⵕⵝⵝⵉ ⵏⴽ ⴰ ⵀⵐⵐⴰⴽ ⵉⵐⵐⴰⵏ
ⵏⴰⵍⵉ ⵙⵙⵓⵤ ⵏ ⵓⵣⵎⵣ ⴰⴷ ⵉⴹⵜⴰⵊⵊⴰ ⵕⴰⴲⵐⵎⴰⵐ
ⴽⵓ ⵜⴰⵖⴰⴱⵙⴰ ⵜⵐⵐⴰ ⴳⵉⵙ ⵜⵉⵐⵉ ⵜⵜⵉⴽⵉⵜ ⵏⵙ
ⵐⵎⵙⴽⵉⵏ ⴽⴰ ⴷ ⴰⵖ ⵉⵝⵝⵉⵏ ⵜⴰⵙⴰ ⵙⵙⴰⵐⵐⴰⵏ ⴰⵅ
ⵎⴰⵎⵏⴽ ⴰ ⵉⴹⵓⵐ ⵏⵜⵜⴰ ⴰⴷ ⵉⵜⵜⵙⵓⵤ ⵓⵔ ⵉⵐⵐⵉ ⵇⴰⵜ
ⵎⵤⴰⵔ ⵓⴽⴰⵏ ⵙⵙⵓⴷⴰⵏ ⵜⵉⵐⵐⴰⵙ ⴰⵖ ⵐⵐⴰⵏ
ⵉⴳ ⴰⵙ ⵐⵖⵐⴰ ⴰⵙⴰⵀⵓ ⴷⴰ ⵜ ⵏⵉⵜ ⵉⵙⵎⵐⵉⵐⵐⵉ
ⴰ ⵝⵓ ⵜⴰⵔⴱⴰ ⵟⴰⵜⵉ ⴳⴳⵓⵜⵏ ⴰⵙ ⵐⵎⴰⴲⴰⵕⵉⵀ
ⴰ ⵏⵉⵜ ⵉⵤⵤⵄⵓ ⵜⴰⴲⴲⴰⵝⵓⵏⵜ ⵉⵅⴲⴲⵓ ⴱⴰⵜⴰⵇ
ⵉⵖ ⴰ ⵉⵙⴰⴱⴰⵐ ⵙ ⵜⴰⴷⴰ ⵉⵐⴰ ⵉⵐⴽⵎ ⵜⵜ ⵐⴹⴰⵐ
ⵉⵖ ⴰⵙⵏⵜ ⴷ ⵇⵉⴱⵉ ⵐⵉⵥⴰⵕ ⵙ ⴰⵙ ⵜⵔⴰ ⴱⵉⵙⵙ ⵙⵉⵏ
ⵙⵓⵐ ⵐⵀⴰⴽⵜⵓⵔⴰⵜ ⵏ ⵄⵄⵓⴱ ⴱⴰⵐⴰ ⵜⵉ(ⵏ) ⴱⴰⵎⴰⵏ
ⵉⵖ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵅⴷⵎ ⵟⴰⵜⵉ ⵊⵊⵓⵕⵏⵉ ⵓⵔ ⵜⵏ ⴽⴰⵀⴰⵏ
ⴱⴰ ⵍⵉⵖ ⴰⴽ ⴰⵣⵎⵣ ⴰⴷ ⵐⵖⵐⴰ ⵉⴽⴽⵉⵙ ⴰⴱⴰⵐ
ⴰⵜⵉ ⵖⴰⵇⴷⴰ ⵏⵥⵕⴰ ⵖ ⵉⵅⵀ ⵉⵏⵓ ⴽⴰ ⵙ ⵍⵉⵅ
ⵐⴹⴰⴲⵓⵐ ⴰ ⵉⵤⵤⵏⵃⴰ ⵐⵅⵐⵤ ⵉⴽⴽ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰ ⵏⵉⵜ ⵉⵙⵎⵓⵤⵐ ⴱⵉⴷⴰ ⵍ ⴽⵓⵐⵐⵓ ⵤⵤⴰⵎⴰⵏⵉⵏ
ⴰ ⵟⴰ ⵍ ⵓⵙⵙⵀⴰⵏ ⵏ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵔⴰ ⵜⵏ ⴽⵓⵐⵐⵓ ⵐⴰⴹ
ⴰⵜⵉ ⵐⴰⵃⵎⴰⵐ ⵏⴽ ⴰⴷ ⴷⴰⵔⴽ ⴰ ⵇⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵍ
ⴰⵎⴽ ⵍⴰ ⵜⴳⵉⵜ ⴰ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵜⵓⵀ ⵉⵇⵉ ⵐⵉⵅⵔⵜ
ⵔⴰ ⴳⵉⵙ ⵏⴽⵔⵣ ⵏⵥⵓⵣⵣⵔ ⵏⴰⵙⵉ ⵙⵓⵐ ⵐⵅⵉⵔ
ⵉⵎⵎⴰ ⵐⵉⵅⵔⵜ ⵜⵜⵔⴳⵐⵏ ⵀⵐⵐⴰⵅ ⵉⵀⵐⴱⴰⵏ
ⴰⵇⵍⵍⴰ ⵍ ⵜⵉⴱⵉⵜ ⴰⴷ ⴷⴰⵔⴽ ⵓⴽⴰⵏ ⵉⵜⵜⵉⵐⵉⵏ.

لـغـلا

وا ها ياغ را نبدو غ وفران نخ نشوورٍ نّ
ها نّ يڭا زّمان أد لهمّ كولّو سّوتلن أخ
يغ ور يلّي صّبرٍ يڭّوتن يشقّا أ تلكمت
واخّا دا وكان تّازّالت أر د كا ترٍميت
أينّا أون يكتب رٍبّي نك أ فلّاك يلّان
نانّي سّوق ن وزمز أد يحتاجّا رٍاصلمال
كو تاغاوسا تلّا ڭيس تيلي تّيكيت نس
لمسكين كا د أغ يبّين تاسا سّالّان أخ
مامنك أ يحول نتّا أد يتّسوق ور يلّي يات
مقار وكان سّودان تيلّاس أغ لّان
يڭ أس لغلا أسافو دا ت نيت يسمليلّي
أ بو تاروا هاتي ڭّوتن أس لماصارٍيف
أ نيت يقّضو تاصّابونت يخصّو واتاي
يغ أ يساوال س تادا يلا يلكم تّ لحال
يغ أسنت د ييوي ليژارٍ س أس ترا ويسّ سين
سول لفاكتورات ن ضّووْ والا تين وامان
يغ أڭّ يخدم هاتي جّورٍني ور تن كافان
وا نّيغ أك أزمز أد لغلا يكّيس أوال
أتي غايدا نژرٍا غ يخف ينو كا س نّيخ
لحاصول أ يقّنعا لخلق يڭ أغاراس
أ نيت يسموقل ويدا نّ كولّو قّامانين
أ ها نّ وسّفان ن تودرت را تن كولّو لاح
أتي لاعمال نك أد دارك أ يان ور يسّنّ
أمك نّا تكّيت أ تودرت توف ييي ليخرت
را ڭيس نكرز نزوزّر ناسي سول لخير
يمّا ليخرت تّرڭلن فلّاخ يفلوان
أينّا نّ تيويت أد دارك وكان يتّيلين.

****

-58-

ⵎⴱⴰⵔⴽ ⵓⵍⵇⵍⵓⵛ

ⵢⴱⴰⵀⵀⵏ - ⵜⴰⵎⴰ

مبارك لقلوش

من مواليد سنة 1974 بدوار تلوين اسافن، المهنة مدير مؤسسة ومنذ الصغر وأتذكر أول مرة نظمت في أسايس امام الملاء سنة 1988 في عرس الاخوال، بدأت بنظم الشعر «تمسوسين» في احواش الفتيات، بعد ذلك انخرطت في نظم الشعر في أحواش الرجال، أمّا الشعراء الذين نظمت معهم الشعرفهم: الحاج بضني-ابراهيم اوبلا-سي الحسين اوطاطا-الصويري-اكرام مولاي امحمد-داموح اوعلي اغرم-دا سعيد اغزرا- عبد الكبير شوهاد- ايكاسي - سي بورحيم - عبد الرحمان اودوساون - علي يحيا - ابراهيم الديب - الحبيب ازكري - محمد ترسيان، انخرطت في الرابطة الوطنية لشعراء أسايس منذ تأسيسها وانا عضو في مجلسها الإداري.

ⵣⵣⵔⴱ

ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴼⴽ ⵍⵅⴰⵟⵕ ⵓⵔ ⵏⵥⴹⴰⵕ ⵉ ⵣⵣⵔⴱ
ⵖⴰⴷ ⴳⵉⵙ ⵜⴳⵉⵜ ⵏ ⵜⵡⴰⴷⴰ ⵓⵔ ⵉⵢ(ⵉ) ⵜⵄⵊⵉⴱ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⵍ ⵎⴰⵕⵚ ⴰⴷ ⴷ ⵉⴼⴼⵖ ⵓⵊⴷⴷⵉⴳ
ⴰⵏⵥⴰⵕ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⵍ ⴰⵙ ⵉⵕⵥⵎ ⵢⵉⴳⴳⵉⴳ
ⵍⵃⵎⴰ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⵍ ⴰⵔ ⴷ ⵉⴼⴼⵖ ⵓⵚⵎⵎⵉⴹ
ⴰⵣⴰⵍ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⵍ ⴰⵔ ⴷ ⵉⵣⵔⵉ ⵢⵉⴹ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵇⵇⵍⵏ ⵍⵄⵛⵓⵕ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵏⴽⵔⵣ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵇⵇⵍⵏ ⵉⴷ ⵡⴰⵛⵛ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵏⵣⵣⵏⵣ
ⴰⴹⴰⵕ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⵍ ⴰ ⵏⴰⵙⵉ ⵡⴰⵢⵢⴰⴹ
ⴰⵡⴰⵍ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵇⵇⵍ ⴰ ⵏⵉⵏⵉ ⵡⴰⵢⵢⴰⴹ
ⵖⵉⵍ ⵖ ⴰⵔ ⵜⵜⴰⵣⵣⴰⵍⵜ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵢⴰ ⵏⴽⵯⵜⵉ ⴷ
ⵉⵙ ⵙⵔⵡⵏⵜ ⵉⵇⵇⵍ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵓⵔ ⵉⴳⵉⵏ ⵖⵉⴷ
ⵎⴰ ⵜⵃⵉⵢⵢⵍⵜ ⴰ ⵍⵉⵏⵙ ⵉ ⵡⴰⵙⵙ ⵏ ⵍⵃⵙⴰⴱ
ⴰ ⵜⵜⴰⵡⴰⵅⵉⵔ ⵏ ⵣⵣⵎⴰⵏ ⵏⵜⵜⴰⵜ ⴰ ⵢⴰⴷ
ⵇⵇⵉⵍ ⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵎⴰ ⵙ ⵏⵇⵇⵍ ⵅ ⵓⵙⵙⴰⵏ ⴰⴷ.

زّرب

دّونيت فك لخاطرٍ ور نژضارٍ ئـ زّرب
غاد ڭيس تڭيت ن توادا ور يّي تعجيب
ور سول يقّل مارٍص أد د يفّغ وجدّيڭ
أنژارٍ ور سول يقّل أس يرٍژم ييڭّيڭ
لحما ور سول يقّل أر د يفّغ وصمّيض
أزال ور سول يقّل أر د يزري ييض
ور سول قّلن لعشورٍ أ تنت نكرز
ور سول قّلن يد واشّ أ تنت نزّنز
أضارٍ ور سول يقّل أ ناسي واياض
أوال ور سول يقّل أ نيني واياض
غيل غ أر تّازّالت أ دّونيا نكُتي د
يس سرونت يقّل غيلّي ور يڭين غيد
ما تحييلت أ لينس ئـ واسّ ن لحساب
أ تّاواخير ن زّمان نتّات أ ياد
قّيل أ رٍبّي ما س نقّل خ وسّان أد.

****

-59-
ⵃⴷⴰⵍⵍⴰⵀ ⴷⵉ ⵍⵃⵇⴷⵢ
ⵢⴰⵏ ⵓⵣⴰⵍⴰ
عبد اللّه بن العربي

ولد في ئداوخالد بقبيلة ئكّنان ناحية تافراوت سنة 1969، لم يدم طويلا في المسار التعليمي كغيره من شباب الجيوب الجبلية البعيدة عن المدينة، ولمّا شبّ استهواه أسايس، فبدأ ينشد مقطوعات بأحواش تيعيالين ببلدته، حيث نشط هذا الفنّ آنذاك، وفي بداية التسعينات شرع في مساجلة الشعراء وتجوّل في عدد من القبائل المجاورة وساجل أبرز الشعراء الذين وجدهم في الساحة، شارك في أنشطة الرابطة الوطنية لشعراء أسايس، وهو عضو عامل فيها، ورغم انشغاله بمشروعه التجاري إلا أنه كثيرا ما يعطي وقته للحضور في أسايس إذ ينتمي إلى أسرة عاشقة لفنون أحواش.

ⴰⴽⵛⵛⵓⴹ

ⴰⵔ ⵢⴰⴷ ⴷⴰ ⵜⵜⵉⵍⵉ ⵜⵎⵉⴷⵉ ⵖ ⵓⴽⵛⵛⵓⴹ
ⴷⴰ ⵜⵜⵍⵓⵃ ⵉⵙⵓⵜⴰⵔ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵍⵓⵃ ⵉⵖⵔⴱⴰⵏ
ⴰ ⵎⵉ ⵏⵜⵜⵄⵊⵊⴰⴱ ⵏⴽⴽⵉ ⴰⵔ ⴰⵙ ⵏⵜⵜⵓⵀⴰⵎ
ⴷ ⵉⵙ ⴰⵔ ⵜⵜⵍⵓⵃ ⵉⵔⴳⴰⵣⵏ ⵖ ⵓⵣⵎⵣ ⴰⴷ
ⴳⴰⵔ ⴰⵎⴷⵍⵓ ⵛⵛⵔⵇ ⵀⴰ ⵜ ⵉⵏⵏ ⵉⴽⴽⴰ ⵜ ⵉⴷ
ⵙⵉⴷⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⵙⵙⴰⵏⴼⴰⵜ ⴰⵏⵖ ⴰⵣⴰⵡⴰⴳ
ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵏⵏ ⵉⵖⵓⵢⵏ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ ⴰⵖ ⵓⵔ ⴰⴷⵔⵏ
ⵖⵓⵢⵏ ⴼⵍⵍⴰⵜⵏⵖ ⵍⴱⵃⵓⵕ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⴷ
ⴰ ⵎⵉ ⵏⵜⵜⴹⴰⵍⴰⴱ ⴰⴷ ⴰⵖ ⴳⵉⵏ ⵉⴼⵔⴳ
ⵃⵎⴷⵖ ⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⵢⴰⵜ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⵜⵏ ⵏⴽⵚⵓⴹ
ⴰⴷⵖⴰⵔ ⵍⵍⵉ ⵙ ⵏⴷⵍ ⴰⵅ ⵉⴳⴰⵏ ⴰⵜⵉⴳ
ⵉⵎⵎⴰ ⵍⵃⵎⴰ ⵔⴰⴷ ⴰⵜⵉⵏ ⴰⵚⵎⵎⵉⴹ.

أكشّوض

أر ياد دا تّيلي تميدي غ وكشّوض

دا تّلوح يسوتار كولّو تلوح يغربان

أ مي نتّعجّاب نكّي أر أس نتّوهام

د يس أر تّلوح يرڭازن غ وزمز أد

ڭار أمدلو شّرق ها ت ينّ يكّا ت يد

سيدي رٍبّي سّانفات أنغ أزاواڭ

والّي نّ يغوين يڭنوان أغ ور أدرن

غوين فلاّتنغ لبحورٍ أ دّونيت أد

أ مي نتّضالاب أد أغ ڭين يفرڭ

حمدغ ئـ رٍبّي يات ها نّ ور تن نكصوض

أدغار لّي س ندل أخ يڭان أتيڭ

يمّا لحما راد أتين أصمّيض.

****

-60-

ⵍⵃⵙⵏ ⴰⵙⴰⴼⴰⵔ
ⴰⵢⵜ ⵄⴱⵍⵍⴰ

لحسن أسافار

ولد في دوار بوكَوزول قبيلة أيت عبلا سنة 1963، التحق بمسجد القرية ثم بالمدرسة لكنه لم يستمرّ في دراسته وظل يشتغل بهموم الأرض ببلدته، أدرك جيلا من المخضرين الذي ملأوا ساحة أسايس بالمنطقة مثل بن الراهيب وغيره من الذين عرفوا بفنّ أهناقار، وكان يتردد منذ صباه على موسم تيمزكَيدا ن ؤساكا بأيت وارح، وهناك استهواه النظم فبدا بمقطوعات في أحواش ن تعيالين، وفي الثمانينات دخل إلى فضاء الحوار، شارك في ملتقى شعـراء أسايس سنة 2017، وانخرط في الرابطة الوطنية لشعـراء وشاعـرات أسايس، وهو الآن يشتغل بمقهى بسوق السبت بأيت عبلا.

ⴰⵣⵎⵣ ⵉⵣⵔⵉⵏ

ⴰ ⵖⴰⴷ ⵉⵣⵔⵉⵏ ⵓⵍⵍⴰⵀ ⴰⵔ ⵏⵉⵜ ⵉⵎⵎⵉⵎ ⵍⵃⴰⵍ
ⵡⴰ ⵖⵉⴽⴰⵏⵏ ⴰⴼ ⵏⵔⴰ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵙⴰⵡⵍⵖ ⵏⴼⴰⵙⵔ ⵜ
ⵜⵍⵍⴰ ⵍⵎⴰⵃⴰⴱⴱⴰ ⴷ ⵍⵃⵏⵉⵏⵜ ⵜⵍⵍⴰ ⵏⵉⵜ
ⵢⵉⵔⵉ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵎⴰ ⴷⵉⵙ ⵉⵔⵉⵏ ⴰⵙ ⵍⵅⵉⵔ
ⵉⵄⴰⵡⵏ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵎⴰ ⴷⵉⵙ ⵉⵖⵓⵢ ⴰⵙ ⴰⴼⵓⵙ ⵏⵙ
ⵉⵍⵍⴰ ⵙⵙⵉⵄⵔ ⵖ ⵜⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⵏⵅ ⵉⵍⵍⴰ ⵍⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⵢⴰⴼⵓⵍⴽⵉ ⴷ ⵚⵚⵡⴰⴱ ⴰⵙ ⵏⵉⵜ ⵏⵜⵜⵏⵚⵉⵇⵇⵉⴼ
ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵎⴰⴷ ⵉⴽⵯⵇⵀⴰⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵍⴰ ⵉⵃⴰⵛⴰ ⵜ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵏⵏⵉⵢⵜ ⴰⵙ ⵜⵜⵎⵓⴷⴷⵓⵏ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⵉⵄⵎⵎⵇ ⵜⵜ
ⵍⵟⵟⵓⵍ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⵜⵜⵇⵥⵥⴰⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵔⴰ ⴽ ⵉⵛⵎⵜ
ⴰⴷ ⵓⴽⴰⵏ ⵏⴰⵏⵏⵉ ⵜⴰⴳⵔⵙⵜ ⵉⵟⵟⴰⵔⵏ ⵡⴰⵎⴰⵏ
ⴰⵅⵔⴱⵉⵛ ⴰⵙ ⵏⵜⵜⵉⴷⵓ ⵖⵉⵏⵏ ⴰⵖ ⴰⵔ ⵔⵟⵟⴰⵅ
ⵜⵉⵍⵉ ⵍⴰⵄⴼⵉ ⵜⴼⴷⵓⴷⴷⵓ ⴰⴽⵛⵛⵓⴹ ⵍⵍⴰⵏ
ⵉⴽⴽⵙ ⵏⵏ ⵓⴷⴼⵍ ⵜⵉⴷⴷⵉ ⵖ ⵉⵙⵡⴰⴽ ⴷ ⵜⴰⵍⴰⵜⵉⵏ
ⵄⴰⵡⵏⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ ⴰⵔⵙⵏ ⵜ ⵙ ⵢⴰⵏ ⵓⴼⵓⵙ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵎⵇⵉⴹⵏ ⴳⴰⴱⵍⵏ ⵜ ⴰⵔ ⴷ ⵏⵉⵜ ⵏⴽⵔⵏ
ⵃⵓⴱⴱⵓⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵡⵉⵢⵢⴰⴹ ⴰⵏⵅⵉⵍⴰⴼ ⵓⵔ ⵍⵍⵉⵏ
ⵢⵉⵍⵉ ⵡⵓⴷⵉ ⵡⴰⵍⴰ ⵣⵣⵉⵢⵜ ⵜⵉⵍⵉⵜ ⴰ ⵜⴰⵎⵎⵏⵜ
ⵜⵉⵍⵉ ⵜⴰⵎⵡⴰⴷⵜ ⴰⵖⵓ ⴷ ⵉⴽⴼⵉ ⵉⵍⵍⴰ ⵃⴰⵡⵍⵏ
ⵎⵓⵏⵏ ⴼ ⵓⴼⵔⴰⵏ ⵉⵥⵉⴹ ⵏⵙⵏ ⵓⵍⴰ ⵙⵓⵍ ⵉⴼⵉⴼ
ⴰⵣⵎⵣ ⴰⵏⵏ ⵡⴰⵃⵟⵟ ⵇⴱⴱⵉ ⴰⵔ ⵏⵉⵜ ⵉⵍⴰ ⵜⵉⵙⵏⵜ
ⵉⵎⵎⴰ ⵡⴰⴷ ⵖ ⵏⵍⵍⴰ ⵍⵍⴰⵀ ⴰⵎⴽ ⴰⴽⴽⵯ ⵃⵍⵉⵏ ⵉ ⵢⴰⵜ.

أزمز يزرين

أ غاد يزرين ولّاه أر نيت يمّيم لحال
وا غيكانّ أف نرا أ ڭيس ساولغ نفاسر ت
تلّا لماحابّا د لحنينت تلّا نيت
ييري بنادم ما ديس يرين أس لخير
يعاون بنادم ما ديس يغوي أس أفوس نس
يلّا سّيعر غ تمازيرت نخ يلّا لامان
أ يافولكي د صّواب أس نيت نتّنصيرّيف
ور يلّي ماد يكُرهان يان ولا يحاشا ت
كولّو نّييت أس تمودّون كو يان يعمّر تّ
لقّول ور أ ت ترّژّان يان ور را ك يشمت
أد وكان نانّي تاڭرست يقّارن وامان
أخربيش أس نتّيدو غينّ أغ أر رقّاخ
تيلي لاعفي تفدودّو أكشّوض لّان
يكّس نّ ودفل تيدّي غ يسواك د تالاتين
عاونّ مدّن وبياض أرسن ت س يان وفوس
أ يان يمريضن ڭابلن ت أر د نيت نكرن
حوبّون مدّن وبياض أنخيلاف ور لّين
ييلي وُودي والا زّييت تيليت أ تامّنت
تيلي تاموادت أغو د يكفي يلّا حاولن
مونّ ف وفران يژيض نسن ولا سول يفيف
أزمز أنّ واحقّ ربّي أر نيت يلا تيسنت
يمّا واد غ نلّا لّاه أمك أڭّ حلين ئـ يات.

****

-61-

ⵃⵎⴰⴷ ⵓ ⵀⵎⵎⴰⴷ

ⴰⴼⵔⴰ - ⵜⴰⵟⴰ

حماد أوهماد

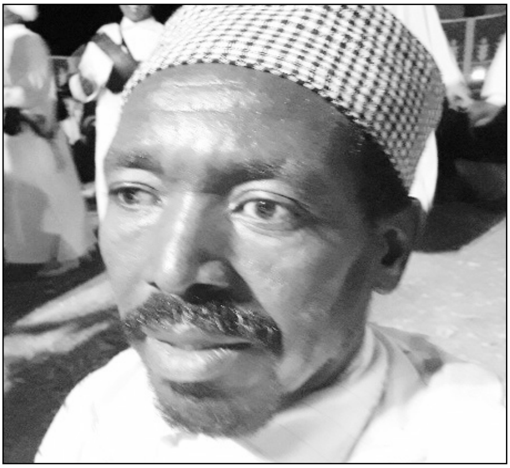

ولد في واحة أفرا بطاطا سنة 1963، والتحق بالمدرسة المحلّية ولكنه غادرها في المرحلة الإعدادية، تأثر منذ صباه باجواء فنون أحواش ببلدته، واسمتع بحذق إلى حواريات أشهر الشعراء من أمثال بن زيدا وسيدي أحمد ؤبراهيم وسّي بّويه وآخرين، وفي بداية التسعينات بدأ في ارتياد ميدان الإنشاد، يعتبر من بين القلائل في طاطا المهتمّين بالرصانة اللغوية والضوابط العروضية أثناء النظم، وله عدد من القصائد التي تناولت عددا من المجالات، وهو الآن يحترف مهنة البناء في بلدته، وله ارتباط وثيق بفرقة تيغرمت لفن أهناقار.

ⵜⵉⵡⵉⵣⵉ

ⵙⵜⴰⵔⴰⵅ ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵏⵥⵕⴰ ⵜⵉⵇⴱⵉⵍⵉⵏ
ⴰⵡⵉⵅ ⴷ ⴰⵙⵎⵎⴰⵇⵍ ⴰ ⵏⵊⵎⵄⴰ ⴷ ⵡⵓⵙⵙⴰⵏ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⴽⵔⴰ ⵜⵥⵕⴰ ⵜⵉⴼⵜ ⵔⴰ ⵜ ⵏⵜⵜⵣⵎⵎⵉⵎ
ⵍⵄⴰⵇⵍ ⵓⵔ ⵉⵢⵉ ⵜⵜⵓⵏ ⵜⵉⵍⵍⵉ ⵓⴼⵍⵉⵏ
ⵎⵇⴰⵔ ⵜⵏⵜ ⵥⵕⴰⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵓⵔ ⴰ ⵙⵖⵓⵢⵢⵓⵏ
ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵥⵉ ⵡⴰⴽⴰⵍ ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⴰ ⵙⵖⵍⵍⴰⵏ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⴰⵙ ⵏⴳⵉ ⵣⵓⵏ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵣⵔⵉⵏⵉⵏ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵍ ⵢⴰⵏ ⵓⵣⵎⵣ ⵏⵖⵓⵢ ⵍⵅⴱⴰⵕ ⵏⵙ
ⵍⵅⵉⵔ ⵀⴰ ⵍ ⵉⵍⵍⴰ ⴷⴰⵔ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵅⴷⵎⵏⵉⵏ
ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵖⵣⴰⵏⵉⵏ ⵓⵏⴰ ⵓⵍⴰ ⵜⴰⵍⵄⵉⵏⵉⵏ
ⵓⵍⴰ ⵛⵛⵡⴰⵔⵊ ⵜⵉⵏⵓⴼⵃⵉⵡ ⵏⵥⵕⴰ ⵜⵏⵜ
ⵓⵍⵍⵏ ⵍⴱⵕⵓⵊ ⵙⵙⵓⵜⵍⵏ ⵜⵏ ⴷ ⵉ ⵢⵉⴼⵓⵕⴰⵏ
ⵓⵍⴰ ⵉⴳⵉⴷⴰⵔ ⵉⵎⴰⵡⵏ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⴱⴰⵍⴰⵏ
ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⵜⵍⵍⵉⵜ ⴰ ⴹⴹⵕⵇⵜ ⴰⵃⵓⵙ ⵖ ⵓⵃⵓⵙ
ⴰ ⵢⴰⴷⵡⴰⵍ ⴷ ⵜⵡⵉⵣⵉ ⵙⴽⵔⵏ (ⴰ)ⵎⴽ ⴷⴰ ⵔⴰⵏ
ⵜⵄⵓⵎⵎⴰ ⵍⴽⵉⵎⵉⵜ ⵉⴽⴰⵍⵏ ⵓⵍⴰ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ
ⵓⵔ ⵊⵊⵓⵏ ⵜⵔⵡⵍⵜ ⴰ ⵚⵚⴰⴱⵜ ⵓⵍⴰ ⵍⵖⵍⵍⴰⵜ
ⵜⴰⵙⵙⴰⵄⵜ ⵍⵍⵉ ⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵕⵕⵚⴰⵚ ⵢⵉⵍⵉ ⵓⴱⵓⵔⵉ
ⵢⵉⵍⵉ ⵊⵊⵓⵄ ⵓⵍⴰ ⵜⵉⵢⵙⴰⵙ ⵏ ⵜⴷⵔⵃⵉⵜ
ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵃ ⵔⴰ ⵉⵙⵎⴰⵎⵎⵉ ⵓⴽⴰⴱⴰⵕ ⵖⵓⵢ ⵜⵏⵜ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵍⵟⵔⴽⴰⵜ ⵕⵥⴰⵏ ⵜⵏⵜ ⵓⵔ ⵖⵓⵛⵛⵉⵏ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰ ⵖ ⵜⵔⵡⵉⵜ ⴰ ⵍⵓⵇⵜ ⴰⴷ ⵓⵔ ⵖⴰⵃⵍⵅ
ⴰ ⴳⵉⵏⵅ ⵓⵔ ⵙⴽⵔⵏ ⵉⵣⵎⴰⵣ (ⴰ)ⵎⴽ ⴷⴰ ⵔⴰⵏ
ⵜⵔⵅⴰ ⵕⵕⵊⵍⵜ ⵜⵔⴰ ⴰ ⵏⵉⵜ ⵉⵚⴱⵕ ⵢⴰⵏ
ⵉⵍⴰ ⵖ ⴷ ⵉⵍⵓⵍⴰ ⵢⴰⵏ ⴳⵉⵏ ⴰⵅⴷⵉⵎ ⵏⵙ
ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵍⵉⵏ ⵍⵄⵉⴱ ⴰⵛⴽⵓ ⵍⴰⵔⵣⴰⵇ ⵏⵙ
ⵡⴰⵍⴰⵢⵏ ⴰⴷ ⴷⴰⴳ ⵓⵔ ⵉⴳⵡⵓ ⴰⵛⴱⴰⵕ ⵏⵙ
ⵜⴰⵎⵓⵏⵜ ⴰ ⵉⵙⵎⵓⴷⴷⵓⵏ ⵍⵀⵉⴱⵜ ⵉ ⵢⴰⵏ
ⵉⵍⴰ ⵖ ⵜⵏ ⵜⵟⵜⴰⵊⵊⴰ ⵜⵡⵉⵣⵉ ⵉⵖⵓⵢ ⵙⵔⵙ
ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵡⴰⵍⴰ ⵜⵜ ⵓⵔ ⵉⵎⴼⵉⵏ ⵉⵊⵍⴰ ⵜⵏⵜ

ⴼⵓⴽⴽⵓ ⴼⵔⴰ ⵉⴱⴷⵔ ⵢⵉⴽⵙ ⴽⴻⴽⴱ ⵢⵓⵔⴰ ⵜ
ⵜⴰⵎⴰⴳⵉⵜ ⵏ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵜⵏⵜ ⵓⵔ ⴱⵔⵔⴰⵏ
ⵡⴰ ⵜⵓⵜⴽⴰⵢⵜ ⵢⵓⵔⴰ ⵓⵅⵓⵙ ⵏ ⴽⵀⴰⴽⵉⵎ
ⴰⴷ ⴰⵛ ⴷ ⵉⵙⵙⵉⴽⴼⴰⵎⵏ ⵜⵉⴽⴽⵉ ⵣⵔⵉⵏⵉⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⴳⵉⵙⵏⵜ ⵉⵟⵎⵃⵏ ⵉⵜⵜⵓ ⴽⵚⵎⵎ ⵏⵙ
ⵡⴰ ⵃⴰⵙⴱⴰⵜ ⴰⵙ ⵉⵙ ⵉⵏⵖⵓⴱⴰ ⵖ ⵜⵉⴽⴽⴰⵙ
ⵜⵙⵙⵏⵜ ⴰⴼⴼⵯ ⵎⴰ ⵉⵣⵣⵎⵥⵉⵢⵏ ⵓⴽ ⵉⵙⴷⵓⴽⴽⵓ ⵜ
ⴽⵓⵟⵉⵢⵜ ⵏ ⴽⵊⴷⵓⴷ ⵉⵖ ⵜⵏⵜ ⵉⵃⴳⵇ ⵢⴰⵏ
ⵡⴰⵍⴰ ⵓⵔ ⵉⵔⵉⵏ ⴽⵛⵉⵔ ⵉ ⵜⴰⴳⵯⵎⴰⵜ ⵏⵙ
ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵔⴰ ⵜ ⵉⴼⵔⵣ ⴰ ⵜ ⴳⵉⵙ ⵉⵎⴳⵔ ⵢⴰⵏ
ⵡⴰⵍⴰ ⵓⵔ ⵉⴽⵉⵏ ⴽⵛⴰⴹⵇ ⵉ ⵢⵓⴻⴱⵉⴽ ⵏⵙ
ⵎⴰⵏⵉ ⵙ ⵜⵍⴰⵎ ⵉⵙ ⵔⴰ ⵍ ⴳⵉⵙ ⵉⵜⵜⴳⵢⵢⴰⴽ
ⵡⴰⵍⴰ ⵓⵔ ⵉⵇⵥⵥⴰⵏ ⵉ ⵊⵊⵍⴰⵏ ⵉⵙⵙⴷⵓⵙ ⴰⵙ
ⵎⴰⵏⵉ ⵙ ⵔⴰ ⵍ ⵉⵅⵅⴰⵖ ⵉⵙⵜⵓ ⴽⴰⵚⵎⵓⵎ ⵏⵙ
ⵉⴳⴰ ⵇⵇⵊⴰ ⵣⵓⵏ ⵉⴳⵉⴷⵔ ⵉⴼⴼⴰ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ
ⵡⴰⴽⴰⵢⵏⵉ ⵙⵙⵀⴷ ⵏⵙ ⴰⵖ ⵉⴽⴽⴰ ⴷ ⵡⴰⴼⴰⴽ
ⵉⴳⴰ ⴽⵚⵎⵎ ⵉⴳⵓⴷⵉⵢⵏ ⵎⴽⴰ ⵉⴳⵉ ⵢⴰⵏ
ⵓⵔ ⴰⴼⴼⵯ ⵔⴰⴷ ⴰⵛ ⵉⵙⵙⵉⵃⴽ ⵉⵖ ⴰⵙ ⴷ ⵉⵡⵏⵛ
ⵡⴰⴽⴰⵢⵏⵉ ⴽⴰⴱⵓⴷⴷ ⴰ ⵜ ⵏⵉⵜ ⵉⵔⴱⵓ ⵢⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⵙⵏ ⵓⵔ ⵇⵥⵎⵛ ⴰ ⵅⴽⴰⵏ ⵉⴱⵔⵉ ⴰⵛ
ⵉⵅⴰⵙⵙⵏ ⵉⵖ ⵎⵎⴰⵥⵉⵏ ⵅ ⵓⵣⵔⴳ ⵄⵓⵡⵇⵏ
ⵓⵔ ⵙⴰⵔ ⵜⴰⵖ ⵜⴳⵓⴹⵉ ⵡⵉⴽⴽⵉ ⵀⵄⵔⵏⵉⵏ
ⴰ ⴽⴰⵅⵀⴰⴽ ⴷ ⵜⵉⵔⵔⵓⴳⵣⴰ ⴷ ⵉⵙⴷⵔⵎⴰⵏ
ⴰⵙ ⵉⴼⴼⵔⵙ ⵓⵎⴰⴹⴰⴽ ⴽⴼⵙⵓⵜ ⵏ ⵜⴷⴰⴽⴽⵉⵜ
ⴽⵎⴰⴽ ⴷ ⴽⵀⵉⴽⵎ ⴳⴰⵏ ⵎⴰ ⵅ ⵉⵙⴷⵓ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⵙⵔⵙⵏ ⴱⵏⵓⵏ ⴽⴼⵎⵏ ⴽⴱⵇⵓⵊ ⵉ ⵢⵉⴳⵏⵡⴰⵏ
ⵢⵓⵙⵉ ⴷ ⵓⵎⵣⵔⵓⵢ ⴰⴷⴽⵉⵙ ⴰ ⵜ ⵀⵎⵎⵇⵏ
ⵜⴰⵙⵓⵜ ⵖ ⵓⵔ ⴽⴽⵉⵏ ⴽⴰⵅⵀⴰⴽ ⵉⵎⴹⴽ ⵜⵏⵜ.

تيويزي

ستاراخ أ دّونيت نژرٍا تيقبيلين

أويخ د أسمّاقل أ نجمعا د ووسّان

كولّو كرا تژرٍا تيضت را ت نتّزمّيم

لعاقل ور يّي تّون تيلّي وضنّين

مقار تنت ژرٍان مدّن ور أ سغويون

أر يتّژي واكال ور سول أ سغلّان

ور سول أس نكّي زون ويلّي زرينين

يكّا تّ ينّ يان وزمز نغوي لخبارٍ نس

لخيرٍ ها نّ يلّا دار ويلّي خدمنين

ويلّي غزانين ونا ولا تالعينين

ولا شّوارج تينوضفيو نژرٍا تنت

ولّن لبرٍوج سّوتلن تن د ئـ ييضورٍان

ولا يگّيدار يماون ور يتّبالان

غيلّي غ تلّيت أ طّرٍقت أفوس غ وفوس

أ يادوال د تويزي سكرن مك دا ران

تعومّا لكيميت يكالن ولا يگّنوان

ور جّون ترولت أ صّابت ولا لغلّات

تاسّاعت لّي غ يلّا رّصاص ييلي وبوري

ييلي جّوع ولا تييساس ن تدرفيت

ويلّي ف را يسمامّي وكابارٍ غوي تنت

كولّو لحركات رٍژان تنت ور غوشّين

غ أسّ أ غ ترويت أ لوقت أد ور غافلخ

أ ڭينخ ور سكرن يزماز مك دا ران

ترخا رّجلت ترا أ نيت يصبرٍ يان

ينّا غ د يلولا يان ڭين أخديم نس

ور أڭّ لين لعيب أشكو لارزاق نس

والاين أد داخ ور يخوو أشبارٍ نس

تامونت أ يسمودّون لهيبت ئـ يان

ينّا غ تن تحتاجّا تويزي يغوي سرس

تودرت وانّا تّ ور يمضين يجلا تنت

كولّو كرا يبدر ييلس لقلب يورا ت

تاماڭيت ن يان أ تنت ور برّان

وا توتلايت يورا وفوس ن لعاليم

أد أخ د يسّلكامن تيلّي زرينين

أ يان ڭيسنت يصمحن يتّو لهمّ نس

وا حاسبات أس يس ينغوبا غ تيلّاس

تسّنت أڭّ ما يزّمڔيين ول يسدولّو ت

لوصييت ن لجدود يغ تنت يحڭرٍ يان

وانّا ور يرين لخير ئـ تاڭّمات نس

ماني غ را ت يكرز أ ت ڭيس يمڭر يان

وانّا ور يلين لخاطرٍ ئـ يوقبيل نس

ماني س تنّام يس را نّ ڭيس يتّڭيال

وانّا ور يرڔّان ئـ جّنان يسّدوس أس

ماني س را نّ يڤّاغ يستو لاهموم نس

يڭا رّجا زون يڭيدر يڭا يڭنوان

والايني سّعد نس أغ يلّا د واكال

يڭا لهمّ يڭوديين ملا يڭي يان

ور أڭّ راد أخ يسّيحل يغ أس د يونخ

والايني لابودّ أ ت نيت يربو يان

أد أسن ور ڕژمخ أ فلان يبري أخ

يفاسّن يغ مّاژين ف وزرڭ شووڕن

ور سار تاغ تڭوضي ويلّي عشرنين

أ لافعال د تيرّوڭزا د يسدرمان

أس يڭّس وماضال لكسوت ن تدالّيت

لمال د لعيلم ڭان ما ف يسدو يان

أ سرسن بنون لكمن لبرۅج ئـ ييڭنوان

يوسي د ومزروي أدليس أ ت عمّڕن

تاسوت غ ور لّين لافعال يمضل تنت.

****

-62-

ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⴰⵢⵜ ⵡⴰⵃⵎⴰⵏ

ⴰⵇⵇⴰ ⵏ ⵉⴳⵉⵔⵏ - ⵍⴼⴰⵢⵊⴰ

ابراهيم أيت واحمان

من مواليد سنة 1964 بقرية أقا ن يكَين، قبيلة الفايجة، تلقى تعليمه في مسجد القرية ثم بالمدرسة لكنه لم يتابع دراسته، وانتقل وهو شاب إلى ميدان العمل الحرّ، استهواه شعر من وجده من المبدعين بقريته من أمثال بحسين ؤهمو وآخرون، جرّب حظّه في الشعر الحواري ولكنّ إشكالية الصوت جعلته يتجه إلى الكتابة الشعرية بمساعدة أحد أفراد أسرته، ومع ذلك فهو محبّ جدّا لفنّ أحواش، وهو الآن في إطار إعداد ديوان شعري ضمّنه إبداعاته التي تتمحور حول عدد من القضايا التي تؤرق أبناء المنطقة.

ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ

ⴰ ⵢⴰⵎⵓⵙⵍⵎ ⵓⵔ ⵜ ⵉⴳⵉ ⵢⴰⵏ ⵙ ⵉⵎⵉ ⵏⵙ
ⵍⵉⵎⴰⵏ ⵓⵔ ⴷ ⴰ ⴽⴰ ⵢⴰⴳⵯⵍ ⵢⴰⵏ ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ
ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵜⵜ ⵓⵔ ⵢⵓⴳⵯⵍⵏ ⵢⵓⴷⴰ ⵜ ⵉⵖ ⴽⴰ ⵢⵓⵎⵏ
ⵉⵄⴰⵡⵏ ⴳⵯⵎⴰⵙ ⴰⵛⴽⵓ ⴷⴷⵉⵏ ⵉⵏⵏⴰ ⵢⴰⵅ ⵜ
ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴷⴷⵉⵏ ⵉⵙⵍⵀⴰⵎⵏ ⴷ ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ
ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴱⵍⴰ ⵢⴰⵏ ⵎⵉ ⵄⵎⵎⵕⵏ ⵓⵍ ⵏⵙⵏ
ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴷⴷⵉⵏ ⴰⴼⵓⴷ ⵓⵍⴰ ⵉⴽⵓⵕⴰⵢⵏ
ⵍⵉⵎⴰⵏ ⴰ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉⵏ ⵖ ⵎⴷⴷⵏ ⴼⵍⵏ ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ
ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ ⵉⴼⴰⵡⵏ ⵉⴳⴰ ⵜ ⵍⵓⵇⵔⴰⵏ ⵉⵏⵡ
ⵓⵔ ⵏⵇⵇⵍ ⵖ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵉⵢⵉ ⴷ ⵉⵎⵎⴰⵍ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ
ⵓⵍ ⴰⵙ ⴰ ⵜⵜⵥⴰⵍⵍⴰⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵙⵍⵍⵎⵏ ⵉⵙⵙⵏ
ⴽⵉⴳⴰⵏ ⵉⴹⵍⴰ ⵢⴰⵙⵏ ⵉⵥⵥⴰⵍⵍ ⵉⵙⵙⵏ ⵉⵛⵎⵎⵜ
ⴽⵉⴳⴰⵏ ⵉⵔⴽⴰ ⵢⴰⵙⵏ ⵉⵖⵓⵛⵛⴰ ⵢⵙ ⵉⴽⵓⴼⵕ
ⵉⵔⵉⵏ ⴰ ⵉⴷⵍ ⵍⴰⵄⵢⵓⴱ ⵏⵙⵏ ⵙ ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ
ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⵍⵃⴰⵇⵇ ⴰ ⵏⵔⴳⴳⵎ ⵢⴰⵏ ⵙ ⵉⵎⵉ ⵏⵅ
ⵓⵍ ⵏⵅ ⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⵍⵎⵉⵣⴰⵏ ⴰ ⵢⵉⵎⵓⵙⵍⵎⵏ
ⵉⵎⵎⴰ ⵢⵓⴷⵎ ⵉⵖ ⴰⴽⴽⵯ ⵢⴰⴷ ⵉⵍⵍⴰ ⵙ ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ
ⵓⵔ ⴰⵙ ⵏⵏ ⵜⵓⴳⴳⵯⵉⵜ ⴰⴳⵯⵏⵙ ⵉⵙ ⵎⵍⵍⵓⵍⵏ.

تامارت

أ ياموسلم ور ت يڭي يان س يمي نس
ليمان ور د أ كا ياڭُل يان تامارت
والّي تّ ور يوڭُلن يودا ت يغ كا يومن
يعاون ڭُماس أشكو دّين ينّا ياخ ت
ور يڭي دّين يسلهامن د تامارت
ور يڭي بلا يان مي عمّرن ول نسن
ور يڭي دّين أفود ولا يكوراين
ليمان أ ور يلّين غ مدّن فلن تامارت
أغاراس يفاون يڭا ت لوقران ينو
ور نقّل غ يان أ يّي د يمّال تيفاوت
ول أس أ تّژالّان مدّن سلّمن يسّن
كيڭان يضلا ياسن يژّالّ يسّن يشمّت
كيڭان يركا ياسن يغوشّا يس يكوفر
يرين أ يدل لاعيوب نسن س تامارت
ور يڭي لحاقّ أ نرڭّم يان س يمي نخ
ول نخ أ يڭان لميزان أ ييموسلمن
يمّا يودم يغ أڭّ ياد يلّا س تامارت
ور أس نّ توڭّيت أڭُنس يس ملّولن.

******

-63-

ⵙⵉⴷⵉ ⴱⵓⵇⵖ
ⵜⴰⴽⵎⵓⵜ ⵏ ⵢⴰⵃⵣⵓⴱ

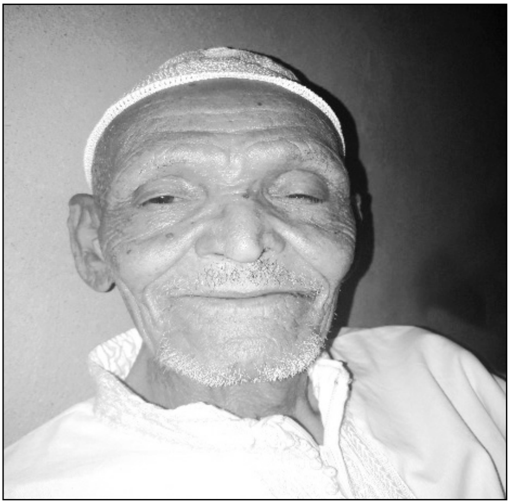

من مواليد قرية أكَلكَال بتاكموت سنة 1938، التحق بالمسجد ببلدته ونال نصيبه من القرآن، وبعد ذلك دخل ميدان العمل كفقيه مشارط في عدد من قرى الأطلس الصغير الأوسط وخصوصا في تاميغاطّ، وقد تأثر بالجوّ الفنّي الذي امتازت به بلدته وأدرك كبار الشعراء من أمثال موح ؤمبارك، وعبدالكريم أحمّو وآخرين، كما أدرك وحفظ شعر الجيل الذهبي للشعر من أمثال بوزنير وأونوكَو وغيرهم، كما تجوّل في مختلف مناطق سوس وتمكّن من اللغة الأمازيغية بكل اختلافاتها السوسية، بدأ يرتاد أسايس منذ بلوغه سنّ الرشد، وشارك بكثافة في مختلف المنتديات الشعرية التقليدية كالمواسم والأعراس والمهرجانات، ومن أبرز زملائه في النظم علي ؤبيضني، علي ؤموح، موح أوعلي، وقد ساجل معظم شعراء سوس المخضرمين والحاليين، وتمّ تكريمه من لدن عدد من الجمعيات.

ⵜⵔⵡⵉ ⵍⵓⵇⵜ

ⴰ ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ ⵍⵅⵍⴽ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵉⵙⵙⵓⵜⵍ
ⵕⴱⴱⵉ ⵙⵙⵓⵜⵔⴰ ⵎⴰ ⵙ ⵎⴷⵉⵏ ⵓⵙⵙⵅⴰⵍ ⵏⴳ
ⵜⵉⵍⵍⵉ ⵙ ⴰⵏⴳ ⵉⵏⵏⴰ ⵏⵏⴰⴱⵉ ⴽⵓⵍⵛⵉ ⵍⵍⴰⵏⵜ
ⵉⴽⵓ ⵎⴰ ⵙ ⴽⴰ ⵔⴰⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵜⴰⵎⵓⵙⵍⵎⵜ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵎⴰ ⵉⵃⵕⵎ ⵕⴱⴱⵉ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵏⵙⴰⵍⴰ ⵜⵏ
ⵖⴰⵔ ⵉⵙⵙⵅⵉ ⵜⵏⵜ ⵡⴰⵖⵉ ⵜⵔⵡⵉ ⵍⵓⵇⵜ
ⵕⴱⴱⵉ ⵚⴰⵎⵃⴰⵜ ⵉⵢ(ⵉ) ⵖ ⴽⵉⴳⴰⵏ ⵏ ⵉⵡⴰⵍⵉⵡⵏ
ⵉⴳⴰ ⵢⵉⵍⵙ ⴰⴽⵏⵏⴰⴷ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵜⵛⵓⵡⴰⵕⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵍⴰⴱⵓⴷⴷ ⴰ ⵏⵉⵏⵉ ⵚⵚⴰⵃⵜ
ⵉⵏⵏⴰ ⵙⵔⵏⴳ ⵉⵔⴰ ⵉⵍⴰⵀⵉ ⵢⴰⵡⵉ ⴰⵏⴳ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⵏ ⵓⵙⴱⴱⴰⴱ ⵉⵟⵟⴰⵅ ⵢⴰⵍⵍ ⵉⴳⵅ
ⵏⵏⴰⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵖⵡⴰⵏⵏ ⵉⴳⴳⵓⵜ ⵍⵎⴰⵍ ⵏⵙ
ⴰⵔ ⵙⵙⴰⵖⵏ ⴰⵔ ⵣⵣⵏⵣⴰⵏ ⵓⵔ ⵛⵓⵡⵉⵕⵏ
ⵓⵔ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵙⵙⵏ ⵎⴰⵏⴰⴳⵓ ⴰ ⵜⵏ ⵜⵅⵏ ⵍⵓⵇⵜ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⵏ ⵍⵇⴰⴹⵉ ⵖⵓⵢⵏ ⵍⴽⵯⵕⵚⵉ ⵏⵙ
ⴰⵔ ⵉⵇⵇⴰⵢ ⵔⵔⵛⵡⴰ ⴷⴰⵔ ⵉⵏⴳⵉⵚⵉⵎⵏ
ⵓⵔ ⴰⵔ ⵉⵙⵎⵓⵇⵇⵓⵍ ⵕⴱⴱⵉ ⵍⵍⵉ ⵜⵏ ⵉⴳⵍⵇⵏ
ⴰ ⵢⵓⵊⵊⴰ ⵜ ⵏⵉⵜ ⴰ ⵍⵍⵉⵖ ⵏⵏ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵃⴰⵡⵍ
ⵢⵓⵜ ⵜⵏ ⵙ ⵡⴰⵟⵟⴰⵏ ⵓⴹⴹⵕⵏ ⵉⵙⴰⵅⴰⵔⵏ
ⵢⵉⵍⵉ ⵖ ⵍⵄⴷⴰⴱ ⵓⵔ ⵉⴷⴷⵉⵔ ⵓⵔ ⵎⵎⵓⵜⵏ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⵏ ⵢⴰⵏ ⵉⵖⵓⵢ ⵜⴰⴽⵓⵕⴰⵢⵜ
ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵏⵜ ⵉⴽⴽⵉⵜ ⵉⵖⴰⵍ ⵉⵙ ⵎⵇⵇⵓⵔⵏ
ⵉⵍⵍⵉ ⴳⵉⵙ ⵜⵙⵅⴽⴰ ⵜⴰⴳⴰⵜ ⵓⵔ ⵜⵏ ⵙⵙⵉⵏⵏ
ⵓⵍⴰ ⵜⵉⵡⵜⵎⵉⵏ ⴰ ⴱⴰⴹⵏⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵅⵍⵍⴰⵏⴳ
ⵜⴰⵏⵏⴰ ⴷ ⵉⵅⵅⵓⵖⵏ ⵜⵔⴱⵓ ⵙ ⴰⴽ ⵏⵓⵅⵍⵏⵜ
ⵜⵕⵥⵎ ⴷ ⵉ ⵓⵛⴰⴽⴽⴰ ⵅ ⵉⴳⴳⵉ ⵏ ⵉⵖⴰⵔⵉⵡⵏ
ⵏⴳⵔ ⵍⴰⵍⵓⵅ ⵏ ⵓⵔⴳⴰⵣ ⴰⵖ ⴰ ⵜⵜⵉⵍⵉⵏⵜ
ⵓⵔ ⴰ ⵜⵜⵉⵃⵛⴰⵎ ⵓⵔ ⵜⵏⵜ ⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⴽⴽⵉ ⵍⵓⵇⵔ
ⴰⵥⵔⵅ ⴰⴷ ⵏ ⵓⴷⴰⵢ ⵉⵀⵍⴽ ⵉⵎⵓⵙⵍⵎⵏ
ⵓⵍⴰ ⵡⵉ(ⵏ) ⵓⵕⵓⵎⵉ ⵎⴷⴷⵏ ⵙⵏⵇⵔⵏ ⵉⵙⵙⵏ
ⴰⵢⵏⵏⴰ ⵙ ⴽⴰ ⵏⵏⴰⵏ ⵏⵖⵓⵢ ⵜ ⵏⵙⴰⵍⴰ ⵜⵏ.

تـروي لوقـت

أ ياﻻّه لفلك ن دّونيت يسّوتـل
ڕبّي سّوترا ما س مدين وسّفان نخ
تيلّي س أنخ ينّا نّابي كولشي لّانت
يكو ما س كا ران مدّن تاموسلمت
كولّو ما يحرڥ ڕبّي ها نّ نسالا تن
غار يسّفي تنت واغي تروي لوقت
ڕبّي صامحات يّي غ كيڭان ن يواليون
يڭا ييلس أكنّاد ور أ تّشوواڕن
أ والايني لابودّ أ نيني صّاحت
ينّا سرنخ يرا يلاهي ياوي أنخ
أحّ أ ميشك ن وسبّاب يطّاف يالّ يخـف
نّان مدّن غوانّ يڭّوت لمال نس
أر سّاغن أر زّنزان ور شوويڕن
ور أڭّ يسّن ماناڭو أ تن تفل لوقت
أحّ أ ميشك ن لقاضي غوين لكُڕصي نس
أر يقّاي رّشوا دار ينخيصيمن
ور أر يسموقّول ڕبّي لّي تن يخلقن
أ يوجّا ت نيت أ لّيغ نّ أڭّ يحاول
يوت تن س واطّان وضّڕن يسافارن
ييلي غ لعداب ور يدّير ور مّوتن
أحّ أ ميشك ن يان يغوي تاكوڕايت
أر يسّنت يكّيت يغال يس مقّورن
يلّي ڭيس تسفكا تاڭات ور تن سّينّ
ولا تيوتمين أ باضنت أڭّ فلّانخ

تانّا د يفّوغن تربو س أك نوفلنت

ترڒم د ئـ وشاكّا ف يكّي ن يغاريون

نكّر لالوف ن وركّاز أغ أ تّيلينت

ور أ تّيحشام ور تنت د أكّ يكّي لوقر

أزرف أد ن وداي يهلك يموسلمن

ولا ويـن ورومي مدّن سنقرن يسّن

أينّا س كا نّان نغوي ت نسالا تن.

******

-64-

ⴱⵉⴷⵉ ⵎⵃⵏⴷ ⴰⵣⴽⵔⵉ

ⵜⵉⵎⵓⵍⴰⵢ - ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴽⵔⵉ

محند أزكري

ولد في قـرية تيمولاي قبيلة ئداوزكـري سنة 1968 ، والتحق بمدرسة ئلماتن العصرية والتقليدية، لكنه لم يستمرّ في التعليم العصري، أما في المسجد فقد نال نصيبه من القرآن، وقد تأثر بالجـو الفنّي لقبيلته، كما أخذ الشعـر عن أشهر الشعـراء الذين يجـوبون المنطقة، وبدأ في ارتياد أسايس سنة 1984، ولم يلبث أن تمكن من ضوابط نظم الشعـر، له صوت جـذّاب وطريقة متينة في صياغة الشعـر، وبذلك أصبح من بين أبرز الشعـراء الذين نالوا شهرة في الأطلس الصغير، انخرط في الرابطة الوطنية لشعـراء وشاعرات أسايس، وهو عضو في مجلسها الإداري.

ⴰⵙⵙⴽⵔⴼ

ⴰⵡⴰⵍ ⴰⵎⵣⵡⴰⵔⵓ ⵉⴳⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⵕⴱⴱⵉ ⵢⵓⴼ ⴽⵉⵡⴰⵏ
ⴰⵔ ⵉⵙⵙ ⵏⴰⴷⴷⴰ ⵜⴰⵍⵍⵓⵃⵜ ⵓⵍⴰ ⵖ ⴷⴰⵔ ⵍⵃⵕⴱ ⵓⵍⴰ ⵉⵖ ⵏⴼⵕⵃ
ⴰ ⵍⴰⵎⵕ ⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵡⵉⵏⵏⴽ ⵏⴳⴰ ⴱⴷⴰ ⵖ ⵍⵇⵍⴱ ⵉⵏⵓ ⵚⵚⴼⴰ ⵏⵏⵓⵏ
ⴰ ⵜⴰⵣⵣⵡⵉⵜ ⵍⵍⵉ ⵜⴰⴽⵍⴰⵡⵉⵢⵜ ⴰⵎⵛⵛⴰⴹ ⵏⵏⵓⵏⵜ ⵉⵎⵎⵉⵎ
ⵡⴰⵍⴰⵢⵏⵉ ⵉⴷ ⵡⴰⵛⵛ ⴰⴷ ⴳⴰⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵓⵔ ⴰ ⵜⵜⴰⵊⵊⴰⵏ ⵉⵎⵔⴰⵔⴰⵏ
ⵉⵙ ⴰⵔ ⴽⴰ ⵏⵙⴽⴰⵔ ⵉⵙ ⴷⴰⵔⵉ ⵙⵡⴰ ⵖ ⵍⵃⵓⴱⴱ ⵉⵎⵎⴰ ⵉⵎⵍⴽ ⴰⵅ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵜⴰⴳⴳⴰⵔⴷⵔⵜ ⵏⵙ ⴰ ⵜ ⵉⵣⵉⵣⵣⵉⵍⵏ ⵙⵙⵜⵍⴼⵏⵜ ⵜ
ⵏⵙⴰⵇⵙⴰ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⵜⵜ ⵉⴳⵔⵓⵏ ⵉⵣ ⴷ ⵍⵡⴰⵍⵉⴷⴰⵢⵏ ⴰ ⵓⵔ ⵓⵇⵇⵔⵏ
ⵉⵏⵏⴰ «ⵓⵀⵓ ⵜⴰⵛⵉⵟⴰⵏⵜ ⵉⵏⵓ ⵓⴽⴰⵏ ⴰ ⵢⴰⴷ ⴰⵅ ⵉⵙⵎⵓⵜⵜⵍⵏ».
ⴰ ⴱⵓ ⴷⴷⵏⵓⴱ ⵓⵍⴰ ⵍⴰⵟⵡⴰⵏ ⵏ ⵍⵀⵎⵎ ⴱⵏⴰⴷⵎ ⵎⴰ ⵖ ⵜⵓⴼⵉⵜ
ⴰ ⵙⴰⵔ ⵜⵉⵍⵉⵜ ⴷ ⵍⵅⴰⵟⵕ ⵉⴳⴰ ⵟⵟⵎⴰ ⴰⴽⵏⵏⴰⴷ ⴰⵔ ⵉⵙⵎⵓⵜⵜⵓⵍ
ⵏⴹⴰⵍⴱ ⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⴰⴷ ⴰⵅ ⵏⵉⵜ ⵉⵖⴼⵔ ⴷⴷⵓⵏⵓⴱ ⵉⵏⵓ ⵉⵚⵎⵃ ⴰⵅ.

أسّكرف

أوال أمزوارو يگا بيسمي لّاه رِبّي يوف كيوان
أر يسّ نادّا تالّوحت ولا غ دار لحرِب ولا يغ نفرِح
أ لامرِ أ رِبّي وينّك نگّا بدا غ لقلب ينو صّفا نّون
أ تازّويت لّي تاكلاويێت أمشّاض نّونت يمّيم
والايني يد واش أد گان مدّن ور أ تّاجّان يمراران
يس أر كا نسكار يس داري سوا غ لحوبّ يمّا يملك أخ
أحّ أ بنادم تاگّاردرت نس أ ت يزيزّيلن سّتلفنت ت
نساقسا والّي تّ يگرون يز د لواليداين أ ور وقّرن
ينّا «وهو تاشيطانت ينو وكان أ ياد أخ يسموتّلن».
أ بو دّنوب ولا لاطوان ن لهمّ بنادم ما غ توفيت
أ سار تيليت د لخاطرِ يگّا طّما أكنّاد أر يسموتّول
نضالب ئـ رِبّي أد أخ نيت يغفر دّونوب ينو يصمح أخ.

****

-65-

ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⴰⵇⴱⵍⵉ

ⴰⵇⵇⴰ ⵏ ⵉⵖⴰⵏ

ابراهيم أقبلي

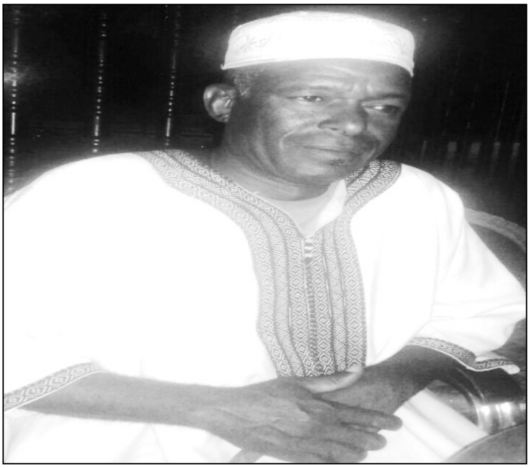

من مواليد أقّايغان بالفايجة سنة 1969، التحق بالمسجد والمدرسة إلى أن وصل إلى التعليم الإعدادي، ولكنه غادر لكي يلتحق بالعمل الحرّ، ورغم أنه متواجد في وسط معروف بشعراء أحواش من أمثال بن سعيد وتسطيح ومولاي محمد أولحوس، إلا أنه تأثر إلى حدّ بعيد بشعراء الروايس وخصوصا الحاج محمد الدمسيري والحاج بلعيد، وأخذ عنهم الكلمة الشعرية، وفي سنة 1989 بدأ يرتاد فضاء أسايس ببلدته وضمن الفرق المعروفة فيها.

ⵉⵎⵎⵉ ⵏⵓ

ⵉⵎⵎⵉ ⴰⵖ ⴷ ⴻⵙⵉⵖ ⵉⴷⴰⵎⵎⵏ ⴻⵏⴰ ⵉⵣⴻⵔⴰⵏ
ⴰⵙⵉⵖ ⴳⵉⵙⵏ ⵄⵄⵉⵊⴰⵜ ⵜⵉⵏⵏⵉ ⵙ ⴷ ⵏⵏⴻⵏ
ⵛⴰⵎⴰⵢⵏ ⴰⴷ ⴰⵖ ⵔⴱⴱⴻⵏⵜ ⴰ ⵏⵏⵉⵖ ⴷ ⵏⵊⴰⵇ
ⴻⵔ ⵏⵣⴹⴰⵕ ⴰⴷ ⵏⴽⵔⵖ ⴻⵏⴰ ⴰⴷ ⴳⴰⵓⵔⵖ
ⵉⵖ ⴰⵔ ⵏⴰⵏⵏⴰ ⴰⵖⴻⵢⵢⵉ ⵏⵓ ⴰ ⵜⵉⵊⵀⴰⵎⵏⵜ
ⵜⴳⴰ ⴱⴷⴷⴰ ⴱⴻⴳⴰⴹⴻ ⵏⵓ ⴰ ⵏⵏⵉⵖ ⴷ ⵏⴽⵔⵅ
ⴰⴷ ⴰⵖ ⴳⵉⵙⵏⵜ ⵉⵄⵎⵃ ⴱⴰⴱ (ⵏ) ⵉⴳⵏⵓⴰⵏ
ⵉⵎⵎⵉ ⵏⵓ ⴰ ⵢⵉⵎⵎⵉ ⵏⴰⵃ ⵙⴻⵏ ⴰⵙⴷⵔⵎ ⵏⵎ
ⵉⴽⴽⵉⵙ ⴰⵅ ⴽⵎ ⵓⴰⴽⴰⵏ ⴻⵔ ⵙⴻⵏ ⵏⵇⴹⵉ ⵢⴰⵜ
ⵎⵏⴰ ⴻⵊⵉⵅ ⴰⵎ ⵕⴹⵏⵅ ⵖ ⵏⴰⵛⵎⵕ ⵍⴰⵅ
ⵎⵏⴰⵄⵄ ⵏⵉⵖ ⴻⵅⵅⵯⴰⵔ ⵏⵙ ⴻⵔ ⴰⵖ ⵀⵎⵎⵉⵏ
ⵉⵍⴰ ⵖ ⴻⵔ ⵜⵏⵏⵉ ⵎⴰⴽ ⴰⵔ ⵏⵉⵜ ⵉⵜⵜⴱⴰⵢⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⵏⵅ ⴻⵔ ⵜⵏⴰⵎⵎⴰⵎ ⵉⵖ ⴰ ⵙⵖⴻⵢⵢⴻⵅ
ⵏⵣⴻⵣⴹ ⴰ ⵏⵉⵏⵉ ⵖ ⵏⵀⵏⴰ ⵏⴰⴷⴷⵟ ⴰⵓⴰⵏ
ⵓⴰⵏⴰⵢⵏⵉ ⵉⵖ ⵜⵏⵜ ⴷ ⵏⴽⵯⵜⵉ ⴰⵔ ⴱⵔⵔⵉⵅ
ⵓⴰⵍⴰ ⴷⴰⵔ ⵜⵏⵏⴰ ⴰ ⴽ ⴻⵄⵄⴰⵅ ⵊ ⵕⴱⴱⵉ ⴱⵏⴰ ⵢⴰⵜ
ⵉⵖ ⴰⴽ ⵜⵍⴰ ⵀⴰ ⵏⴰⵛⵊⵉ ⴹⵕ ⵍ ⴳⵉⵙⵏⵜ
ⵉⵏ(ⵉ) ⴰⵙ ⴰ ⵢⵉⵎⵎⵉ ⵎⵔⵃⴱⴰ ⵏⴻⵅⵯⵎ ⵏⵅⵉⵔ
ⴱⴰⴱ (ⵏ) ⵉⴳⵍⴰ ⴷ ⴱⴰⴱ ⵉⴽⴰⵏⵏ ⴷ ⵓⴰⵎⴰⵏ
ⵓⴰⵍⴰ ⴽⵯⵏ ⵢⵉⵓⵉⵏ ⴰ ⵕⵕⴹⴰ ⵢⴻⵅⵯⵔ ⵏⵎⴰⵏ
ⴻⵏⴰ ⴰⵢⴷⴰ ⵓⴰⵏⴰ ⵜⴰⵔⵓⴰ ⴽ ⵉⵙⵀⵍⴰⵏ
ⵓⴰⵍⴰ ⴻⵔ ⵉⵔⴱⵃⵏ ⵖ ⵉⵎⵎⵉⵙ ⵉⵟⵏⴰ ⵏⵉⵜ
ⵉⵏⵏⴰ ⴽⵔⴰ ⴻⵔ ⵢⴻⵃⵉⵏ ⵓⴰⵏⴰ ⵜⵜⵀⴻⵓⵏⵏ
ⵉⵖ ⴰⵔ ⵜⵏⵜ ⵉⴽⴽⴰⵜ ⴰⵔ ⵜⵏⵜ ⵉⵜⵜⵖⵢⵢⴰⵔ
ⵢⴰⵙⵉ ⴷ ⵜⴰⵙⴰⵔⴻⵜ (ⵏ) ⵏⵟⵏⵜ ⵉⵟⵏⴻ ⵜⵏⵜ.

يمّي نـو

يمّي أغ د وسيغ يدامّن ولا يژوران
أسيغ ڭيسن صّيفات تيلّي س د نلول
عاماين أد أغ ربّونت أ لّيغ د نفاق
ور نژضارٍ أد نكرغ ولا أد ڭاورغ
يغ أر نالّا أغويّي نو أ تيفهامنت
تڭا بدّا بوڭاضو نو أ لّيغ د نكرخ
أد أغ ڭيسنت يصمح باب ن يڭنوان
يمّي نو أ ييمّي لاح سول أسدرم نم
يكّيس أخ كم واكال ور سول نقضي يات
ملا وفيخ أم رٍضلخ غ لاعمرٍ تّاخ
مناصّ نيغ وڭّار نس ور أغ همّين
ينّا غ ور تلّي ماك أر نيت يتّبايان
أد أنخ ور تلامّام يغ أ سغويوخ
نژوژض أ نيلي غ لهنا نادّج أوال
والايني يغ تنت د نكُتي أر برّيخ
وانّا دار تلّا أ ك وصّاخ ف رٍبّي بلا يات
يغ أك تنّا ها لاعفي ضرٍ نّ ڭيسنت
يني أس أ ييمّي مرحبا نوڭُم لخير
باب ن يڭنّا د باب يكالن د وامان
وانّا كُن ييوين أ رّضا يوڭُر لمال
ولا أيدا والا تاروا ك يسهنّان
وانّا ور يربحن غ يمّيس يجلا نيت
يلّا كرا ور يوحيل والا تّهوولن
يغ أر تنت يكّات أر تنت يتّغيار
ياسي د تاساروت ن لجنت يجلو تنت.

****

-66-

ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⴱⵏ ⵎⵓⵙⴰ

ⵜⵉⵣⵅⵉ ⵏ ⵉⵖⴷⴷⵉⵡⵏ

ابراهيم بن موسى

ولد بقبيلة ئغدّيون سنة 1971 والتحق بالمسجد ونال قسطه من القرآن، وقد أدرك وهو شاب عددا من الشعراء بالمنطقة من أمثال أبرشاح وجاخّا الحاج الحسن، كما تأثر بشعراء ئزناگن من أمثال أحمد ؤبلا ورّايس الحسين وآخرين، دخل إلى فضاء الحوار الشعري منذ أواخر التسعينات، وهو اليوم من بين أبرز الشعراء المتنقّلين بالأطلس الصغير الشرقي مع زميله زّاكي عبد الرحمان، وقد ساجل عددا من شعراء سوس، وشارك في الملتقى الثاني لشعراء أسايس بإغرم في مارس 2018.

ⵚⵚⵃⵕⴰ

ⴰⵥⵏⴰⴳ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⵔⴰⵔ ⴰⴷ ⴷ ⵙⵔⵜⵏⵖ ⵓⵛⴰⵇⵓ
ⵏⵙⵙⴼⵓⴷ ⵜⴱⴷⵔⵜ ⵜⵉⵏⴹⴻⴼ ⴰⵎⵥ ⵓⵊⴰⵡⴰⴱ ⵏⴽ
ⵎⴰⴷ ⵏⴽⴽⵉ ⴱⴰⵏⴽⵉⵎⴻⵏ ⵉⵖ ⴰ ⵜⵜⵏⴹⴰⵇⵏ
ⵢⴰⵏ ⴷⴰⵔ ⵓⵓⴰⵏ ⵕⵕⵚⴻⵎ ⵉⵙⵙⵏⵎ ⴷ ⵜⵉⴷⴷⵉ ⵏⵙ
ⴰⴷ ⴷ ⴻⵔ ⵏⵜⵜⵓⵏ ⴰⵡⵥⴻ ⴰⵙⵉⵏ ⴰⵖ ⴷ ⵎⴰ ⴷⴰⵔⵙ
ⵢⴰⵏ ⴼ ⵍⵍ ⵔⴳⵓⵏ ⵉⴼⵓⴻ ⵎⴰⵅ ⵎⴰ ⵙ ⵉⵢⵉ ⵀⴻⵓⵏ
ⵉⵜⵜⴹⴻⵡⴰⵕ (ⵏ)ⵉⵜ ⵉ ⵜⴳⵎⵎⵉ ⵙ ⵡⴰⵓⵓⵏ ⴷ ⵉⴹⴰⵕⵏ
ⵜⴰⵏⵊⴰ ⴰⵔ ⵓⴳⵡⵉⵔⴰ ⵜⵓⵓⴰ ⵙ ⵓⵃⴻⴷⴻⴷ ⵏⵙ
ⵚⵚⵃⵕⴰ, ⵚⵚⵃⵕⴰ ⵓⵎⴰⵖⵔⵉⴱ ⴰ ⴱⴷⴷⴰ ⴳⴰⵏⵜ
ⴻⵔ ⵢⴻⴼⵉ ⵢⴰⵏ ⴰ ⵢⵙ ⵉⴱⴰⴷⵓ ⵉⵙⵎ ⴷⴰ ⴷⴰⵔⵙ
ⵀⴰ ⵍⵍ ⴰⴳⵓⵓⵉⴷ ⴰ ⵢⵙ ⵉⵣⴰⵢⴷ ⵕⴱⴱⵉ ⵖ ⵓⵛⴻⵎⵕ
ⵉⴼⵓ ⴰⵙ ⴷ ⴱⴰⴱⴰⵙ ⵖ ⴻⴼⴻⵙ ⴰⴽⴰⵓ ⵉⴹⴻⴼ ⵜ
ⵉⵙ ⴽⴰ ⵉⵅⵓⴰ ⵡⴰⴷⵊⴰⵕ ⵉⵖ ⴰ ⵜⵏ ⵙⵉⴳⴳⵉⵓⵏ
ⵉⵣ ⴷ ⵓⵃⵕⴱ ⴰ ⴳⵉⵏⵖ ⵉⵙⵉⴳⴳⵉⵓ ⵓⵊⴰⵣⴰⵢⵔ
ⵀⴰ ⵓⵎⴰⵙⵉⵔⴰ ⵔⴰ ⴷⴰⵅ ⵏⵙⴽⵔ ⵜⵉⵡⵉⵣⵉ ⵏⵙ
ⴰ ⵏⴰⵓⵓ ⵕⵕⴰⵢⴰ ⵏⵖ ⵏⵣⴰⵢⴷ ⴰⵙ ⴻⵓⴰ ⴷⴷⵉⴽⵔ
ⵎⴰ ⴼ ⴰ ⵉⵜⵜⵎⵜⴰⵜ ⵢⴰⵏ ⴰⵔⵔⴰⵡ ⴷ ⵜⵎⴰⵣⵉⵔⵜ.

صّحـڕا

أژناڭ بڕاهيم رار أد د سرتنغ لعاقل

نسّفلد تبدرت تينضوف أمژ لجاواب نك

ماد نكّي بانكيمون يغ أ تّنضاقن

يان دار لّان ڕّصوم يسّنم د تيدّي نس

أد د ور نتّلن أوژو أسين أغ د ما دارس

يان ف نّ رگّلن يفلو ماخ ما س يّي هولن

يتّضُووَاڕ نيت ئـ تكّمّي س والّن د يضاڕن

تانجا أر لگّويرا تلّا س لحودود نس

صّحـڕا، صّحـڕا لماغريب أ بدّا گّانت

ور يوفي يان أ يس يبادل يسم دا دارس

ها نّ أكّلّيد أ يس يزايد ڕبّي غ لعومڕ

يفل أس د باباس غ وفوس أكال يضوف ت

يس كا يخلا وادجاڕ يغ أ تن سيگّيلن

يز د لحـڕب أ گّينغ يسيگّيل لجازاير

ها لماسيرا را داخ نسكر تيويزي نس

أ نالّ ڕّايا نغ نزايد أس ولا دّيكـر

ما ف أ يتّمتات يان أرّاو د تمازيرت.

******

-67-

ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⵣⴰⴽⵉ

ⴰⵢⵜ ⵎⵏⵚⵓⵔ

محمد زاكي

ولد في أيت منصور -الفايجة- سنة 1975 والتحق بالمسجد والمدرسة ولكنه لم يلبث أن غادرهما لكي ينخرط في العمل من أجل إعالة أسرته، ويشتغل في مجال الإنشاءات، تأثر بشعراء منطقته من أمثال أبرشاح والحاج الحسن جاخا وغيرهم ثم لم يلبث أن دخل فضاء الحوار بمعية زميله بن موسى، وقد ساجل عددا من الشعراء المعروفين اليوم في أسايس، ألف مع زميله بن موسى ثنائيا منسجما ولهما طريقتهما في بناء مواضيع الحوار، شارك في ملتقى الشعراء بإغرم سنة 2018.

ⵔⴰ ⵜⵣⵔⵉ

ⵉⴳⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵃⵃⴰⵀ ⵃⵊⵉⵏ ⵙ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⴰ ⵡⴰⴽⴰⵃ
ⵡⴰⵍⴰ ⵜ ⵉⴱⴷⵔⵏ ⴼ ⵜⵎⵥⵉⵏ ⵔⴰ ⵜⵏⵜ ⵉⵙⵔⵡⴰⵜ
ⵇⴱⴱⵉ ⴰ ⵎⵉ ⵖⵔⵉⵖ ⴰ ⵉⵢⵉ ⴷ ⵉⵚⵇⵓⴼ ⴽⵔⴰ ⴼ ⵃⴽⵎⵖ
ⴰ ⴱⴰⴱ ⵏ ⵃⵊⴰⵕⵃ ⵔⴰ ⴷⵉⴽ ⵏⵛⵔⴽ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰⴷ ⴷⵉⴽ ⵏⵅⵔ ⴰⵚⵟⵟⴰ ⵀⴰ ⵉⴼⵉⵃⵉ ⵏⵡ ⵡⵉⵍⵓⵏ
ⴰ ⵃⵓⵚⵉⵢⵜ ⴰ ⵜⵉⵃⵉ ⵖ ⵉⵅⴼ ⵍⵓⵏ ⴰ ⴽⵉⵡⴰⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵜⵜⵛⴰⵀⴰⴷⵏ ⵥⵥⵓⵇ ⵙ ⵉⵎⵉ ⵡⴰⵃⴰ ⵜⵉⴹⵜ
ⴰⵙⵙ ⵍⴰ ⵇⵄⵃⵏ ⵙ ⵖⵉⴷⴰ ⵖ ⵜ ⴰⴽⴽⵯ ⵓⵔ ⵉⵙⵙⵏ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⵖⵉⵍ ⵓⵔ ⴳⵉⵙⵏ ⵙⵉⴷⵉ ⵓⵃⴰ ⵏⴼⴽ ⴰⴽ ⵉⵎⵉⴽⴽ
ⴰⴼⴰⵙⵉ ⴷ ⵓⵥⵃⵎⴰⴹ ⴰ ⵉⵛⴰⵟⵇ ⵢⴰⵏ ⵓⴽⴰⵏ
ⴰ ⵡⴰⵍⴰ ⵉⴳⴰ ⵇⴱⴱⵉ ⴷ ⵓⴼⵀⵉⵎ ⵙⴽⴰⵔ ⵃⵣⵉⵔ
ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵔⴰ ⵜⵣⵔⵉ ⵣⵓⵏ ⴽⴰ ⵉⵣⵔⵉ ⵡⴰⵙⵉⴼ
ⴰ ⵉⵢⵉ ⵜ ⵉⵎⵃⴰⵏ ⴷ ⵡⵉⴷⴰ ⴽⵛⵎⵏⵉⵏ ⵉ ⵡⴰⴽⴰⵃ
ⵢⴰⵏ ⵉⴷⴷⴰⵏ ⵓⵔ ⴷ ⵢⵓⴹⵉ ⵙ ⵡⵉⵃⵃⵉ ⵕⵕⴰⵎⴰⵏⵉⵏ
ⴰ ⵢⴰⵏ ⵉⵀⴷⴰ ⵇⴱⴱⵉ ⴷⴰ ⵜⵜⴹⴰⵃⴰⴱⵏ ⵚⵚⵓⵎⵓⵄ
ⵏⵜⵜⴰ ⴷ ⵓⵏⵖⵉⴼⴰⵇ ⵉⵖ ⵓⵔⵜⴰ ⵍ ⵙⵃⵉⵏ ⵃⵎⵓⵜ
ⵉⵖⴰⵎⴰ ⵍ ⵓⵣⴰⵥⵓ ⴷⴰⵔ ⵡⵉⵃⵃⵉ ⵕⵕⴰⵎⴰⵏⵉⵏ.

را تـزري

يڭا بيسمي لّاه لعين س أر يسّا واكال
وانّا ت يبدرن ف تمژين را تنت يسروات
رٍبّي أ مي غريغ أ يّي د يصرٍوف كرا ف لكمغ
أ باب ن لعاقل را ديك نشرك أغاراس
أد ديك نڭر أصطّا ها يفيلي نو وينّون
أ لوصييت أ تيلي غ يخف نّون أ كيوان
أ يان يتّشاهادن ژّورٍ س يمي والا تيضت
أسّ نّا رٍحلن س غيدا غ ت أڭّ ور يسّن يان
أ غينّ ور ڭيسن سيدي ولا نفك أك يميكّ
أفاسي د وژلماض أ يشاطرٍ يان وكان
أ وانّا يڭا رٍبّي د وفهيم سكار لخير
أ دّونيت را تزري زون كا يزري واسيف
أ يّي ت يملان د ويدا كشمنين ئـ واكال
يان يدّان ور د يوضي س ويلّي قّامانين
أ يان يهدا رٍبّي دا تّضالابن صّوموح
نتّا د ونغيفارٍ يغ ورتا نّ سلين لموت
يغاما نّ وزاژو دار ويلّي قّامانين.

****

-68-
ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⴱⴰⵍⵉⵍ
ⴰⵢⵜ ⵡⴰⴷⵔⵉⵎ

ابراهيم بليل

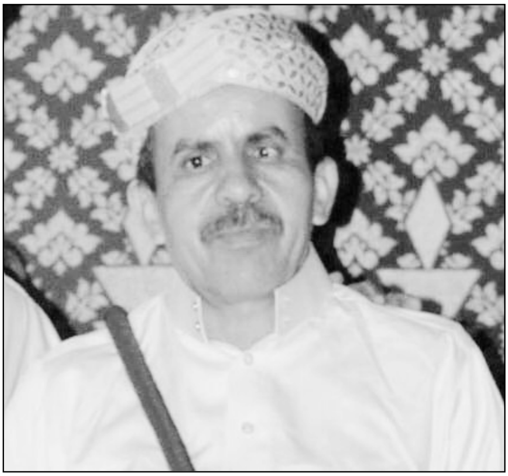

ولد في سنة 1962 بقبيلة ايت وادريم والتحق بالمدرسة لكنه لم يتجاوز التعليم الابتدائي، تأثر بعدد من شعراء منطقته من أمثال الحاج عمر أكعيوس والحاج أحمد أغيدّا وآخرين، وفي الثمنينات من القرن الماضي بدأ يرتاد ميادين الحوار ويتقمّص دوره في السجال، وقد ساعده على ذلك كون قبيلته من القبائل التي لها باع طويل في فنّ أجماك.

ⴰⵣⵔⴼ ⵏ ⵜⵉⵔⵔⴰ

ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⵉⵡⵉⵅ ⴽⵯⵏ ⵉⴷ ⴰ ⵍⴼⵕⵃ ⵏⵣⵡⵓⵔ ⴰⴽ
ⴰⵣⵓⵍ ⴰ ⵢⵉⵎⴰⵣⵉⵖⵏ ⵍⵍⵉ ⵉⵖⵓⵢⵏ ⴰⵄⴱⴰⵕ ⵏⵖ
ⵖⵓⵢⵏ ⵜⵉⵔⴳⵯⵣⴰ ⵖⵓⵢⵏ ⴰⵡⴰⵍ ⴰⵅ ⵓⵔ ⵉⴼⴼⵖ ⴰⴼⵓⵙ
ⵙⵙⵉⵛⵔ ⵉⵍⵍⴰ ⴱⴷⴷⴰ ⴽⵉⴳⵓⵏ ⴰ ⵢⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵏ ⵙⵓⵙ
ⵓⵍⴰ ⵥⴰⵢⵢⴰⵏ ⵓⵍⴰ ⵔⵔⵉⴼ ⴷ ⵍⵇⴱⴰⵢⵍ ⵏⴳⴰ ⵢⴰⵏ
ⴰⵏⵅ ⵉⵙⵎⵃⵓⴱⴱⵓ ⵕⴱⴱⵉ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵖⵓ ⴷ ⵡⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⵏⵎⵓⵏ ⵉⴽⵍⵍⵉ ⴷ ⵙⵎⵓⵏⴰⵏ ⵓⴳⴳⵓⴳⵏ ⴰⵎⴰⵏ
ⴰⵏⵅ ⵓⵔ ⴱⴹⵓⵏ ⵉⵎⵃⵙⴰⴷⵏ ⴷ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵊⵀⵍⵉⵏ
ⵃⵎⴷⵖ ⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⴷ ⴰⵙⵙ ⴰ ⴼⴼⴰⵖⵏⵜ ⴳⵉ ⵜⴰⵡⴷⵉⵡⵉⵏ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⴰⵖ ⵉⵙⵙⵉⵡⵉⴷ ⵍⵅⵍⵇ ⵡⴰⵅⵅⴰ ⵉⵅ ⵉⴼⵉⵙ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⴽⵚⵓⴹⴰⵖ ⵉⵖ ⵏⵙⴰⵡⵍ ⴰⵣⵔⴼ ⴱⴰⵢⵏⵏ
ⵢⴰ(ⵏ) ⵓⵣⵎⵣ ⴰⵔ ⴰⵍⵍⴰⵖ ⵣⴷⴰⵖⵏⵜ ⴳⵉ ⵜⴰⵡⴷⵉⵡⵉⵏ
ⴳⵉⵖ ⴱⴷⴷⴰ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵉⴳⵉⴳⵉⵍ ⴰⵛⵎⵓⴷ ⵉⵎⴷⵉ ⴰⵖ
ⵉⵖ ⴽⴰ ⵏⵏⵉⵖ ⴰⵣⵓⵍ ⵏⵏⴰⵏ ⴰⵖ ⵎⴰ ⴽ ⵉⴷ ⵢⵉⵡⵉⵏ
ⴷⴷⵓⵙⵜⵓⵔ ⵉⵡⵉⵏ ⴰⵅ ⴷ ⵜⵉⴼⴰⵡⵜ ⵉⵏⵏⴰ ⵣⵛⵎ ⵏⵉⵜ
ⴽⵓⵍⵍ(ⵓ) ⵎⴰ ⴽ ⵉⵅⴰⵚⵚⴰⵏ ⵜⵙⵉⴳⴳⵍⵜ ⵜ ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰⴷ ⴷⴰⵔⵏⵅ
ⵖ ⴰⵙⵙ ⴰ ⵉⵎⵍⴰ ⵉⵢⵉ ⴷ ⵅⵜⵉⵍⵍⵉ ⵏⵏ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵃⴹⴰⵏⵉⵏ
ⴼⵕⵃ ⴼⵕⵃ ⴰ ⵢⴰⴼⴳⴰⵏ ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ ⵜⵓⴼⴰⵎ ⴷ ⵍⵅⵉⵔ
ⵙⵉⴷⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⴷ ⵓⴳⵍⵍⵉⴷ ⴰ ⵉⵃⵏⵏⴰⵏ ⴳⵉⵜⵏⵖ
ⵉⴼⵙⵉ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵉⵎⴽⵔⴰⵙ ⵉⵕⵥⵎ ⵜⴰⴷⴷⵡⴰⵜⵉⵏ
ⵢⴰⵏ ⵔⴰ ⵉⵜⵜⴰⵔⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⴰⵙⵉⵏ ⴷ ⵍⵇⵍⵎ
ⴰⵔ ⵙⵔⵙ ⵉⵜⵜⴰⵔⴰ ⵜⵉⴼⵉⵏⴰⵖ ⵙⴽⵔⵏ ⴰⴷⵍⵉⵙ ⵏⵙ
ⴰⵔ ⵜ ⵉⴷ ⵉⴼⴼⴰⵍ ⵉ ⵡⴰⵔⵔⴰⵡ ⴰ ⵜ ⵖⵔⵏ ⵉⵖ ⴷ ⵉⵍⵓⵍ
ⵢⴰⵜ ⴽⴰ ⴰ ⵉⵜⵜⵕⵥⵥⴰⵏ ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵅⵍⵓ ⵜⵉⵇⴱⵉⵍⵉⵏ
ⵢⴰⵏ ⵜⵏⵜ ⵉⵜⵜⴰⵔⴰⵏ ⵖ ⵜⴰⵙⴰ ⵉⴼⵍ ⴷ ⵏⵏⴷⴰⵎⴰⵜ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵙⵙⵏ ⵢⴰⵏ ⵅⵜⵉⵍⵍⵉ ⵜ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵇⵀⵕⵏⵉⵏ
ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⴱⵓⵇⴰⵍ ⵉⵖ ⵕⵥⴰⵏ ⵓⵔ ⵙⴰⵔ ⵉⵖⵢ ⴰⵎⴰⵏ
ⴰ ⵉⴳⴰ ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵜⵜⴰⵔⴰⵏ ⵕⵕⵚⵓⵎ ⴰⴷ ⴷ ⵖⴰⵎⴰⵏ
ⵎⴰ ⵙ ⵔⴰ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉ ⵡⴰⵔⵔⴰⵡ ⵏⵙⵏ ⵍⵍⴰⵏ ⴷⴰⵔⵏⵖ
ⵢⴰⵏ ⵉⵜⵜⴰⵔⴰⵏ ⵉⴼⵍ ⴷ ⴰⵔⵔⴰⵜⵏ ⵉⴼⵍ ⴷ ⵍⴰⵎⴰⵏ
ⵣⵓⵏ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⴷ ⵉⴼⵍⵏ ⵉⵡⵜⵜⴰ ⵖ ⵡⴰⵢⴷⴰ ⵜⵜⵀⵏⵏⴰⵏ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵉⵍⵍⵉ ⵎⴰ ⵔⴰ ⵜⵜ ⵉⴽⴽⵓⵙ ⵎⵏⴷⵓ ⴱⵍⴰ ⴰⵔⵔⴰⵡ.

أزرف ن تيـرّا

بيسمي لّاه يويخ كُن يد أ لفرٍح نزوور أك

أزول أ ييمازيغن لّي يغوين أشبارٍ نغ

غوين تيركّْزا غوين أوال أخ ور يفّغ أفوس

سّيعر يلّا بدّا كيڭون أ يامازيغ ن سوس

ولا ژايان ولا رّيف د لقبايل نڭّا يان

أنخ يسمحوبّو رٍبّي زون د أغو د وامان

أ ئمون يكلّي د سمونان وڭّوڭن أمان

أنخ ور بضون ئمحسادن د ويلّي جهلنين

حمدغ ئـ رٍبّي د أسّ أ ڤّاغنت ڭّي تاوديوين

ور سول أغ يسّيويد لخلق واخّا يڭ يفيس

ور سول كصوضاغ يغ نساول أزرف باينّ

يان وزمز أر ألّاغ زداغنت ڭّي تاوديوين

ڭيغ بدّا زون يڭيڭيل أعمود ئمدي أغ

يغ كا نّيغ أزول نّان أغ ما ك يد ييوين

دّوستور يوين أخ د تيفاوت ينّا زعم نيت

كولّ ما ك يخاصّان تسيڭّلت ت غ أسّ أد دارنخ

غ أسّ أ ئملا يّي د ختيلّي نّ كولّو حضانين

فرٍح فرٍح أ يافڭّان أمازيغ توفام د لخير

سيدي رٍبّي د وڭلّيد أ يحنّان ڭيتنغ

يفسي كولّو تيمكراس يرٍژم تادّواتين

يان را يتّارا تامازيغت أسين د لقلم

أر سرس يتّارا تيفيناغ سكرن أدليس نس

أر ت يد يڤّال ئـ وارّاو أ ت غرن يغ د يلول

يات كا أ يترٍژّان أوال يخلو تيقبيلين

يان تنت يتّاران غ تاسا يفل د نّدامات

ور سول يسّن يان ختيلّي ت كولّو قهڕنين

زون د أبوقال يغ ڕژان ور سار يغي أمان

أ يكّا يان ور يتّاران ڕّصوم أد د غامان

ما س را يتّيني وارّاو نسن لّان دارنغ

يان يتّاران يفل د أرّاتن يفل د لامان

زون والّي د يفلن يوتّا غ وايدا تّهنّان

ور سول يلّي ما را تّ يكّوس مندو بلا أرّاو.

****

-69-

ⵎⵃⵏⴷ ⴰⵥⵎⴰⵏⵉ
ⴰⵢⵜ ⵡⵉⵅⵏⴰⵏ
محند أزماني

ولد في قرية تاكنزا واسيف بأيت ويكنان جماعة تاركا ن تيشكا سنة 1965.التحق بالمسجد وبقي فيه حتى نال ما تيسر له من القرآن الكريم. وقد تأثر كثيرا بشعراء أجماك المشهورين من أمثال الحاج أحمد الريح وباقي المخضرمين. بدأ يرتاد فضاء الحوار ببلوغه ال 18 من عمره ويعتبر اليوم أحد شعراء أجماك الذين يحملون لواء الشعر الأمازيغي بسوس. يمتاز بجرأته وهجائه اللاذع واندفاعه وحماسه أثناء السجال.

ⵜⴰⵢⴷⵔⵜ ⵏ ⵓⵎⴰⵔⴳ

ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵍ ⵉⴼⵓⵍⴽⵉⵏ ⵏⴱⴷⴰ ⵙⵔⴽ
ⴰⴷ ⵄⵍⵍⵎⵖ ⵉ ⵜⵢⵢⵓⴳⴰ ⵖ ⵉⴳⵔ ⵓⴽⴰⵏ ⵖⵔⵖ ⴰⴽ
ⴰ ⵉⵍⴰⵀⵉ ⵍⵍⵉ ⵢⴰⴽⴽⴰⵏ ⵍⵅⵉⵔ ⴽⵎⵎⵍ ⴷ ⴼⵍⵍⴰⵖ
ⵉⵖ ⵍⵓⵃⵖ ⴰⵎⵓⴷ ⵉ ⵡⴰⴽⴰⵍ ⴰⵏⵥⴰⵕ ⴰⴷ ⴷ ⵃⴰⵕⵕⵓⵏ
ⴰ ⵏⵏ ⴼⵍⵍⴰⵙ ⵓⵔ ⵉⵎⴰⵟⵍ ⴽⵉⵖ ⵢⴰⴷ ⵉⴼⴼⵖ ⵉⵇⵇⴰⵔ
ⴰⵛⴽⵓ ⵀⴰ ⵏⵏ ⴰⵣⵔⴳ ⴰⴷ ⵓⵔ ⴰⵅ ⴳⵉⵙ ⵉⵄⴹⵕ ⵢⴰⵏ
ⴰⵏⵔⴰⵔ ⵉⵔⴰ ⵉⵢⵉ ⵜⴰⴼⴼⴰ ⴰ ⴳⵉⵙ ⵜⵉⵍⵉ ⵖ ⴷ ⵏⵜⵜⴰⵏ
ⴰⴳⵯⵍⵉⴼ ⵉⵔⴰ ⴰⵊⵊⵉⴳ ⵉⵔⵉⵏ ⵉⴽⵙⵙⴰⴱⵏ ⴰⵍⵉⵎ
ⵡⴰⵢⵏⵏⵉ ⴳⵉⵅ ⵍⵄⵉⴱ ⵉ ⵡⵓⵟⵟⵓⴼⵏ ⵍⵍⵉ ⴳⵯⵎⵔⵏⵉⵏ
ⵍⵖⴼⵍⵜ ⵓⵙⵙⴰⵏ ⴰⴷ ⵙⵙⴰⴽⵯⵉⵏ ⴷ ⴰⵍⵍⵏ ⵊⵀⵍⵏⵉⵏ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵓⵊⵊⵉⵏ ⴰⴼⵍⵍⴰⵃ ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴰⴷ ⵀⵏⵏⴰⵏ
ⵜⴰⵢⴷⵔⵜ ⵏ ⵜⵎⵥⵉⵏ ⵙⵙⵓⵙⵏ ⵜⵜ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵍⴳⵓⵎⴰⵏ
ⵢⴰ(ⵏ) ⵉⴽⵔⵣⵏ ⵙ ⵓⵎⵏⵥⵓ ⵉⵖ ⵉⵎⴳⵔ ⵜⴰⴷⵍⵉⵡⵉⵏ
ⵉⵙⴽⵔ ⴳⵉⵙⵏⵜ ⴰⵎⴰⴷⴰⵖ ⴰ ⵓⵔ ⵉⵏⵏⴰ ⵜⵜⵀⵏⵏⴰⵖ
ⵉⵖ ⵢⴰⴷ ⵔⵔⵓⵜⵏⵜ ⴰⴽⵓⵣ ⴰⵔ ⵜⵏⵜ ⵉⵜⵜⵖⴰⵡⴰⵍ
ⴰⵔ ⵢⴰⴽⴽⴰ ⵖ ⵉⵃⵓⵏⴰ ⵖⴰⵔ ⵉⵔⴷⵏ ⵍⵍⵉ ⵖⵍⴰⵏⵉⵏ
ⵉⵕⵥⴰ ⵡⴰⴹⵓ ⵜⵉⴳⴳⵓⵔⴰ ⵏⵏⵓⵏⵜ ⴰ ⵜⵉⵅⵣⴰⵏⵉⵏ
ⵉⵊⵍⴰ ⵕⵕⵉⵥⵓ ⵖ ⵉⴼⴰⵍⴰⵏ ⵉ ⵍⵀⴰⵡⴰ ⵉⴳⵍⵍⵉⵏ
ⵄⴰⵡⵏ ⴰ ⵕⴱⴱⵉ ⵢⴰⵏ ⵉⵜⵜⵏⴹⴰⵎⵏ ⴰⵎⴰⵔⴳ ⵓⴽⴰⵏ
ⴰⵔ ⴽⵉⵖ ⵉⵎⵎⵓⵜ ⵉⵎⵎⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵓⵔ ⵙⵔⵙ ⵉⵍⵀⵉ ⵢⴰⵏ
ⵉⵖ ⴰ ⵉⵙⴰⵡⴰⵍ ⵎⵇⴰⵔ ⵉⵏⵏⴰ ⵚⵚⴰⵃⵜ ⵍⵄⵉⴱ ⵢⵉⵡⵉ ⵜ
ⵥⵓⵏ ⴷ ⴰⵎⴽⵙⴰ ⵍⵍⵉ ⵉⴽⵙⴰⵏ ⴰ ⵉⴳⴰ ⴽⵉⵖ ⴷ ⵉⵕⵓⵃ
ⵢⴰⴼ ⴷ ⵎⴷⴷⵏ ⵛⵛⴰⵏ ⴰⴽⴽⵯ ⵉⵎⵏⵙⵉ ⵓⵔ ⴰⵙ ⵉⵖⵔⵉ ⵢⴰⵏ
ⵉⵃⴰⵙⴱ ⵓⵍⵍⵉ ⵢⵓⵜⵉ ⵎⴰ ⵏⵏ ⵉⴼⵍ ⵖⵉⵍⵍⵉ ⵖ ⴷ ⵓⵔⵔⵉ
ⵉⴹⵚ ⵉⴳⵍⵍⵉⵏ ⵉⵇⵇⵏⴹ ⴰⵙ ⵉⵙ ⵔⴰ ⵢⴰⵡⵣ ⵓⴽⴰⵏ
ⵉⵖ ⴷ ⵏⴽⵔⵏ ⵎⴷⴷⵏ ⵃⵉⵢⵢⵍⵏ ⵍⴼⴹⵓⵕ ⵉⴽⵯⴹⵓ ⴰⵙ
ⵉⵏⴽⵔ ⴷ ⵏⵜⵜⴰⵏ ⵉⵙ ⴰⴽ ⵓⴷⵎ ⴰⵎⵏ ⴷ ⵓⴼⵓⵙ
ⵉⴼⴼⵖ ⴰⵔ ⵉⵙⵉⴳⴳⵉⵍ ⵓⵍⵍⵉ ⵍⵍⵉ ⵏⵏ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵊⵍⴰⵏⵉⵏ
ⵉⵖ ⵜⵏⵜ ⵓⴼⴰⵏ ⵉⵏⵏⴰ ⵍⴰⴱⴰⵙ ⴷⴰⵔⵉ ⵜⵜⵀⵏⵏⴰⵖ
ⵉⵖ ⵜⵏⵜ ⵓⵔ ⵓⴼⵉⵏ ⵉⴹⵕ ⴷ ⴰⵔ ⵢⴰⵍⵍⴰ ⵉⴳⵍⵍⵉⵏ
ⴰ ⵕⵕⵊⴰ ⴼ ⵍⵍⴰⵀ ⴰ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵓⵔ ⴳⵉⵎ ⴰⴱⵍⴰ ⴰⵟⵟⴰⵏ
ⵓⵔ ⵙⵓⵍ ⵎⵎⵉⵎⵏ ⵡⵓⵙⵙⴰⵏ ⵏⵎ ⵕⵥⴰⴳⵏ ⵓⴽⴰⵏ
ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ ⵏ ⵕⴱⴱⵉ ⵜⵉⵎⴳⴳⵓⵔⴰ ⴰⴷ ⴳⵏⵜ ⵄⵍⴰⵅⵉⵔ
ⵉⵎⵎⴰ ⴰⵣⵎⵣ ⴰⵔ ⵉⵙⵙⵉⵡⵉⴷ ⵓⵔ ⴳⵉⵙ ⵉⴹⵀⵕ ⵢⴰⵜ.

تايدرت ن ومارڭ

بيسمي لّاه أ ياوال يفولكين نبدا سرك
أد علّمغ ئـ تيوڭا غ يڭر وكان غرغ أك
أ يلاهي لّي ياكّان لخيرِ كمّل د فلّاغ
يغ لوحغ أمود ئـ واكال أنزارِ أد د حارّون
أ نّ فلّاس ور ئماطل كيغ ياد يفّغ يقّار
أشكو ها نّ أزرڭ أد ور أخ ڭيس يعضرِ يان
أنرار يرا يّي تافّا أ ڭيس تيلي غ د نتّان
أڭُليف يرا أجّيڭ يرين يكسّابن أليم
واينّي ڭيخ لعيب ئـ ووطّوفن لّي ڭُمرنين
لغفلت وسّان أد سّاڭين د ألّن جهلنين
ور سول وجّين أفلّاح نتّان أد هنّان
تايدرت ن ئمڒين سّوسن تّ كولّو لڭومان
يان يكرزن س ومنزو يغ ئمڭر تادليوين
يسكر ڭيسنت أماداغ أ ور ينّا تّهنّاغ
يغ ياد رّوتنت أكوز أر تنت يتّغاوال
أر ياكّا غ يحونا غار يردن لّي غلانين
يرِڒا واضو تيڭّورا نّونت أ تيخزانين
يجلا رّيڒو غ يفالان ئـ لهاوا يڭلّين
عاون أ رِبّي يان يتّنضامن أمارڭ وكان
أر كيغ ئمّوت ئمّا ها نّ ور سرس يلهي يان
يغ أ يساوال مقار ينّا صّاحت لعيب ييوي ت
زون د أمكسا لّي يكسان أ يڭا كيغ د يرِوح
ياف د مدّن شّان أڭّ ئمنسي ور أس يغري يان
يحاسب ولّي يوتي ما نّ يفل غيلّي غ د ورّين

يضص يكّْلّين يقّنض أس يس را ياوز وكان

يغ د نكرن مدّن حييّلن لفضورٍ يكُضو أس

ينكر د نتّان يس أك ودم أمان د وفوس

يقّغ أر يسيكّْيل ولّي لّي نّ كولّو جلانين

يغ تنت وفان ينّا لاباس داري تّهنّاغ

يغ تنت ور وفين يضرٍ د أر يالّا يكّْلّين

أ رّجا ف لّاه أ تودرت ور كّْيم أبلا أطّان

ور سول مّيمن ووسّان نم رٍژاكّْن وكان

لحورٍما ن رٍبّي تيمكّْورا أد كّْنت علاخيرٍ

يمّا أزمز أر يسّيويد ور كّْيس يضهرٍ يات.

****

-70-

ⵎⵃⵏⴷ ⵍⵎⵖⴰⵔⴹⵉ

ⵉⵎⵖⴰⵔⴹⵉⵢⵏ

محند لمغارطي

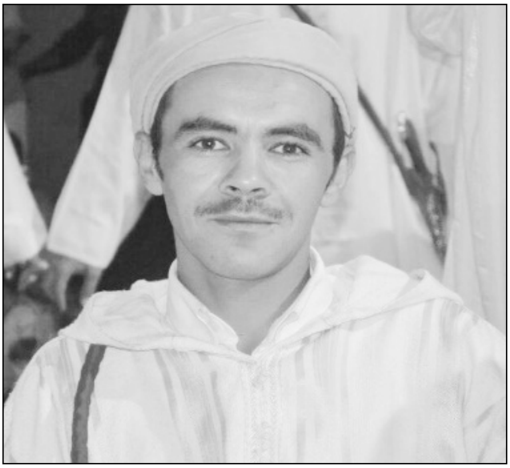

ولد في قرية أيت حامد بقبيلة ئلونان سنة 1984، ولم يدم في دراسته إلا بضع سنوات، وقد تـأثر في النظم بعدد من الشعرء الذين يجوبون منطقته من أمثال أبرشاح وجاخّا وبن موسى وغيرهم، دخل إلى ميدان الحوار في أسايس في منتصف العشرية السابقة، وقد تجوذل في مختلف القبائل المجاورة لبلدته.

ⵍⵀⵏⴰ

ⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⴰ ⵜ ⵏⵣⵣⵡⵓⵔ ⵉ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⵖ
ⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⴰ ⵢⵉⵍⵙ ⵉⵏⵓ ⵜⵜⵓⵣⴰⵏⴰⵜ
ⴰⵡⴰⵍ ⵙ ⵍⵇⴰⵄⵉⴷⴰ ⴰ ⵢⴳ ⵍⵎⵄⵏⴰ ⴷⴰⵔⵏⵅ
ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ ⵢⴰⵍⵍⴰⵀ ⵢⵉⵡⵉ ⴷ ⵡⴰⵙⵉⴼ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ
ⵉⴷⴰⵎⵎⵏ ⵉⵙⵙⴰⵍⵍⴰⵏ ⵉⵥⵕⵉ ⵢⵉⵡⵉ ⴷ ⴰⵎⴰⵏ
ⵉⴳⴳⵉⴳⵏ ⴰ ⵏⵏ ⵉⵙⴰⵡⴰⵍⵏ ⵖ ⵜⵎⵉⵣⴰⵔ ⴰⵏⵏ
ⵍⵎⴰⵖⵔⵉⴱ ⵏⵅ ⴰⵙ ⵏⴽⵚⵓⴹ ⴰ ⵜ ⵉⴷ ⵍⴽⵎⵏ
ⵉⵎⵉⴽⴽ ⵏ ⵓⵚⵎⵎⵉⴹ ⴷ ⵉⵊⴰⵡⵡⴰⵏ ⵉⵖ ⵍⵍⴰⵏ
ⴰⵔ ⵉⵢ(ⵉ) ⵙⵎⵓⵙⵙⵓⵏ ⵢⴰⵏ ⵍⵍⵙⴰⵙ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⵢⴰⵜ
ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵎⴰ ⵜⵥⵕⵉⵜ ⴰⵔ ⵢⴰⵍⵍⴰ ⵣⵓ(ⵏ) ⴷ ⵏⴽⴽⵉⵏ
ⵜⵉⵙⵙⴰⵏⵜ ⵉⵣ ⴷ ⵖⴰⵔ ⵍⵀⵏⴰ ⴰⵙ ⵉⵔⴰ ⴰⴷ ⵉⵍⵉⵏ.

لهـنـا

أ بيسمي لّاه أ ت نزّوُور ئـ وضارٍ نغ
أ بيسمي لّاه أ يِيلس ينو تّوزانات
أوال س لقاعيدا أ يڭ لمعـنا دارنخ
يالّاه يالّاه يِـيـوي د واسـيـف ن دّونيت
يدامّن يسّالّان يـڒرٍي يِـيـوي د أمان
يڭّـيڭـن أ نّ يساوالـن غ تميـزار أنّ
لماغـريب نخ أس نكصوض أ ت يد لكمـن
يميكّ ن وصمّيض د يجـاوان يغ لّان
أر يّي سموسّون يان لّساس ور يڭي يات
كولّو ما تـڒرٍيت أر يالّا زون د نكّيـن
تيسّانت يـز د غار لهنا أس يرا أد يلين.

****

-71-

ⵃⴰⵙⴰⵏ ⵓⵣⵉⴷⴰ
ⵜⴰⵎⴰⵏⴰⵔⵜ

حسن أوزيدا

ولد في تامانارت سنة 1986، والتحق بالمدرسة إلى أن حصل على الشهادة الابتدائية، وقد تأثر بالجوّ الفنّي الذي عرفت به بلدته وخصوصا في موسم سيدي محند ؤبراهيم وعايش أبرز الحواريات الشعرية، ومن بين الشعراء الذين نالوا إعجابه أزوليض وأجماع و سيدي محند ؤمولاي، وقد بدأ في ارتياد أسايس في بداية الألفية الحالية.

ⵍⴱⵕⵊ ⴰⵇⴷⵉⵎ

ⵢⴰ ⴱⵉⵙⵎⵉ ⵍⵍⴰⵀ ⵉⴳⴰ ⵍⴼⴰⵍ ⵏⴽ ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵍ
ⴰ ⵙⵔⵙ ⵏⴱⴷⵓ ⵜⴰⵡⴰⴷⴰ ⵏⵖ ⴰⵔ ⵜⵜ ⵏⵙⵙⵕⵄⴰⵡ
ⴰⵍⵍⴰⵀ ⵉⵕⵃⵎ ⴱⵏ ⵣⵉⴷⴰ ⵉ ⵜⴰⴹⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵏⵜ
ⵏⵜⵜⴰ ⴰⴷ ⴷ ⵉⴼⵍⵏ ⵖ ⵜⵏⵟⵟⴰⵎⵜ ⴰⵡⴰⵍ ⵓⵔ ⵉⵎⵎⵓⵜ
ⵉⴽⴽⴰ ⵜⵜ ⵉⵏⵏ ⴱⵏ ⵣⵉⴷⴰ ⴷⴰ ⵖ ⵉⵍⵍⴰ ⵖ ⵍⵃⴰⵢⴰⵜ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⴰⴷⵔⴰⵔ ⴰⵏⵏ ⵉⴳⴰ ⵢⵙ ⴰⴽⴽⵯ ⵕⴱⴱⵉ ⵜⵉⵙⵏⵜ
ⴰⴽⴰⵍ ⵏⵎ ⴰ ⵜⴰⴹⴰ ⴳⴰⵏ ⵎⴰ ⵖ ⵉⵍⵓⵍⴰ ⵢⴰⵏ
ⴰ ⵖⵉⵏⵏ ⴰⵖ ⵜⵍⵍⴰ ⵜⴰⴷⴷⴰⵔⵜ ⵏⵏⵓⵏ ⴰ ⵢⴰⵡⴰⵍ
ⴰ ⴷⴷⴰⵏ ⵉⵔⴳⴰⵣⵏ (ⴰ)ⴷ ⴷⴰⵔ ⴰ ⵉⵡⴰⵍⵉⵡⵏ ⵜⵍⵍⴰⵎ
ⴰ ⵖⴰⵎⴰⵏ ⴷ ⵙⵙⵓⴼⴰⵀⴰ ⴰⵔ ⵙⵏⵏⴼⴽⴰⵏ ⴰⵡⴰⵍ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵏⵛⴽ ⵏ ⵢⴰⵏ ⵉⴳⴰ ⵍⴼⵏⵏⴰⵏ ⵏ ⵡⴰⵡⴰⵍ
ⵍⵖⴰⵟⴰⴱ ⴷ ⵍⵃⴰⵙⴰⴷⴰ ⴷ ⵜⵖⵓⵢⵢⵉⵜ ⴰⵙ ⵉⵅⵉⵛ
ⵉⵎⵎⴰ ⴰⵎⴰⵔⴳ ⵓⵔ ⵊⵊⵓ(ⵏ) ⴳⵉⵙ ⵢⵓⴼⵉ ⵎⴰ ⵙ ⵏⵏⴰⵏ
ⴰ ⴽⴰⴷⴰ ⵏ ⵍⴽⴰⵄⵉⴹⴰ ⴰⴷ ⴷⴰⵔⵙ ⵏⵙⵍⵍⴰ ⴰⵙⵏⵜ
ⴱⵍⵃⴰⵇⵇ ⵓⵔ ⵢⴰⴷ ⵍⵍⵉ ⴳⵉⵙ ⵎⴰ ⴼ ⵜⵜⴰⵡⵉ ⵢⴰⵏ
ⵡⴰⴷ ⵉⴳⴰⵏ ⵍⵎⵅⵏⴰ ⴳⵉⵏ ⵓⵍⴰ ⵍⵓⵄⵉⵢⵢⴰⵜ
ⵖⴰⵔ ⴰⵡⴰⵍ ⵏ ⵍⴽⵉⴱⵔ ⴷ ⵍⴼⵛⵓⵛ ⴰ ⵖⵉⵏⵏ ⵉⵍⵍⴰⵏ
ⵀⴰ ⵏⵏ ⴰ ⵢⴰⴼⵔⴰⵏ ⵉⵥⵉⵟ ⵏⴽ ⵓⵔ ⵉⵢⵉ ⵙⵙⵉⵃⵍⵏ
ⴰ ⵡⴰⵏⵏⴰ ⵉⴳⴰⵏ ⵙⵙⴱⴰⴱ ⵏⴽ ⵔⵉⴳ ⴰ ⵜⵏ ⵡⵓⵍⵓⵏ
ⵉⵙ ⵏⵟⴰⵍⴱ ⵉ ⵕⴱⴱⵉ ⴰⴷ ⴷⵉⴳ ⵜⵉⵍⵉⵜ ⴰ ⵜⵜⴰⵡⵉⵍ.

لـبـرچ أقـديـم

يا بيسمي لّاه يڱا لفال نك أ ياوال
أ سرس نبدو تاوادا نغ أر تّ نسّرِصاو
ألّاه يرِحم بن زيدا ئـ تاطا كولّو تنت
نتّا أد د يفلن غ تنضّامت أوال ور يمّوت
يكّا تّ ينّ بن زيدا دا غ يلّا غ لحايات
ها نّ أدرار أنّ يڱا يس أكُ رِبّي تيسنت
أكال نم أ تاطا ڱان ما غ يلولا يان
أ غينّ أغ تلّا تادّارت نّون أ ياوال
أ دّان يرڱازن د دار أ يواليون تلّام
أ غامان د سّوفاها أر سنّفكان أوال
أحّ أ منشك ن يان يڱا لفنّان ن واوال
لغاضاب د لحاسادا د تغوبّيت أس يعيش
يمّا أمارڭ ور جّـو ڭيس يوفي ما س نّان
أ كادا ن لكاصيطا أد دارس نسلّا أسنت
بلحاقّ ور ياد لّي ڭيس ما ف تّاوي يان
واد يڱان لمعنا ڭـين ولا لوصييات
غار أوال ن لكيبر د لفشوش أ غينّ يلّان
ها نّ أ يافران يژيض نك ور يّي سّيحلن
أ وانّا يڱان سّباب نك ريخ أ تن وولون
يس نضالب ئـ رِبّي أد ديخ تيليت أ تّاويل.

****

-72-
ⵎⵓⵍⴰⵢ ⴱⵔⴰⵀⵉⵎ ⴼⵉⵀⵔⵉ
ⵜⴰⴹⴰ
ابراهيم فيهري

ولد الشاعر الشاب مولاي براهيم فهري بقرية أكَادير ن لهنا بطاطا سنة 197.. وقد التحق بالمدرسة ونال منها ما كتب له قبل أن يغادرها ليشتغل بالخدمات العامّة، وكان شغوفا بفنون أحواش منذ صغره، ولمّا شبّ تعلّم ممارسة كل التعابير المكونة لهذه الفنون، وكان من مؤسسي فرقة أفرا لفن أهناقار، التي تجوّل معها في مختلف المناطق والمهرجانات، قبل أن يغادرها لينتظم في فرقة باني، وكان بحق فنّانا في التعبير الجسدي والنغمات هو وزميله عبد الله لاماني، ولم يكد أن انتظم في الإنشاد الشعري لما تكوّن لديه من المؤهلات، فبدأ يساجل كبار شعراء المنطقة.

ⴰⴽⵯⵣ

ⴰⵥⵕⵓ ⵎⴰⵏ ⴰⴹⴰⵕ ⴽ ⵢⵓⴽⵯⵍⵏ ⵖ ⵉⴳⴳⵉ (ⵏ) ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵉⵙ ⴽⴰ ⵙⵍⵍⴰⵖ ⵉⵎⵎⴰ ⵜⵉⴹⵜ ⵓⵔ ⵙⵔⵙ ⵏⵥⵕⵉ ⵢⴰⵜ
ⴰⴱⵔⵉⴷ ⵓⵔ ⵉⴽⴽⵉ ⴰⴽⴰⵍ ⴰ ⵢⴳ ⵉⵙⴰⴽ ⵖ ⵍⴰⵟⵕⵜ
ⴰⵛⴽⵓ ⵏⵜⵜⴰⵜ ⴰⵙ ⵏⵜⵜⵉⵙⵙⴰⵏ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⵣⵔⵉⵏⵉⵏ
ⵏⵙⵙⵏ ⵉⵣⵎⵎⵓⵥⵥⴰⵍ ⵏ ⵡⴰⵍⵍⵉ ⴷ ⵢⵓⵣⵣⵍⵏ ⵖ ⵍⵃⵉⵏ
ⵏⵙⵙⵏ ⴰⵥⴰⵥⵓ ⵏ ⵓⴹⴰⵕ ⵉⵏⵉ ⵓⵔ ⵉⵣⵔⴱ ⵛⵓⵡⵕⵏ
ⵉⵖ ⵢⴰⴷ ⵉⵎⵓⵏ ⵓⴽⴰⴱⴰⵕ ⵓⵔ ⵢⴰⴷ ⵉⴹⵄⵕ ⵢⴰⵜ
ⴰⵔ ⵏⵙⵏⵓⴱⴱⵓⵛ ⴰ ⵜ ⵏⵜⵜⴰⵀⴰⵢ ⵉⴹⵃ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⵥⵕⵕⴰⵖ
ⵉⵖ ⵏⵓⴼⴰ ⴰ ⵏⵉⵙⵙⴰⵏ ⴰ ⴱⵓ ⵜⵡⴰⴷⴰ ⵍⵄⵎⵎ ⵏⴽ
ⵜⵓⵎⵥⵉⵏ ⴰⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵓⵔ ⵜⵜⴰⵔⵓⵎⵜ ⵉⵖ ⵉⵎⴷⴰ ⵡⴰⵙⵙ
ⵜⵉⵖⵍⵉ ⵜⵍⵍⴰ ⴼ ⵉⵎⵓⴷⴰⵍ ⴰⴳⵔⵉⵙ ⵉⴷⵍ ⴰⴽⴰⵍ
ⵉⵙⵍⵉ ⵓⵏⵔⴰⵔ ⵎⵇⴰⵔ ⵉⵇⵇⵓⵔ ⴳⵏ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⵏⴰⵙ
ⵏⵜⵜⴰⵏ ⴷ ⵍⵃⴰⴼⵔ ⵏ ⵓⴽⵉⵟⴰⵕ ⵓⵔ ⵉⵎⵣⵉ ⵢⴰⵜ
ⵏⵓⵎⵎⵍ ⴰ ⵏⴽⴽⵉⵙ ⵉⵖⵎⴷⴰⵏ ⵉ ⵢⵉⵙⴰⵏ ⴰⴷ ⵕⴰⵃⴰⵏ
ⵙ ⵉⵖ ⵙⵍⵍⴰⵅ ⵉ ⵡⴰⵢⵢⴰⵄⵓ ⵣⵣⵉⵅ ⴷ ⵉⵙ ⵉⵔⵖⴰ ⵡⴰⵙⵙ
ⵡⴰⵄⵍⵉ ⵎⴰ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵜⵀⴰ ⵍⵓⵇⵜ ⴰ ⵎⴰ ⵉⴳⵯⵎⵎⵉⵏ
ⵍⴼⵔⴰ ⵉⴼⴼⵓⵖ ⴷ ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵇⵇⵏ ⴷ ⴽⵓⵍⵍⵓ ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰⵔ ⵢⴰⵍⵍⴰ ⵡⴰⴼⵓⴷ ⴰⴹⴰⵕ ⴰⵔ ⵢⴰⵍⵍⴰ ⵖ ⴷ ⵏⵜⵜⴰⵏ
ⵉⵖⴹⵕ ⵜ ⴳⵯⵎⴰⵙ ⵍⵍⵉ ⴷ ⵉⵛⵔⴽ ⵛⴰⵍⴰ (ⵏ) ⵓⵖⴰⵔⴰⵙ
ⵀⴰⵏ ⵢⴰⴷ ⵍⵍⵉ ⵡⴰ ⵍⴰⴱⵓⴷⴷ ⵉ ⵓⴼⵓⵙ ⵏ ⴳⵯⵎⴰⵜⵓⵏ
ⵓⵜ ⵙⵔⵙ ⵉⵀⴰ ⵙ ⵜⵓⴼⵉⵜ ⴰⵜⵉ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⴱⵍⴰ ⵢⴰⵏ
ⵉⵊⴰⵡⴱ ⵉⵀⴰ ⵉⵢⵉ ⵎⴰⴷ ⵓⵔ ⵏⵙⵙⵏ ⵓⵔ ⴰ ⵜ ⴳⵯⵎⵎⵉⵅ
ⵉⵀⴰ ⵏⵅⴰ ⴰⵇⵎⵍⵉⵍ ⵉ ⵡⵓⴷⵎ ⵏⴽ ⴰ ⴱⵓ ⵉⵊⵔⵎⴰⵏ
ⵙⵙⵍⴷⵖ ⵉ ⵜⵎⵔⴰⵡⵜ ⵏⵙ ⵉⴼⴼⵓⵖ ⵓⴳⵯⵍⵉⴼ ⵉⵊⵍⴰ ⵏⵉⵜ
ⵉⵕⵞⵉ ⴷ ⵉⵣⴰⵏ ⵓⵔ ⴰⵀⵉⵅ ⴰⵏⵅⵉⵍⴰⴼ ⵖ ⵔⵔⵉⵛ
ⴳⵉⵙ ⵎⴰ ⵢⵓⵙⵉⵏ ⴰⵟⵟⴰⵏ ⵉⴳⴰⵏ ⵎⴰ ⵙ ⵉⵏⵖⴰ ⵢⴰⵏ
ⴳⵉⵙ ⵎⴰ ⵢⵓⵙⵉⵏ ⴰⵙⴰⴼⴰⵔ ⴰⵙⵍⴰⵍ ⴰ ⵢⴳ ⵍⵃⴰⵍ
ⵏⵙⵔⵉ ⵜⴰⵎⵓⵔⵉⵏ ⴰⵀⵉⵅ ⵍⵃⵎⴰ ⴽⴽⴰⵏ ⴷ ⴰⴽⴰⵍ
ⴽⴽⴰⵏ ⴷ ⴰⴳⵯⵏⵙ ⵏ ⵡⵓⵍ ⵏ ⵡⴰⴷ ⵉⴱⵔⵉⵏ ⵉⵃⴹⵓ ⵜⵏⵜ
ⵙⴰⵇⵙⴰⵖ ⴷ ⴽⴰ ⴼ ⴰ ⵏⵉⵙⵙⴰⵏ ⵉⵙ ⴷ ⵉⵣⵓⵣⵡⴰ ⵡⴰⵙⵙ
ⵉⴼⵙⵉ ⵏⵉⵜ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⴰⵣⵣⴰⵍ ⵉⵍⵄⵓ ⵣⵓⵣⵡⵓⵢⴰⵜ
ⵉⴽⵜⵎ ⵜⵓⴳⴳⵯⴰ ⵎⴰ ⵔⴰ ⵙⵓⵍ ⵏⵥⵕ ⴰ ⵜ ⵉⴷ ⵛⴰⵡⵕⵖ
ⵉⵙⴼⴰⵔⵔⵉ ⵡⴰⵖⴰⴹ ⵉⴳⵏⵡⴰⵏ ⴰⵖ ⵉⵜⴱⵕⵕⴰⵎ.

أكُز

أژرو مان أضارٍ ك يوكُلن غ يكّْي ن وغاراس
يس كا سلّاغ يمّا تيضت ور سرس نژرِي يات
أبريد ور يكّي أكال أ يخ يساك غ لاطرِت
أشكو نتّات أس نتّيسّان ويلّي زرينين
نسّن يزمّوڒّال ن والّي د يوزّلن غ لحين
نسّن أژاژو ن وضارٍ يني ور يزرب شوورِن
يغ ياد يمون وكابارٍ ور ياد يضهرٍ يات
أر نسنوبّوش أ ت نتّانّاي يضص ور أ ت ژرّاغ
يغ نوفا أ نيسّان أ بو توادا لهمّ نك
تومژين أد أڭّ ور تّارومت يغ يمدا واسّ
تيغلي تلّا ف يمودال أكْريس يدل أكال
يسلي ونرار مقار يقّور كْن زون د أناس
نتّان د لحافر ن وكيطارٍ ور يمزي يات
نومّل أ نكّيس يغمدان ئـ ييسان أد رٍاحان
س يغ سلّاخ ئـ واياهو زّيخ د يس يرغا واسّ
واهلي ما كولّو تنّا لوقت أ ما يكُمّين
لفرا يفّوغ د أوال يقّن د كولّو وغاراس
أر يالّا وافود أضارٍ أر يالّا غ د نتّان
يغضرٍ ت كُماس لّي د يشرك شالا ن وغاراس
نّان ياد لّي وا لابودّ ئـ وفوس ن كْماتون
وت سرس ينّا س توفيت أتي ور يكّي بلا يان
يجاوب ينّا يّي ماد ور نسّن ور أ ت كُمّيخ
ينّا نكّا أقمليل ئـ وُودم نك أ بو يجرمان
سّلدغ ئـ تمراوت نس يفّوغ وكْليف يجلا نيت

يڕعي د يزان ور أنّيخ أنخيلاف غ رّيش
ڭيس ما يوسين أطّان يڭان ما س ينغا يان
ڭيس ما يوسين أسافار أسلال أ يڭ لحال
نسري تامورين أنّيخ لحما ڭّان د أكال
ڭّان د أڭُنس ن وُول ن واد يبرين يحضو تنت
ساقساغ د كا ف أ نيسّان يس د يزوزوا واسّ
يفسي نيت أر يتّازّال يلهو زوزوُويات
يكتم توڭُّا ما را سول نثڕ أ ت يد شاوڕغ
يسفارّي واغاض يڭنوان أغ يتبڕّام.

****

-73-

ⵃⴰⵙⴰⵏ ⵄⵍⵍⵓⵛⵉ

ⴰⴳⵔⵣⴰⴳⴳⵏ – ⵜⴰⵎⴰ

حسن علوشي

ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴷ ⵍⵉⴳⵔⵜ

ⵎⴰⵏⵉⴽ ⴰ ⵜⴳⵉⵜ ⵖ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵏⴽ ⴰ ⵢⴰⵎⵓⵙⵍⵎ
ⵏⵔⴰ ⵏⵉⵜ ⵖ ⵓⵎⵣⵣⵓⵖ ⵏⴽ ⴰ ⵉⵢⵉ ⴽⴰ ⵙⵍⵍⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⴽ ⵏⵎⵍ ⴰⵡⴰⵍ ⵉⵣⵣⴰⵢⵏ ⵉⵖ ⴰⵡⵏ ⵄⴰⵃⴰⵏ
ⴰⵔ ⵏⵥⵥⴼⵥⴰⵎ ⴰ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵎⴰⵏⵉ ⵉⵢⵉ ⵜⵏⵡⵡⴰⵜ
ⴰⵥⵔⵅ ⵏ ⵓⵏⴰⵎⵓⵔ ⵉⴳⴰ ⵢⵙ ⴰⵎⴰⵏ ⵏ ⵎⴰⵔⵓⵔ
ⴰ ⵙⵉⵏ ⵍⴰⵔⵢⴰⵃ ⴰ ⵢⴰⴷ ⵉⵏⵎⴰⵟⵟⴰⵔⵏ ⵅⵍⵍⴰⵙ
ⵉⵖ ⵉⵙⵓⵍ ⵢⴰⵏ ⵣⵣⵉⴹⵇⵏ ⵢⵉⵍⵉ ⵙ ⵍⵢⴰⵟⵉⵏ
ⵢⵉⵍⵉ ⵖ ⵓⵛⴱⴰⵇ ⵉⵎⵎⵎⴰⵖ ⴰ ⵜⵏ ⵓⵔ ⵉⵛⵎⵜ ⵍⵃⴰⵍ
ⴰⵢⵏⵏⴰ ⵢⵙ ⵉⴽⵜⴱ ⵇⴱⴱⵉ ⵏⵙ ⴰ ⵜ ⵓⴽⴰⵏ ⵍⴽⵎⵏ
ⵍⵎⵓⵜ ⵓⵔ ⵏⵓⵅⵉ ⴰⴷ ⴰⵙ ⵏⵎⵎⴰⵍ ⵍⵎⴰⵍ ⵏⴳ
ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵓⴹⴱⵉⴱ ⵔⴰⴷ ⴰⵊ ⵢⴰⵅ(ⵉ) ⴰⵙⴰⵅⴰⵔ ⵏⵙ

ⴰⵙⵙ ⵍⴰ ⵉⴽⵎⵎⵏ ⵏⴰⵊⴰⵏ ⵔⴰ ⵜⴰⵡⵉ ⵕⵕⵓⵃ ⵏⴽ
ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⵄⴽⴽⵯⵕⴹ ⵏⵙ ⵉⵙⵙⵏ ⵜⵏ ⴽⵉⵡⴰⵏ
ⵉⵏⵏⴰ ⵍⵍ ⵓⴳⵯⵏⵉⴼ ⵖ ⵢⵉⴷⴰ ⵓⵔ ⵉⵏⴽⴽⵎ ⵓⴼⵓⵙ ⵏⴳ
ⵢⴰⵏ ⵓⵔ ⵉⵄⵚⵕⵏ ⴰ ⵜⴰⴳⵔⵙⵜ ⵓⵏⴰ ⴽⵢⵢⵉ ⴰ ⵄⵄⵉⴼ
ⵓⵔ ⵔⴰⴷ ⴷ ⵉⴽⴽⵙ ⴰⵎⵛⵛⴰⴹ ⵏⵙ ⵓⵏⴰ ⴰⵛⴰⵡⵓⵕ
ⵉⵖ ⵓⵔ ⵉⵄⵚⵕ ⵢⴰⵏ ⵉⵣⵣⴰⵏⵏ ⵅⵎⵙⴰ ⵄⴰⵏⴰⵡⴰⵜ
ⴰ ⵎⴰⵏⵉ ⵖ ⵔⴰ ⵢⴰⴼ(ⵉ) ⵏⵊⵏⵜ ⵎⴰⵏⵉ ⵔⴰ ⵙⵔⵙ ⵉⴽⴽ
ⵀⴰ ⵍⵍ ⵉⵇⴰⵏ ⵜ ⵉⴷ ⵓⵎⵓⴷⴷⵓ ⵙ ⵜⵉⵏⵏⴰⵙ ⵏ ⵡⴰⴽⴰⵏ
ⴰ ⵏⵉⵜ ⵉⵙⵙⵡ ⴰⴽⴰⵏ ⵉⴷⵏ ⵙ ⵡⴰⴽⴰⵏ ⵉⵛⵛ ⴰⴽⴰⵏ
ⴰⴷ ⴰⵅ ⵍⵍ ⴳⵉⵙ ⵉⴳ ⵕⵚⵚⵉ ⵕⵕⵃⵎⵜ ⵉⵙⵙⵔⵅⵓ ⵜⵏⵜ
ⴰ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⵜⴳⴰ ⵏⵓⴹⴰ ⴳⵉⵏ ⵡⵓⵙⵙⴰⵏ ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ
ⴰ ⵏⵉⵅⵔⵜ ⵜⴳⴰ ⵣⵓⵏ ⵏⵚⴰⵏⴽⴰ ⵉ ⵢⴰⵏ ⵉⵙⴰⴼⵔⵏ
ⴰⵢⵍⵍⴰ ⵍⵍ ⴳⵉⵙ ⵓⵔ ⵉⴳⵉ ⵏⵅⵏⵇ ⵓⵔ ⵔⴰ ⵜ ⴰⴼⵉⵏ.

دّونيت د ليخـرت

مانيك أ تگيت غ تودرت نك أ ياموسلم
نرا نيت غ ومژوغ نك أ يّي كا سلّان
أد أك نمل أوال يژّاين يغ أون صاحان
أر نزّعزام أ تودرت ماني يّي تنوات
أزرف ن ونامور يگا يس أمان ن مارور
أ سين لارياح أ ياد ينماقّارن فلّاس
يغ يسول يان ژّيضرن ييلي س لياقين
ييلي غ وشبارِ يمّاغ أ تن ور يشمت لحال
أينّا يس يكتب رِبّي نس أ ت وكان لكمن
لموت ور نوفي أد أس نمّال لمال نخ
ور يلّي وضبيب راد أخ ياف أسافار نس
أسّ نّا يكمّل لاجال را تاوي رّوح نك
أ دّونيت أصكّرِض نس يسّن تن كيوان
يلّا نّ وگّليف غ ييدا ور يلكّم وفوس نخ
يان ور يصبرِن أ تاگرست ولا كيي أ صّيف
ور راد د يگّس أمشّاض نس ولا أشاوورِ
يغ ور يصبرِ يان يژّالّ خمسا صالاوات
أ ماني غ را ياف لجنت ماني را سرس يگ
ها نّ يقان ت يد ومودّو س تيلّاس ن واكال
أ نيت يسّو أكال يدل س واكال يشّ أكال
أد أخ نّ گيس يك رِبّي رّحمت يسّرخو تنت
أ دّونيت تگا لوضا گين ووسّان أغاراس
أ ليخـرت تگا زون لبانكا ئـ يان يسافرن
أينّا نّ گيس ور يگي لخلق ور را ت أفين.

-74-

ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⴰⵙⴽⴽⵓⵔ

ⵜⴰⴼⵔⴰⵡⵜ - ⵉⴷⴰ ⵓⵣⴷⴷⵓ

ابراهيم أسكور

ولد في تافراوت ن ئداوزدّوت فيبداية السبعينات، في أسرة عاشقة لفنّ الحوار الشعري، وقد التحق بمسجد القرية ثم بالمدرسة، ولمّا شبّ التحق كغيره من أبناء البلدة بالمدينة للاشتغال في الخدمات التجارية، تأثر كثيرا بالشعـراء الفطاحل بقبيلته من أمثل محند باخشين وئحيا بوقدير وغيرهم ممّن أبدعوا في فضاءات ئسوياس، ولمّا فرضت عليه الظروف العيش بمدينة مكناس اتصل بأمثاله من عشاق فنون أحواش هناك وساهم في تأسيس عدة فرق ملأت الفراغ في الأفراح والمواسم هناك، ساهم في تنظيم الملتقى الأول لشعراء أسايس سنة 2017، كما كان أحد منشطي برامج المجموعة التي أسسها المنخرطون في الرابطة الوطنية.

ⴰⴽⴰⵍ

ⴰⴽⴰⵍ ⵏⵎ ⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵔⵜ ⵏ ⵉⴼⴼⵓⵙ ⵉⵜⵜⵓⵜ ⴰⵖ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⴰ ⵏⵜⵜⵔⵥⴰ ⵏⵔⴼⵓⴼⵏ ⴼⵍⵍⴰⵙ
ⴰⵃⵃ ⴰ ⵎⵉⵛⴽ ⴰ ⵏⴽⴽⵔⵣ ⵏⵙⵙⵕⵚⵓ ⵜⴰⵡⴰⵍⵍⵓⵜ
ⵙⵓⵍ ⵏⵊⵊⵓ ⴳⵉⵙ ⴰⴷⴷⴰⴳ ⵏⵅ ⵉⴼⴽ ⵜⴰⵢⴰⴼⵓⵜ
ⵜⴰⵎⵜⵜⵓⵜⵍⵜ ⵏⵅ, ⴰⵎⴰⴷⵍ ⵏⵅ, ⵓⵍⴰ ⵜⴰⵍⴰⵜⵉⵏ
ⴰⵎⴽ ⵏⵏⴰ ⵉⴳⴰ ⵀⴰ ⵏⵏ ⵕⴹⵉⵅ ⵙⵔⵙ ⵏⵔⴰ ⵜ ⵓⴽⴰⵏ
ⵖⵉⵍⴰⴷ ⵉⴳⴳⵯⵔⴰ ⴰⵙⵏ ⴷ ⴰ ⵉⴽⵓⵢ ⵏⵙⵙⵉⴽⵉ ⵜⵏⵜ
ⵉⵔⵉⵏ ⴰ ⵜⵏ ⴰⵡⵉⵏ ⵉⴳⴰⵢⵡⴰⵔⵏ ⵙⵓⵍ ⵏⴼⵉⵙⵙ
ⵔⴰ ⴼⵍⵍⴰⵙ ⵕⵀⵏⵖ ⵉⴷⴰⵎⵎⵏ ⵉⵏⵓ ⵏ ⵓⴼⴰⵙⵉ
ⵓⵍⴰ ⵡⵉⵏ ⵓⵊⵍⵎⴰⴹ ⵉⵏⵡ ⴰ ⵉⵢⵉ ⵜ ⵓⵔ ⴰⵡⵉⵏ.

أكال

أكال نم أ تامازيرت ن يفّوس يتّوت أغ
أحّ أ ميشك أ نتّرڭا نرفوفن فلّاس
أحّ أ ميشك أ نكّرز نسّرصو تاوالّوت
سول نژّو ڭيس أدّاڭ نخ يفك تايافوت
تامتّوتلت نخ، أمادل نخ، ولا تالاتين
أمك نّا يڭّا ها نّ رضيخ سرس نرا ت وكان
غيلاد يڭُّرا أسن د أ يكوي نسّيكي تنت
يرين أ تن أوين يڭّايوارن سول نفيسّ
را فلّاس رهنغ يدامّن ينو ن وفاسي
ولا وين وژلماض ينو أ يّي ت ور أوين.

ⴰⵙⴽⵟⵓⵔ ⵏ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵙⵓⵙ

ⵓⵟⵟⵓⵏ ⴷ ⵉⵙⵎ ⵏ ⵓⵎⴷⵢⴰⵣ	ⵉⵙⵎⴰⵡⵏ ⵏ ⵜⵎⴷⵢⴰⵣⵉⵏ
1- ⵍⴰⵛⴳⵕ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ 10	ⴰⵙⵓⵜⵔ 11
2- ⵍⵎⵃⵎⵎⴷⵉ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 13	ⴰⴳⴰⴷⵉⵔ ⵏ ⵜⵇⴱⵉⵍⵜ 14
3- ⵎⵙⵜⴰⵡⵉ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 16	ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ ⵏ ⵓⵙⵍⵎ 17
4- ⴰⵅⴱⵓⵔ ⵄⵍⵉ 18	ⴰⵡⵉ ⵛⵛⵓⵕ 19
5- ⵍⴰⵎⵉⵏⵉ ⵄⴱⴷⵍⵍⴰⵀ 21	ⴰⵍⵍ ⵉⵅⴼ ⵏⴽ 22
6- ⵓⴱⵍⵍⴰ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ 26	ⵜⴰⵎⵍⵉⴼⴰⵜ 27
7- ⴰⵢⵜ ⵡⴰⵃⵎⴰⵏ ⵍⵀⴰⵛⵎ 29	ⵍⵃⵓⵕⵎⴰ 30
8- ⴰⵡⵣⴰⵍ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ 32	ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴰⴷ 33
9- ⴰⴳⵯⵔⵔⴰⵎ ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ 35	ⵉⴳⵓⵢⵎⵔⴰ 36
10- ⴱⵓⵙⵜⵜⴰ ⵎⵓⵍⴰⵢ ⵄⴱⴷⵍⵍⴰⵀ 38	ⵏⴽⴽⵉ ⴷ ⵟⵟⵎⵄ 39
11- ⵓⵙⵍⵉⵎⴰⵏ ⵍⵀⴰⵛⵎⵉ 41	ⴳⴰⵔ ⴰⵣⵎⵣ 42
12- ⴱⵓⵎⵀⴷⵉ ⵃⴱⴷⵕⵃⵎⴰⵏ 44	ⴰⵡⴷ ⵉ ⵓⴹⴰⵕ ⵏⴽ 45
13- ⴰⵢⵜ ⵓⵥⴳⴳⵯⴰⵖ ⵄⵓⵎⴰⵕ 47	ⵜⴰⴱⵔⴰⵜ 48
14- ⵜⴰⵛⵜⵓⴽⵜ ⵄⵉⵛⴰ 50	ⴰⴼⵓⵙ ⵖ ⵓⴼⵓⵙ 51
15- ⴰⵣⴽⵔⵉ ⵍⵃⴱⵉⴱ 55	ⴰⵃⵕⵕⵉⴳ ⵏ ⵜⴰⵢⵔⵉ 56
16- ⵍⵎⵓⵙⴰⵡⵉ ⵎⵃⵏⴷ 57	ⴰⵖⴱⴰⵍⵓ 58
17- ⵙⴱⴰⵄⴷⵓⵏⵉ ⵃⴰⵙⴰⵏ 61	ⵍⵡⴰⵜⵚⴰⴱⴱ 62
18- ⴰⵅⵔⵔⴰⵣ ⵕⴰⵛⵉⴷ 66	ⵜⴰⵎⵎⵓⵔⵖⵉ 67
19- ⵍⵇⴰⴷⵉⵔⵉ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 69	ⵜⴰⴽⵎⵎⵓⵙⵜ 70
20- ⴱⵓⵔⵔⵉⵛ ⵢⵓⵙⵓⴼ 75	ⴰⵄⵕⴰⴱ 76
21- ⵓⴱⵉⵀⵉ ⵄⵓⵎⴰⵕ 78	ⴰⵟⵟⴰⵏ 79
22- ⵙⴰⵄⵉⴷⴰ ⵜⴰⵎⴰⵣⵉⵖⵜ 81	ⴰⵙⵎⴰⵎⵎⵉ 82
23- ⴰⴷⵔⴰⵔ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 84	ⵍⵏⵜ ⴼ ⵡⴰⴽⴰⵍ 85
24- ⵡⴰⵀⵔⵓⵛ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ 87	ⴰⴼⵓⵍⴽⵉ ⵏ ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ 88
25- ⴰⵃⴷⴷⴰⴷ ⵍⴱⴰⵛⵉⵔ 90	ⵜⴰⵥⴰⵢⵜ 91
26- ⴰⵍⵃⵢⴰⵏ ⵎⵓⵙⴰ 93	ⵜⴰⵏⴰⴼⵓⵜ 94
27- ⴰⵙⴳⴰⴷⵔⴰⵏ ⵍⵃⵙⵏ 96	ⴰⵣⵔⴼ 97
28- ⴰⵣⴷⴷⵓ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 99	ⵏⴽⴽⵉ ⴷ ⵓⵎⴰⵔⴳ 100
29- ⵚⴰⴱⴰ ⵎⵃⵏⴷ 102	ⵎⴰⴷ ⴳⵉⵖ 103
30- ⵃⴰⵍⵉⵎ ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ 105	ⵜⴰⵢⵔⵉ ⵏ ⵓⵣⵎⵣ ⴰⴷ 106
31- ⴰⵛⵀⴱⵓⵏ ⵅⴰⵍⵉⴷ 107	ⴰⵡⴰⵍ 108
32- ⴱⵓⵇⴷⵉⵔ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 110	ⴰⵙⴰⵢⵙ 111
33- ⴰⵏⵛⵛⴰⴷ ⵃⴰⵙⴰⵏ 113	ⵍⵓⵚⵉⵢⵜ 114
34- ⵡⴰⴹⴹⴰⵛ ⵎⵓⵙⴰ 115	ⵓⵙⵙⴼⴰⵏ 116
35- ⴰⵢⵜ ⴷⴷⵉⴱ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 118	ⵎⵎ ⵍⵖⵔⵓⵔ 119
36- ⵓⵄⴷⴷⵉ ⵕⴰⵛⵉⴷ 120	ⵙⵙⵉⵄⵔ 121
37- ⴱⴰⴹⵕ ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ 124	ⵔⵔⵉⵣⵓ 125
38- ⴰⵣⴷⴷⵓ ⵄⵜⵎⴰⵏ 127	ⴰⵖⴰⵔⴰⵙ 128
39- ⵍⵃⴰⵎⵛⵉ ⵄⵍⵉ 130	ⴰⴼⵔⴰⵏ 131
40- ⵍⵀⵔⵔⴰⵙ ⵍⵃⵙⵏ 133	ⵎⴰⴷ ⴰⴳ ⴷ ⵉⵇⴰⵏⵏ 134
41- ⴱⵏ ⵙⵄⵉⴷ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ 136	ⵔⵔⵉⴱⴰ 137

42-	ⵉⵎⵖⴰⵔⵏ ⵍⵃⵙⵏ	139	ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ	140
43-	ⵓⵎⴰⵏⵏⵉ ⵄⵓⵎⴰⵕ	142	ⵜⵉⵅⴰⵡⵜ	143
44-	ⴱⵏ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ ⵕⴰⵛⵉⴷ	144	ⵜⴰⵢⵔⵣⴰ	145
45-	ⵇⴱⴱⵓⵛ ⵎⵃⵏⴷ	146	ⵍⵉⵜⵉⵀⴰⵍ	147
46-	ⴽⴰⵅⵅⴰ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ	149	ⵍⵃⵉⴱ	150
47-	ⴱⴰⵀⴰ ⵎⴱⴰⵕⴽ	152	ⵜⵉⵖⵔⵉ	153
48-	ⵍⵄⴱⴱⴰⵙⵉ ⵍⵎⵃⵊⵓⴱ	156	ⴰⵅⴳⴰⵏ	157
49-	ⵓ ⵜⵎⵓⵍⴰⵢ ⴱⵓⴱⴽⵔ	158	ⵉⴳⵉⴳⵉⵍ	159
50-	ⴰⵣⴷⴷⵓ ⵍⵄⵕⴱⵉ	161	ⵜⴰⴳⴳⴰⵏⵥⴰ	162
51-	ⴱⵓⵍⵎⴰⵏ ⵎⵓⵍⵉⴷ	164	ⴰⵎⴰⵔⴳ ⴰⴱⵍⴷⵉ	165
52-	ⴱⵏ ⵍⵄⵕⴱⵉ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ	167	ⵓⵔ ⵏⵥⴹⴰⵕ	168
53-	ⴰⵥⴰⵎⵓⴹ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ	170	ⵍⵀⵉⴱⵜ	171
54-	ⵓ ⵎⵏⵚⵓⵕ ⵢⵉⴷⴰⵔ	173	ⴰⵃⵕⴰⴱⵏ	174
55-	ⵉⴷ ⴱⵏ ⵏⴰⵚⵕ ⵙⴰⵄⵉⴷ	176	ⴰⵎⵔⵔⵉⵇ	177
56-	ⴳⴳⵯ ⵉⵙⴰⵅⵅⵏ ⵄⴱⴷⵍⵍⴰⵀ	179	ⵜⵉⵎⵉⵣⴰⵔ ⵏ ⵓⵎⴰⵔⴳ	180
57-	ⴱⴰⵕⴽⴰ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ	182	ⵍⵖⵍⴰ	183
58-	ⵓⵇⵍⵍⵓⵛ ⵎⴱⴰⵕⴽ	185	ⵥⵣⵔⴱ	186
59-	ⴱⵏ ⵍⵄⵕⴱⵉ ⵄⴱⴷⵍⵍⴰⵀ	187	ⴰⴽⵛⵛⵓⴹ	188
60-	ⴰⵙⴰⵅⴰⵔ ⵍⵃⵙⵏ	189	ⴰⵣⵎⵣ ⵉⵣⵔⵉⵏ	190
61-	ⵓⵀⵎⵎⴰⴷ ⵃⵎⴰⴷ	192	ⵜⵉⵡⵉⵣⵉ	193
62-	ⴰⵢⵜ ⵡⴰⵃⵎⴰⵏ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ	198	ⵜⴰⵎⴰⵔⵜ	199
63-	ⵙⵉⴷⵉ ⴱⵓⵕⵃ	201	ⵜⵔⵡⵉ ⵍⵓⵇⵜ	202
64-	ⴰⴳⵯⵔⵔⴰⵎ ⵎⵃⵏⴷ	205	ⴰⵙⵙⴽⵔⵅ	206
65-	ⴰⵇⴱⵍⵉ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ	207	ⵉⵎⵎⴰ ⵏⵡ	208
66-	ⴱⵏ ⵎⵓⵙⴰ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ	210	ⵚⵚⵃⵕⴰ	211
67-	ⵥⴰⴽⵉ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ	213	ⵔⴰ ⵜⵣⵔⵉ	214
68-	ⴱⴰⵍⵉⵍ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ	216	ⴰⵣⵔⵅ ⵏ ⵜⵉⵔⵔⴰ	217
69-	ⴰⵣⵎⴰⵏⵉ ⵎⵃⵏⴷ	220	ⵜⴰⵢⴷⵔⵜ ⵏ ⵓⵎⴰⵔⴳ	221
70-	ⵍⵎⵖⴰⵕⵟⵉ ⵎⵃⵏⴷ	224	ⵍⵀⵏⴰ	225
71-	ⵃⴰⵙⴰⵏ ⵓⵣⵉⴷⴰ	226	ⵍⴱⵕⵊ ⴰⵇⴷⵉⵎ	227
72-	ⵅⵉⵀⵔⵉ ⴱⵕⴰⵀⵉⵎ	229	ⴰⴽⵯⵣ	230
73-	ⴱⵍⵍⵓⵛⵉ ⵃⴰⵙⴰⵏ	233	ⴷⴷⵓⵏⵉⵜ ⴷ ⵍⵉⵅⵔⵜ	233
74-	ⴰⵙⴽⴽⵓⵔ ⴱⵕⴰⵀⵉ	236	ⴰⴽⴰⵍ	237

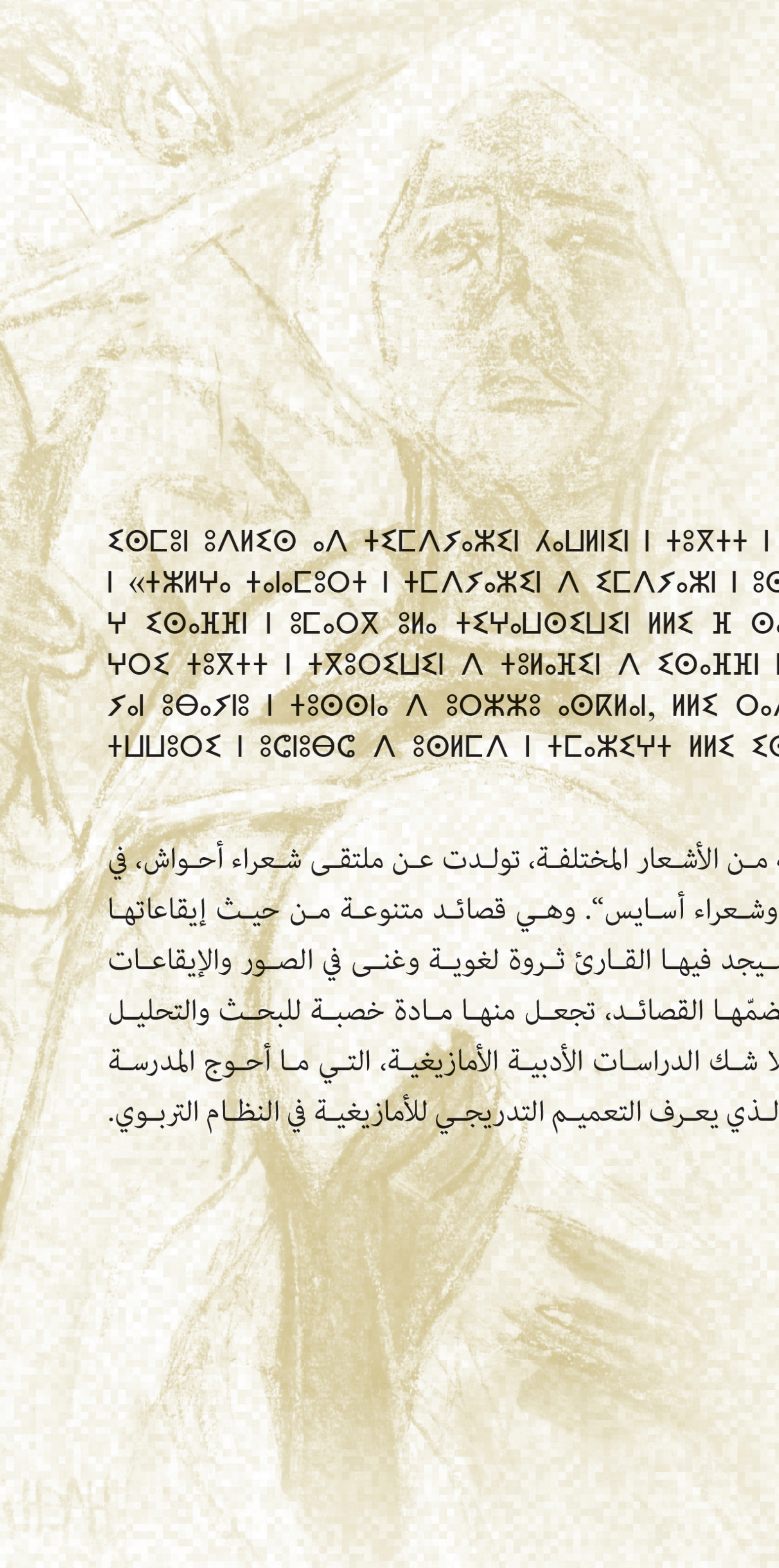

ⵉⵙⵎⵓⵏ ⵓⴷⵍⵉⵙ ⴰⴷ ⵜⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵉⵏ ⴽⴰⵡⵍⵉⵏ ⵏ ⵜⵓⴳⵜⵜ ⵏ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵍⵍⵉ ⴳⴰⵏⵉⵏ ⵉⴳⵎⴰⵎⵏ ⵏ «ⵜⵣⵍⵖⴰ ⵜⴰⵏⴰⵎⵓⵔⵜ ⵏ ⵜⵎⴷⵢⴰⵣⵉⵏ ⴷ ⵉⵎⴷⵢⴰⵣⵏ ⵏ ⵓⵙⴰⵢⵙ», ⵉⴹⵕⵉⵚⵏ ⴰⴷ ⵏⴰⴽⵢⴰⵜⵏ ⵖ ⵉⵙⴰⵃⵃⵏ ⵏ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵓⵍⴰ ⵜⵉⵖⴰⵡⵙⵉⵡⵉⵏ ⵍⵍⵉ ⵃ ⵙⴰⵡⴰⵍⵏ, ⵔⴰ ⵏⵏ ⴳⵉⵙⵏ ⵢⴰⵃ ⵓⵎ-ⵖⵔⵉ ⵜⵓⴳⵜⵜ ⵏ ⵜⴳⵓⵔⵉⵡⵉⵏ ⴷ ⵜⵓⵍⴰⵃⵉⵏ ⴷ ⵉⵙⴰⵃⵃⵏ ⵏ ⵓⵎⴰⵔⴳ ⵍⵍⵉ ⴳⵉⵙⵏ ⵉⵙⵇⴰⵔⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⴱⴰⵢⵏⵓ ⵏ ⵜⵓⵙⵙⵏⴰ ⴷ ⵓⵔⵣⵣⵓ ⴰⵙⵇⵍⴰⵏ, ⵍⵍⵉ ⵔⴰⴷ ⵉⵃⵇ ⵜⴰⵢⴰⵃⵓⵜ ⵉⵃⵓⵍⵇⵉⵏ ⵉ ⵜⵡⵡⵓⵔⵉ ⵏ ⵓⵛⵏⵓⴱⵛ ⴷ ⵓⵙⵍⵎⴷ ⵏ ⵜⵎⴰⵣⵉⵖⵜ ⵍⵍⵉ ⵉⵙⵏⵜⵉⵏ ⵖ ⵜⵉⵣⵉ ⵢⴰⴷ ⵏⵏⵖ.

يضم هذا الديوان الجماعي باقة من الأشعار المختلفة، تولدت عن ملتقى شعراء أحواش، في ظل "الرابطة الوطنية لشاعرات وشعراء أسايس". وهي قصائد متنوعة من حيث إيقاعاتها وأوزانها وتيماتها ومواضيعها. وسيجد فيها القارئ ثروة لغوية وغنى في الصور والإيقاعات والأوزان، والقيم الجمالية التي تضمّها القصائد، تجعل منها مادة خصبة للبحث والتحليل الأدبي المنهجي، والذي سيغني بلا شك الدراسات الأدبية الأمازيغية، التي ما أحوج المدرسة المغربية إليها، في السياق الحالي الذي يعرف التعميم التدريجي للأمازيغية في النظام التربوي.

50 DH